राजस्थानी लोक कथाएँ

समर्पण

मरु-भारती

के

प्रधान संपादक

राजस्थानी साहित्य-गगन

के

जाज्वल्यमान नक्षत्र

व

हिन्दी जगत् के

श्रेष्ठ आलोचक एवं निबन्धकार

श्रद्धेय डॉ० श्री कन्हैयालाल जी सहल

को

उनके स्नेहमय निरंतर प्रोत्साहन

के लिए

श्रद्धा पूर्वक समर्पित

भूमिका

लोक-कथाएँ साधारण जनता के उपचेतन और सचेत मन की लहरों के जनप्रिय रूप हैं। कथाओं में संभव असंभव सभी कुछ आ जाता है, परन्तु उद्देश्य उन सब का बिलकुल स्वाभाविक होता है। सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियों का जो मूर्त रूप लोक-कथाओं में मिलता है वह लिखित इतिहास में कहाँ रक्खा है। जनता के जीवन का जो प्रतिबिम्ब लोक-कथाओं में प्राप्त होता है मैं उसे इतिहास से कम नहीं समझता, कहीं कहीं तो वह इतिहास से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। रोमाञ्चक वर्णन, करारे व्यंग, जनमन की सर्वाङ्गीण भावनायें लोक-कथाओं में ही तो देखने को मिलती हैं। श्री गोविन्द अग्रवाल बरसों से राजस्थान की लोक कथाओं के संग्रह और सम्पादन पर जुटे हुये हैं। साहित्य के लिये यह कार्य बड़े महत्त्व का है। इन्होंने तो एक हजार से ऊपर लोक कथाओं का संग्रह कर डाला है। हिन्दी साहित्य के लिये इनकी यह देन अमर रहेगी। राजस्थान ही क्या, राजस्थान के बाहर वाले क्षेत्रों पर भी इनका प्रकाश पड़ेगा। हम अपने इतिहास को इन लोक कथाओं के द्वारा जल्दी समझ सकेंगे, आनन्द और विनोद तो इनसे प्राप्त होगा ही। हिन्दी संसार श्री गोविन्द अग्रवाल का सदा आभारी रहेगा। मेरी हार्दिक बधाई।

झाँसी
२३।४।१९६४

वृन्दावनलाल वर्मा

यज्ञ का अनुष्ठान

राजस्थान का अतीत साहित्य और उसका सांस्कृतिक वैभव अत्यन्त समुज्ज्वल है। जिस मरु-रानी ने पानी रखकर रक्त का दान दिया, जहाँ के मानी आन-बान पर मरते आये, जहाँ सतियों की दिव्य ज्योति वातावरण को आलोकित करती रही, जहाँ के निवासियों को पद-पद पर संघर्ष करना पड़ा, उस राजस्थान की भूमि चाहे सस्यश्यामला न रही हो, चाहे वहाँ जल के अनन्त स्रोत न फूटे हों, किन्तु इसमें संदेह नहीं, संस्कृति के जितने अगणित स्रोत इस प्रदेश में फूटे, उनकी कोई तुलना नहीं।

वैसे तो समूचे लोक-साहित्य की दृष्टि से ही राजस्थान अत्यन्त समृद्ध है किन्तु थोड़े 'अर्थवाद' का आश्रय लेकर यदि कहें तो कह सकते हैं कि यहाँ की लोक-कथाएँ तो गगन-मण्डल में टिम टिमाते हुए तारों की भाँति असंख्य हैं। इस प्रदेश की अन्तरात्मा में अनेक कथा सरित्सागर और सहस्र-रजनी चारत छिपे हुए हैं।

अनेक वर्षों से मैं एक ऐसे व्यक्ति की तलाश में था जो राजस्थान की असंख्य लोक-कथाओं को लिपिबद्ध करने का काम कर सके। अंत में मेरा ध्यान राजस्थान की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा के धनी श्री गोविन्द अग्रवाल की ओर गया जो राजस्थानी लोक-कथाओं के चलते-फिरते कोश हैं। मेरे 'ओड़ाने' से उन्होंने 'मरु-भारती' में राजस्थानी लोक कथा-कोश के अनुष्ठान का शुभारम्भ कर दिया। उनके अध्यवसाय, उनकी स्मरण-शक्ति और उनकी दायित्व-भावना को देख कर मुझे साश्चर्य आह्लाद हुआ। यह बड़े हर्ष की बात है कि राजस्थानी लोक कथा-कोश का यह यज्ञ जब से प्रारम्भ हुआ, तब से यह अखण्ड और अनवच्छिन्न क्रम से आज भी चल रहा है और मैं पूर्णतः आश्वस्त हूँ कि भविष्य में भी अप्रतिहत गति से आगे बढ़ता रहेगा।

राजस्थानी साहित्य और संस्कृति के अनन्य प्रेमी और पृष्ठपोषक श्रीयुत कृष्णकुमारजी बिड़ला का ध्यान उक्त कोश की ओर आकृष्ट हुआ। उन्हीं की सतत प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता से यह कोश खण्डशः पुस्तकाकार प्रकाशित हो रहा है। मरु-भारती-परिवार तथा उक्त कोश के संग्रह-कर्त्ता श्री गोविन्द अग्रवाल——हम सभी श्री बिड़ला जी के चिरकृतज्ञ रहेंगे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्री गोविन्द अग्रवाल द्वारा प्रारम्भ किया हुआ यह अखंड कोश-यज्ञ लेखक को यशस्वी बनाएगा तथा लोक-कथाओं के क्षेत्र में शोध करने वाले अनुसंधित्सुओं को भी इससे सहायता मिलेगी। सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार श्री वृन्दावनलाल जी वर्मा ने प्रस्तुत पुस्तक की भूमिका लिख कर हमें गौरवान्वित किया है जिसके लिए हम आपके अत्यन्त आभारी हैं।

१५ जून १९६४ ई०

कन्हैयालाल सहल
प्रधान सम्पादक
'मरु-भारती'
पिलानी

नम्र निवेदन

बचपन में माँ, दादी और दादा से बहुतेरी कहानियाँ सुनीं थीं, जिनमें से कुछ याद रहीं, कुछ भूल गया। मेरे छोटे दादाजी बहुत रोचक ढंग से कहानियाँ कहा करते थे। उनके कहानी कहने का ढंग इतना मोहक था कि पाँच छह वर्ष की अवस्था में उनके मुँह से सुनी खप्परिया चोर जैसी बड़ी कहानियाँ भी आज मुझे ज्यों की त्यों याद हैं। कहानी शुरू करने से पहले वे,

बात कहतां बार लागै,
हुंकारै बात मीठी लागै,
बात में हुंकारो,
फौज में नगारो,
आधा'क सोवै आधा'क जागै,
जागतोड़ां की पगड़ी
सूत्योड़ा ले भागै,
जद बातां का रंग धोरा लागै......।

आदि कह कर हमें मन लगा कर कहानी सुनने और हुंकारा देने के लिए तैयार करते और फिर, "तो रामजी भला दिन दे, एक साहूकार के च्यार बेटा हा", आदि से कथा शुरू करते। कहानी सुनते वक्त हुंकारा देना बहुत आवश्यक है। इससे कथा कहने वाला अनुभव करता है कि कथा ध्यान से सुनी जा रही है और कथा कहने में उसका उत्साह बढ़ता रहता है। इसी-लिए फौज में नगारे की तरह कथा में हुँकारे का महत्त्व है।

कभी कभी मैं सोचा करता कि ये कथाएँ लिखी जाएँ तो अच्छा हो। मुझे लगता कि यह बहुमूल्य कथा-साहित्य शीघ्रता से नष्ट होता जा रहा है क्योंकि देश की आजादी के बाद आने वाली पीढ़ी इस कथा-साहित्य से

बहुत दूर हो चुकी है और आगामी चन्द वर्षों में यह प्राचीन कथा-साहित्य सदैव के लिए नष्ट हो जाएगा। मेरे मन में बड़ी छटपटाहट थी कि किसी प्रकार इस साहित्य को संरक्षण मिले। तभी मुझे मरु-भारती के प्रधान संपादक आदरणीय डॉ० श्री कन्हैयालाल जी सहल का आदेश मिला कि मैं मरु-भारती के लिए राजस्थानी लोक-कथाएँ लिखूं। उनका आदेश मेरी इच्छापूर्ति का साधन बन गया। मुझे ऐसा लगा मानो घर बैठे ही गंगा आ गयी और मैं इस कार्य में जुट गया। लेकिन विधि की विडंबना ही कहिए कि हार्दिक इच्छा और रुचि होते हुए भी इस कार्य को पूरा समय नहीं दे सका। लेकिन डॉ० साहब का सहज स्नेह और प्रोत्साहन मुझे बराबर मिलता रहा और उन्होंने थोड़े ही समय में मुझसे एक हजार कथाओं से भी अधिक का संग्रह करवा लिया। ये कथाएँ बराबर मरु-भारती में निकल रही हैं और आगे भी निकलती रहेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। आदरणीय डॉ० साहब के प्रयत्न से ही ये कथाएँ अब पुस्तकाकार निकल रही हैं, जिससे इन राजस्थानी कथाओं के प्रचार और प्रसार में अधिकाधिक बढ़ोतरी हो सकेगी। इन सब के लिए मैं डॉ० साहब का हृदय से अत्यंत आभारी हूँ।

राजस्थान की चप्पा-चप्पा भूमि वीरों के बलिदानों से भरी पड़ी है। यहाँ का कण-कण राजस्थानी वीर और वीरांगनाओं की गौरवपूर्ण गाथाओं से देदीप्यमान हो रहा है। महाभारत के वीर योद्धा कर्ण ने श्रीकृष्ण से अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त करते हुए कहा था कि मेरी चिता ऐसी जगह बनायी जाए कि जहाँ पहले कोई दाग न लगा हो। श्रीकृष्ण के दिव्य दृष्टि से देखने पर सूई की नोक के बराबर ऐसी जगह मिल भी गयी थी। लेकिन राजस्थान की धरती पर शायद सूई की नोक के बराबर भी ऐसी जमीन न मिलेगी जो शूरवीरों के खून से सिंचित न हुई हो। उन शूरवीरों के अद्‌भुत पराक्रम की कितनी कथाएँ काल के कराल गाल में समा गयी हैं, इसका कोई लेखा—जोखा नहीं। फिर जो कथाएँ उपलब्ध हैं, वे भी दिन प्रति दिन नष्ट होती जा रही हैं क्योंकि अधिकतर कथाएँ तो लोगों की जबान पर ही चलती आ रही हैं और जो कहीं हस्तलिखित भी पड़ी हैं, वे भी दीमकों

का भोजन बन जाने की बाट जोह रही हैं। इसलिए इन कथाओं के संरक्षण की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। इनको संरक्षण न मिलना एक राष्ट्रीय अपराध होगा।

वीर गाथाओं के अतिरिक्त धार्मिक कथाएँ, नीति-कथाएँ, बाल-कथाएँ, साहसिक और परियों आदि की विभिन्न प्रकार की अनगिनत कथाएँ हैं, जिन सबका संकलन होना अत्यावश्यक है। नीति-कथाएँ, पंचतंत्र और हितोपदेश की कथाओं की तरह ही बहुत रोचक एवं उपयोगी हैं। प्राय: हर राजस्थानी कहावत के पीछे कोई न कोई कथा होती है। इन कथा कहानियों को लोग-बाग प्राय: अपनी मंडली में, सफर में, अवकाश के समय अथवा कोई प्रसंग उपस्थित होने पर कहते हैं। वैसे मोटे तौर पर इन कथाओं को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :—

१. वे घरेलू बाल कथाएँ जो घर की बड़ी बूढ़ी स्त्री (नानी, दादी) या पुरुष बालकों को सुनाता है। शाम होते ही घर भर के बालक अपनी नानी, दादी को घेर कर बैठ जाते हैं और सब अपनी अपनी पसंद की कहानी कहने का आग्रह करते हैं। पशु-पक्षियों की, चोर-साहूकार की और राजा-रानी आदि की कथाएँ कह कर वृद्धा बालकों का मनोरंजन करती है। किसी हास्य-कथा को सुनते वक्त बालक हँसते हँसते लोट-पोट हो जाते हैं तो किसी दु:खान्त कथा को सुनकर वे गमगीन बन जाते हैं। ये छोटी-छोटी कथाएँ बालकों के कोमल मनों पर सदैव के लिए अंकित हो जाती हैं। कथा सुनाते वक्त वृद्धा बालकों के साथ विनोद भी करती जाती है। जब उसे बच्चों को टालना होता है तो वह कहती है:—

"का'णी कैवै कागलो, हुंकारो देवै मइया,
आंधलिये नैं चोर लेग्या, भाग रै पांगलिया।"

और कथा समाप्त करने पर वह अपने किसी नन्हें पोते का नाम लेकर कहती है :—

"ओड का'णी, मूंगा राणी, मूंग पुराणा, नंदू के सासरै का नाई बामण सै काणा।"

रात के समय घर के काम-काज से निवृत्त होने पर कथाएँ कही जाती हैं। यदि कोई बालक अपनी माँ से दिन में कथा कहने का आग्रह करता है तो माँ यह कह कर बच्चे को टाल देती है कि दिन में कथा कहने से मामा रास्ता भूल जाता है।

इन कथाओं का एक बड़ा लाभ तो यह रहा है कि घर के सभी बालक बड़ों के सान्निध्य में आने का प्रयत्न करते हैं। बालकों को मनोरंजन के साथ साथ अच्छी शिक्षा मिलती है तथा इस मनोरंजन में कुछ खर्च नहीं होता। इसके विपरीत सिनेमा वगैरह आधुनिक मनोरंजन के साधनों के चल पड़ने से बालक बड़ों के समीप आने में कतराते हैं, उनके सान्निध्य से दूर भागते हैं और पैसे खर्च करके अवगुण सीखते हैं।

२. दूसरे प्रकार की कथाएँ वे हैं जो रावल, भाट, ढ़ाढ़ी, चारण, मिरासी और राणी-मंगा आदि अपने आश्रय दाताओं या यजमानों को सुनाते हैं। ऐसी कथाएँ काफी बड़ी होती हैं। कथा सुनाने वाले तरह तरह के दोहे और गीत आदि बीच बीच में बोलते जाते हैं जिनसे कथाओं में बहुत रोचकता आ जाती है। इस प्रकार कथा कहने वाले अपने विशेष ढ़ंग से कथा कहते हैं, वे पुरजोर आवाज में कथा कहते हैं जिससे बैठे हुए सारे श्रोता अच्छी तरह कथा सुन सकें। साथ ही कथा कहने वाला कथा के पात्रों का सफल अभिनय भी करता जाता है। घोड़े के दौड़ाने का प्रसंग कथा में आता है तो कथा कहने वाला इस प्रकार की ध्वनि निकालता है जैसे वास्तव में घोड़ा दौड़ रहा हो।

राजा और रईसों के मनोरंजन का मुख्य साधन शिकार होता था, लेकिन घर पर फुरसत के वक्त वे कुशल कहानी कहने वालों से शूरों, सामन्तों, सुन्दरियों और वीरांगनाओं की कथाएँ सुना करते थे और उन्हें भरपूर पुरस्कार भी देते थे। अपनी पसन्द की कथाओं को वे लिखवा भी लेते थे।

३. महिला व्रत कथाएँ:—जो एक स्त्री अन्य स्त्रियों को घर में,

मन्दिर में अथवा तुलसी या बड़-पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ कर सुनाती है। महिला धार्मिक व्रत कथाओं का अपना महत्त्व है। कथा कहने वाली स्त्री कथा को हरूफ ब हरूफ इस प्रकार सुनाती है मानो कोई पुस्तक पढ़ रही हो। एक अक्षर भी कहीं कम या अधिक नहीं हो पाता। इन कथाओं का ही यह प्रभाव है कि इस मरु-भूमि में जहाँ वर्षा बहुत कम होती है यत्र-तत्र बड़ पीपल जैसे बड़े और घनी छाया वाले वृक्ष दिखलाई पड़ जाते हैं। वृक्ष की एक हरी शाखा को तोड़ने मात्र से कितना पाप होता है, यह बात ये कथाएँ बतलाती हैं और साथ ही यह भी बतलाती हैं कि आक की एक डाली को नियमपूर्वक सींचने से भी कितना फल मिलता है। फलत: बैसाख और जेठ की कड़ी धूप में भी राजस्थानी महिलाएँ अपने सुहाग को अमर बनाने के लिए और कुमारी कन्याएं योग्य वर पाने की अभिलाषा से बड़-पीपलआदि वृक्षों को दूर-दूर से पानी लाकर अपने हाथों से सींचती हुई दिखलाई पड़ती हैं। वन-महोत्सव मनाने का कार्य तो अधिकतर अखबार और प्रचार तक ही सीमित रहा लेकिन इन कथाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव सदियों से स्पष्ट दिखलाई पड़ रहा है।

"गंगा और जमुना" जैसी कथाएँ यह बतलाती रही हैं कि अनजाने भी चोरी करने का कितना बड़ा पाप होता है और देवी-देवताओं को भी इसका प्रायश्चित्त करना पड़ता है। फलत: इन कथाओं का सुप्रभाव राजस्थान की नारी पर बहुत अधिक पड़ा है। ये कथाएँ यथासमय नियमपूर्वक सुनी जाती हैं और कथा सुन लेने पर ही अन्न-जल ग्रहण किया जाता है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सुहाग को अमर बनाने के लिए, पुत्र-पौत्रों की कामना और धन-धान्य की प्राप्ति के लिए विधान-सहित कथाएँ अवश्य सुनती हैं, इसलिए इन कथाओं की परंपरा अबाध गति से चलती रही है। इन कथाओं की एक और विशेषता यह है कि कथा के अन्त में जो फलश्रुति कही जाती है, उसमें यह कामना की जाती है कि कथा में वर्णित कार्य का जो सुफल करने वाले को मिला, वैसा सब को मिले। आज "जय-जगत' या 'जिओ और जीने दो' का नारा सब को एक अनोखी सूझ

लगता है लेकिन राजस्थानी व्रत-कथाओं की यह एक परंपरागत अनूठी देन है।

इनके अतिरिक्त कथाओं की एक चौथी किस्म वह कही जा सकती है जो नव-युवक यार दोस्त अपने साथियों में बैठ कर कहते हैं। इन कथाओं में अश्लीलता का पुट होता है, अतः ऐसा साहित्य लिपि-बद्ध नहीं किया जा सकता। यदि इन कथाओं से अश्लील अंश और शब्द निकाल दिये जाएँ तो ये कथाएँ भी बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। मैंने इन कथाओं में कुछ अश्लील कथाओं को श्लील बनाकर पेश करने का प्रयत्न किया भी है।

इतिहास तो राजाओं के जन्म-मरण की तारीखों आदि का सूचीपत्र मात्र होता है। तत्कालीन जन-जीवन पर तो इन कथाओं से ही प्रकाश पड़ता है। ये लोक-कथाएँ ही राजस्थान के तत्कालीन जन-जीवन की सच्ची तस्वीर खींचती हैं और इन कथाओं का राजस्थान के जन-जीवन पर भर-पूर असर रहा है।

जहाँ तक हो सका है, मैंने कथाएँ संक्षिप्त रूप में ही लिखने की चेष्टा की है लेकिन साथ ही मेरा यह प्रयत्न भी रहा है कि कथा का कोई आवश्यक अंग छूटने न पाये। कुछ ऐसे भी प्रसंग होते हैं जो थोड़े बहुत हेर फेर के साथ कई कथाओं में आते हैं। जो प्रसंग एक कथा में विस्तार से आ चुका है, वैसा ही प्रसंग दूसरी कथा में आने पर मैंने उसे बहुत संक्षिप्त कर दिया है। मैंने अपना कर्त्तव्य ईमानदारी पूर्वक और निष्पक्ष भाव से निभाने की चेष्टा की है। इसमें कहाँ तक सफल हो सका हूँ, यह तो विद्वान् और सहृदय पाठक ही बतला सकेंगे। जहाँ तक भाषा का सवाल है, मैंने सरलतम और बोलचाल की भाषा में कथाएँ लिखने का प्रयत्न किया है, जिससे अधिकाधिक पाठक इन कथाओं को पढ़ सकें तथा जिन राज्यों में हिन्दी का अभी बहुत प्रचलन नहीं हुआ है और जहाँ सरल हिन्दी ही समझी और पढ़ी जाती है, वहाँ के निवासी भी इन कथाओं में रुचि ले सकें। कथाओं के शीर्षक राजस्थानी ही रखे गये हैं और यत्र-तत्र कुछ बहु प्रचलित

राजस्थानी शब्दों से भी पाठकों को परिचित कराने का प्रयत्न किया गया है।

जितनी कथाएँ लिखी गयी हैं, वे सब सुनकर या पढ़कर मूल रूप में ही लिखी गयी हैं। मैंने अपनी ओर से उनमें कुछ भी मिलाने की चेष्टा नहीं की है। जिन संबंधियों, मित्रों, परिचित या अपरिचित महानुभावों से मैंने कथाएँ सुनी हैं या जिन महानुभावों द्वारा पूर्व लिखित कथाओं से मुझे सहायता मिली है उन सब का हृदय से आभारी हूँ।

राजस्थान लोक-कथाओं का रत्नाकर है और इसके रत्नों को इकट्ठा करने के लिए भगीरथ प्रयत्न की आवश्यकता है जो सरकार या कोई बड़ी साधनसंपन्न संस्था ही कर सकती है। किसी एक आदमी के बूते का यह काम नहीं है और विशेष कर मेरे जैसे आदमी का तो कतई नहीं जो इस कार्य में रुचि रखते हुए भी इसे अधिक समय नहीं दे सकता। फिर भी मेरी हार्दिक इच्छा है कि अधिकाधिक राजस्थानी लोक-कथाओं का संकलन करूँ और आशा करता हूँ कि हितैषियों के आशीर्वाद और सहयोग से इस कार्य को निरंतर जारी रख सकूँगा।

चूरू
१ अप्रेल १९६४

—गोविन्द अग्रवाल

● पाबू करै ऊग ई कोनी

एक राईका खेत में हल चला रहा था। रास्ते चलते हुए किसी आदमी ने उससे पूछा कि भाई, क्या बो रहे हो ? राईका ने कहा कि नहीं बतलाऊँगा। तब उस आदमी ने कहा कि तुम नहीं बतलाओगे तो क्या है जब अनाज उगेगा तब देख लूँगा। इस पर राईका ने कहा कि पाबूजी महाराज ऐसा करें कि अनाज उगे ही नहीं, तब देख कैसे लेगा ?
(राईका—एक जाति विशेष) (पाबूजी—एक राजस्थानी वीर जो देवता की तरह माने जाते हैं, नायक जाति के लोग उन्हें अपना आराध्य देव मानते हैं)

● घी का तो मार्‌या ई फिरां हां

एक सेठ के घर में घाटा था, इसलिए वह खाने-पीने की चीजें भी पूरी न ला पाता था। एक दिन उसकी स्त्री ने खिचड़ी बनाई। सेठ जीमने बैठा तो उसकी स्त्री ने उसे खिचड़ी परोस दी और उस में थोड़ा सा घी डाल दिया। सेठ ने और घी माँगा तो उसकी स्त्री ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन जब वह बार-बार घी माँगने लगा तो उसकी स्त्री को गुस्सा आ गया कि घी लाता तो है नहीं, खाने के लिए इतना व्यग्र रहता है और उसने डोई (काठ का चम्मच) उठाकर उसके सिर में दे मारी। सिर से रक्त बहने लगा और सेठ उठकर बाहर चला गया। किसी ने पूछा तो सेठ ने कह दिया कि गिर पड़ने से चोट लग गई। उस आदमी ने कहा कि इस पर घी लगा लो कि जिससे यह चोट ठीक हो जाए। तब सेठ ने लम्बी साँस लेकर कहा कि इस घी के कारण तो सारी खराबी हुई है।

● ग्यानैकी उगाई

एक गाँव के ठाकुर ने जाट को पीट दिया तो जाट ने हाकिम के

पास पुकार की। हाकिम ने ठाकुर को तलब किया। ठाकुर ने गवाही में 'ग्याना' पंडित का नाम लिखा दिया। 'ग्याना' ने ठाकुर से कहा कि जिस वक्त आपका झगड़ा हुआ था उस वक्त मैं गाँव में नहीं था, तब आपने मेरा नाम क्यों लिखवाया ? ठाकुर ने कहा कि जिस मंदिर में तुम पूजा करते हो उसके नीचे जो एक सौ बीघा जमीन हमने छोड़ रक्खी है उसकी आय तुम लेते हो या और कोई ? तब पंडित ने कहा कि उसकी आय तो मेरे ही घर में आती है। इस पर ठाकुर ने कहा कि जो इस जमीन की आय लेगा, वही गवाही भी देगा, तुम नहीं तो कोई और देगा। तब 'ग्याना' ने गवाही देने की हाँ भर ली। हाकिम ने गंगाजल का पात्र हाथ में लेकर ग्याना से सच्ची बात कहने के लिए कहा तो 'ग्याना' ने गंगाजल के पात्र को हाथ जोड़े और कहा कि हे गंगामाई, तुझे मैं न उठाऊँगा तो और कौन उठायेगा ? क्योंकि ठाकुर द्वारा मन्दिर के नीचे छोड़ी गई जमीन का लाभ भी मैं ही तो उठाता हूँ।

हाकिम समझ गया कि इसे जबरन झूठी गवाही देने के लिए लाया गया है अतः उसने कह दिया कि इस आदमी की गवाही नहीं ली जायेगी और इजलास ख़त्म कर दिया। 'ग्याना' की जान में जान आई और उसने ठाकुर से कहा कि जब हाकिम मेरी गवाही लेता ही नहीं तब मैं क्या करूँ ?

● तिणकलियें बिगोई

एक जाट घी का 'भरतिया' (गाँवों में से घी लेकर शहर में बेचने का धंधा करने वाला) था। उसके स्वयं के घर में भी कई गायें भैंसें थीं। जाट की स्त्री ने एक दिन देखा कि हँडिया में दूध गरम हो गया है और उस पर मलाई आ गई है लेकिन एक तिनका हँडिया में पड़ा हुआ है। तिनके को फेंक देने से पहले उसने सोचा कि तिनके में जो मलाई लगी हुई है उसे बेकार क्यों जाने दूँ, उसे चूस लूँ तो क्या हानि है ? ऐसा सोच-कर उसने तिनके को चूस लिया। लेकिन उसे मलाई के स्वाद का चसका लग गया। वह रोज दूध पर से मलाई उतारकर खाने लगी। दूध पर से मलाई उतर जाने के बाद उसमें घी कितना निकलता ? अतः जब जाट

अगली बार घी बेचकर घर आया और उसने घी माँगा तो जाटनी ने चार की बजाय एक हंडिया घी की उसके सामने ला कर रख दी। जाटने पूछा कि और घी कहाँ है तो वह निरुत्तर हो गई। आखिर जाट के अधिक पूछने पर जाटनी ने कहा कि तिणकलिये (तिनके ने) बिगोई रावत, तिणकलिये बिगोई। और फिर उसने सारी बात जाट के सामने स्पष्ट कर दी।

● गादड़ियो ग्यारस करै

एक गीदड़, हिरन और कौवा दोस्त थे। वे तीनों एक जाट के खेत में खाने-पीने के लिये जाया करते थे। एक दिन जाट ने जाल फैलाया और हिरन जाल में फँस गया। हिरन ने गीदड़ से प्रार्थना की कि इस जाल की रस्सी काट दे। लेकिन गीदड़ ने कहा कि आज तो मैं किसी चीज को मुँह नहीं लगाता, आज मैंने एकादशी व्रत किया है। गीदड़ ने सोचा कि हिरन खूब मोटा ताजा है, जाट इसे मारेगा तो कुछ मांस अवश्य मेरे भी हाथ लगेगा। ऐसा सोचकर वह एक झाड़ में वहीं छुपकर बैठ गया। तब कौवे ने हिरन से कहा कि तुम मृतक के समान होकर पड़ रहो। मैं उस वृक्ष पर बैठता हूँ, जब मैं काँव-काँव करूँ तब तुम तुरन्त उठकर भाग जाना। जाट आया और उसने देखा कि हिरन मर गया है— अतः वह अपने जाल को समेटने लगा। जब जाट हिरन से दूर चला गया तो कौवा काँव-काँव करने लगा। हिरन तुरन्त उठकर भागा। जाट को हिरन की धूर्तता पर बड़ा गुस्सा आया और उसने अपनी कुल्हाड़ी हिरन की तरफ फेंकी। कुल्हाड़ी हिरन के न लगकर पास ही छुपे हुये गीदड़ को लगी और वह वहीं ढेर हो गया। इसी बात को लेकर यह गाथा चल पड़ी :—

गादड़िया जी ग्यारसिया, कैं की काटै नाड़ी।
भायलै पर दगो बिचार्‌यो, काँधै पड़ी कुहाड़ी ।।

गीदड़जी ने तो एकादशी का उपवास किया था फिर भला वे किसी जीज को मुंह कैसे लगाते ? उसने दोस्त के साथ कपट किया इसलिए उसके कंधे पर कुल्हाड़ी पड़ी।

● मियां जी की फारसी

एक मियाँजी फ़ारस गये और वहाँ टूटी-फूटी सी फारसी बोली जान गए। घर आये तो उन्होंने घर वालों पर रोब जमाने के लिए फ़ारसी छाँटनी शुरू की, वे अब पानी को पानी न कहकर आब कहने लगे। लेकिन घर का कोई भी आदमी कुछ समझता न था। फल यह हुआ कि मियाँजी अपने ही घर में आब-आब करते हुए प्यास के मारे मर गए और पानी उनके सिरहाने पड़ा रहा——

फारस गया फारसी पढ़ आया, बोलै अट पट बाणी।
आब आब कर मर गया, सिराणै धर्‌यो पाणी॥

(मियाँजी फारस गये और फारसी पढ़ आये। अब वे अटपटी बानी बोलने लगे। फल यह हुआ कि वे 'आब, आब' करते मर गये और पानी सिरहाने रखा रह गया)

● गडूँ क' बलूँ ?

एक गाँव में सब मुसलमान ही मुसलमान रहते थे। गाँव में एक भी घर हिन्दुओं का न था, इसलिए गाँव में कोई हिन्दू आता तो उसे खाने-पीने को कुछ भी न मिलता। गाँव के लोगों ने सोचा कि यह तो बड़ी बुरी बात है कि कोई बटाऊ आए और निराहार चला जाए। ऐसा सोचकर उन्होंने एक मुसलमान औरत को ब्राह्मणी बनाकर एक झोंपड़ी में बिठा दिया। गाँव के मुसलमान वहीं पानी के घड़े भरकर रख देते और वह 'ब्राह्मणी' आने वाले हिन्दू अतिथि को रोटी बना देती। एक दिन एक काशी का पंडित वहाँ आया और नहा धोकर पूजा-पाठ करके जब जीमने बैठा तो वह 'ब्राह्मणी' उसके पास आकर बैठ गई और बोली कि तुम समझदार आदमी से लगते हो अतः तुम्हें एक बात पूछती हूँ। पंडित ने कहा कि पूछो। तब उस स्त्री ने अपनी सारी बात बताई और पंडित से पूछा कि अब मैं अपनी लड़की की निकाह करूँ या उसके फेरे फेरूँ ? पंडित को उसकी बात सुनकर बड़ी

ग्लानि हुई और वह गहरे सोच में पड़ गया और बोला कि तू मुझे बता, कि, "मैं गड़ूं या बलूं ?"
हिन्दुओं को मृत्यु के बाद जलाया जाता है और मुसलमानों को जमीन में गाड़ा जाता है, लेकिन मैं न हिन्दू रहा और न मुसलमान ।

● सीळो सो पाणी ल्याओ

एक ठाकुर का बुढ़ापे में विवाह हुआ । विवाह में जब ससुराल वालों ने कहा कि कुंअरसाहब, अमुक काम ऐसे कीजिए तो ठाकुर बोला कि धन्य हो धरती माता अभी तो हम कुँअरसाहब ही कहलाते हैं । जाड़े के दिन थे, ठाकुर ने ससुराल की स्त्रियों पर रोब जमाते हुए कहा कि एक ठण्डे पानी का गिलास लाओ तो स्त्रियों ने आश्चर्य किया और कहा कि कुंअरसाहब तो अभी बिल्कुल नौजवान ही हैं । ठाकुर ने एक गिलास ठंढे पानी का पी तो लिया लेकिन उसके दाँत बजने लगे । लेकिन अपनी कमजोरी को छिपाते हुए उन्होंने कुछ देर बाद ठंढे पानी का एक गिलास और मँगवाया और उसे भी किसी तरह पी गए । नतीजा यह हुआ कि ठाकुर साहब का शरीर जुड़ गया और वे सदैव के लिए ठण्डे हो गए ।

● गाँव की भुवा

गाँव के ठाकुर की एक वहिन थी जो बालविधवा थी । वह बड़ी झगड़ालू थी और अपने भाई के घर ही रहा करती थी। सबेरे ही वह गाँव की स्त्रियों से झगड़ा करने के लिए निकल जाती और निरर्थक कलह करके शाम को घर आ जाती । गाँव के लोग उसके कारण बड़े तंग थे। एक दिन सबने मिलकर ठाकुर से प्रार्थना की कि किसी तरह बूआजी को रोका जाए। ठाकुर ने कहा कि मैं स्वयं इसके मारे बहुत हैरान हूँ, लेकिन कोई उपाय नहीं सूझता । आखिर सबने एक योजना बनाई कि बूआजी नित्य बारी-बारी से एक-एक घर में जाया करें और वहीं कलह कर लिया करें । गाँव में तीन सौ साठ घर थे अतः प्रत्येक घर की बारी एक वर्ष में आने लगी और गाँव के लोगों को राहत मिली। एक दिन जिस जाट

के घर में बूआजी के आने की बारी थी उसी दिन जाट के बेटे की बहू गौना लेकर आई थी। लेकिन उसकी सास इस बात से बहुत चिंतित थी कि आज ही वह दुष्टा भी कलह करने के लिए आयेगी। बहू ने सास की उदासी का कारण जानकर घर के सब लोगों को खेत पर भेज दिया और बोली कि आज मैं बूआजी से स्वयं निपट लूँगी। सब लोग खेत चले गये और बहू आँगन में बैठकर चरखे पर सूत कातने लगी। बूआ ने बहुत बक-वास की लेकिन बहू एक शब्द भी नहीं बोली। बूआजी चाहती थीं कि बहू बराबर लड़ और यह वाक्-युद्ध शाम तक चलता रहे तब आनन्द आये। लेकिन बहू के न बोलने से वह शीघ्र ही परेशान हो गई और बहू से बोली कि आज तू जीती और मैं हारी। आज से मैं कलह नहीं किया करूँगी। तब बहू उठकर बूआजी के पैरों लगी और बोली कि जीती तो आप ही हैं, मैं तो आपकी सेविका हूँ, मुझे तो बस आपका आशीर्वाद चाहिए। उसी दिन से बूआ ने गाँव में जाना और कलह करना छोड़ दिया।

● खारियो ढ़ेढ़

एक पति-पत्नी में बहुत प्रेम था लेकिन उनके पड़ोस में उल्टी गंगा बहती थी। उनका पड़ोसी अपनी पत्नी को नित्य पीटा करता था। पड़ोसी की स्त्री को उनका प्रेम देखकर डाह हो गई। वह किसी प्रकार उनमें खटपट कराने की सोचने लगी। एक दिन उसने पड़ोसी की पत्नी के पास जाकर उसे बहकाया कि तेरा पति तो ढ़ेढ़ (चमार) है। उसका नाम खारिया ढ़ेढ़ था, मैं उसे अच्छी तरह जानती हूँ, यदि विश्वास न हो तो उसके शरीर को अपनी जीभ से चाट के देख लेना, उसमें नमक की कड़ुआहट आयेगी। उधर उसका पति शाम को घर आ रहा था तो वह उसे रास्ते में ही मिली और उससे बोली कि तुम्हारी स्त्री डाकिन है और वह रात को तुम्हारे कलेजे से खून चूसा करती है। इस प्रकार पति और पत्नी दोनों के मन में शंका हो गई। रात को खा-पीकर दोनों लेट गये, जब पत्नी ने देखा कि पति गाढ़ी नींद में सो रहा है तो वह धीरे से उठी और उसकी छाती पर जीभ फिराकर देखने लगी। गर्मी के दिन थे अतः पसीने के कारण उसे

कुछ कड़ुआहट मालूम हुई। उधर उसका पति भी जाग रहा था, वह भी पत्नी की परीक्षा करने के लिए केवल नींद का बहाना करके पड़ा था। जब उसकी पत्नी उसकी छाती पर जीभ फेरने लगी तो उसने सोचा कि सचमुच ही यह डाकिन है और वह जोर से चीख उठा, "डाकिन, डाकिन !" इधर उसकी पत्नी भी पुकार उठी "खारिया ढेढ़, खारिया ढेढ़।"

● इत्तीं दूर बिन्नै क्युं गई नीं ?

एक जाट की माँ मर गई। उसने उसकी हड्डियाँ गंगाजी में प्रवाहित करने के लिए एक हडिया ब्राह्मण (जो ब्राह्मण मृतक मनुष्यों की हड्डियाँ गंगाजी में प्रवाहित करने का कारोबार किया करते थे) को भेजा। ब्राह्मग गंगाजी न जाकर किसी तालाब में हड्डियाँ डालकर आ गया। जाट को शक हुआ कि ब्राह्मण गंगाजी नहीं गया और कहीं बीच में से ही आ गया है। इस लिए उसने ब्राह्मण से कहा कि रात को स्वप्न में मेरी माँ आई थी और वह कह रही थी कि ब्राह्मण मुझे रास्ते में ही डाल गया है। इस पर ब्राह्मण ने तुरंत जवाब दिया कि वह रांड इतनी दूर इधर आई, उधर क्यों न गई ? इधर आने के बदले उधर जाती तो अब तक गंगाजी पहुंच जाती।

● फेरा उधेड़ ले

एक सेठ और एक सेठानी घर में सो रहे थे। रात को एक चोर घर में आ घुसा तो सेठ ने सोचा कि इसे तरकीब से पकड़ना चाहिए। ऐसा सोचकर वह अपनी पत्नी से बोला कि मैं तो हरिद्वार जाऊँगा और इसी वक्त जाऊँगा। चोर ने देखा कि जाग हो गई है तो वह एक खंभे के सहारे छुप कर खड़ा हो गया। उधर सेठानी ने कहा कि कहीं इस वक्त भी हरिद्वार जाया जाता है ? लेकिन सेठ ने हठ पकड़ लिया। बात बढ़ गई। सेठानी ने कहा कि आपने मेरे साथ फेरे फेरे हैं, ऐसे चले जाओगे कोई मजाक नहीं है। तब सेठ ने खीझकर कहा कि अपने फेरे

उधेड़ ले। सेठानी ने पूछा कि फेरे भला कैसे उधेड़े जा सकते हैं ? इस पर सेठने कहा कि एक मलमल का थान ला मैं अभी फेरे उधड़वा देता हूँ। सेठानी थान लाई तो सेठ ने कहा कि यहाँ इस खंभे के चारों ओर आठ बार इस कपड़े से परिक्रमा लगाओ और अपने फेरे उधेड़ लो। सेठानी ने कहा कि आठ बार ही क्यों ? तीन तो ब्याज के ही हो गए अतः ग्यारह बार परिक्रमा लगानी होगी। इस प्रकार बात करके सेठ आगे और सेठानी पीछे चलने लगी और उन्होंने चोर को खूब अच्छी तरह खंभे के साथ जकड़ दिया। तब सेठानी ने कहा कि फेरे पंचों के सामने लिए गए थे अतः उन्हें बुलाना आवश्यक है। तब सेठानी जाकर पड़ोस के लोगों को बुला लाई और बोली कि हमने फेरे उधेड़ लिए हैं। पड़ोसी उनकी बात सुनकर हैरान हो गए कि इन्हें आज क्या सूझी है ? इतने में एक ने पूछा कि खंभे के साथ यह कौन बँधा हुआ है ? तब सेठ ने कहा कि इसी के कारण तो हमें फेरे उधेड़ने पड़े हैं। तब चोर की समझ में आया कि यह सब प्रपंच तो मुझे पकड़ने के लिए ही किया गया था।

● चोरी अर ठगी

एक चोर और एक ठग साथ-साथ कमाने के लिए चले। दोनों नगर में दिन भर घूमते रहे लेकिन एक पैसा भी हाथ न लगा। शाम हो गई तो उन्होंने देखा कि एक बनिया अपनी दुकान पर दीवट के सहारे दिन भर की बिक्री के रुपये गिन रहा है। उन्होंने भाँप लिया कि उसके आस-पास कहीं दियासलाई नहीं है। अच्छा मौका देखकर एक ने एक कंकड़ी उठा कर दीपक को मारी और दिया बुझ गया। जैसे ही बनिया दुकान में दिया-सलाई लाने गया चोर ने सारे रुपये उठाये और दोनों गली में भाग गये। बनिये ने दीया जलाया तो देखा कि वहाँ एक पैसा भी नहीं है। उसने शोर मचाया तो अन्य लोगों के साथ वे दोनों भी वहीं आ गये और पूछने लगे कि क्या हुआ ? दुकानदार की बात सुनकर सब यही कहने लगे कि यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। तब उन दोनों ने कहा कि इसमें आश्चर्य क्या है ? यदि सेठ अभी उतने ही रुपये लेकर बैठे तो वह आदमी फिर

रुपये उठाकर भागेगा और फिर आपके सामने यहीं आ जाएगा। सब के कहने पर बनिया फिर पये लेकर बैठा। ठग ने कंकड़ी मारी, दीपक बुझ गया और ठग फुर्ती से रुपये लेकर चम्पत हुआ और चोर भी खिसक गया। सब यही देखते रहे कि वह फिर आ रहा होगा। लेकिन वे क्यों आने लगे थे? पहले वाले रुपये चोर को मिले क्योंकि उसने चोरी से रुपये उड़ाये थे। दूसरी बार के रुपये ठग को मिले क्योंकि उसने सबके सामने रूपये ठगे थे। इस प्रकार चोरी और ठगी दोनों साथ-साथ हुईं।

● भंगण अर पंडत

एक पंडितजी बाज़ार से गुज़र रहे थे कि एक भंगिन से उनका दुपट्टा छू गया। पंडितजी बिगड़ने लगे। लोगों न बीच-बचाव करना चाहा, लेकिन पंडितजी लाल-पीले होते गये। तब भंगिन ने लोगों से कहा कि आप सब लोग जाइये, यह तो मेरा पति है, मैं इसे अपने घर ले जाऊँगी। यों कह कर उसने पंडितजी का हाथ कसकर पकड़ लिया। भंगिन की बात सुनकर पंडितजी को पसीना आ गया और उनका सारा गुस्सा काफूर हो गया। वे भंगिन से हाथ छोड़ देने की प्रार्थना करने लगे। तब भंगिन ने कहा कि पंडितजी!। मैं तो चांडालिनी हूँ ही, आप भी चांडाल बन गए थे, क्योंकि क्रोध चांडाल का ही स्वरूप है जो आप पर कुछ देर पहले सवार था। इसलिए मैंने आपको अपना पति बनाया था। अब वह चांडाल आप को छोड़ चुका है और अब आप जा सकते हैं।

● कंजूस को धन

एक सेठ के पास बहुत धन था लेकिन साथ ही वह कृपण भी एक ही था। अपने पेट को भी पूरी रोटी नहीं देता था। एक दिन वह किसी दूसरे गाँव जाने लगा तो उसके बेटे की बहू ने उसे रास्ते में खाने के लिये कुछ रोटियाँ बाँध दीं और पानी की झारी भर दी। दोपहर को जब भूख लगी तो सेठ जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठ कर रोटी खाने लगा। रोटी खाने के बाद जब वह सुराही से पानी पीने लगा तो उसने देखा कि पानी

में चीनी घोल कर उसे शर्बत बना दिया गया है। उसे बड़ा क्रोध आया और उसने सारा पानी वहीं एक बिल में उँडेल दिया। बिल में एक काला नाग रहता था, वह बहुत प्यासा था।उसने वह सारा शर्बत पी लिया और सेठ को वरदान देने के लिए बाहर निकला। उसने सेठ से कहा कि तुम्हें जो माँगना हो सो माँग लो, मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। सेठ ने कहा कि कल आकर माँग लूंगा। सेठ अपने घर गया और उसने सारी बात घर वालों से कही। बहू ने कहा कि आप नागराज से यही वर माँग लें कि जितना धन हमारे पास है वह हमारा ही हो जाए। सेठ को यह बात बड़ी विचित्र सी लगी लेकिन बहू के कहने से उसने दूसरे दिन जाकर नागराज से यही वरदान माँग लिया। नाग ने उसे और दूसरा वर माँगने को कहा लेकिन सेठ अपनी बात पर अड़ा रहा। चूंकि नाग वचन-बद्ध था अतः उसने वही वरदान सेठ को दे दिया। अब सेठ सच्चे अर्थों में अपने धन का मालिक हो गया। अब वह इच्छानुसार उसे भोगने लगा जबकि पहले सिर्फ उसकी रखवाली ही करता था।

● आलसी को दालद कोनी जावै

एक बार एक साधु ने एक आदमी को पारस दिया और कहा कि अमुक समय तक तुम इसे अपने पास रख सकोगे और अपनी इच्छानुसार लाभ उठा सकोगे। उस आदमी ने सोचा कि अब भला किस बात की चिन्ता है? अब तो पारस की सहायता से जब भी चाहूँगा धन-कुबेर बन जाऊँगा। उसने आलस्य में समय बिता दिया और अवधि समाप्त हो गई। ठीक समय पर वह साधु उसके सामने फिर प्रकट हुआ और उससे पारस माँगा। वह आदमी साधु के सामने बहुत गिड़गिड़ाया कि आप कुछ ही क्षण और ठहर जाइये, लेकिन साधु न माना। वह पारस लेकर चला गया और वह आदमी अपनी अकर्मण्यता को कोसता रह गया।

● पठान की चतराई

एक पठान अपनी औरत के साथ किसी दूसरे गाँव जा रहा था

रास्ते में प्यास लगी तो पठान एक जाट के खेत में से एक मतीरा तोड़ लाया और दोनों ने उसे खा लिया। पठान वहाँ से उठकर चलने लगा तो उसने एक रुपया मतीरे की कीमत स्वरूप वहाँ रख दिया। थोड़ी देर बाद जाट वहाँ आया और उसने सोचा कि बिना पूछे किसी ने मतीरा तोड़ा है तो उससे अधिक कीमत वसूल करनी चाहिए। वह उन दोनों के पीछे दौड़ा और थोड़ी ही दूर पर उन्हें पकड़ लिया। पठान उसे पहले दो रुपये देने लगा फिर पाँच। लेकिन जाट ने कहा कि मैं तो अपना मतीरा ही लूंगा। दोनों झगड़ते झगड़ते राजा के पास गए तो राजा ने फैसला दिया कि जब तक पठान जाट का मतीरा न लौटाये पठान की औरत जाट के पास रहे। फ़ैसला सुन कर पठान बहुत चकराया लेकिन वह तो राजा का हुक्म था। पठान वहाँ से चला आया और पठान की स्त्री जाट के साथ चल पड़ी। पठान ने गाँव में से कुछ मूंग खरीदे और उन्हें एक बोरे में डालकर बाजार में आ गया। अनाज के दूकानदारों से उसने कहा कि मेरे पास बहुत मूंग हैं। माल पीछे ऊँटों पर लदा आ रहा है, जिसको लेना हो यहाँ आ जाए। बाजार में मूंग का भाव बारह रुपये मन था तो उसने आठ रुपये मन में मूंग देने का करार कर लिया और मूंग लेन वालों से पेशगी रुपये लेने लगा। सभी लोग मूंग लेने के लिए व्यग्र हो रहे थे। पठान के पास हजारों रुपये पेशगी आ गए। तब पठान ने कहा कि जब तक और मूंग आयें तब तक मेरे पास जितने मूंग हैं वे तो तुलवा लो। उसने तराजू के उलटे पलड़े से मूंग तौलने शुरू किये तो लोगों ने कहा कि पठान साहब! यह क्या मजाक करते हो? कहीं उलटे पलड़े से भी मूंग तौले जाते हैं? पठान ने कहा कि मैंने उलटे सीधे की बात तो आपसे की नहीं है। अपने दस्तूर के मुताबिक आपको मूंग तौल रहा हूँ। वे लोग उसे राजा के पास ले गये तो राजा ने दोनों की बात सुन कर फैसला दिया कि उलटे पलड़े से भी नहीं, सीधे से भी नहीं, खड़े पलड़े से मूंग तौल दो। अब तो मूंग का एक दाना भी दुकानदारों को नहीं मिल सकता था, लेकिन राजा का फैसला अन्तिम था। वे सब लोग

वहाँ से आ गए तो पठान ने कहा कि भाई, यहाँ तो ऐसा ही न्याय होता है। एक मतीरे के बदले में मेरी औरत जाट को दिला दी गई तो मूंग भी आपको खड़े पलड़े से ही तुलवाने होंगे। तब गाँव के सब लोगों ने जाट को कुछ दे दिला कर समझाया और पठान की औरत पठान को दिला दी। तब पठान ने भी सारे रुपये दुकानदारों को लौटा दिये।

● दो दिवालिया

एक आदमी साधारणतया तेल-नोन का व्यापार करता था। कारोबार में घाटा लगा और उसका दिवाला निकल गया। माँगने वाले उसकी दुकान पर आकर हो हल्ला मचाने लगे। कोई दो रुपया माँगता था कोई पाँच। कुल पचास रुपये का दिवाला था। उसी रोज गाँव में एक सेठ ने एक लाख रुपये का दिवाला निकाला। उस आदमी ने सोचा कि जब पचास रुपये के लिए इतना गुल गपाड़ा मचा हुआ है तो लाख रुपये के लिए न जाने क्या हुआ होगा? वह देखने के लिए सेठ के घर गया। लेकिन उसे देखकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ जरा भी हो हल्ला नहीं है। सारे काम अपने ढंग से चल रहे हैं। उसने सेठ से अपने मन की बात कही तो सेठ ने कहा कि लो पचास रुपये ले जाओ और माँगने वालों को चुका दो। हमारे तो जहाँ लाख का दिवाला है वहाँ एक लाख पचास का सही।

● जाट की चतराई

एक जाट के खेत में चार जने घुस गए। एक ब्राह्मण, एक ठाकुर, एक बनिया और एक नाई। चारों मतीरे तोड़ तोड़ कर खाने लगे। जाट आया तो उन सबको अपने खेत में देख कर उसे बड़ा क्रोध आया, लेकिन उसने तरकीब से काम निकालने की सोची। पहले उसने नाई को पकड़ा और कहा कि ब्राह्मण तो दादा हैं, इनका तो सब कुछ है ही, और ये ठाकुर हैं, अतः मालिक हैं और ये सेठ हैं जिनसे सारे काम निकलते हैं, लेकिन तुझसे तो हर काम पैसे देकर करवाता हूँ, तू भला इनके साथ खेत में कैसे घुसा? यों कह कर जाट ने नाई को ठोक पीट कर

खेत से बाहर निकाल दिया । फिर उसने सेठ सेकहा कि ब्राह्मण देवता तो दादा हैं और ठाकुर साहब मालिक हैं तुम खेत में कैसे घुसे ? यदि रुपये उधार लेता हूँ तो उनका ब्याज तुम्हें देता हूँ। यों कह कर जाट ने उसे भी निकाल दिया । फिर जाट ने ठाकुर से कहा कि खेत जोतता हूँ तो तुम्हें लगान देता हूँ फिर तुम खेत में क्यों घुसे ? यों कह कर ठाकुर को भी निकाल बाहर किया और फिर उसने पंडित जी को आड़े हाथों लिया और उन्हें भी पीट पाट कर निकाल दिया ।

● ऊँट अर बलद

दो पंडित साथ साथ कमाने के लिये जा रहे थे। रास्ते में एक गाँव आया तो दोनों वहीं एक सेठ के यहाँ ठहर गए। जब एक पंडित किसी काम से बाहर गया तो सेठ ने दूसरे से उसके विषय में पूछ-ताछ की। दूसरा पंडित बोला कि वह तो निरा बैल है। जब पहला पंडित बाहर से आया तो दूसरा पंडित बाहर चला गया । अब सेठ ने उससे बाहर गए हुए पंडित के विषय में पूछा तो उसने कहा कि भला उसे क्या आता जाता है ? वह तो बना बनाया ऊँट है । शाम को जब दोनों खाना खाने बैठे तो सेठ ने एक के सामने 'चारा' (ऊंटों के खाने के लिए मोठों की पत्ती, डंठल आदि) और दूसरे के सामने 'पाला' (झड़ बेरी की पत्ती) रख दिया । दोनों पंडितों को सेठ की यह हरकत बड़ी बुरी लगी तो सेठ ने एक पंडित की ओर इशारा करके दूसरे से कहा कि इन्होंने आप को ऊँट बतलाया था और आपने इनको बैल बतलाया था । अत: मैंने उपयुक्त खाना ही आप श्रीमानों को पेश किया है । सेठ की बात सुन कर दोनों पंडित लज्जित हो गए ।

● म्हां को गोलो होकर गाजर खा छै ?

एक ठाकुर ने गोले से पूछा कि तू क्या खा रहा है ? गोले ने उत्तर दिया कि गाजर खा रहा हूँ । तब ठाकुर ने रोब से कहा कि अरे हमारा गोला होकर भी तू गाजर (जैसी तुच्छ वस्तु) खा रहा है ? इस पर गोले ने उत्तर दिया कि गाजर भी कहाँ नसीब होती है ? यह तो मैंने गंडक

(कुत्ते) के मुंह से छीनी है। आप कहते हैं तो इसे कुएं में डाल देता हूँ। तब ठाकुर ने नम्र होकर कहा कि ला मुझे दे दे, मैं खा लूंगा यदि कुएँ में डालेगा तो मैं पहले कुएं में गिरूंगा।

● सुलफियाँ की बावड़ी

झुँझनूं में एक बार कुछ सुलफ़ेबाज़ एक बगीची में जमे हुए थे। नशे की झोंक में उन्होंने विचार किया कि यदि अमुक बावड़ी को यहाँ ले आयाजाए तो सदैव के लिए आराम हो जाए। ऐसा सोच कर वे बावड़ी लाने के लिए चल पड़े। जाते हुए उन्होंने रास्ते में देखा कि अमुक सेठ की हवेली का कोना बाधा देगा अतः इसे फोड़ देना चाहिए। ऐसा सोचकर वे उस कोने को तोड़ने लगे। सेठ ने आकर पूछा तो उन लोगों ने कहा कि हम बावड़ी ला रहे हैं, तुम्हारी हवेली का कोना अड़ेगा इसलिए इसे फोड़ते जाते हैं। तब सेठ ने नम्रता पूर्वक उनसे कहा कि आप इतनी मेह-नत व्यर्थ ही क्यों कर रहे हैं ? हवेली का कोना मैं अपने आदमियों से तुड़वा रहा हूँ। आप बावड़ी ले आइये। उन लोगों ने सेठ की बात मान ली और आगे चल पड़े। बावड़ी पर पहुँच कर उन्होंने अपनी पगड़ियों और साफों से बावड़ी को बाँध कर खींचना शुरू किया लेकिन बावड़ी टस से मस न हुई। पगड़ी और साफे सब खींच-खाँच में टूट गए और सुलफ़ेबाज़ों का नशा उतर गया।

● दो घड़ी को धामड़ कूटो, सारै दिन की सैल

एक माली के पास दो बैल थे। एक ख़ूब काम करता था और दूसरा बिल्कुल "पैल" (काम चोर) था। जब भी माली उसे जोतता, वह बीच में ही बैठ जाता और मारने पर भी नहीं उठता था। तब हारकर माली ने एक ही बैल से सारा काम करना शुरू कर दिया। उस बेचारे को अब जरा भी आराम नहीं मिलता था। एक दिन तंग आकर उसने अपने साथी बैल से पूछा :—

सुणरै भाई पैल, कियाँ छूटै गैल ?

तब पैल ने उत्तर दिया :—

दो घड़ी को धामड़ कूटो, सारै दिन की सैल ।

भाई पैल सुनो, जरा बतलाओ तो कि मेरा पीछा कैसे छूटे ? पैल ने उत्तर दिया कि यह तो बहुत आसान है। यदि काम नहीं करोगे तो माली दो घड़ी कूट पीट कर और परेशान हो कर तुम्हें छोड़ देगा । फिर चाहे दिन भर सैर करना ।

● हीरो अर पारस

एक मढ़ी में एक बाबाजी रहा करते थे। उनके दो चेले थे। एक दिन एक चेले का परोसा दूसरा खा गया। (परोसा—किसी के यहाँ से आया हुआ एक वक्त का भोजन) इस पर दूसरे ने उसके गले में पहनने वाले दो बड़े-बड़े तुलसी की जड़ के बने मनकों (हीरों) को छुपा दिया। शाम को दोनों मढ़ी में झगड़ रहे थे, एक ने कहा मेरा 'पारस' दे, दूसरे ने कहा कि मेरे 'हीरे' दे। उसी समय दो चोर वहाँ खड़े उनकी बातें सुन रहे थे। उन्होंने सोचा कि आज तो निहाल हो जाएँगे। हीरा और पारस दोनों यहाँ हैं। रात को वे मढ़ी में घुसे। उन्होंने बहुत ढूंढ़ा लेकिन 'पारस' उन्हें नहीं मिला। अलबत्ता दो हीरे उन्हें एक कपड़े में बँधे एक कोने में पड़े मिले। वे उन्हें ही लेकर भागे। सबेरे जब सूर्य के प्रकाश में उन्होंने उन हीरों को देखा तो दोनों अपने सिर पीटने लगे ।

● सूत्यां की पाडा जणै

दो आदमियों की भैंसें साथ-साथ ब्याने को हुईं। दोनों उनके ब्याने की बाट देख रहे थे। रात अधिक बीत गई तब एक ने कहा कि दोनों आदमियों के जागने से क्या लाभ ? एक आदमी सो जाए और जब भैंस ब्याने को हो तब दूसरे को जगा लिया जाए। यों कह कर एक आदमी सो गया और दूसरा जागता रहा। थोड़ी देर बाद दोनों भैंसें ब्या गईं। जो जाग रहा था उसकी भैंस ने 'पाडा' प्रसव किया और दूसरे की भैंस ने 'पाडी'। लेकिन

चूंकि पाडी की कीमत पाडे से अधिक होती है, इसलिए जागने वाले ने 'पाडी' को अपनी भैंस के साथ लगा दिया और 'पाडे' को दूसरी भैंस के पास खड़ा कर दिया। फिर उसने अपने साथी को जगाया कि भई! जल्दी से उठ, मेरी भी आँखें लग गई थीं। भैंसें तो ब्या गई हैं। जागने पर उस आदमी ने कहा कि 'पाडी' तो मेरी भैंस के अनुरूप लगती है। तब दूसरे ने कहा कि नहीं, तुम्हारी भैंस ने तो यह 'पाडा' ही जना है। दोनों में विवाद होने लगा इतने में एक तीसरा आदमी वहाँ आ गया और उसने दोनों की बातें सुनकर कहा कि भई, जो कुछ हो, "सूत्याँ की तो पाडा ही जणै।"

(जो सोएगा उसकी भैंस तो पाड़ा ही जनेगी अर्थात् जो सोएगा वह घाटे में ही रहेगा)

● चोर चोरी सें गयो, पण हेराफेरी तो करै

एक चोर किसी साधु के उपदेश से चोरी करना छोड़ कर उसका शिष्य बन गया। साधु के और भी बहुत से शिष्य थे, नया शिष्य उनके तूंबे और उनकी लँगोटियाँ इधर उधर कर दिया करता। इसकी तूंबी उसके पास और उसकी लँगोटी इसके पास। तब उन लोगों ने महन्त के पास शिकायत की। उन्होंने नये शिष्य को बुलाकर पूछा तो उसने कहा कि बाबाजी! मैं तो हेरा-फेरी करके ही संतोष कर लेता हूं, चोर चोरी से गया तो क्या हेराफेरी से भी गया?

● होगी' चाँदी

कुछ सुलफ़े बाज़ एक बगीची में बैठे दम लगा रहे थे। जब सुलफ़ा जल जाता तो एक कहता कि हो गई चाँदी। दूसरा कहता कि डाल दो घड़े में। इस प्रकार सुलफ़े की बनी राख को वे घड़े में डाल देते और 'खखार' (बलग़म) भी उसी में डालते। कुछ चोर उधर से गुज़रे तो उन्होंने सोचा कि यहाँ चाँदी बन रही है। अतः आज रात को यहीं भाग्य आजमाना चाहिए। सब सुलफ़े बाज़ चले गए तो अँधेरा होते ही वे बगीची में घुसे।

एक ने जैसे ही घड़े में हाथ डाला, उसका हाथ बलग़म और राख में लिपट गया। उसने सोचा कि भला यह कैसी चाँदी है? हाथ बाहर निकाल कर देखा तब सारी बात उनकी समझ में आई और वे अपने भाग्य को कोसते हुए वहाँ से चल पड़े।

● सींक डोबोजी

एक गाँव में एक 'सींक डोबोजी' थे। उनका यही काम था कि जब गाँव में कोई भी भोज होता तब 'सींक डोबोजी' घी परोसते। वे यह बतला दिया करते कि इस भोज में इतना घी लगेगा, और उतना घी एक बरतन में डालकर उनके सुपुर्द कर दिया जाता था। भोज में घी चुक न जाए इस बात की जिम्मेदारी 'सींक डोबोजी' पर रहती थी और जो घी बच जाता था उसे वे अपने घर ले जाते। बस यही उनकी तलब थी। इस काम पर उनका एकाधिकार था। 'सींक डोबोजी' मर गए तो गाँव के लोगों को चिंता हुई कि यह पद किसे दिया जाए? 'सींक डोबोजी' के एक लड़का था, लेकिन लोगों ने कहा कि उसे इतना अनुभव नहीं है, यदि कहीं भोज में घी चुक जाए तो बड़ी नामूसी हो जाए। तभी संयोग से गाँव में एक आदमी मर गया और उसके मृतक भोज की समस्या लोगों के सामने आ खड़ी हुई। उन्होंने तय किया कि एक बार तो स्वर्गीय 'सींक डोबोजी' के लड़के को ही यह पद दिया जाए और उसे बतला दिया जाए कि भोज में इतना सा घी लगेगा। फिर देखा जाएगा। भोज शुरू हुआ तो 'सींक डोबोजी' के लड़के ने घी का पात्र हाथ में ले लिया और उसमें एक तिनका (सींक) डाल लिया। हर जीमने वाले के सामने जाकर वह घी में तिनका डुबोकर उसे दिखला देता और कहता :—

"सींक डोबोजी मर गया देखो पंचो घी।"

और आगे बढ़ जाता। इस प्रकार सारा घी पात्र में बच गया और वह उसे अपने घर ले गया।

२

● डेढ़ छैल की नगरी में ढ़ाई छैल

एक राजा का कुँअर अपने घोड़े पर चढ़ा एक गाँव में से होकर निकला तो उसने देखा कि एक जाट की लड़की गोबर 'थाप' रही है (पाथ रही है) और तिल चवा रही है। कुँअर ने उससे जान बूझकर उलटे ढंग से पूछा :—

तिल थापणी, गोबर चाबणी, ईं गाँव को के नाँव ?

(तिल पाथने वाली और गोबर चबाने वाली, इस गाँव का नाम क्या है?)

लेकिन जाट की बेटी भी कुछ कम न थी, उसने भी उसी ढंग से उत्तर दिया:—

सेल चढ़्या घोड़ा फरकावणियाँ,
नाँव गाँव को ईंटेली।

(सेल पर चढ़े, घोड़े को फहरानेवाले, इस गाँव का नाम ईंटेली है।)

कुंअर उसकी बात सुनकर बड़ा नाराज हुआ। उसने जाट की बेटी से कहा कि मैं तुझे विवाह करते समय चौथे फेरे में छोडूंगा। जाट की बेटी ने भी जवाब दिया कि तू बड़ा डेढ़ छैल बना फिरता है, मैं भी तेरे जाये (तेरे बेटे) से तुझे सात जूत लगवाऊँगी।

राजकुमार चला गया और घर जाकर अनशन करके सो गया। जो कोई भी उससे पूछता राजकुमार उसे टाल देता। अन्त में राजा ने कुँअर के जिगरी दोस्त को उसके पास भेजा कि जाकर अनशन के कारण का पता लगाओ। राजकुमार ने अपने दोस्त से सारी बात कह दी। राजा ने जाट को बुलवाकर कह दिया कि तेरी लड़की का विवाह राजकुँअर से करना होगा। जाट ने हाँ भर ली। कुँअर ने चूंकि यह बात कह दी थी कि मैं चौथे फेरे में जाट की बेटी को छोड़ दूंगा अतः कोई भी बड़ा बूढ़ा उसके साथ जाने को तैयार नहीं हुआ। सब युवक ही युवक बारात में गए। जब तीन फेरे हो चुके तो राजकुमार जान बूझकर बेहोश हो गया। साथियों ने कहा कि कुँअर को मिरगी आ गई है, मिरगी दूर होने पर इन्हें फिर ले

आयेंगे। यों कहकर वे कुँअर को पालकी में लिटा कर ले गए। इधर जाट की बेटी ने कुँअर की कटारी अपने पास ले ली थी अतः उसने चौथा फेरा कटार से ले लिया। विवाह सम्पन्न हो गया।

जाट की बेटी ने सोचा कि राजा का बेटा तो अपनी बात पूरी कर गया, अब मैं किस प्रकार अपनी बात पूरी करूँ ? इसी चिन्ता में वह घुलने लगी। जाट ने बेटी से पूछा कि घर में किसी बात की कमी नहीं है, फिर तू क्यों घुली जा रही है ? बेटी ने कहा कि मैं तीर्थ-यात्रा के लिए जाना चाहती हूँ। जाट ने उसे काफी धन देकर तीर्थ-यात्रा के लिए भेज दिया। जाट की बेटी अब अपने पति के गाँव चली। राजा मर गया था अतः अब उसका पति ही राजा बन गया था। जाट की बेटी ने गूजरी (ग्वालिन) का वेष बनाया और उसन कुछ अच्छी नस्ल की गायें खरीद लीं। उसी राजा के गाँव में आकर उसने डेरा लगाया। एक गाय को वह अच्छे अच्छे मेवे चराती। मेवे चराने से उसका दूध भी उत्तम होता। उस दूध का दही जमाकर 'गूजरी' बनठन कर बाजार के चौराहे पर दही बेचने के लिए आ बैठी। जो भी आता गूजरी से दही का भाव पूछता, गूजरी दही का भाव सौ रुपये पाव बतलाती। इतना महँगा दही भला कौन खरीदता ? राजा का दोस्त उधर से गुजरा तो उसने भी दही का भाव पूछा। भाव सुनकर उसने सोचा कि दही में जरूर कोई विशेषता है। उसने सौ रुपये का पावभर दही लिया और राजा के महल में गया। राजा तब थाल पर बैठा ही था। दोस्त ने दही ले जाकर राजा को दिया। दही खाकर राजा की तबीअत फड़क उठी। राजा होने पर भी उसने ऐसा दही कभी नहीं चक्खा था। राजा ने दोस्त से पूछा तो दोस्त ने सारी बात राजा को बतला दी।

दूसरे दिन राजा स्वयं गूजरी के पास पहुँचा। गूजरी ने कहा कि आप मेरे डेरे पर पधारिये। राजा डेरे पर गया। गूजरी ने राजा को मोह लिया और वह वहीं रहने लगा। जब वह गर्भवती हो गई तो उसने राजा से कहा कि अब मैं जाऊँगी। राजा ने उसे रोकने की बहुत चेष्टा की लेकिन

वह बोली कि मैं फिर आऊँगी, आप मुझे भूल न जाएँ इसलिए मुझे कोई सहिदानी दे दीजिए। राजा ने अपनी अँगूठी निकाल कर गूजरी को दे दी। गूजरी अपने घर चली गई।

समय पाकर उसके एक लड़का हुआ जो दिन दूना और रात चौगुना बढ़ने लगा। चूंकि वह और लड़कों से होशियार था अत: वह दूसरे लड़कों को मार पीट दिया करता था। एक दिन उसने एक ब्राह्मण के लड़के को घोड़ा बनाया और खुद उस पर सवार हो गया। उसने 'घोड़े' को बुरी तरह पीट दिया। उसकी माँ जाट के घर गई और उसने जाट की बेटी से कहा कि छिनाल कहीं की, न जाने किसका लड़का लाई है जो सारे 'बास' के लड़कों को मारता पीटता है। लड़के ने भी यह बात सुनी। वह कटार लेकर अपनी माँ के पास गया और उससे बोला कि या तो मेरे पिता का नाम बतला अन्यथा तुझे मारूँगा। उसकी माँ ने कहा कि तू नाम पूछ कर क्या करेगा ? अगर तू अपने बाप को सात जूते मारने की प्रतिज्ञा करे तो मैं नाम बतला सकती हूँ। बेटे ने प्रतिज्ञा कर ली और तब उसकी माँ ने सारी बात उससे खोलकर कह दी। सारी बात सुनकर बेटे ने कहा कि माँ, भले ही मेरा बाप राजा है लेकिन मैं उसको सात जूते तुम्हारे नाम के और सात मेरे नाम के कुल चौदह जूते मारूँगा।

यों कहकर वह अपने पिता के नगर को चल पड़ा। नगर में आकर वह फूलाँ मालिन के घर ठहरा। फूलाँ ने पहले तो उसे टरकाना चाहा लेकिन जब उसने फूलाँ को एक सोने का टका दिया तो फूलाँ ने उसे खुशी-खुशी अपने यहाँ ठहरा लिया। रात को उसने सारे नगर में इश्तहार चिपका दिए—"डेढ़ छैल की नगरी में ढ़ाई छैल आयो है, ठगै गो ठगावैगो कोनी।" इश्तहार की चर्चा राजा के पास पहुँची तो राजा ने कहा कि अढ़ाई छैल को पकड़ना चाहिए। राजा ने होशियार 'मीणों' को यह काम सौंपा। अढ़ाई छैल ने अनजान बनकर फूलां से पूछा कि आज गाँव में क्या चर्चा है ? फूलाँ ने अढ़ाई छैल की बात बतलाई और साथ ही यह भी कहा कि आज उसे पकड़ने के लिए मीनें जायेंगे। अढ़ाई छैल ज्योतिषी का वेष बना-

कर उन मीनों के घर गया। घरों में केवल स्त्रियाँ ही थीं। ज्योतिषी ने पंचांग देखकर मीनों की स्त्रियों से कहा कि आज आधी रात पीछे तुम्हारे घरों में 'डाकी' आयेंगे और तुम सब को खा जायेंगे। इसके लिए यही उपाय है कि इस बात की चर्चा तो किसी से करना नहीं और तुम सब ईट, पत्थर, मूसल आदि लेकर बैठ जाना। जब वे आयेंगे तो यही कहेंगे कि—हम तुम्हारे घर के हैं लेकिन उनका विश्वास न करना। ईंट, पत्थर आदि से उन्हें मार देना। यों उनको पट्टी पढ़ाकर ज्योतिषीजी चले गए और स्त्रियों ने उनके कहे मुताबिक सारी तैयारी कर ली।

रात को मीने अढ़ाई छैल को पकड़ने निकले। इधर अढ़ाई छैल ने नाई का वेष बनाया और छैनी हाथ में लेकर निकल पड़ा। वह इधर-उधर देखता जाता था। मीनों ने उसे टोका तो 'नाई' ने कहा कि तुम अपना काम करो, मेरे काम में बाधा क्यों डालते हो ? मैं अढ़ाई छैल की हजामत बनाने जा रहा हूँ। मीनों ने उत्सुकता से पूछा कि अढ़ाई छैल कहाँ है तो 'नाई' ने कहा कि वह गाँव के बाहर तालाब पर आयेगा। मीने उसके साथ तालाब पर गये। नाई ने कहा कि तुम्हें देखकर अढ़ाई छैल यहाँ नहीं आयेगा अतः मैं तुम्हारे सिर के बाल मूंड देता हूँ, फिर तुम पानी में खड़े रहना। यदि तुम्हारे काले काले सिर पानी में दिखलाई पड़ेंगे तो अढ़ाई छैल को संदेह हो जाएगा और बाल मुँडा देने से उसे वहम नहीं होगा। मीने बाल मुँडाने के लिए राजी हो गए। 'नाई' ने भी बिना धार वाले उस्तरे से उन्हें मूंडना शुरू कर दिया। उनके सिरों में जगह जगह खून निकल आया, कटे स्थानों पर 'नाई' जान बूझकर नमक मिला पानी लगाता था। उन्हें बड़ी तकलीफ होती थी लेकिन अढ़ाई छैल को पकड़ने के लालच में उन्होंने सारी तकलीफ सहन कर ली। बाल मुँड़वाने के बाद मीने तालाब में गर्दन तक पानी में खड़े होकर अढ़ाई छैल की प्रतीक्षा करने लगे। इधर 'नाई' उनके सारे कपड़े लत्ते लेकर चंपत हो गया। जब दो बज गए और अढ़ाई छैल नहीं आया तो मीनों ने जान लिया कि वह 'नाई' ही अढ़ाई छैल था। तब वे ठिठुरते हुए तालाब से बाहर निकले, लेकिन कपड़े तो नाई ले गया

था अतः नंगे ही घरों को चले। उधर उनकी देवियाँ तैयार बैठी थीं। उन्हें देखते ही सब एक साथ बोलीं कि बेचारा ज्योतिषी सच कहता था, वे देखो सामने डाकी आ रहे हैं। वे सब उन पर ईंट-पत्थर बरसाने लगीं। वे चिल्लाते रहे कि हम तुम्हारे घर वाले हैं पर उनकी एक नहीं सुनी गई। लेकिन जब उजाला हुआ और सारा भेद खुला तो औरतें पछताने लगीं और अपने खसमों को उठा उठाकर घरों में ले गईं।

जब सवेरे राजाजी को रात की हकीकत मालूम हुई तो उन्होंने खिसियाकर कोतवाल को यह काम सौंपा। 'अढ़ाई छैल' ने फूलां से सारी बात मालूम कर ली। रात को अढ़ाई छैल एक बुढ़िया का वेष बनाकर एक सूने मकान में चक्की चलाने लगा। कोतवाल गश्त लगाता हुआ उधर से निकला तो उसने बुढ़िया से पूछा कि तू यहाँ इस वक्त क्या कर रही है? 'बुढ़िया' बोली कि हुजूर, मैं अढ़ाई छैल के घोड़े के लिए दाना दल रही हूँ। थोड़ी दर में अढ़ाई छैल यहाँ आयेगा। कोतवाल ने कहा कि बुढ़िया, तू अपने घर जा, मैं यहाँ बैठूंगा। कोतवाल ने बुढ़िया के कपड़े पहिन लिए और स्वयं बुढ़िया का वेष बनाकर दाना दलने लगा। बुढ़िया रूपी अढ़ाई छैल कोतवाल के कपड़े लेकर वहाँ से खिसक गया। जब रात बीत चली और अढ़ाई छैल नहीं आया तो कोतवाल की समझ में यह बात आ गई कि अढ़ाई छैल तो वही था। कोतवाल लुकता छिपता अपने घर गया।

कोतवाल की आप बीती सुनकर राजा ने फौजदार को बुलवाकर उसे यह काम सौंपा। उधर अढ़ाई छैल ने फूलाँ से सारी बात मालूम कर ली। फूलाँ ने उसे यह भी बतला दिया कि फौजदार का दामाद बारह वर्षों से लापता है और फौजदारकी बेटी अपने बाप के यहाँ ही रहती है। अढ़ाई छैल ने और भी सब आवश्यक बातें फूलाँ से पूछ लीं। फिर वह काशी के ज्योतिषी का वेष बना कर फौजदार के घर गया। फौजदार ने ज्योतिषी के सामने अपना दुखड़ा रोया कि मेरा दामाद आज बारह वर्ष से लापता है। ज्योतिषीजी ने पत्रा देखा और फौजदार से कहा कि आज रात को तुम्हारा दामाद आ जाएगा। इतने वर्षों में वह तुम्हारा घर भूल सकता है अतः तुम आठ और

नौ बजे के बीच अपने घर के बाहर बैठे रहना। वह इसी दरमियान तुम्हारे घर के आगे से गुजरेगा। फौजदार ने ज्योतिषी को अच्छी भेंट देकर विदा किया। रात को अढ़ाई छैल ने एक व्यापारी का वेष बनाया। उसने कई तरह का सामान एक बैल पर लाद लिया और रात के नौ बजे वह फौजदार के घर के आगे से गुजरा। फौजदार ने जाना कि यही मेरा दामाद हो सकता है। उसने बैल वाले को वहीं रोक लिया। साधारण पूछताछ के बाद उसे यकीन हो गया कि यही मेरा दामाद है। वह गलबाँही डालकर अपने दामाद से मिला। उसने भी पूरा अभिनय किया। घर में सबको यह विश्वास हो गया कि यह जँवाई ही है। घर में दामाद का बहुत आदर सत्कार हुआ तथा बहुत रात गये तक जँवाई के गीत गाये गये। आधी रात को जँवाईजी सोने के लिए गये। जब फौजदार की बेटी सो गई तो 'अढ़ाई छैल' ने उस के सारे गहने उतार लिए और फिर वह चुपके से रफू-चक्कर हो गया। सबेरे जब फौजदार को सारी बातें मालूम हुईं तो उसने सिर पीट लिया। लड़की का धन और उसकी इज्जत लूटकर अढ़ाई छैल उसे बुद्धू बना गया था। उधर अढ़ाई छैल को न पकड़ सकने के कारण वह राजा का कोप-भाजन भी बन गया।

अन्त में राजा ने स्वयं अढ़ाई छैल को पकड़ने का निश्चय किया। उसने नगर के चारों दरवाजे बन्द करवा दिये। एक दरवाजे पर उसने 'काठ' रखवा दिया और स्वयं नगर का पहरा देने लगा। करीब आधी रात को एक युवती राजा के सामने से गुजरी। युवती पूर्ण श्रृंगार किये थी और हाथ में पूजा की थाली लिए हुए थी। थाली में दीपक जल रहा था और थाली चलनी से ढकी थी। राजा ने टोका, कौन है ? युवती ने निर्भीक भाव से उत्तर दिया कि मैं फौजदार की बेटी हूँ। राजा ने फिर पूछा कि यहाँ आधी रात को किस लिए आई है बेटी ? इस पर युवती ने कुछ लजाकर कहा कि बापजी, आपको तो यह पता ही है कि कल रात अढ़ाई छैल मेरा धर्म भ्रष्ट कर गया। अब मैं कहीं की नहीं रही, अतः पास ही के भैरव मन्दिर में फिर से पवित्र बनने के लिए जा रही हूँ। भैरव की कृपा से मेरा

कलंक दूर हो जाएगा । युवती चली गई और थोड़ी देर बाद ही राजा के पास लौट आई । साधारण बातचीत के बाद उसने राजा से पूछा कि बापजी, यह क्या रखा है ? राजा ने कहा कि बेटी, यह 'काठ' है । इसमें अपराधियों को पकड़ कर कस दिया जाता है । आज दुष्ट अढ़ाई छैल को पकड़ कर इसमें कसूंगा । युवती ने कहा कि बापजी, यह तो मैंने आज ही देखा है, भला मैं भी दखूं कि इसमें अपराधी कैसे जड़ा जाता है ? राजा ने अपना एक पैर काठ में रखा और बोला कि देख इस तरह एक पैर इस छेद में डाल दिया जाता है और दूसरा पैर तीन छेद छोड़कर चौथे छेद में । फिर इस काठ को बन्द करके ताला लगा दिया जाता है युवती ने कहा कि बापजी, मुझे काठ में जड़कर दिखलाइये । राजा ने कहा कि बेटी, तुझे काठ में क्या जडूंगा, ले मैं स्वयं ही काठ में जड़ा जाकर तुझे दिखला देता हूँ । राजा युवती के हाथों काठ में बन्द हो गया । तब 'युवती' ने अपना जूता निकाल कर राजा को सात जूते मारे और बोली कि ये सात जूते तो मेरी माँ के नाम के हैं और ये सात जूते मेरे नाम के हैं । यों कहकर उसने राजा को सात जूते और लगा दिए । फिर राजा को उसी हालत में छोड़कर स्वयं नौ दो ग्यारह हो गया । राजा जी की बड़ी दुर्दशा हुई । सबेरे लोगों ने उन्हें काठ में से निकाला ।

दूसरे दिन राजा ने घोषणा करवादी कि अढ़ाई छैल के सात गुनाह माफ हैं । वह दरबार में हाजिर हो, उसे भरपूर इनाम दिया जाएगा । अढ़ाई छैल दरबार में हाजिर हो गया । राजा ने उससे जूते मारने का कारण पूछा तो उसने पीछे की सारी घटना बतलाई । राजा ने कहा कि मैंने उससे विवाह किया ही नहीं था तो लड़का बोला कि आपकी कटार से फेरे पूरे किये गए थे तथा मेरे जन्म की कहानी आपकी यह अँगूठी कहेगी । राजा को सारी बातें याद हो आईं । उसने अढ़ाई छैल को अपना बेटा घोषित कर दिया और उसकी माँ को बुलवाकर अपनी रानी बना ली ।

● खोटी बहू

एक गांव में एक ब्राह्मण रहता था । उसकी स्त्री कर्कशा थी और

इसी कारण वह कमाने के लिए दिसावर नहीं जाता था क्योंकि उसे आशंका थी कि मेरी स्त्री मेरे पीछे से माँ को सतायेगी। स्त्री अपने पति से कहती कि तुम दिसावर जाओ, लेकिन वह टालता रहता। आखिर उसने अपनी स्त्री से कहा कि यदि तुम मेरी माँ को अपने बच्चों की तरह ही रखो तो मैं दिसावर जा सकता हूँ। स्त्री ने कहा कि तुम जैसा कहते हो मैं वैसा ही करूँगी। पति दिसावर चला गया तो स्त्री ने अपनी सास को भी बच्चों की तरह ही रखना शुरू कर दिया। बच्चों का मुंडन हुआ तो बहू ने सास का भी मुंडन करवा दिया। उसने सास को बच्चों का जाँघिया पहना दिया, उसके कानों में बालियाँ डाल दीं और गले में कौडी बाँध दी। अब उसकी सास भी बच्चों के साथ ही गली में खेलने जाती।

जब ब्राह्मण दिसावर से घर आया तो उसने अपनी स्त्री से पूछा कि माँ कहाँ है ? स्त्री ने कहा कि बच्चों के साथ गली में खेल रही होगी, अभी बुलाती हूँ, यों कहकर उसने आवाज लगाई––

कान कुड़कली गल़ कोडी।
तेरो पूत बुलावै घर आ मोडी॥

जब वह घर आई तो माँ की हालत देखकर बेटा अवाक् रह गया।

● पूलासर को पूलजी

चमारों के यहाँ विवाह था, सभी पंच जमा हुए। पंचों ने जितना कहा उतना 'आदण' (चावल) राँधने के लिए चढ़ा दिया गया, लेकिन कुछ लोग इससे संतुष्ट नहीं हुए। उनका कहना था कि पूलासर के पूलजी पंच की सलाह नहीं ली गई, यह हम सबका तथा स्वयं पंच का अपमान है। हम विवाह में शामिल नहीं होंगे। निदान पूलजी पंच को बुलवाया गया, पूलजी बेचारा बड़े असमंजस में पड़ गया। उसे कुछ भी पता नहीं था कि 'आदण' कितना कमती बढ़ती किया जाए। अन्त में उसने निर्णय दिया कि इसमें दो 'करुड़ी' (मिट्टी का एक छोटा पात्र) डाल दो और दो 'करुड़ी' निकाल लो। पूलजी का फैसला सुनकर असंतुष्ट लोग खुशी के

मारे नाच नाच कर कहने लगे कि फैसला हो तो ऐसा हो, हम कहते थे न कि पूलजी बड़ा सयाना पंच है। अब भोज में खाना कमती बढ़ती हरगिज नहीं हो सकेगा।

● चिड़ी अर कागलो

एक कौवे और एक चिड़ी न सीर (साझे) में खेती की। चिड़ी खेत में गई लेकिन कौवा इधर उधर हो गया। चिड़ी ने कौवे को आवाज दी कि आओ खेत में हल चलाएँ। लेकिन कौवे ने उत्तर दिया:—

आऊं छूं जी आऊं छूं, आमलिया गटकावूं छूं।
काचा पाका तेरै बेई भी ल्याऊं छूं॥

बेचारी चिड़ी ने अकेले ही सारा खेत जोता।

फिर चिड़ी ने कौवे को पुकारा कि आओ खेत में 'निनाण' करें, लेकिन कौवे ने फिर वही बात कही:—

आऊं छूं जी आऊं छूं, आमलिया गटकावूं छूं,
काचा पाका, तेरै बेई भी ल्याऊं छूं।

चिड़ी ने अकेले ही सारा 'निनाण' किया। जब खेती पक गई तो चिड़ी ने कौवे को फिर पुकारा कि आओ 'सिट्टी' तोड़ें लेकिन कौवे ने फिर वही बात कह दी। चिड़ी ने 'खला' निकालते वक्त फिर कौवे को पुकारा लेकिन कौवे ने वही बात कह कर टाल दिया। चिड़ी ने सारा अनाज निकाला। उसने बाजरा अलग किया और तूंतड़े (भूसी) अलग करके उनका एक ढेर लगा दिया। बाजरे का ढेर छोटा था और 'तूंतड़ों' का ढेर काफी बड़ा था। चिड़ी ने थोड़ा बाजरा 'तूंतड़ों' के ढेर पर छिड़क दिया और तब उसने कौवे को पुकारा कि आकर अपना हिस्सा ले लो। अब कौवा बड़ी उतावली से आया। चिड़ी ने कौवे से पूछा कि तुम कौन सा ढेर लोगे? कौवे ने देखा कि एक ढेर बहुत बड़ा है और दूसरा बहुत छोटा। उसने कहा कि मैं तो बड़ा ढेर लूँगा। कौवे ने बड़ा ढेर ले लिया और चिड़ी ने छोटा। उनके पास एक गाय और एक बैल भी थे। कौवे ने कहा कि मेरे से गाय का झंझट

नहीं होगा, मैं तो अपन बैल पर चढ़ा फिरूँगा। यों कहकर उसने बैल ले लिया और गाय चिड़ी के हिस्से में आ गई। चिड़ी अब गाय के दूध में खीर बनाकर खावे और मौज करे, उधर कौवे ने बाजरे के दाने तो चुग लिए अब उसके पास केवल तूंतड़ों का ढेर रह गया। लाचार अब कौवा 'तूंतड़ों' को बैल के मूत में भिगोवे और खावे।

● सेठाणी को गीत

एक सेठ दिसावर जाने लगा तो उसकी सेठानी ने कहा कि मेरे लिए दिसावरी गीत लाना। सेठ बारह महीने दिसावर रहकर घर लौटने लगा तो उसे गीतों की बात याद आई। सेठ ने सारा नगर छान मारा लेकिन कहीं दिसावरी गीत नहीं मिले। अन्त में वह बिना गीत खरीदे ही घर को चल पड़ा। जब वह लौट रहा था तो एक खेत की मेंड पर बैठकर सुस्ताने लगा। खेत वाले ने सेठ से पूछा कि इतने उदास क्यों हो? सेठ ने कहा कि सेठानी ने दिसावरी गीत मँगवाये थे लेकिन कहीं मिले नहीं, वह जाते ही गीत माँगेगी तो उसे क्या दूँगा? खेत वाले ने कहा कि मेरे साथ खेत में आओ, मैं तुम्हें गीत दूँगा। सेठ उसके साथ हो लिया। थोड़ी दूर पर एक चूहा अपना बिल खोद रहा था, खेत वाला बोला "खोदै खरर खरर" दोनों आदमियों को खड़ा देखकर चूहा कुछ इधर उधर चलने लगा। इस बात को देखकर खेत वाला बोला "चालै सरर सरर"। चूहा आँखें मटका कर उन्हें देखने लगा तो वह फिर बोला, "देखै डुगग मुगग," अब तो चूहा छलाँग लगाकर भाग गया। इस पर खेत वाला फिर बोला, "कूदै लांग–फलाँग" गीत पूरा बन गया।

खोदै खरर खरर।
चालै सरर सरर॥
देखै डुगग मुगग।
कूदै लाँग फलाँग॥

अब सेठ खुशी खुशी घर आया और उसने सेठानी को गीत सुना

दिया। सेठानी भी बड़ी प्रसन्न हुई। दिन में तो गीत याद करने का उसे समय नहीं मिला। रात को वह गीत याद करने लगी :—

खोदै खरर खरर

संयोग से उसी वक्त सेठ का एक पड़ोसी उसके घर में चोरी करने के लिए सेंध लगा रहा था। पड़ोसी ने सोचा कि सेठानी ने मुझे देख लिया है अतः वह ओट में छिपने के लिए चला, तभी सेठानी बोली:—'चालै सरर सरर' अब चोर भागने के लिए इधर उधर ताकने लगा, इतने में सेठानी फिर बोली, 'देखै डुगग मुगग' अब तो चोर का सब्र खत्म हो गया और वह सिर पर पाँव रख कर भागा तो सेठानी बोल उठी—'कूदै लाँग फलाँग'। चोर को निश्चय हो गया कि सेठानी ने मुझे देख लिया है और सेठ सबेरे ही मुझे राजा के पास दंड दिलवाएगा। वह घबड़ाया हुआ सेठ के पास आया और अपने अपराध के लिए उससे क्षमा मांगने लगा। पड़ोसी के द्वारा सारी बात सुनकर सेठ सेठानी को हँसी आ गई।

● राजा और नाई

एक राजा को कविता का बड़ा शौक था। साधारण कविता पर भी वह भरपूर इनाम दिया करता था। एक दिन एक ब्राह्मणी ने अपने ब्राह्मण से कहा कि तुम भी कोई कविता सुनाकर राजा से द्रव्य लाओ ताकि घर का काम चले। ब्राह्मण बोला कि मैं तो कुछ जानता नहीं, राजा को क्या सुनाऊँगा ? ब्राह्मणी बोली कि रास्ते में जो कुछ देखो वही जोड़ जाड़कर सुना देना। ब्राह्मण चला। रास्ते में उसने देखा कि एक कौआ तालाब की पाल पर बैठा है, वह चोंच में पानी भरता है और अपनी चोंच को पत्थर पर घिस घिस कर तेज करता है। कौआ बार बार इसी क्रिया को दुहरा रहा था। ब्राह्मण ने तुक मिलाई :—

घसै घसै अर फेर घसै, घस घस गेरै पाणी।
तेरै मन की बात काल़ूड़ा, सारी ही म्है जाणी॥

राजा ने कविता सुनी और ब्राह्मण को इनाम देकर विदा कर दिया।

राजा का मंत्री राजा को मार कर स्वयं राज-पाट हथियाना चाहता था। इस काम के लिए उसने राजा के कालू नामक नाई को लालच देकर अपनी ओर मिलाया। मन्त्री ने योजना बनाई कि कालू जब दूसरे दिन राजा की हजामत बनाने जाए तो उस्तरे से राजा का गला काट डाले। दूसरे दिन नाई गया लेकिन उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी। वह बार बार सिल्ली पर पानी डालकर उस्तरे को घिस रहा था। यह देखकर राजा को पहले दिन वाली कविता याद आ गई, वह बोल पड़ा :—

घसै घसै अर फेर घसै, घस घस गेरै पाणी।
तेरै मन की बात कालूड़ा, सारी ही म्हे जाणी॥

राजा के मुँह से यह बात सुनते ही नाई सुन्न हो गया। उसने राजा के पैर पकड़ लिए और गिड़ गिड़ा कर बोला कि मन्त्री जी ने मुझे यह जघन्य कार्य करने के लिए कहा था। राजा ने सारी बात जान ली। उसने नाई को माफ कर दिया और मन्त्री को फाँसी पर चढ़वा दिया। फिर उसने ब्राह्मण को बुलाकर भारी पुरस्कार दिया।

● राजा और हंस

एक बहेलिया नित्य जंगल में शिकार करने के लिए जाया करता था। एक दिन जंगल में एक हंस और हंसनी (हंसी) को उसने अपने तीर का निशाना बनाना चाहा। हंस-हंसी ने कहा कि तुम हमें मत मारो। हम तुम्हें दो मोती नित्य दे दिया करेंगे। बहेलिया मान गया और मोती लेकर घर आ गया। वह नित्य दो मोती ले आता और उन्हें बेच देता। कुछ ही दिनों में उसके पास काफी रुपये जमा हो गए। पड़ोसिन ने बहेलिये की बदलती दशा देखी तो उसे बड़ी डाह हुई। उसने बहेलिये की स्त्री से सारी बात का पता लगा लिया। बहेलिये के कोई सन्तान न थी इससे बहेलिया और उसकी स्त्री बड़े दुखी रहते थे। पड़ोसिन ने बहेलिये की स्त्री से कहा कि यदि तू हंस का मांस खा ले तो तेरे निश्चय ही पुत्र उत्पन्न होगा। बहेलिये की स्त्री ने अपने पति से हंस का मांस लाने के लिए कहा। स्त्री के कहने पर

बहेलिये ने दूसरे दिन जंगल में जाकर हंसों को मारना चाहा। हंसों ने बहुत प्रार्थना की लेकिन वह नहीं माना। हंसों ने कहा कि हम तुम्हें बहुत मोती देंगे लेकिन बहेलिया नहीं माना। संयोग से उसी वक्त वहाँ शिकार खेलता हुआ राजा भी आ पहुँचा। हंसों की करुण पुकार सुनकर राजा ने बहेलिये से कहा कि या तो इन्हें छोड़ दे अन्यथा मैं तुझे अभी जान से मार डालूँगा। बहेलिया डर गया और उसने हंसों को छोड़ दिया।

राजा हंसों के जोड़े को अपने महल में ले आया और वहीं उन्हें नित्य मोती चुगाने लगा। अब हंस-हंसी वहां निर्भय होकर आनन्द पूर्वक रहने लगे। जब वहाँ रहते रहते उन्हें बहुत दिन हो गए तो एक दिन हंस ने हंसी से कहा कि राजा ने हमारा बड़ा उपकार किया है, इसका बदला चुकाना चाहिए। यों कहकर हंस राजा के पास जाकर बोला कि महाराज, समुद्र पार के उस देश की राजकुमारी अनिंद्य सुन्दरी है, आप मेरे ऊपर चढ़कर वहाँ चलें। राजा जाने लगा तो रानी बोली कि आप कब तक लौटेंगे ? राजा ने कहा कि मैं सावन की तीज तक अवश्य आ जाऊँगा। रानी ने कहा कि सावन की तीज तक मैं तुम्हारी राह देखूँगी, यदि तुम तब तक नहीं आये तो मैं चिता में जल मरूँगी।

राजा हंस पर सवार होकर राजकुमारी के नगर में पहुँचा। राज-कुमारी के रूप को देखकर राजा मोहित हो गया। उधर राजकुमारी ने भी राजा से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। दोनों का विवाह हो गया और दोनों हंस पर सवार होकर लौट पड़े। समद्र के इस पार आने पर राज-कुमारी ने राजा से कहा कि महाराज, मैं अपनी माँ का दिया हुआ नौ-लखा हार वहीं भूल आई हूँ, सो मुझे हार लाने के लिए वापिस जाने की आज्ञा प्रदान करें।

राजा ने कहा कि मैं तुझे और बहुतेरे हार बनवा दूँगा लेकिन राज-कुमारी ने हठ पकड़ लिया। हंस ने राजा से कहा कि मैं समुद्र लाँघने से थक गया हूँ अतः दोनों को साथ नहीं ले जा सकूंगा, आप यहीं ठहरें, मैं राज-कुमारी को लेकर जाता हूँ। राजकुमारी हंस पर बैठकर चली गई। अपन

महल में पहुँच कर राजकुमारी ने हंस को एक जगह बैठ जाने की आज्ञा दी और स्वयं हार ढूँढ़ने में लग गई। महल में दीपक जल रहा था, दीपक का मौर हंस की पाँखों पर गिरा और हंस जल गया। हार ढूँढ़ कर राजकुमारी हंस के पास आई तो हंस को जला देखकर अवाक् रह गई। वह उदास हो कर हंस के पास ही बैठ गई।

उधर राजा समुद्र के परले पार हंस की बाट देख रहा था। ज्यों ज्यों विलम्ब होता जा रहा था त्यों त्यों राजा की व्याकुलता भी बढ़ती जा रही थी। कई दिन बीत गये और हंस नहीं आया तो राजा ने समुद्र में डूब जाने की मन में ठान ली। उसी रात को राजा ने एक वृक्ष पर चकवा-चकवी को आपस में बातें करते हुए सुना। चकवी बोली "ओ चकवा, कहनी बात, कटैनी रात।" चकवा बोला कि घरबीती कहूँ या परबीती? चकवी ने उत्तर दिया कि घर बीती तो सदा ही कहते हो, आज तो पर बीती ही कहो। इस पर चकवा बोला कि मैं बीट करता हूँ। यदि कोई सुनता गिनता हो और मेरी बीट को ऊपर की ऊपर लेकर अपने शरीर में मलकर समुद्र में घुसे तो समुद्र का पानी फट जाए और वह आसानी से समुद्र को पार कर जाए। इस पर चकवी बोली कि यदि कोई मेरी बीट को मृत प्राणी पर पानी में घोलकर छिड़क दे तो वह तुरन्त जिन्दा हो जाए। यों कह कर दोनों ने बीट डाली तो राजा ने ऊपर की ऊपर ले ली। चकवी की बीट उसने अपने पास रखली और चकवे की बीट को शरीर में मलकर पानी में उतर गया। समुद्र का पानी फटता गया और राजा समुद्र के पार पहुँच गया। समुद्र पार कर के वह राजकुमारी के महल में गया। राजकुमारी तब भी हंस के पास ही बैठी थी। राजा ने राजकुमारी से सारी बात जान कर चकवी की बीट पानी में घोलकर हंस पर छिड़क दी। हंस पंख फड़ फड़ाकर उठ बैठा। अब राजा रानी फिर हंस पर सवार होकर उड़ चले। समुद्र के इस किनारे आये तो राजा ने देखा कि लड़कियां सावन की तीज के गीत गा रही हैं। राजा को तुरन्त ध्यान आया कि यदि आज अपने नगर में नहीं पहुँचूँगा तो रानी सती हो जाएगी। हंस ने कहा कि मैं दोनों को लेकर तो इतनी जल्दी वहां

नहीं पहुँच सकूंगा, हाँ, आप मुझे एक चिट्ठी लिख दीजिए तो मैं आपका संदेश रानी तक पहुँचा दूँगा। राजा ने रानी के नाम चिट्ठी लिखी कि मैं शीघ्र आ रहा हूँ तुम सती मत होना। हंस चिट्ठी लेकर उड़ा।

उधर रानी जलने के लिए चिता में बैठी थी और चिता में अग्नि लगाई ही जा रही थी कि हंस ने राजा की चिट्ठी ले जाकर रानी की गोद में गिरा दी। रानी ने चिट्ठी उठा कर पढ़ी, राजा का सन्देश पाकर वह चिता से बाहर आ गई। लोग कहने लगे कि ढोंग करना आसान है, जलना आसान नहीं है। तब रानी ने सबको राजा की चिट्ठी दिखला दी। सारे लोग मान गए।

उधर हंस चिट्ठी गिरा कर फिर उड़ गया और राजा और राजकुमारी को ले आया। राजा और नई रानी को देख कर सारी प्रजा आनन्द उत्सव मनाने लगी।

तब हंस ने राजा से कहा कि महाराज, आपने हमारे प्राण बचाये थे तथा आपने हमको बहुत सुख पूर्वक यहाँ रखा, लेकिन हम जंगल के जीव हैं सो एक जगह बंद होकर रहना नहीं चाहते। हमने आपका बदला चुका दिया है और अब हम जा रहे हैं। यों कह कर हंस और हंसी आकाश में उड़ गए।

● सादूलै बेटै नैं के भावै ?

एक गीदड़ की स्त्री गर्भवती थी। उसने गीदड़ से कहा कि मेरे अभी प्रसव होगा अतः किसी उपयुक्त स्थान की तलाश करो। गीदड़ ने कहा कि यहाँ आस पास तो कोई ऐसा स्थान नहीं है। हाँ, वह शेर की माँद खाली पड़ी है। उसी में चल कर प्रसव कर ले, जब सिंह आयेगा तब देखा जाएगा। दोनों शेर की माँद में चले गए और गीदड़ की स्त्री ने एक बच्चा जन दिया। थोड़ी ही देर में उन्हें सिंह आता दिखलाई दिया। जब वह गुफा के नजदीक आ गया तो गीदड़ ने आवाज बदल कर अपनी स्त्री से पूछा कि हे पाटमहिषी, 'सादूला' बेटा खाने के लिए क्या माँगता है? (सादूलै बेटै नैं के भावै?) गीदड़ की स्त्री ने भी उसी लहजे में जवाब दिया कि महाराजा-

धिराज, 'सार्दूला' कुंअर सिंह का माँस माँगता है। इस पर गीदड़ बोला कि तुम थोड़ी देर चुप रहो, सिंह अभी यहाँ आ रहा है,आवाज सुन कर भाग जाएगा। सिंह के आते ही उसका शिकार करूँगा।

गुफा में हो रहे संवाद को सुनकर सिंह डर कर भाग गया। थोडी देर में वह फिर आया तो गीदड़-दंपती ने फिर उसी युक्ति से काम लिया। सिंह फिर भाग गया। माँद को छोड़कर सिंह वन में मारा-मारा भटकने लगा। वन के अन्य पशुओं ने सिंह की व्याकुलता जान कर सिंह के सामने सारी बात खोल कर कह दी। गीदड़ गीदड़ी की इस हिमाकत पर सिंह बड़ा क्रोधित हुआ और उनका काम तमाम करने के लिए वह अपनी माँद की ओर भागा। लेकिन, उसी जगह वृक्ष पर एक कौआ बैठा था जो गीदड़ का दोस्त था। वह शीघ्रता से उड़कर गीदड़ के पास आया और बोला कि तुम्हारी पोल खुल गई है, सिंह क्रोध में भरा इधर भागा आ रहा है, अपनी जान की खैर चाहो तो यहाँ से निकल भागो। इतना सुनते ही राजाधिराज गीदड़राज और उनकी पाटमहिषी 'सादूल कुंअर' को वहीं गुफा में छोड़ कर भाग गये।

● बैर बदळो

एक ठाकुर युद्ध में जाने लगा तो उसने अपने मित्र से कहा कि मैं युद्ध में जा रहा हूँ, यदि मैं युद्ध में मारा जाऊँ तो अमुक स्थान पर मेरे पाँच हजार रुपये गड़े हुए हैं सो ले जाकर मेरी स्त्री और बच्चों को दे देना। मित्र ने ठाकुर को विश्वास दिलाया कि वह ऐसा ही करेगा। ठाकुर युद्ध में चला गया, लेकिन इस बार उसकी विश्वसनीय घोड़ी ने उसे धोखा दे दिया। रणक्षेत्र में घोड़ी ऐसी अड़ गई कि ठाकुर के लाख चेष्टा करने पर भी वह टस से मस न हुई। ठाकुर युद्ध में मारा गया।

जब ठाकुर के मित्र को इस बात का पता चला तो उसने ठाकुर के बताये हुए पाँच हजार रुपये स्वयं रख लिये। वही ठाकुर अपने मित्र के यहाँ पुत्र बनकर जन्मा। बहुत वर्षों बाद, पुत्र का मुंह देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। लड़का बड़ा हुआ और उसका विवाह कर दिया गया, बहू घर में

आ गई। लेकिन विवाह होने के बाद ही लड़का बीमार हो गया। उसके बाप ने उसे बचाने का भरसक यत्न किया, लेकिन उसकी बीमारी बढ़ती ही गई और वह मरणासन्न हो गया। उसका बाप रोने लगा तो बेटे ने कहा कि अब क्यों रोता है? मैं वही ठाकुर हूँ जिसके पाँच हजार रुपये तूने मार लिये थे। जितने रुपये तूने मेरी बीमारी पर लगा दिये हैं उतने छोड़कर शेष रुपये मेरे बच्चों को भेज दे, अन्यथा फिर अगले जन्म में तुझसे शेष रुपये वसूल करूँगा। तब उसके बाप ने कहा कि मैंने तो तुम्हारे रुपये मारे थे, लेकिन इस बेचारी बहू ने तेरा क्या बिगाड़ा था जो इसे यों दुःख देकर जा रहा है। तब लड़का बोला कि यह इसी काबिल है, यह दुष्टा मेरे पिछले जन्म में घोड़ी थी और इसने युद्धक्षेत्र में मुझे जानबूझ कर मरवाया था, इसलिए इसे भी यह दंड भोगना ही पड़ेगा। यों कह कर लड़के ने दम तोड़ दिया।

● अब क्युं रोवै ?

एक पंडित बड़ा ज्ञानी था। बड़ी उम्र में जाकर उसके एक लड़का हुआ। पंडित ने अपने ज्ञान के बल से जान लिया कि मैं इस लड़के के पूर्व जन्म के एक लाख रुपये माँगता हूँ। लड़का अपना ऋण चुकाने आया है, वह जिस दिन यह ऋण चुका देगा उसी दिन चला जाएगा (मर जाएगा)।

पंडित का राज-दरबार में बहुत मान था, वह राज-पंडित था। उसने अपनी स्त्री को समझा दिया था कि मेरी अनुपस्थिति में लड़के को कहीं मत जाने देना और राज-सभा में तो कदापि न जाने देना।

एक दिन राजा ने किसी आवश्यक काम से पंडित को बुलवा भेजा। लेकिन पंडित तब बाहर गया हुआ था। राजकर्मचारी ने पंडित के लड़के से कहा कि पंडितजी नहीं हैं तो आप ही चलें, सुना है आप भी बड़े विद्वान् हैं। लड़के की माँ ने उसे दरबार में जानेसे बहुत मना किया, लेकिन लड़का न माना। तब उसकी माँ ने कहा कि यदि जाते हो तो जाओ, लेकिन राजा से कोई उपहार मत लाना। लड़का चला गया। राजा के प्रश्नों का पंडित के लड़के ने समुचित उत्तर दिया। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने लड़के

को बहुत भारी पुरस्कार देना चाहा, लेकिन लड़के ने कुछ भी लेने से इनकार कर दिया। तब राजा ने एक नारियल मंगवाकर उसमें एक लाख रुपये की एक मणि डलवादी और फिर पंडित के लड़के से कहा कि हम आपको कुछ भी नहीं दे रहे हैं लेकिन खाली हाथ नहीं जाने देंगे, अतः भेंटस्वरूप सिर्फ एक नारियल आपको देते हैं, सो आप स्वीकार कर लें। पंडित का लड़का नारियल लेकर घर आ गया। उसने नारियल अपनी माँ को दे दिया। नारियल देते ही वह मृत होकर जमीन पर गिर पड़ा। उसकी माँ धाड़ मार कर रोने लगी। पंडित घर आया तो उसने जान लिया कि लड़के ने अपना ऋण चुका दिया है। उसने नारियल को अपनी स्त्री के सामने तोड़ा और वह मणि निकाल कर उसे दिखला दी और बोला कि मैंने तुझे पहले ही सारी बात बतलादी थी, अब क्यों रोती है ?

● मांगत को ख्याल

एक सेठ एक साधु के पास नित्य जाया करता था। एक दिन सेठ ने साधु से कहा कि मेरी स्त्री को बच्चा होने वाला है, अतः कल नहीं आ सकूंगा। साधु ने कहा कि जब तुम्हारे लड़का हो तो पहले उसे यहाँ ले आना। लड़का होते ही सेठ उसे लेकर साधु के पास गया। साधु ने कहा कि इस बच्चे को ले जाकर जमीन में गाड़ दो। साधु की बात सुनकर सेठ अवाक् रह गया। तब साधु ने सेठ से कहा कि तुम कुटिया के बाहर खड़े हो जाओ। सेठ बाहर चला गया तो साधु ने लड़के से पूछा कि तू सेठ के कितने रुपये माँगता है ? लड़के ने उत्तर दिया कि मैं सेठ के दस हजार रुपये माँगता हूँ, लेकिन तुमने तो मुझे सवा हाथ कपड़े में ही रख दिया। सेठ को सही बात का पता चल गया और उसने साधु के कहे अनुसार लड़के को ले जाकर गाड़ दिया। इस प्रकार साधु के कहने से सेठ ने छः लड़के गाड़ दिये। जब वह सातवें लड़के को लेकर साधु के पास चला तो उसकी स्त्री ने कहा कि अब मैं इस लड़के को नहीं ले जाने दूंगी, लेकिन सेठ नहीं माना। वह लड़के को लेकर साधु के पास गया। लड़के ने साधु से कहा कि यह सेठ तो मेरे इतने रुपये माँगता

है कि मैं कुछ कह ही नहीं सकता। जब यह स्वयं ही कह देगा कि मैंने अपने रुपये भर पाये तभी मैं इसे छोड़कर जाऊँगा। तब साधु ने सेठ से कहा कि इस लड़के को ले जाकर इसका लालन-पालन कर, लेकिन इसे कहीं बाहर मत जाने देना।

लड़का बड़ा हो गया। एक दिन उसने अपने बाप से कहा कि मैं अब कमाने के लिए जाऊँगा। उसके बाप ने कहा कि हमारे पास बहुत धन है, तुम्हें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन लड़का नहीं माना और घर से निकल पड़ा।

वह पास के एक गाँव में पहुँचा तो उसने देखा कि एक जगह एक मकान बन रहा है। उसने वहाँ एक पत्थर देखा और मकान मालिक से कहने लगा कि यह पत्थर मुझे दे दो और इसकी कीमत ले लो। यों पत्थर साधारण दिखलाई देता था, लेकिन मकान-मालिक ने उसके पचास रुपये माँगे। लड़के ने रुपय दे दिये और पत्थर घर भिजवा दिया। उसने अपने बाप को चिट्ठी लिखी कि इस पत्थर को सम्हालकर रख देना। जब सेठ पत्थर को कमरे में रखवाने लगा तो उसका एक कोना टूट गया। पत्थर के टूटते ही सारा कमरा हीरे-मोतियों से भर गया। यह देखकर सेठ ने अपने लड़के को चिट्ठी लिखी कि मैंन तुम्हारी कमाई भर पाई अब कहीं न जाकर सीधे घर आ जाओ। चिट्ठी लेकर सेठ का आदमी उसके पास पहुँचा। लड़के ने चिट्ठी पढ़ी और वहीं ढ़ेर हो गया। सेठ को खबर मिली तो वह रोता-कलपता साधु के पास गया। साधु बोला कि मैंने तो तुम्हें पहले ही कह दिया था कि जब तुम भरपाई कर दोगे तभी यह लड़का मर जाएगा, अब पछताने से क्या फायदा है?

● कठियारो और राजा

एक कठियारा लकड़ियाँ बेचकर चार आने रोज लाया करता था जिनमें से एक आना वह किसी पुण्य कार्य में लगा देता और शेष तीन आनों में अपने घर का काम चलाया करता। एक रात को कठियारे की स्त्री ने कठियारे से कहा कि तुम सिर्फ चार आने रोज कमाते हो जिसमें से भी एक

आना दान कर देते हो। इससे सबको बड़ी तकलीफ होती है, अतः तुम नित्य एक आने का दान करना बन्द कर दो। एक चौथाई दान तो राजा भी नहीं करता। इस पर कठियारे ने उत्तर दिया कि राजा अपनी 'करनी' मैं अपनी करनी, मैं दान देना कदापि बन्द नहीं करूँगा। कठियारे की झोंपड़ी के बाहर खड़ा राजा इन दोनों की बातें सुन रहा था। उसने सबेरे ही कठियारे को दरबार में बुलवा लिया। राजा ने कठियारे से पूछा कि रात को तुम अपनी झोंपडी में क्या बातें कर रहे थे? कठियारे ने उत्तर दिया कि महाराज, यद्यपि आप राजा हैं लेकिन मेरी झोंपडी में मैं जो चाहूँ बात करूं, इसे पूछने का आप को कोई अधिकार नहीं है। कठियारे की बात सुनकर राजा अप्रसन्न हुआ और उसने कठियारे को जेल में डाल दिया।

कठियारे के लिए नित्य रात को स्वर्ग से विमान आया करता और वह उसमें बैठ कर नित्य स्वर्ग जाया करता। उसी जेल में एक सेठ भी था। उसने एक दिन कठियारे से पूछा कि तुम रात को कहाँ जाया करते हो? कठियारे ने सारी बात सेठ को सच सच बतला दी। सेठ ने कहा कि एक रात मुझे भी स्वर्ग ले चलो। कठियारा बोला कि विमान में तो तुम नहीं बैठ सकोगे, लेकिन तुम विमान का पाया पकड़ लेना। रात को विमान आया तो सेठ भी पाया पकड़कर स्वर्ग में पहुँच गया।

सेठ ने स्वर्ग के दूतों से पूछा कि यह सुन्दर महल किसका है तो दूतों ने कहा कि यह कठियारे के लिए है। फिर सेठ ने पूछा कि ये विविध प्रकार के भोजन किसके लिये हैं तो उत्तर मिला कि ये सब कठियारे के लिये हैं। सेठ ने फिर पूछा कि सब चीजें कठियारे के लिये ही हैं तो भला मेरे लिये क्या है? देवदूतों ने उत्तर दिया कि तुम्हारे लिये क्या होता? तुमने कभी किसी को एक पैसा भी दिया नहीं, अतः तुम्हारे लिए यहाँ कुछ भी नहीं है। सेठ ने देवदूतों से फिर पूछा कि मेरे लिए कुछ नहीं है तो हमारे राजा के लिए तो कुछ होगा ही। इस पर दूतों ने सेठ को खून और मवाद की बहती हुई नदी दिखला दी और कहा कि तुम्हारा राजा बड़ा अन्यायी है सो उसके लिए यह नदी तैयार है। सेठ ने पूछा कि राजा के पापों का क्या प्रायश्चित्त

है तो दूतों ने कहा कि यदि राजा नंगे पैरों फिर कर गायों की बारह वर्ष सेवा करे तो उसके पाप धुल सकते हैं ।

स्वर्ग में घूम-फिर कर जब वे लौटने लगे तो वहाँ एक मोची आया । मोची ने सेठ से कहा कि सेठ, मैं तुम्हारे एक चवन्नी माँगता हूँ सो मेरी चवन्नी दे जाओ । सेठ बोला कि मेरे पास इस वक्त कुछ भी नहीं है । इस पर मोची ने सेठ के शरीर से चार आने की कीमत का चमड़ा काट लिया । अनन्तर कठियारा और सेठ विमान में बैठ कर जेल में आ गए ।

सबेरा होते ही सेठ ने राजा से मिलने की इच्छा प्रकट की । राजा ने सेठ को बुलवा लिया । सेठ ने रात की सारी बात राजा को सुनाई और साथ ही उसने अपने शरीर का वह भाग भी दिखलाया जहाँ से मोची ने सेठ की खाल काटी थी । राजा पर सेठ की बात का बड़ा असर हुआ । उसने कठियारे सहित सारे कैदियों को मुक्त कर दिया और स्वयं नंगे पैरों गायें चराने चला गया ।

नदी के किनारे गायें चराते-चराते जब उसे बारह वर्ष पूरे हो गये तो एक दिन हाल की ब्याई एक गाय का बछड़ा नदी में बह गया । राजा को बड़ा दु:ख हुआ कि बछड़े की हत्या और सिर लगी । राजा उदास होकर वहीं बैठ गया । एक पहर बाद बछड़ा नदी में से स्वयं ही निकल कर गाय के पास आ गया । गाय ने बछड़े से पूछा कि बेटा, जन्मते ही मुझे छोड़कर तू कहाँ चला गया था ? इस पर बछड़ा बोला कि माँ, इस अन्यायी राजा को तेरी सेवा करते-करते आज बारह वर्ष हो गये, अतः इसके पाप धोने गया था । अब इसके लिए खून और मवाद की जो नदी थी, वह दूध-दही की नदी बन गयी है । राजा ने बछड़े की बात सुनी तो उसे सांसारिक कार्यों से वैराग्य हो गया और वह अपने मंत्रियों को राज-काज संभला कर स्वयं तपस्या करने के लिए जंगल में चला गया ।

● राजा और साहूकार की बेटी

कुछ लड़कियाँ शहर की गलियों में खेल रही थीं । वे सब आपस में

विवाह की चर्चा कर रही थीं। एक ने कहा कि मैं इस प्रकार घर बसाऊँगी, दूसरी ने कहा कि मैं इस प्रकार बसाऊँगी। उन्हीं में एक साहूकार की बेटी भी थी। उसने कहा कि मैं अपने पति को सात जूते मारूँगी। वेष बदले हुए राजा भी वहीं खड़ा था। उसने निश्चय किया कि मैं इसी लड़की से विवाह करूँगा।

दूसरे दिन उसने साहूकार को दरबार में बुलाकर कहा कि तुम्हें अपनी लड़की की शादी मेरे साथ करनी होगी। विवाह हो गया और साहूकार की बेटी रानी बनकर राजा के महल में आ गई।

राजा ने नई रानी को एक बुर्ज में कैद कर दिया। एक दासी उसे झरोखे से दो वक्त खाना दे देती। एक दिन रानी ने दासी से कहा कि मैं तुझे एक चिट्ठी देती हूँ सो मेरे बाप के घर दे आ। रानी ने चिट्ठी में अपने बाप को लिखा कि घर से लेकर यहाँ तक एक सुरंग गुप्त रूप से खुदवा दो। साहूकार बहुत सम्पन्न व्यक्ति था, उसने सुरंग खुदवा दी। तब रानी सुरंग के रास्ते होकर अपने बाप के घर चली गई और फिर साधु का वेष बना कर राजा के महल के सामने धूना तापने लगी। कुछ ही दिनों में राजा से उसकी घनिष्ठता हो गई। एक दिन साधु ने कहा कि अमुक गाँव में अमुक सेठ के यहाँ एक अत्यन्त रूपवती कन्या है जो तुम्हारे योग्य है। तुम्हारे महलों में वैसी सुन्दर रानी एक भी नहीं है। राजा ने कहा कि मैं उससे अवश्य विवाह करूँगा, लेकिन तुम्हें भी साथ चलना होगा। साधु बोला कि मैं आज ही वहाँ चला जाऊँगा। शाम को साधु वहाँ से गायब हो गया। दूसरे दिन राजा भी लड़की को ब्याहने चल पड़ा।

राजा जब जंगल में पहुँचा तो उसने देखा कि एक महासुन्दर स्त्री झूले में झूल रही है और उसके चारों ओर बहुत-सी सहेलियाँ खड़ी हैं। स्त्री के रूप को देख कर राजा मोहित हो गया। उसने एक सहेली को इशारे से पास बुलाकर पूछा कि क्या मैं तुम्हारी राजकुमारी से दो बातें कर सकता हूँ? सहेली ने कहा कि हमारी राजकुमारी का यह प्रण है कि वे उसी आदमी से बात करती हैं, जिसको सात जूते मार लेती हैं। राजा इतना आसक्त हो

गया था कि वह सात जूते खाकर भी बात करने के लिए राजी हो गया। राजकुमारी ने राजा को सात जूते मारे और फिर उसे तंबू में लिवा ले गई। वहाँ राजा ने राजकुमारी के साथ गन्धर्व-विवाह कर लिया। जब राजा जाने लगा तो राजकुमारी ने सैनाणी स्वरूप राजा की अँगूठी ले ली। राजा आगे बढ़ा और साधु के बतलाये हुए गाँव में पहुँचा, लेकिन साधु ने राजा को जो नाम बतलाया था उस नाम का कोई आदमी उस गाँव में नहीं था। अतः राजा निराश होकर वहाँ से अपने नगर में लौट आया।

जंगल की राजकुमारी वही साहूकार की लड़की थी, जिसने राजा को सात जूते मारने का प्रण किया था। उसने अपना प्रण पूरा कर लिया था और अब वह उसी सुरंग के रास्ते बुर्ज में आ गई थी। कुछ दिनों के पश्चात् उसने घोषणा कर दी कि वह गर्भवती है। राजा को उसकी बात सुनकर बड़ा क्रोध और आश्चर्य हुआ। वह रानी को मारने के लिए स्वयं बुर्ज में पहुँचा, लेकिन तब रानी ने राजा की अँगूठी उसे दिखला दी और सारा भेद खोल दिया। सारी बात समझकर राजा चुप हो गया।

● सब सें भली चुप

दो पड़ोसिनें आपस में खूब लड़ती थीं। रोटी खा-पीकर ज्योंही वे निवृत्त होतीं—दोनों वाक्युद्ध में जुट जातीं और शाम तक वैसे ही झगड़ती रहतीं। एक स्त्री के बेटे की बहू आई और वह यह सब देखकर दंग रह गई। उसने अपनी सास से कहा कि पड़ोसिन कल जब लड़ने के लिए आये तो तुम ये लड्डू खाती रहना, उससे एक बार भी मत बोलना। दूसरे दिन पड़ोसिन आई तो बहू ने सास को लड्डू देकर पिछले दिन की बात दोहरा दी। सास लड्डू खाने लगी। उसने बहुत चाहा कि वह पड़ोसिन को करारा जवाब दे, लेकिन बहू ने सास को बोलने नहीं दिया। उस दिन पड़ोसिन हारकर कुछ पहले ही चली गई। बहू ने तीन-चार दिन तक यही नुस्खा काम में लिया और तब पड़ोसिन ने भी हार कर आना छोड़ दिया। दोनों की लड़ाई सदा के लिए खत्म हो गई।

● राम कियां मिलै ?

एक माँ-बेटा थे। बेटे ने कहा कि माँ, मैं राम से मिलने के लिए जाता हूँ। बेटा जंगल में चला गया। जाते वक्त वह खाती से एक काठ की रोटी बनवाकर लेता गया। जब भी उसे भूख लगती वह काठ की रोटी की तरफ देख लेता। बारह वर्ष तक वह बिना अन्न खाये जंगल में तपस्या करता रहा, लेकिन उसे राम के दर्शन नहीं हुए, तब वह घरआ गया। उसकी माँ ने पूछा कि बेटा, तुझे राम के दर्शन हुए ? बेटे ने कहा कि नहीं माँ, मुझे राम के दर्शननहींहुए। माँ नेपूछा कितू वहाँ क्याखाता था तो बेटे ने उत्तर दिया कि मैं जातेवक्तखाती सेकाठकी एकरोटीबनवाकर ले गया था, जब भूख लगती तो उस रोटी को देख लेता था और कुछ नहीं खाता था। माँ ने कहा कि बेटा, तेरे प्राण तो रोटी में बसे थे, तुझे भला राम कैसे मिलते ?

लड़का फिर जंगल में चला गया। इस बार वह सूखे पत्ते खाकर बारह वर्ष जंगल में रहा, लेकिन राम नहीं मिले, वह फिर घर लौट आया। माँ के पूछने पर उसने सारी बात सच सच बतला दी। इस पर माँ ने कहा कि तेरा मन तो पत्ते खाने में लगा था, तब तुझे राम क्यों कर मिलते? लड़का फिर चला गया। इस बार वह सिर्फ हवा का भक्षण करके रहा, लेकिन राम नहीं मिले। बारह वर्ष बाद घरआया तो माँने कहा कि बेटा, जब तक जरा भी वासना मन में रहेगी, राम नहीं मिलेंगे।इस बार लड़के प्रण किया कि राम के दर्शन होने पर ही घर आऊँगा।

वह जंगल में चला गया और पैरों में रस्सी बाँध कर एक वृक्ष से औंधा लटक गया। उसे मृत जानकर कौवे उसके शरीर पर चोंचें मारने लगे, लेकिन लड़का अपने निश्चय पर अटल रहा। उसने कौवों से कहा:—

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो मास।
दो नैणां मत खाइयो, राम मिलण की आस॥

(हे कौवो मेरा सारा शरीर तुम खा लो, शरीर से चुन चुन कर सारा माँस खा लो, लेकिन मेरी दो आँखें मत खाना, इन्हें राम-दर्शन की आशा है।)

उसके निश्चय पर भगवान प्रसन्न होकर उसके सामने तुरन्त प्रकट हो गए।

● चाचो-भतीजो

चचा और भतीजा गंगा-स्नान के लिए गये। गंगा पर स्नान करने वालों की अपार भीड़ थी। किसी ने गंगा के किनारे फल का त्याग किया, किसीने दूध का। चचा बोला कि मैं तो क्रोध का त्याग करूंगा। भतीजे ने कहा कि चाचाजी, क्रोध का त्याग करना बड़ा मुश्किल है, लेकिन चचा अपने निश्चय पर अडिग रहा।

गंगा-स्नान करके दोनों घर आगए। भतीजे ने ब्राह्मणों को भोज दिया। लेकिन उसने अपने चचा को नहीं बुलाया। भतीजे की चाची ने अपने पति से कहा कि तुम्हारे भतीजे ने बड़ा भोज किया है, और उसने तुमसे कहा भी नहीं। लेकिन उसके पति ने जरा भी रोष प्रकट नहीं किया। चचा बिना बुलाये भी भतीजे के घर चला गया। जब वह जीमने बैठा तो भतीजे ने एक धोबा (दो पसर) धूल चचे की पत्तल में डाल दी। लेकिन चचा जरा भी क्रुद्ध नहीं हुआ, वह चुपचाप उठकर खड़ा हो गया। तब भतीजा चचे से लिपट गया और बोला कि चाचाजी, आपने सचमुच क्रोध का त्याग किया है। अनन्तर दोनों ने साथ बैठ कर भोजन किया।

● टोकसड़ी

एक भाई अपनी छोटी बहिन को बहुत प्यार करता था, लेकिन उसकी स्त्री अपनी ननद को जरा भी नहीं चाहती थी। उसका भाई कमाने के लिए गया तो अपनी स्त्री से कहता गया कि पिता घर में नहीं हैं, टोकसी (बहिन का नाम) को जरा भी दुःख मत देना, इसे अच्छी तरह खिलाना-पिलाना। यों कह कर वह कमाने के लिए चला गया।

सबेरे जब टोकसी ने भावज से खाना मांगा तो उसने ननद को दुत्कारते हुए कहा कि बड़े तड़के ही तुझे भूख सताने लग गई, पहले जा कर गोबर चुग ला। बेचारी टोकसी गोबर चुगने चली गई। जब वह आई तो

भावज ने उसे बाजरेके दो रोटिये (छोटी रोटी) दे दिये और उन पर बाजरे की 'ल्हूकसी' (बाजरे के ऊपर से उतरे हुए छिलके आदि) डालदी। ऐसा खाना देखकर टोकसी की आंखों में आँसू आ गए, उससे वे रोटिये खाये न गए। वह उन रोटियों को नित्य इकट्ठा करने लगी।

अब टोकसी सबेरे गोबर चुगने और शाम को लकड़ियाँ बीनने जाया करती। भूख-प्यास व तिरस्कार से वह बहुत दुबली हो गई। लकड़ियाँ बीनने या गोबर चुगने जाती तो टोकसी एक टीले पर बैठ कर करुण स्वर में कहती:—

बाप गयो माँडवै, भाई गयो अजमेर
भावजड़ी दुख देवै, टोकसड़ी मरज्या ये टोकसड़ी मरज्या।

(बाप माँडवे, और भाई अजमेर चला गया भौजाई दुःख दे रही है, अरी टोकसड़ी मरजा, अरी टोकसड़ी मरजा)

यों बहुत दिन बीत गए। एक दिन भाई दिसावर से आया तो उसन टोकसी को उपर्युक्त बात कहते हुए सुना। वह सहसा टोकसी को पहिचान नहीं सका। टोकसी की दशा देख कर उसे बड़ा दुःख हुआ। वह टोकसी को घर ले आया। घर आकर उसन अपनी स्त्री से पूछा कि टोकसी कहाँ है तो उसने उत्तर दिया कि अभी खाना खा कर गई है, बाहर खेल रही होगी। तब उसने टोकसी को उसके आगे खड़ा करके कहा कि पापिन, तू ने मेरी बहिन की क्या दशा कर रखी है ? टोकसी ने वे सारे रोटिये भाई को लाकर दिखलाये जो भौजाई टोकसी को खाने के लिए दिया करती थी। भाई को वड़ा गुस्सा आया और उसने अपनी स्त्री का झोंटा पकड़ कर उसे घर से बाहर निकाल दिया।

● बाण कोनी छूटै

एक जाटनी को चोरी करने की आदत थी। बिना चोरी किये उसे कल नहीं पड़ती थी। और तो और वह अपने घर की भी चीज चुरा लेती थी। जाटनी के बेटे अपनी बहिन के यहाँ भात लेकर जाने लगे तो

जाटनी बोली कि मैं भी साथ चलूंगी। लड़कों ने कहा कि हम तुम्हें साथ नहीं ले जाएंगे, क्योंकि तू चोरी किए बिना रहेगी नहीं और तेरे चोरी करने के कारण हम सबको नीचा देखना पड़ेगा। जाटनी ने सौगन्ध खा कर चोरी न करने की प्रतिज्ञा की। बेटों ने कहा कि यदि तू चोरी करेगी तो हम तुझे जान से मार डालेंगे। माँ के विश्वास दिलाने पर वे उसे भी साथ ले गए। भात भर कर घर आने पर बेटों ने माँ से पूछा कि तू कुछ वहाँ से चुरा कर तो नहीं लाई है? इस पर जाटनी ने कहा कि तुम्हारे डर के कारण मैं और कुछ तो नहीं लाई, लेकिन एक दिन मुझ से नहीं रहा गया तो मैंने दो मिट्टी के फूटे दीये अपनी अंगिया में छिपा लिये, इससे उन्हें कोई हानि नहीं हुई और मेरा व्यसन पूरा हो गया। यों कह कर उसने दोनों दीये अंगिया में से निकाल कर अपने बेटों के सामने रख दिये।

● बिनायकजी और जाटणी

एक दिन विनायकजी नदी के किनार बैठे थे। एक जाटनी उधर से निकली। वह चार रुपये का घी लेकर शहर में बेंचने जा रही थी। विनायकजी ने जाटनी से कहा कि थोड़ा घी मेरे पेट पर लगाती जा। इस पर जाटनी बोली कि मेरा घी तौला हुआ है, लगाने से कम हो जाएगा और फिर तुम्हारा पेट भी बहुत बड़ा है। यों कह कर वह जाटनी चली गई। फिर एक दूसरी जाटनी आई। वह दो रुपये का घी लेकर जा रही थी। विनायकजी ने उसे भी घी लगाने के लिए कहा। उसने कहा कि भाई, घी तो तौला हुआ है लेकिन तुमने कह दिया तो घी लगाये देती हूँ। यों कह कर उसने घी लगा दिया। शहर में गई तो उसको दो रुपये के घी के चार रुपये मिल गए, लेकिन चार रुपये वाली का घी किसी ने पूछा भी नहीं। वे दोनों आपस में मिलीं तो दो रुपये वाली ने कहा कि आज तो मैंने विनायक के पेट पर घी लगाया था सो मुझे दो रुपये के घी के चार रुपये मिल गए। इस पर दूसरी बोली कि वह मुझे भी मिला था, लेकिन

मैंने उसके पेट पर घी नहीं लगाया सो मेरे घी को तो आज किसी ने पूछा भी नहीं ।

यों कह कर वह विनायक के पास पहुँची । उसने विनायक से कहा कि मैं तुम्हारे पेट पर घी लगाऊंगी, लेकिन विनायक ने उत्तर दिया कि तेरे हाथ बड़े खुरदरे हैं, मैं तुझ से घी नहीं लगवाऊंगा । विनायक ने जाटनी को कई बार टालने की चेष्टा की लेकिन जाटनी ने सोचा कि मुझे भी चार के आठ रुपये मिल जाएंगे अतः वह हठ करने लगी । अन्त में विनायक जी ने कहा कि तेरी ऐसी ही इच्छा है तो घी लगा दे । जाटनी ने दो उंगलियों में जरासा घी लेकर विनायक के पेट पर लगा दिया । तब विनायक ने कहा कि तू ने दो उँगलियां भर कर घी लगाया है सो तेरे घी के दो रुपये ही तुझे मिल जाएंगे ।

(फलश्रुति—हे विनायकजी महाराज, चार रुपये के दो रुपये किसी को न मिलें, दो रुपये के चार रुपये सब को मिलें)

● नीच मंत्री और राजकुमार

एक राजा के कई रानियाँ थीं, लेकिन संतान एक के भी नहीं थी । एक बार एक रानी के एक लड़का हुआ, लेकिन अन्य रानियों ने छल से उसके लड़के को जंगल में फिकवा दिया और लड़के की जगह एक पत्थर रख दिया । राजा उसी जंगल में शिकार के लिए गया था । बच्चे के रोने की आवाज सुन कर वह उसके पास पहुँचा । लड़का बहुत ही सुन्दर था । राजा उसे घर ले आया । गणकों ने कहा कि यह लड़का चक्रवर्ती राजा होगा । राजा उसका बहुत लाड़-प्यार से लालन-पालन करने लगा ।

राजा का मंत्री बड़ा दुष्ट था । उसने सोचा कि राजा इस लड़के को न उठा लाता तो मेरे ही लड़के को राज्य मिल जाता । यों सोचकर वह राजा के लड़के को मरवाने की घात में रहने लगा । मंत्री का परिवार दूर के एक गाँव में रहता था । एक दिन मंत्री ने राजकुमार को एक चिट्ठी लिख कर दी और कहा कि इसे मेरे गाँव जाकर मेरे लड़के को

दे देना। इस चिट्ठी को न तुम पढ़ना, न और किसी को देना। मंत्री ने चिट्ठी में लिख दिया कि चिट्ठी लाने वाले को तुरंत विष दे देना। राजकुमार मंत्री के गाँव तक पहुंचते-पहुंचते बहुत थक गया। वह मंत्री के बाग में पहुंच कर एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगा। उसकी आँख लग गई और वह गाढ़ी नींद में सो गया। मंत्री की लड़की बाग में घूमने आई तो उसने सोये हुये राजकुमार को देखा। राजकुमार को देखते ही उसने सोचा कि कितना सुन्दर युवक है ? फिर उसने राजकुमार की जेब से चिट्ठी निकाल कर पढ़ी। उसने विचार किया कि यह चिट्ठी तो पिताजी की लिखी हुई है। उन्होंने इसे विष देने के लिए लिखा है सो शायद भूल से लिख दिया है। मेरा नाम विषया है, निश्चिय ही उन्होंने मेरे लिए ही लिखा होगा कि विषया को इसे दे देना। मंत्रिकुमारी ने विष की जगह विषया कर दिया और चिट्ठी राजकुमार की जेब में रख दी।

राजकुमार ने चिट्ठी ले जाकर मंत्री के लड़के को दे दी और मंत्री के लड़के ने उसी वक्त राजकुमार से अपनी बहिन का विवाह कर दिया। राजकुमार मारा गया या नहीं यह जानने के लिए मंत्री अपने घर गया, लेकिन वहाँ तो दूसरी ही बात हो गई थी। मंत्री ने सोचा कि राज्य के लिए अपने दामाद की बलि देनी पड़े तो भी क्या है ? यों सोच कर उसने देवी के मन्दिर में चार हत्यारों को नियुक्त कर दिया और उनसे कह दिया कि अभी यहाँ एक लड़का आएगा सो उसे आते ही मार डालना। उधर मंत्री ने अपने दामाद से कहा क हमारे यहाँ ऐसा नियम है कि विवाह के पश्चात्, दूल्हा काली-देवी के मन्दिर में दर्शन के लिए अकेला जाता है सो आप अकेले जाकर मन्दिर में देवी के दर्शन करके आयें। राजकुमार दर्शन करने चला। रास्ते में उसका छोटा साला अपने मित्रों के साथ चौसर खेल रहा था, लेकिन वह बराबर हारता जाता था। साले ने जीजा से कहा कि आप कुछ देर यहाँ खेलें, देवी के मन्दिर तक मैं हो आता हूँ, मैं आपको वहाँ से देवी का प्रसाद ला दूँगा, पिताजी पूछें तो कह देना कि मैं दर्शन कर आया। मंत्री का लड़का गया और जल्लादों ने उसे मार डाला।

राजकुमार को जीवित देख कर मंत्री ने उसे दुबारा मन्दिर जाने के लिए कहा। इस बार उसके बड़े साले ने सोचा कि मैं अपनी जान देकर भी यदि बहिन को विधवा होने से बचा सकूं तो अच्छा होगा, क्योंकि मैं तो अभी अविवाहित ही हूँ। यों सोचकर उसने अपने जीजा को जाने से रोक दिया और स्वयं मन्दिर में चला गया। जल्लादों ने उसका भी काम तमाम कर दिया और फिर वे अपने घर चले गये। मंत्री मन्दिर में पहुँचा और वहाँ का दृश्य देख कर अवाक् रह गया। उसने सोचा कि जिसके लिए मैं यह सब अन्याय कर रहा था जब वही नहीं रहा तो मुझे यहाँ रह कर क्या करना है? अतः वह भी कटार खाकर मर गया। राजकुमार ने सोचा कि मन्दिर में जो जाता है वह लौट कर नहीं आता, अतः चल कर देखना चाहिए कि मामला क्या है? मन्दिर में पहुंच कर राजकुमार ने सारा दृश्य देखा। उसने सोचा कि इस सारे हत्याकाँड का कारण मैं ही हूँ, अतः वह भी कटार निकाल कर मरने के लिए उतारू हो गया। देवी ने कहा कि मंत्री को अपनी नीच करनी का फल मिला है, तुम व्यर्थ उसके पीछे क्यों अपने प्राण देते हो? लेकिन राजकुमार नहीं माना। तब देवी ने उन तीनों को भी जिन्दा कर दिया।

मंत्री को अपनी नीच करनी पर बड़ी ग्लानि हुई और वह घर-बार छोड़ कर जंगल में निकल गया। राजा ने मंत्री के लड़के को बुला कर उसे मंत्री का पद दे दिया और राजकुमार को राजपाट सौंप कर स्वयं वन में तपस्या करने के लिए चला गया।

● पलक-दरियाव

एक सेठ का लड़का एक महात्मा के पास जाया करता था। एक दिन लड़के ने महात्मा से कहा कि महाराज, मुझे 'पलक-दरियाव' दिखलाइए। महात्मा ने कहा कि यह काम बड़ा मुश्किल एवं जोखिम का है। लेकिन लड़के ने हठ कर लिया। तब महात्मा ने कहा कि तू अपने घरवालों से एक दिन और एक रात की छुट्टी ले आ, लेकिन इस बात की चर्चा

कभी किसी से न करना, अन्यथा तू पत्थर का हो जाएगा।

लड़का घर वालों से छुट्टी लेकर आ गया तो महात्मा ने अपना चमत्कार दिखलाया। उस एक दिन रात की अवधि में ही लड़के का दूसरी जगह जन्म हो गया, वह युवा भी बन गया और उसका विवाह भी हो गया। अब वह आधे दिन अपने पहले घर में रहता और आधे दिन अपने नये घर में। इसी प्रकार आधी रात तक अपने पुराने घर में अपनी पहली स्त्री के पास रह कर आधी रात के बाद अपनी नई स्त्री के पास चला जाता।

एक दिन उसकी पहले वाली स्त्री ने अपनी सास से कहा कि तुम्हारा बेटा हमेशा आधी रात को न जाने कहाँ चला जाता है। घर वालों ने लड़के से पूछा कि तू आधी रात को कहाँ जाया करता है? इस पर लड़के ने कोई उत्तर नहीं दिया। घरवालों के बहुत कहने-सुनने पर लड़का बोला कि यह बात मेरे से मत पूछो अन्यथा पछताओगे। लेकिन घरवालों ने कहा कि चाहे जो हो हम इस बात को जानकर ही रहेंगे। लड़के ने सारी बात कह दी और कहते ही वह पत्थर का हो गया। अब सारे घरवाले रोने-कलपने लगे। इधर ये लोग रो रहे थे, तो उधर लड़के के नये घर वाले रो रहे थे। दोनों तरफ हाहाकार मचा हुआ था।

संयोग से उसी वक्त शिव-पार्वती उधर से गुजरे। पार्वती ने शिव से कहा कि प्रभो, ये लोग क्यों रो रहे हैं? इनका दुःख दूर करो। शिव ने पार्वती से कहा कि यह तो मृत्यु-लोक है, यहाँ तो ऐसे बहुत से मिलेंगे, तुम किस-किस की चिन्ता करोगी? लेकिन पार्वती नहीं मानी और वह सोन-चिड़ी बन कर वृक्ष पर जा बैठी। तब शिवजी ने पत्थर के उस बुत पर अपना त्रिशूल फेंका, मूर्ति के दो टुकड़े हो गये और प्रत्येक टुकड़े का एक-लड़का बन गया। एक लड़का अपने पहले घर में रह गया और दूसरा नये घर में चला गया। शिव-पार्वती ने कैलाश की राह ली।

● राजा को सुपनो

एक दिन एक राजा ने सपने में एक चाँदी का वृक्ष देखा जिसके सोने

की डालें, रूपे के पत्ते और मोतियों के गुच्छे लगे थे । वृक्षपर हंस-हंसनी मोती चुग रहे थे और वृक्ष के चारों ओर अप्सराएं नृत्य कर रही थीं। राजा ने सबेरे दरबार में अपना सपना सुनाया और कहा कि जो आदमी मेरा सपना सच्चा कर देगा उसे मैं अपना आधा राज दे दूंगा। लेकिन कोई भी इस असंभव कार्य को करने के लिए तैयार नहीं हुआ। किसी ने कह दिया कि ऐसे काम साधारण लोगों से नहीं हुआ करते, राजकुवँर ही ऐसे काम कर सकते हैं। उस राजा के सात लड़के सुहागिन रानी से व एक लड़का दुहागिन रानी से था। उपर्युक्त बात सुन कर वे आठों वृक्ष लाने के लिए घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। चलते-चलते वे एक नगर में पहुंचे। उस नगर की राजकुमारी का यह प्रण था कि जो उसे चौसर में जीत लेगा उसीसे वह विवाह करेगी। हारे हुए राजकुमारों को वह कैद में डलवा देती थी। आज तक उसे कोई नहीं जीत सका था और बहुत से राजकुमार उसके यहाँ कैद में पड़े चक्की पीस रहे थे। सातों राजकुमार भी उस राजकुमारी से विवाह करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने नगाड़े पर चोट लगाई और राजकुमारी के महल में चौसर खेलने के लिए पहुँच गये, लेकिन बारी-बारी से सातों ही हार गए और उन्हें कैद में डाल दिया गया। दुहागिन का लड़का भी अन्य लोगों के साथ चौसर का खेल देख रहा था। उसने लक्ष्य किया कि राजकुमारी ने चुहिया का एक छोटा बच्चा सिखा-पढ़ा रखा है और वही राजकुमारी के उलटे पाँसों को सीधा कर देता है। दुहागिन के लड़के ने बिल्ली का एक छोटा बच्चा पाला और उसे सिखा-पढ़ा कर तैयार कर लिया। फिर वह राजकुमारी के साथ चौसर खेलने पहुंचा। बिल्ली के बच्चे को देखकर चुहिया का बच्चा नहीं आया और राजकुमारी हार गयी। शर्त के अनुसार राजकुमार से उसका विवाह हो गया। राजकुमार ने अपने सातों भाइयों को छोड़कर शेष सब कैदियों को मुक्त करवा दिया और फिर उसने राजकुमारी से कहा कि मैं आगे जा रहा हूँ—लौटती बार तुझे अपने साथ ले चलूंगा। राजकुमारी के पूछने पर उसने विचित्र वृक्ष की बात उससे कही।

राजकुमारी ने कहा कि यह वृक्ष हमारे ही पास है। हम सब सात बहिनें हैं, तुम शेष छः बहिनों से और विवाह कर लो, हम तुम्हें वृक्ष दे देंगी। राजकुमार के साथ जब सबका विवाह होगया तो सातों ने कहा कि विचित्र वृक्ष का भेद अब हम तुम्हें बतलाती हैं। यों कहकर उन्होंने राजकुमार को एक तलवार, एक घोटा (छोटी गदा), एक बेंत और एक अँगूठी दी और उसे सारी तरकीब बतलादी। राजकुमार ने तलवार से उन सातों के सिर काट डाले और फिर बारी-बारी उनको घोटे से पीटने लगा। एक को पीटते ही वहाँ चाँदी का वृक्ष खड़ा हो गया, दूसरी को पीटने से उसमें सोने के डाले निकल आये, तीसरी को पीटने से वृक्ष में रूपे के पत्ते आगए, चौथी को पीटने से वृक्ष में मोतियों के गुच्छे लग गए, पाँचवीं को पीटने से वृक्ष पर हंस-हंसिनी आ बैठे, छठी को पीटने से हंस मोती चुगने लगे और सातवीं को पीटने से अप्सराएँ वृक्ष के चारों ओर नाचने लगीं। तब राजकुमार ने उन सब पर बेंत फिराई जिससे परियों सहित समूचा वृक्ष बेंत में समा गया और बेंत से अँगूठी को छुआते ही सातों राजकुमारियाँ खड़ी हो गईं। राजकुमार को यह सब पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

अब उसने अपने सातों भाइयों को कैद से छुड़वा दिया। उसके कहने पर राजकुमारियों ने सातों की जाँघों पर कैदियों के दाग लगा दिये। दुहागिन का राजकुमार सातों परियों को जादू के बेंत में समेट कर तथा तलवार आदि लेकर उन भाइयों के साथ घर को चल पड़ा। सातों ने पूछा कि क्या तुम विचित्र-वृक्ष ले आये हो? दुहागिन के लड़के ने उन्हें एक बड़ा तूंबा देतेहुए कहा कि विचित्र वृक्ष इसी तूंबे में है। इस तूंबे को पानी से भरे तालाब में छोड़कर पीटने से विचित्र वृक्ष पैदा हो जाएगा। उसकी बात सुनकर सातों के मन में कपट आ गया। पानी पीने के बहाने वे उसे कुएँ पर ले गए और मौका पाकर उसे कुएँ में धकेल दिया। फिर वे खुशी-खुशी तूंबा लेकर घर आगये। घर आकर उन्होंने पिता से कहा कि हम विचित्र वृक्ष ले आये हैं। उनके कहने के अनुसार राजा ने एक तालाब

खुदवाया और उसे पानी से भरवा दिया। फिर राजा ने ऐलान करवा दिया कि अमुक दिन विचित्र वृक्ष सबको दिखलाया जाएगा।

सारी प्रजा तालाब पर इकट्ठी हो गई। सातों राजकुमार तूंबे को जल में छोड़कर उसे पीटने लगे, लेकिन वृक्ष का एक पत्ता भी नहीं दिखलाई पड़ा। तूंबे के टुकड़े-टुकड़े हो गए। राजा और राजकुमारों की बड़ी हंसी हुई।

उधर कुएं से पानी निकालने वाले किसी आदमी ने दुहागिन के लड़के को कुएं से बाहर निकाला और कुछ दिन बाद वह भी अपने नगर में पहुँच गया। उसने अपने पिता से कहा कि पिताजी, मैं सचमुच विचित्र वृक्ष लाया हूँ और सबके सामने आपको दिखलाऊंगा। राजा ने फिर घोषणा करवाई। इस बार लोगों को विश्वास नहीं हुआ, इसलिए आधे लोग आये और आधे नहीं आये।

अब दुहागिन के लड़के ने तलवार और घोटे आदि की सहायता से विचित्र वृक्ष खड़ा करके दिखलाया। सारी प्रजा वाह-वाह कर उठी। राजा भी बहुत प्रसन्न हुआ। जब सारे लोग चले गए तो राजकुमार ने कहा कि ये सातों मेरी विवाहिता पत्नियाँ हैं।

राजा के यहाँ यह प्रथा थी कि जिस दिन नववधू घर आये उस दिन राजकीय भोज हो और नव-वधू राज-परिवार के सारे सदस्यों को खाना परोसे। प्रथानुसार भोज की तैयारी की गई लेकिन जब राजा अपने सातों पुत्रों के सहित जीमने बैठा तो बहुओं ने राजा से कहलवाया कि हम भोजन नही परोसेंगी, क्योंकि आपके साथ हमारे चोर बैठे हैं। राजा उनकी बात नहीं समझा तो दुहागिन के लड़के ने सातों भाइयों की जंघाओं पर लगे दाग दिखलाये और उसने राजा से कहा कि ये सातों मुझे कुएँ में डाल आये थे। राजा सातों पर बड़ा अप्रसन्न हुआ। उन सातों की माताओं को उसने दुहाग दे दिया और दुहागिन को सुहाग दे दिया। फिर वह दुहागिन के लड़के को राजपाट देकर स्वयं वन में तपस्या करने के लिए चला गया।

● गुलबकावली को फूल

एक राजा के लड़का हुआ तो पंडितों ने राजा से कहा कि राजकुमार बड़ा होने पर बड़ा प्रतापी राजा बनेगा, लेकिन आप बारह वर्ष तक राज-कुमार को न देखें, अन्यथा आप अन्धे हो जाएंगे। राजा ने राजकुमार के लिए अलग एक बहुत ऊँचा महल बनवा दिया। राजकुमार दिन-दूना-रात चौगुना बढ़ने लगा। जब वह दस वर्ष का हुआ तो तीर तलवार चलाने में उसने बड़ी निपुणता प्राप्त करली।

एक दिन राजा शिकार खेलने गया। वह एक शिकार का पीछा बहुत देर से कर रहा था, लेकिन शिकार को मारने में सफल नहीं हो रहा था। उधर राजकुमार अपने महल के ऊपर से यह सब दृश्य देख रहा था। उसने एक तीर चला कर उस जानवर को मार डाला। राजा ने सोचा कि जिस शिकार को मैं नहीं मार पाया उस शिकार को जिसने मारा है वह निश्चय ही बहुत वीर होगा। राजा ने घूमकर देखा तो उसे महल पर खड़ा राजकुमार दिखलाई पड़ा। राजकुमार को देखते ही राजा वहीं अन्धा हो गया।

अन्धा हो जाने से राजा बड़ा दुःखी हुआ। उसने पंडितों को बुलवा कर पूछा कि मेरा अन्धापन कैसे दूर हो सकता है? पंडितों ने कहा कि यदि गुलबकावली का फूल आँखों में लगाया जाए तो आप को फिर से दिख-लाई पड़ने लगेगा। राजा ने दरबार में बीड़ा फेरा कि जो गुलबकावली का फूल लाएगा उसे भारी पुरस्कार मिलेगा, लेकिन यह कार्य आसान नहीं था, अतः कोई भी इसके लिए तैयार नहीं हुआ। किसी ने कह दिया कि जिसने राजा को अन्धा किया है, वही फूल लाये।

अन्त में ग्यारह वर्ष का राजकुमार अपने उड़न-बछेड़े पर सवार होकर फूल लाने के लिए चला। चलते-चलते वह समुद्र के किनारे पहुंचा। अपने उड़न-बछेड़े पर सवार होकर ही उसने समुद्र पार किया। समुद्र के उस किनारे पर एक महात्मा तप कर रहे थे। राजकुमार वहीं बैठ गया। तीन दिन के बाद महात्मा ने आँखें खोलीं। राजकुमार ने महात्मा को

प्रणाम किया। राजकुमार की प्रार्थना पर महात्मा ने कहा कि जिस बाग में गुलबकावली का वृक्ष है उसके चारों ओर मनुष्यभक्षी राक्षस पहरा देते हैं। तुम ऐसा करना कि कुछ बकरे मारकर अपने साथ ले जाना और उन्हें राक्षसों के आगे डाल देना। राक्षस उनका मांस खाने में लग जाएंगे और तुम बाग में चले जाना। बाग की उत्तर दिशा में एक वृक्ष खड़ा होगा जो सारे वृक्षों से सुन्दर एवं निराला होगा। वही गुलबकावली का वृक्ष है। उसका फूल तोड़कर तुम शीघ्रता से अपने बछेड़े पर सवार होकर निकल आना। राक्षस तुम्हारा पीछा करेंगे और तुम्हें एक क्षण ठहरने के लिए कहेंगे, लेकिन तुम मुड़कर पीछे की ओर मत देखना, नहीं तो तुम उसी जगह पत्थर के बन जाओगे। मैं तुम्हें कुछ तिनके मंत्रित करके देता हूँ। लौटते वक्त इन्हें पीछे की ओर फेंकते रहना इससे राक्षस तुम्हारा कुछ बिगाड़ न सकेंगे।

राजकुमार ने वैसा ही किया और गुलबकावली का फूल लेकर बगीचे से उड़ चला। राक्षसों ने उसका बहुत पीछा किया और उसे एक बार मुड़कर देखने के लिए बहुत प्रलोभन दिये, लेकिन राजकुमार ने उनकी बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। राजकुमार फूल लेकर उसी महात्मा के पास आ गया। महात्मा ने राजकुमार से कहा कि बारह वर्ष पूरे होने में अभी कुछ दिन शेष हैं। अतः तुम राजा की आँखों में फूल मत लगाना अन्यथा वह फिर अन्धा हो जाएगा।

राजकुमार गुलबकावली का फूल लेकर सकुशल अपने नगर में आ गया। उसने फूल अपनी मां को दिया और उसे लगाने की विधि भी उसे बतलादी। रानी ने उसी विधि से राजा की आँखों में फूल लगाया और राजा की आँखें खुल गई। राजा बहुत प्रसन्न हुआ। बारह वर्ष पूरे होने पर उसने राजकुमार को देखा। राजा ने उसे सारा राजपाट सौंप दिया और स्वयं तपस्या करने के लिए वन में चला गया।

● चिप्पम चिप्पा और खुल्लम खुल्ला

एक छोटे लड़के का पिता मर गया तो वह अपने चचा के पास रहने

लगा। उसकी चाची उसे बड़ा दुःख देती। एक दिन वह जंगल से लकड़ियाँ लाने के लिए गया। उसने बहुत सारी लकड़ियाँ इकट्ठी करके बाँधलीं, लेकिन वह इतना बोझ उठा नहीं सका। अपनी दुरवस्था पर वह फूट-फूट कर रो रहा था। संयोग से उसी वक्त महादेव-पार्वती उधर से जा रहे थे। बच्चे का रोना सुनकर पार्वती ने महादेवजी से कहा कि इस बच्चे का कष्ट आप दूर करें। महादेवजी ने कहा कि तुम पगली बनी हो, यह तो मृत्यु लोक है, यहाँ तो पग-पग पर ऐसे लोग मिलेंगे, तुम किस-किस की कष्टकथा सुनोगी ? लेकिन पार्वती नहीं मानी। तब शिवजी ने लड़के से रोने का कारण पूछा। लड़का बोला कि मेरे माँ-बाप तो मर गये हैं, मेरी चाची मुझे बड़ा दुःख देती है। उसने मुझे बहुत सारी लकड़ियाँ लाने के लिए भेजा है, मैंने लकड़ियाँ तो बाँधली हैं, लेकिन बोझ अधिक होने से मैं गट्ठर को नहीं उठा सकता हूँ। शिवजी ने कहा कि मैं तुम्हें इस कष्ट से छुटकारा दिला देता हूँ। जब तुम्हारी चाची-चाचा तुम्हें कष्ट दें तो तुम कह दिया करो, 'चिप्पम चिप्पा'। तुम्हारे इतना कहते ही वे जमीन से चिपक जाएंगे और जब तुम कहोगे 'खुल्लम खुल्ला' तभी वे छूटेंगे। लड़का खुशी-खुशी घर आ गया। जब उसके चाचा-चाची उसे डाँटने लगे तो उसने झट 'चिप्पम चिप्पा' कह दिया। दोनों तुरन्त जमीन से चिपक गये। उन्होंने छुटकारा पाने के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन वे छुटकारा नहीं पा सके। तब उन्होंने लड़के से प्रार्थना के स्वर में कहा कि हमें इस आफत से छुड़ा। लड़के ने उनसे प्रतिज्ञा करवा ली कि वे अब कभी उसे नहीं सताएंगे। इसके बावजूद, जब कभी वे बच्चे को सताते तो वह इस उपाय से अपना छुटकारा कर लेता।

● होत की भैण, अण होत को भाई

एक दिन एक फकीर शहर में आवाज लगाता घूम रहा था कि कोई 'बात' खरीद लो, कोई 'बात' खरीद लो। एक सेठ के लड़के ने उसे बुलवा कर पूछा कि तू 'बात' कैसे बेचता है ? फकीर बोला कि मैं एक बात का एक सोने का टका लेता हूँ। सेठ के बेटे ने फकीर को चार सोने के टके

देकर चार बातें सुनीं "(१) होत की भैग, (२) अण-होत का भाई, (३) पीठ पीछै नार पराई, (४) दौलत पास की।"

बातों को परखने के लिए सेठ का लड़का अपने पास चार कीमती लाल लेकर घर से निकल गया। अपने शरीर पर चिथड़े लपेटे अत्यन्त गरीबी हालत में वह अपनी बहिन के गाँव में पहुँचा। वहाँ पहुंच कर वह एक कुएं पर ठहर गया और उसने अपने आने की सूचना अपनी बहिन के पास पहुँचा दी। जब उसकी बहिन ने सुना कि उसका भाई बहुत ही फटे हाल में आया है तो वह बोली कि यदि वह घर आ गया तो मुझे अपनी देवरानियों-जेठानियों के सामने लज्जित होना पड़ेगा। अतः वह बासी रोटियों के रूखे-सूखे टुकड़े लेकर अपने भाई के पास पहुँची और उससे बोली कि रोटी खाकर यहाँ से चला जा। रोटियां देकर वह शीघ्रता से अपने घर लौट गई। भाई ने रोटियां खाई नहीं, उसने सारी रोटियां एक हंडिया में बन्द करके वहीं कुएं के पास गाड़ दीं। एक बात की परीक्षा हो चुकी थी। अब वह दूसरी बात की परीक्षा करने के लिए उसी वेष में अपने भाई के गांव में पहुँचा। उसके भाई ने जब यह सुना तो वह बहुत सारे आदमियों को साथ लेकर तथा भाई के लिए अच्छे वस्त्र और आभूषण लेकर उसके पास पहुंचा, वह उसे बहुत आदर के साथ अपने घर ले आया। भाई ने उससे कहा कि तुम यहीं रहो तथा मेरे साथ ही कारोबार करो। लेकिन वह एक दिन चुपचाप तीसरी बात की परीक्षा करने के लिए अपनी ससुराल पहुँच गया। उसने एक फ़कीर का वेष बनाया और अपने श्वसुर की हवेली के सामने ही वह धूनी धुका कर बैठ गया।

उस सेठ की लड़की जो उसे ब्याही थी कुलटा थी। उसने साधु वेष में धूना तापते हुए अपने पति को पहिचान लिया। उसने सोचा कि पति ने मेरी सारी करतूत देखली है। यदि मैं इसे मरवा दूं तो सभी बाधाएं दूर हो जाएंगी। अतः उसने रात को चार जल्लाद उसके पास भेजे और उनसे कह दिया कि इस ढोंगी साधु को चुपचाप जंगल में ले जाकर मार आओ। जल्लाद उसे उठा कर जंगल में ले गये। साहूकार के बेटे ने उन

चारों को चार लाल देकर अपनी जान बचाई । इस प्रकार, चारों बातों की परीक्षा हो गई ।

जल्लादों से छुटकारा पाकर सेठ का बेटा दूसरे दिन बड़ी सजधज के साथ अपनी ससुराल पहुँचा । ससुरालवालों ने उसका बहुत सम्मान किया, लेकिन उसकी बहू उसे देखकर सन्न रह गई। दामाद ने अपने श्वसुर से कहा कि मैं यहाँ एक पल भी नहीं रुकूंगा, यदि आप भेजना चाहें तो अपनी लड़की को इसी वक्त मेरे साथ भेज दीजिए। उसे भय था कि यदि वह कुछ खाये-पीयेगा तो उसकी स्त्री उसमें अवश्य विष मिला देगी । इसलिए उसने वहाँ कुछ भी खाने-पीनेसे सर्वथा इनकार कर दिया ।ससुराल वालों ने बहुत दहेज देकर अपनी बेटी को दामाद के साथ भेज दिया।

लौटते वक्त वह फिर अपनी बहिन के घर पहुँचा। इस बार बहिन ने उसका बहुत आदर किया और उसके लिए विविध प्रकार के भोजन बनाये गये । जब उसके आगे भोजन का थाल आया तो उसने अपने गहने और मोहर-रुपये थाल के पास रख दिए और कहने लगा:—

जीमो रे म्हारा कड़ा बाँकड़ा,
जीमो रे म्हारा म्होर रुपैया—आदि-आदि ।

उसकी बातें सुनकर उसकी बहिन ने कहा कि भैया, यह क्या कह रहे हो, तुम पागल तो नहीं हो गये ? तब उसने कुएं पर गड़ी हँडिया लाकर अपनी बहिन को दिखलाई कि भाई का भोजन तो इस हंडिया में है । इस थाल में परोसा गया भोजन तो इन गहनों और मोहर-रुपयों का ही है ।

फिर वह अपनी स्त्री को लेकर घर आ गया । उसने अपने घरवालों को अपनी स्त्री की सारी करतूत बतलाई और उसे उसी क्षण मार डाली।

● पापी बीरो पाप कुमायो

एक साहूकार के एक लड़का तथा दो लड़कियाँ थीं । लड़का बड़ा था और उसका विवाह हो गया था । लड़कियाँ छोटी-छोटी थीं । एक का

नाम था रूपा दूसरी का नाम था चम्पा। साहूकार दिसावर जाने लगा तो उसने अपने बेटे-बहू से कहा कि दोनों बच्चियों को बहुत आराम से रखना, इन्हें किसी प्रकार का दुःख मत देना। साहूकार चला गया। पीछे से भौजाई अपनी छोटी-छोटी ननदों को बहुत सताने लगी। एक दिन उसने अपने पति से कहा कि मैं तभी खाना खाऊँगी, जब तुम अपनी दोनों बहिनों को मारकर इनके खून से चूनर रंग कर ला दोगे। पति ने पत्नी को बहुत समझाया, लेकिन वह नहीं मानी। तब भाई एक दिन अपनी दोनों बहिनों को जंगल में ले गया। वहाँ जाकर उसने दोनों को मार डाला और उनके खून में चुनरी रंग कर उसने अपनी स्त्री को ला दी।

जहाँ उन दोनों बहिनों को मारा गया था वहाँ दो झाड़ियाँ उग आईं। झाड़ियों के बेर गहरे लाल रंग के और बहुत मीठे थे। साहूकार दिसावर से लौटा तो रास्ते में उसने उन झाड़ियों को देखा। उसने बेर तोड़ने के लिए एक झाड़ी में हाथ डाला तो वह दूसरी से बोली कि बहिन देख, हत्यारे घर का आदमी मेरे बेर तोड़ रहा है। इस पर दूसरी बोली :—

मैं रूपा, तू चम्पा,
आपणा बोरिया आपणो बापजी खा।

(मैं रूपा हूँ और तू चम्पा है। अपने बेर अपने पिता ही तो खा रहे हैं।)

दोनों झाड़ियों की बातें सुनकर साहूकार ने उनसे पूछा कि तुम क्या कह रही हो सो मुझे साफ समझाकर कहो। इस पर झाड़ियाँ बोलीं।

पापी बीरै पाप कुमायो,
भैणा के खून की चूनड़ी रंगाई।

(पापी भाई ने पाप अर्जित किया है। उसने बहिनों के खून से अपनी स्त्री के लिए चूनर रंगी है।)

फिर उन दोनों ने सारी बात अपने पिता से खोल कर कही। उन दोनों की बातें सुनकर पिता को बहुत दुःख हुआ। घर जाकर उसने अपने बेटे से पूछा कि रूपा-चम्पा कहाँ हैं ? इस पर उसने कह दिया कि वे बीमार

हुई थीं, मैंने उनका बहुत इलाज करवाया, लेकिन वे मर गईं। बाप को बेटे की बात से संतोष नहीं हुआ। वह बेटे और बहू को झाड़ियों के पास ले गया। झाड़ियों ने फिर अपनी करुण मृत्यु का सारा हाल उनके सामने कहा। बाप ने बेटे को घर से निकाल दिया और बहू को मार कर वहीं डाल दी।

● करणावत सिरदार

एक करणावत सरदार के घर में एक बिलाव हिल गया। दबणे (दूध-दही आदि ढकने के लिए सूराखदार मिट्टी के बड़े पात्र) को उलट कर उसके नीचे रखा दूध-दही भी वह खा जाता। एक दिन घर के सारे लोग उसे पकड़ने के लिए जागते रहे, लेकिन आदमियों को देखकर बिलाव नहीं आया। दूसरे दिन उन्होंने एक कमरे में दूध-दही के पात्र रखकर कमरे को खुला छोड़ दिया। बिलाव कमरे में घुसा और सरदारों ने कमरा बन्द कर दिया। दो दिन तक बिलाव कमरे में बन्द पड़ा रहा। फिर सब घर वालों ने बिलाव के ऊपर एक बड़ा और भारी कपड़ा डालकर उसे मुश्किल से पकड़ा। उन्होंने बिलाव की कमर में मोटा रस्सा डालकर गाँव में घुमाया और फिर उसे मार दिया।

सरदारों ने बारहटजी से जस (यशोगान) कहने के लिए कहा तो बारहटजी बोले :—

करड़ी कूंती करणावताँ, गल़ में घाली लाव।
कड़ बाँधी काठो कर्‌यो , मार्‌यो बोड बिलाव॥

● चम्पो के चाचा तव शरणम्

बहुत सी स्त्रियाँ गंगा-स्नान कर रही थीं। स्नान के पश्चात् पंडा उन्हें सीताराम, सीताराम तव शरणम् कह कर कीर्तन करवाने लगा। एक स्त्री सीताराम के स्थान पर 'चम्पो के चाचा तव शरणम्' कहकर कीर्तन करने लगी। पंडे ने उसे टोका कि सीताराम-सीताराम कह। इस पर वह बोली

कि यही तो कह रही हूँ, चम्पो के चाचा का यही तो (सीताराम) नाम है ।

● न्योलियो राजा जागै छै

एक राजा के सात रानियाँ थीं । छः को सुहाग था और एक को दुहाग । लेकिन संतान एक के भी नहीं थी । एक दिन राजा जंगल में एक साधु के पास गया और उसने साधुसे प्रार्थना की कि महाराज, मेरे एक भी पुत्र नहीं है । अतः ऐसा कुछ उपाय कीजिये कि जिससे मेरे पुत्र हों। साधु ने राजा को अपना चिमटा दिया और कहा कि सामने जो आम का पेड़ दिखलाई पड़ रहा है, उस पर यह चिमटा फेंकना, सात आम धरती पर आ गिरेंगे, लेकिन लालच मत करना । राजा चिमटा लेकर गया और उसे वृक्ष पर फेंका । चिमटे सहित सात आम जमीन पर आ गिरे। राजा ने सोचा कि एक बार चिमटाऔर फेंकूं तो सात आमऔर आजाएंगे । यह सोच कर उसने दुबारा चिमटा फेंका, लेकिन इस बार सातों आम और चिमटा सब वृक्ष पर जा टंगे । राजा अपना-सा मुंह लेकर रह गया । वह फिर साधु के पास आया और उसने कहा कि महाराज, चिमटा तो वृक्ष पर टंग गया । साधु ने कहा कि तुमने लालच किया होगा। इस बार तुम्हे अपना 'चिटिया' देता हूँ, इसे एक बार ही फेंकना, सात आम, चिटिया और चिमटा सब तुम्हारे पास आ जाएंगे । राजा ने चिटिया फेंका और सब चीजें आगईं । उन्हें लेकर वह साधु के पास आया । साधु ने कहा कि सातों आम अपनी सातों रानियों को दे देना, सातों के सात लड़के हो जाएंगे । राजा ने आम लाकर सातों को दे दिये । छहों सुहागिन रानियों ने तो आम खा लिये, दुहागिन रानी काम में लगी थी, अतः उसने आम उठाकर चूल्हे पर रख दिया । आम को एक नेवला सूंघ गया । काम कर लेने के पश्चात् दुहागिन रानी ने आम खाया ।

नौ महीने बाद सुहागिन रानियों के कुंअर जन्मे और दुहागिन के एक नेवला जन्मा । कुंअर कुछ बड़े हुए तो एक दिन अपने-अपने घोड़ों पर

चढ़कर कमाने चले। नेवले ने कहा कि माँ, मैं भी इनके साथ जाऊंगा। उसकी माँ ने कहा कि तू भला इनके साथ किस पर चढ़ कर जाएगा? नेवले ने कहा कि मुझे एक बिल्ली लादे। नेवला बिल्ली पर चढ़कर और ताकू (तकुआ) लेकर उनके साथ हो लिया। चलते२ एक नाला आया। नाले को देखकर घोड़े ठिठक गए। नेवला बोला कि मैं तो अपनी बिल्ली को एक ऐसा तकुआ लगाऊंगा कि यह एक छलाँग में नाले को पार कर जाएगी। इस पर राजकुमारों ने कहा कि पहले तकुआ लगाकर हमारे घोड़ों को पार करो। नेवले ने घोड़ों की पीठ में तकुआ गड़ाया और वे नाले को पार कर गये। तब नेवले ने अपनी बिल्ली के तकुआ छुआया और बिल्ली भी नाले के पार हो गई।

वहाँ से वे आगे बढ़े। शाम हुई तो वे एक बुढ़िया के घर ठहरे। बुढ़िया वास्तव में डाकिन थी। जब डाकिन ने देखा कि ये सब सो गए हैं तो वह उन्हें मारने के लिए छुरी तेज करने लगी। और सब तो सोगए थे, लेकिन नेवला जाग रहा था, वह बोल उठा :—

डाकण छुरी पलारै है,
न्योलियो राजा जागै है।

(डाकिन अपनी छुरी तेज कर रही है, नेवला राजा जग रहा है।) नेवले ने डाकिन से पूछा कि बुढ़िया माई, बुढ़ियामाई, यह क्या कर रही है? डाकिन बोली कि कुछ नहीं, यों ही सब्जी काटने के लिए जरा चाकू घिस रही हूँ। नेवला सोने का बहाना करके पड़ रहा। बुढ़िया थोड़ी देर बाद फिर छुरी तेज करने लगी। नेवला फिर बोल उठा :—

डाकण छुरी पलारै है,
न्योलियो राजा जागै है।

डाकिन ने फिर बहाना बनाया, वह सो गई लेकिन नेवला जान गया कि यह वास्तव में डाकिन है और हम सबको मारने के लिए ही छुरी तेज कर रही है। उसने अपने भाइयों को जगाया। उस डाकिन के सात लड़के थे और एक लड़की थी। नेवले तथा राजकुमारों ने मिल कर डाकिन के सातों लड़कों

को अपनी जगह सुला दिया और स्वयं सब वहाँ से खिसक गए । कुछ देर बाद डाकिन फिर उठी और उसने राजकुमारों के भुलावे में अपने सातों बेटों को मार डाला । सातों के सिर उसने छीके पर रख दिये । सबेरे जब उसकी बेटी उठी और उसने कलेवा माँगा तो डाकिन बोली कि छीके पर कलेवा रखा है, जा ले ले । डाकिन की लड़की ने छीके पर से एक सिर उतार कर देखा तो वह चीख पड़ी कि माँ, यह तो भाई का सिर है। डाकिन ने आकर देखा तो उसके सातों बेटों के सिर छीके पर रखे थे। अब वह बहुत हायतोबा मचाने लगी।

इधर नेवला अपने भाइयों सहित एक कुम्हार के घर ठहरा। रात को कुम्हार के लड़के को शौच की हाजत हुई तो कुम्हार ने नेवले को उसके साथ भेजा । नेवला कुम्हार के लड़के की पीठ में तकुआ गड़ाता हुआ उसे घर से दूर ले गया और फिर उसने उसे डराकर पूछा कि बता तेरे माँ-बाप का धन कहाँ है ? लड़के न डरते-डरते कहा कि बाप का धन चक्की के नीचे गड़ा है और माँ का चूल्हे की 'बेवणी' में । घर आकर नेवले ने दोनों जगहों से खोद कर सारा धन निकाल लिया और उसे एक मरियल-सी गधी को खिला दिया । सबेरे जब वे जाने लगे तो नेवले ने कुम्हार से वह गधी मांग ली । कुम्हार ने देखा कि अब यह दो-चार दिन में मरने ही वाली है । अतः उसने खुशी-खुशी वह गधी नेवले को दे दी ।

नेवला राजकुमारों के सहित घर आ गया। उसने एक मोटा सोटा मँगाया और गधी को पीटने लगा । गधी सारा धन फेंकने लगी। सुहागिन रानियों ने अपने बेटों से कहा कि देखो नेवला कितना धन लाया और तुम कुछ भी नहीं लाये। राजकुमारों ने नेवले को मुंहमाँगे रुपये देकर वह गधी खरीद ली और उसे अपने महल में ले जाकर पीटने लगे । सारा महल लीद से सड़ उठा, लीद में सिर्फ एक दमड़ी और एक खोटा पैसा निकला, अधिक मार पड़ने से गधी वहीं मर गई। यह देखकर सब लोग राजकुमारों की खिल्ली उड़ाने लगे ।

● बढ़ बढ़ रे चन्नणिये का रूंख

एक राजा के सात लड़के और एक लड़की थी। लड़की के सोने के बाल थे। इसलिए उसका नाम सोनल-दे पड़ गया था। एक दिन वह तालाब पर नहाने गई तो उसका एक बाल वहाँ टूट कर गिर गया। कुछ देर बाद उसका छोटा भाई भी तालाब पर नहाने गया तो उसे वह बाल मिल गया। उसने निश्चय किया कि जिसका भी यह बाल है मैं उसे ही व्याहूँगा। लड़का घर आया और उसने यह बात अपनी माँ से कही। उसकी माँ ने कहा कि यह तो तेरी बहिन का बाल है, बहिन से कैसे शादी हो सकती है? लेकिन लड़का किसी प्रकार नहीं माना, वह 'आटी पाटी' लेकर सो गया। निदान, बहिन के साथ उसकी शादी निश्चित हो गई। विवाह की सारी तैयारियां होने लगीं।

जब बहिन को इस बात का पता लगा तो उसे बहुत दुःख हुआ और वह चुपचाप घर से निकल कर एक चन्दन के वृक्ष पर जा बैठी। घर वाले भी ढूँढते खोजते वृक्ष के नीचे पहुँचे। सोनलदे के बाप ने अपनी बेटी से कहा :—

तेरै बाप कै धम्मक धाणी,
चावल सीजै, मूंग फलीजै,
फेराँ की बरियाँ बाई टल् रैई, ये टल् रैई।

"बेटी, विवाह की सब तैयारियां हो चुकी हैं और अब फेरों के वक्त तू यहां आ बैठी"

इस पर सोनलदे ने उत्तर दिया:—"पैली थां नै बापूजी कहती, अब सुसरोसा क्युं कर कहस्युं राज? बढ़ बढ़ रे चन्नणिये का रूंख ऊंचोई बढ़।" चन्दन का वृक्ष और भी ऊंचा चला गया। फिर बारी-बारी से घर के सारे लोग उसे मनाने आये, लेकिन हर बार वह इसी प्रकार सबको

यथोचित उत्तर देती रही और चन्दन का वृक्ष ऊंचा बढ़ता चला गया। अन्त में उसका छोटा भाई आया और उसने भी वही बात कही तो बहिन ने उत्तर दिया—पैली थां नै बीरोजी कहती, अब मारूजी क्युंकर कहस्युं राज, बढ़ बढ़ रे चन्नणिये का रूंख ऊंचोई बढ़।' उसके इतना कहते ही चन्दन का वृक्ष सोनलदे को लिए हुए आकाश में चला गया और सब लोग देखते ही रह गए।

● बादस्या और बजीर की लुगाई

एक बादशाह के वजीर की स्त्री बहुत सुन्दर थी। नाई ने बादशाह के कान भरे कि हुजूर, आपके हरम में एक भी बेगम खूबसूरती में वजीर की स्त्री की होड नहीं कर सकती। बादशाह ने कहा कि यह तो ठीक है, लेकिन वजीर को कैसे टाला जाए ? नाई ने कहा कि वजीर को उम्दा घोड़े खरीद कर लाने के लिए भेज दीजिए। बादशाह ने वैसा ही किया और वजीर की अनुपस्थिति में उसे वजीर के मैहल में जाने का मौका मिल गया। बादशाह ने रात को अपने महल से लेकर वजीर के महल तक कनात तनवाई और उसकी आड़ में वजीर के महल में पहुँच गया। वजीर की स्त्री की यह आदत थी कि जब वजीर घर पर नहीं होता था तो वह सोते वक्त चने की दाल मुंह में भर कर सोती, जिससे उसके मुंह से बड़ी बदबू निकलती।

बादशाह ने कमरे में प्रवेश किया तो देखा कि वास्तव में वजीर की स्त्री बहुत ही सुन्दर है लेकिन जब वह उसके नजदीक पहुँचा तो बदबू से उसका दम घुटने लगा। उसने सोचा कि अत्यंत सुन्दर होने पर भी इस स्त्री में यह बड़ा ऐब है, वह उलटे पैरों वहाँ से भागा, लेकिन जल्दी में उसके पैर का एक जूता वहीं रह गया। वजीर की स्त्री सबेरे उठी तो उसने जूता नहीं देखा, लेकिन जब दो तीन दिन बाद वजीर आया तो उसका ध्यान जूते की ओर गया। वह समझ गया कि यह जूता बादशाह

का है और मेरे पीछे से वह अवश्य मेरी स्त्री के पास आया है। उसने अपनी स्त्री से जूते के बारे में बहुत कुछ पूछा, लेकिन वह सर्वथा इनकार करती रही। तब वजीर ने यह नियम बना लिया कि वह सबेरे उठते ही सात कोड़े अपनी स्त्री की पीठ पर लगा देता। महीने भर तक वह ऐसा ही करता रहा। लेकिन वजीर की स्त्री इनकार ही करती रही। अन्त में खीझ कर वजीर ने अपनी स्त्री को घर से निकाल दिया। वह बेचारी अपने पीहर चली गई। अपने बाप के पूछने पर उसने सारी बात सच-सच बतलादी। उसका बाप भी किसी अन्य बादशाह के यहाँ वजीर था। वह अपने दामाद वाले बादशाह के दरबार में गया और अवसर पाकर उसने बादशाह से पूछा कि कोई आदमी सौ साल से एक खेत जोत रहा हो और उसे एक पल में छोड़ कर अलग हो जाए तो उसका क्या किया जाए? इस पर बादशाह बोला कि यदि वास्तव में कोई ऐसा करता है तो यह उसकी बड़ी नालायकी है। इस पर बादशाह का वजीर बोला कि हुजूर, यदि खेत में सिंह हिल जाए तो बेचारा खेत वाला क्या करे? बादशाह सारी बात समझ गया और बोला कि खेत में एक तलैया थी और सिंह वहाँ पानी पीने गया अवश्य था, लेकिन पानी में ऐसी बदबू आ रही थी कि सिंह वहाँ से प्यासा ही लौट गया और अब सिंह को ऐसी घृणा हो गई कि वह कभी उस खेत में जाने का नाम नहीं लेगा। तब वजीर बोला कि यदि वास्तव में यही बात है तो खेत वाला अपना खेत फिर सँभाल लेगा। बातों-बातों में सारी बात तय हो गई और वजीर की स्त्री फिर अपने घर आ गई।

● खप्परियो चोर

एक आदमी दिल्ली के बादशाह के यहाँ नौकरी किया करता था। उसकी यह आदत थी कि वह नित्य महल से कोई न कोई वस्तु अवश्य चुरा कर लाया करता। और कुछ हाथ नहीं लग पाता तो मिट्टी का दीया ही उठा लाता। वह बहुत बूढ़ा हो गया और बीमार रहने लगा। एक दिन उसके बेटे ने उससे पूछा कि बापजी, आप मरते क्यों नहीं हैं?

यदि आपकी कोई इच्छा हो तो मुझे बतलाइये मैं उसे पूरी करूंगा। बाप ने बेटे से कहा कि यदि तू खप्परिया चोर बन जाए तो मेरा स्वप्न पूरा हो जाए और मैं आराम से मर सकूं। बेटे ने बाप को विश्वास दिलाया कि मैं वास्तव में खप्परिया चोर बनूंगा ।

दूसरी रात को बाप बेटे दोनों चोरी करने के लिए साथ साथ निकले। वे अनाज की एक दुकान में चोरी करने के लिए घुसे। मामूली दुकान थी। ढूंढने पर उन्हें एक थैली में बीस पच्चीस रुपये मिले। खप्परिये ने अपने बाप से कहा कि यह बेचारा गरीब आदमी है, इसके यहां क्या चोरी करें? कल चल कर बादशाह के महल में चोरी करेंगे। बाप ने कहा कि कहीं हाथ में आया हुआ पैसा भी छोड़ा जाता है? लेकिन खप्परिया ने नहीं माना, उसने बाप से कहा कि या तो आप थैली छोड़ दें, अन्यथा पास में ही किला है सो हल्ला करके सिपाहियों को बुलाता हूँ। लाचार बुड्ढे ने थैली वहीं छोड़ दी ।

दूसरे दिन खप्परिया एक होशियार लुहार के पास पहुँचा और उसने लुहार को पांच रुपये देकर कहा कि ये पांच रुपय लो, मुझे एक हथौड़ा और पांच खूंटियां ऐसी बना कर दो कि यदि उन्हें लोहे की दीवार में ठोकूं तो उसमें भी ठुक जाएं। लुहार ने शाम तक खूंटियां बना कर उसे देदीं। रात को दोनों बाप बेटे चोरी करने के लिए बादशाह के महल के पास पहुँचे। जब घड़ियाल ने एक डंका लगाया तो खप्परिये ने एक चोट के साथ एक खूंटी महल की दीवार में गाड़ दी। घंटे की आवाज में खूंटी की आवाज मिल गई। उस खूंटी को पकड़ कर खप्परिया ऊपर चढ़ा और दूसरे डंके की आवाज के साथ उसने दूसरी खूंटी भी गाड़ दी। यों पांचों खूंटियों के सहारे वह महल में जा पहुँचा। पीछे-पीछे उसका बाप भी चढ़ गया ।

महल में पहुँच कर खप्परिये ने देखा कि बादशाह पलंग पर लेटा है। वह आधा सोया है, आधा जाग रहा है, उसके पैताने की ओर 'बातड़िया' बैठा बात कह रहा है। हुक्के की नली बादशाह के मुंह से लगी है, बातड़िया

की बात पर कभी वह 'हूँ' कह देता है, कभी नहीं। खप्परिये ने जाते ही बातड़िये की गर्दन एक ही वार में काट डाली। फिर उसने बादशाह के पलंग के पाये के नीचे से एक सोने की ईंट निकाली और बातड़िये की गर्दन उसके नीचे लगा दी। फिर उसने बातड़िये के हाथ पैर आदि तीनों पायों के नीचे सरका दिये और शेष तीनों सोने की ईंटें भी निकाल लीं। खप्परिया यह काम भी करता जाता था और साथ ही बातड़िये की-सी बोली में कहता भी जाता था कि बादशाह के महल में चोरी होती है, बातड़िये की गर्दन कटती है, पलँग के नीचे से सोने की ईंटें निकलती हैं आदि, आदि। बादशाह ने सोचा कि बातड़िया कोई बात कह रहा है। खप्परिया चारों ईंटें लेकर महल से उतर गया। लेकिन जब उसका बाप उतरने लगा तो बादशाह की आंखें खुल गईं। वह एक पल में सारी बात समझ गया। खप्परिये के बाप ने अपना सिर झरोखे से निकाल लिया था और वह उतरने की कोशिश में था कि बादशाह ने पीछे से उसकी टांगें पकड़ लीं। खप्परिये ने बचने का और कोई रास्ता न देखकर अपने बाप का सिर काट लिया और अपने घर आ गया।

दूसरे दिन बादशाह ने खप्परिये के बाप का धड़ दरबार में पहिचानने के लिए मँगवाया लेकिन सबने यही कहा कि बादशाह सलामत, बिना सिर के धड़ की क्या पहिचान हो? तब बादशाह ने कहा कि जो आदमी इसका सिर काट ले गया है वह उसे जलाने अवश्य आयेगा। तभी उसे पकड़ो। यों कहकर उसने बहुत सारे सिपाहियों को मसानों पर पहरा देने के लिए नियुक्त कर दिया। खप्परिया दिन में बादशाह के यहां नौकरी करता और रात को चोरी किया करता था। दिन में वह दरबार का सारा भेद जान लिया करता। सिपाहियों को छलने की योजना उसने वहीं बनाली।

मरघट पर सिपाही तैनात हो गये। इधर रात पड़ते ही खप्परिये ने एक फकीर का वेष बनाया, आटे के एक बड़े लोथड़े में उसने अपने बाप का सिर दबाया और उसे अपने झोले में डाल लिया। फिर वह 'यहां फकीर का रोट सिके, यहां फकीर का रोट सिके' की आवाज लगाता हुआ

मसान की ओर निकल गया। मसान पर सिपाहियों का पहरा बैठा था। फकीर ने वहां भी यही आवाज लगाई तो कुछ ने कहा कि यहां बादशाह का हुक्म नहीं है, कुछ ने कहा कि बेचारे को अपना रोटा सेंक लेने दो, अपना क्या जाता है ? निदान उन्होंने फकीर को रोटा सेंक लेने की आज्ञा दे दी। 'फकीर' ने एक जलती हुई चिता में आटे का लोथड़ा 'दबा' दिया। जब उसने देखा कि उसके बाप का सिर अच्छी तरह जल गया है तो उसने सिपाहियों से कहा कि हुजूर, मैं एक अधेले का नमक मिर्च ले आता हूँ, आप मेरे रोटे की निगाह रखना, कहीं यह जल न जाए। यों कहकर वह चलता बना और अपने घर जाकर सो गया।

इधर सबेरे बादशाह ने सिपाहियों को तलब किया तो उन्हें अपनी भूल मालूम हुई। बादशाह ने कहा कि वह फकीर ही खप्परिया चोर था। यों कह कर उसने उन सिपाहियों को नौकरी से हटा दिया। फिर बादशाह ने कहा कि जो शख्स सिर को जला गया है वहउसके 'फूल' चुनने के लिए भी अवश्य आयेगा। अतः इस बार बड़ी सावधानी से पहरा दिया जाए। यों कह कर बादशाह ने दूसरे सिपाहियों को मसान का पहरा देने के लिए नियुक्त किया। रात को खप्परिये ने एक 'जच्चा' का वेष बनाया, उसने आटे का एक बच्चा बनाकर उसे गोद में ले लिया, और पांच सात स्त्रियों को साथ कर लिया। एक थाली में चौमुखा दीया जलाकर तथा बहुत सारे लड्डू साथ लेकर 'जच्चा' अन्य स्त्रियों के साथ जलवा पूजने के लिए गीत गाती हुई चली। सिपाहियों ने टोका कि यहां बादशाह सलामत का हुक्म नहीं है। जच्चा ने कहा कि बहुत वर्षों के बाद फकीरों की दुआ से मेरे बच्चा हुआ है, यदि इसे कुछ हो गया तो इसकी जिम्मेदारी तुम लोगों पर होगी। सिपाही पशोपेश में पड़ गए। जच्चा ने सब की गोद में पांच-पांच सात-सात लड्डू डाल दिये। वे लड्डू खाने लगे और इधर जच्चा-रूपी खप्परिये ने अपने बाप के फूल चुन लिए। फूल चुनकर खप्परिया स्त्रियों के साथ चल पड़ा। खप्परिये ने लौटते वक्त फूल जमुनाजी में प्रवाहित कर दिये और फिर अपने घर जाकर आराम से सो रहा।

अगले दिन सारा हाल जानकर बादशाह ने उन सिपाहियों को भी नौकरी से हटा दिया और खुफिया-पुलिस के सिपाहियों को इस कामपर नियुक्त किया। खप्परिया तो वहीं मौजूद था। वह दरबार से आ गया। उसने ज्योतिषी का वेष बनाया और पोथी-पत्रा लेकर उन सिपाहियों के घर पहुँचा, जिन्हें रात को ड्यूटी पर जाना था। ज्योतिषी को आया देखकर सिपाहियों की स्त्रियां बड़ी आतुरता से 'दिन-मान' पूछने लगीं। ज्योतिषी न पत्रा उलटते हुए उंगलियों पर हिसाब लगाकर बताया कि दिनमान बहुत 'न्याऊ' (बुरे) हैं। ज्योतिषी बोला कि तुम्हारे मर्द तो खप्परिये चोर को पकड़ने जाएंगे और रात को तुम्हारे घर डाकी (राक्षस) आयेंगे सो वे तुम सबको कच्चे बच्चे सहित खा जाएंगे। यदि उनसे बचना चाहो तो मूसल, पत्थर, राख की भरी हांडियां आदि जो भी मिल सकें बटोर कर बैठ जाना। आधी रात पीछे 'डाकी' आएंगे। वे सब कहेंगे कि हम तुम्हारे घरवाले हैं, लेकिन उनकी एक न सुनना। यदि तुम उन्हें पतिया गईं तो फिर खैर नहीं। और इस बात की चर्चा किसी से न करना। अपने मर्दों को भी इस बात का पता न लगने देना। यों पट्टी पढ़ाकर ज्योतिषी कुछ ले देकर वहां से चलता बना।

रात को खप्परिया एक अँधेरी व सूनी गली में अपनी दूकान लगाकर बैठ गया। वहां बैठकर वह बड़े-पकौड़ी बनाने लगा। बड़े पकौड़ियों में उसने बहुत मिर्च मसाले डाले व भाँग आदि नशीली चीजें भी उनमें भरपूर मिला दीं। गश्त लगाते हुए खुफिया-पुलिस के सिपाही वहां पहुंचे तो उन्होंन कड़क कर उससे पूछा कि इतनी रात गए यहाँ क्या करता है? खप्परिये ने बड़े दीन स्वर में कहा कि हुजूर, गरीब आदमी हूँ बड़े-पकौड़ी बनाकर बाल-बच्चों के पेट पालता हूँ। बड़े-पकौड़ी बहुत स्वादिष्ट हैं, आप भी खायें, पैसों की कोई बात नहीं है, जब आपके पास हों, तब दे देना। सिपाही बड़े खाने बैठ गए। बड़े वास्तव में ही बहुत स्वादिष्ट थे, अतः वे बड़े स्वाद से पेट भर भर कर बड़े खाने लगे। खप्परिया बीच-बीच में टोक देता कि हुजूर, मैं गरीब आदमी हूँ मेरे पैसे दे देना। सिपाही बड़ी लापरवाही से कहते—

"हां, हां ! तेरे पैसे मिल जायँगे, तू बेपरवाह आने दे।" सिपाहियों ने खूब डटकर बड़े खाये। अब उन्हें बड़ी प्यास लगी। सिपाहियों ने पानी मांगा तो खप्परिया बोला कि हुजूर, पानी की तो एक बूंद भी नहीं है। सिपाहियों के गले सूखने लगे और भंग आदि नशीली चीजों के कारण वे सब बेहोश होकर वहीं गिर गए। अब खप्परिये ने उनकी वर्दियां उतार लीं और पानी में राख घोलकर उन सब के शरीर पर पोत दी। फिर वह सब कपड़े लेकर चलता बना। आधी रात के बाद जब ठंड अधिक पड़ने लगी तो सिपाहियों का नशा कुछ हल्का हुआ। वे गिरते-पड़ते अपने घरों को चले। उधर उनकी देवियां उनका स्वागत करने के लिए तैयार बैठी थीं। उन्हें आते देखकर वे बोलीं कि बेचारा ज्योतिषी सच कह रहा था, वे देखो वे आ रहे हैं। ज्योंही वे कुछ नजदीक आये देवियों ने पत्थर, मूसल और राख की हांडियों से उनका स्वागत किया। वे चिल्लाते रहे कि कुलटाओ, हम तुम्हारे घर के हैं, लेकिन उनकी कौन सुनता था। निदान सब अधमरे होकर वहीं गिर पड़े। मुंह अँधेरे जब लोग इधर-उधर आने-जाने लगे तो उन्होंने पास जाकर उन्हें पहिचाना। मुहल्ले के लोग एक से पूछते अरे कौन, पहाड़ खां, तो वह बेचारा पड़े-पड़े ही कहता, 'हें', फिर दूसरे से पूछते, हाथीखां ? वह भी क्षीण स्वर में उत्तर देता, 'हें'। तब उन्होंने जाकर उनकी घरवालियों से कहा कि रंडियो, तुम्हारे घर वाले तो बाहर पड़े सिसक रहे हैं। तब वे उन्हें उठा-उठा कर अपने-अपने घरों में लेगईं और उस मरदूद ज्योतिषी को गालियां देने लगीं।

खुफिया-पुलिस के सिपाहियों की असफलता से बादशाह को बड़ी निराशा हुई। बादशाह के दरबार में मैना नाम की एक वेश्या बहुत चतुर, चालाक समझी जाती थी। उसने बादशाह से निवेदन किया कि जहांपनाह, इस कनीज़ को भी खप्परिये चोर को पकड़ने का मौका बख्शा जाए। बादशाह ने प्रसन्नतापूर्वक मैना को आज्ञा देदी। रात को मैना ने बहुत बढ़िया शृंगार किया और श्रेष्ठ वस्त्र आभूषणों से सज-धज कर और अपने आदमियों (सारंगिया, तबलची आदि) को साथ लेकर गाती बजाती

शहर की गलियों में घूमने लगी। रात को वेष बदलकर खप्परिया मैना के पास पहुँचा। उसने मैना से पूछा कि आज इस प्रकार रात को घूमने का क्या प्रयोजन है ? मैना ने कहा कि मैं खप्परिये चोर को पकड़ने निकली हूँ। इस पर खप्परिया बोला कि मैना, खप्परिया तो मेरा दोस्त है। मैं तुम्हें अभी उससे मिला सकता हूँ। थोड़ी ही देर में वह अमुक कुएं पर आयेगा। खप्परिये के कहने पर मैना ने अपने आदमियों को घर भेज दिया और स्वयं उसके साथ कुएं पर चली गई। कुएं पर पहुँचकर खप्परिये ने मैना के सारे गहने कपड़े उतार लिये और उसे नंगी करके कुएं में लटकादी। खप्परिया सारे गहने कपड़े लेकर अपने घर चला गया और मैना कुएं में लटकी रही। बड़े तड़के कुएं से पानी निकालने वाले आये तो मैना ने कहा कि धीरे से निकालना। वे लोग डर कर भागने लगे कि कुएं के अन्दर आज तो भूत है। इस पर मैना ने कहा कि न यहां भूत है न प्रेत, मैं मैना भगतन हूँ। तब उन लोगों ने मैना को बाहर निकाला। वह ठिठुरती, सिकुड़ती, लजाती अपने घर भागी।

मैना की दुर्दशा सुनकर बादशाह को हँसी आ गई। बादशाह ने सोचा कि चोर को चोर पकड़ सकता है। इसलिए उसने राज्य भर के नामी चोरों को बुलवाया। उन चोरों में से कुछ चोर जो सबसे होशियार थे उन्हें यह काम सौंपा गया। चोरों ने बादशाह से कहा कि हमें एक बहुत बढ़िया ऊँट और एक नौलखा हार दिलवा दीजिए। बादशाह ने उन्हें ऊँट और हार दिलवा दिये। तब चोरों न ऊँट के गले में नौलखा हार डालकर उसे छोड़ दिया और स्वयं वेष बदलकर ऊँट के आगे-पीछे चलने लगे। चोरों ने सोचा कि खप्परिया ऊँट को गायव करने की कोशिश करेगा और तब हम उसे पकड़ लेंगे। खप्परिये के घर से थोड़ी दूर पर ही एक बाजीगर 'जादू' का तमाशा दिखला रहा था। खप्परिये ने बाजीगर को पांच रुपये दिये और उससे कहा कि वे आदमी जो इधर आ रहे हैं उन्हें थोड़ी देर यहां बिलमा लेना। वे लोग उधर आये तो बाजीगर बड़ी तत्परता से तमाशा दिखाने लगा, 'ऊँट का घोड़ा बनाता हूँ, घोड़े की गाय बनाता हूँ,

गाय का हाथी बनाता हूँ आदि । चोर तमाशा देखने में लगे और अवसर पाते ही खप्परिया ऊँट को अपने घर में ले घुसा । खप्परिये को तो सारा भेद मालूम था ही, अतः उसने पहले से ही एक बड़ा गड्ढा अपने घर में खोद रखा था। उसने ऊँट का हार निकाल लिया और उसके कान काट कर रख लिये । फिर उसने ऊँट को मार कर गड्ढे में डाल दिया और गढ्ढे को पाट दिया। फिर खप्परिये ने ऊँट के खोजों पर झाड़ फेर कर खोज मार दिए । उधर तमाशा खत्म हुआ तो चोरों को ऊँट का ध्यान आया । लेकिन अब ऊँट कहां था ? चोरों की करतूत पर नाराज होकर बादशाह ने उन्हें कड़ा दण्ड दिया ।

फिर नगर की दूतियां बुलाई गईं । सौ में से पचास दूतियां छांटी गईं, पचास में से पच्चीस, पच्चीस में से दस, दस में से पांच और पांच में से दो दूतियां ऐसी छांटी गईं जो पानी में आग लगादें और आकाश के तारे तोड़ लायें । उन दोनों दूतियों को यह काम सौंपा गया । दूतियां सौ-सौ बरस की बुढ़िया बन गईं और नगर में चल पड़ीं । वे बड़े करुण स्वर में कहतीं कि हमारे परपोते के 'बोदरी' (एक प्रकार का चेचक) निकली है, किसी सयाने ने उसके इलाज के लिए ऊँट के कानों की आवश्यकता बतलाई है सो किसी के यहां ऊँट के कान पड़े हों तो हमें दे दो, हमारा परपोता बच जायगा । इस प्रकार ऊँट के कान मांगती वे घर-घर फिरने लगीं । एक दिन वे खप्परिये के घर भी जा पहुंचीं । खप्परिया घर पर नहीं था । खप्परिये की स्त्री ने अपनी सास से कहा कि जी, तुम्हारे बेटे ने कुछ दिन पहले जो ऊँट मारा था, उसके कान पड़े हैं सो इन बेचारियों को दे दो तो इनका परपोता बच जाएगा, अपने तो वे बेकार पड़े हैं । खप्परिये की मां ने कहा कि खप्परिया आयेगा तो हम दोनों की गर्दन उतार लेगा । लेकिन खप्परिये की स्त्री ने ऊँट के कान लाकर उनको दे दिये । उन दोनों को मुंह मांगी मुराद मिल गई । उन्होंने पहिचान के लिए घर के बांये कोने पर खून का पंजा लगा दिया और फिर बादशाह के पास पहुँचीं । उन्होंने ऊँट के कान बादशाह को पेश कर दिये और

कहा कि आपका चोर अमुक घर में है, हम घर के बायें कोने पर खून का पंजा लगाकर आई हैं।

खप्परिया भी तब वहीं था। दूतियोंकी बात सुनकर वह बुदबुदाया, "रंडियों ने मुझे मार डाला।" वह तुरन्त वहाँ से निकला और सीधा कसाई की दूकान पर पहुँचा। उसने दो रुपये देकर खून की एक हँडिया ली और आकर अपने घर के आस-पास के सारे घरों के बायें कोनों पर खून के पंजे लगा दिये। थोड़ी देर के बाद राज्य के सिपाही वहाँ पहुँचे और पंजे का निशान देख-देखकर घरों को फोड़ने लगे। दो घर फूटे, दस घर फूटे, बीस घर फूटे, तब लोगोंने जा कर बादशाह से पुकार की, आलमपनाह, हमारे घरों में कौनसे 'टोडिये' (ऊँट) बैठे हैं, आप हमें क्यों उजड़वा रहे हैं? बादशाह ने हुक्म दिया कि दूतियों को थोथे बाँस मार कर निकाल दिया जाए।

अब बादशाह ने वजीर से कहा कि वजीर साहब, यह काम आपके बिना न होगा। वजीर ने खप्परिये को पकड़ने का बीड़ा उठाया। खप्परिया मन ही मन हँसा और उसने वजीर को उल्लू बनाने की योजना गढ़ ली। रात को खप्परिये ने एक बुढ़िया का वेष बनाया। नगर के एक सुनसान हिस्से के एक टूटे झोंपड़े में वह गरीब बुढ़िया के वेष में चक्की चलाने लगा।

आधी रात को वजीर उधर से अपने घोड़े पर चढ़ा हुआ निकला तो उसने बुढ़िया को टोका। बुढ़िया बोली हुजूर, गरीब बुढ़िया हूँ, खप्परिये चोर के घोड़े के लिए दाना दलती हूँ। वह आधी रात के बाद आकर दाना ले जाता है और मुझे दो रुपये दे जाता है, उसी से अपना काम चलाती हूँ। वजीर ने कहा कि मैं उस बदमाश खप्परिये को पकड़ने के लिए ही घूम रहा हूँ। बुढ़िया बोली कि हुजूर, मैं आपको उसे पकड़ा तो दूंगी लेकिन आप ऐसा करें कि घोड़े को तो दूर बाँध दें और अपने वस्त्र भी उतार कर वहीं रख दें। हुजूर फिर मेरे कपड़े पहन कर चक्की चलाएँ। जब खप्परिया आकर आपसे दाना माँगे तो उसका हाथ पकड़ लें।

वजीर को यह तरकीब पसन्द आ गई और उसने वैसा ही किया। खप्परिया वहाँ से खिसका और वजीर के कपड़े-लत्ते लेकर तथा उसके घोड़े पर सवार होकर वहाँ से चम्पत हो गया। इधर वजीर खप्परिये की बाट देखता रहा। जब उजाला होने लगा तो वजीर की समझ में यह बात आई कि खप्परिया तो वही था। तब उठकर वजीर लुकता-छिपता अपने घर पहुँचा।

वजीर की गत सुनकर बादशाह झुंझलाकर बोला कि साले सब हराम की खाने वाले हैं, आज मैं स्वयं उस दुष्ट खप्परिये को पकड़ूंगा। शाम हुई तो खप्परिया एक गधे पर बहुत सारे चिथड़े लादकर जमुना किनारे पहुँचा और कपड़े धोने लगा। एक काली हँडिया भी उसने अपने पास छिपा कर रख ली। आधी रात को बादशाह चक्कर लगाता हुआ जमुना किनारे पहुँचा। बादशाह ने पूछा कि आधी रात को यहाँ कपड़े धोने वाला कौन है? 'खप्परिये' ने हाथ जोड़कर अरज की कि हुजूर का मस्ताना धोबी है आलमपनाह! बादशाह ने पूछा कि अरे मस्ताना, यहाँ आधी रात को क्या कर रहा है? मस्ताने ने फिर अरज की कि हुजूर, आपकी पोशाक इसी वक्त धोया करता हूँ, क्योंकि दिन में किसी चाँडाल की छाया पड़ जाए तो आपकी पोशाक नापाक हो जाए। फिर 'मस्ताना' ने पूछा कि हुजूर आज आधी रात को यह तकलीफ क्यों उठा रहे हैं, तो बादशाह ने कहा कि मैं आज खप्परिये चोर की तलाश में हूँ। 'मस्ताना' बोला कि जहांपनाह, खप्परिया तो आधी रात के बाद हमेशा ही यहां आया करता है और हम दोनों यहां बैठ कर बहुत देर तक गप-शप किया करते हैं। अब वह आने ही वाला होगा। मैं उसे आज आप के हवाले कर दूंगा, लेकिन आप उस वृक्ष की आड़ में खड़े हो जाएं और घोड़े को भी दूर बांध दें। बादशाह ने वैसा ही किया। थोड़ी देर बाद खप्परिया किसी व्यक्ति को सम्बोधित करता हुआ-सा बोला "अरे खप्परिया, आज तेरी जान की खैर नहीं है, आज खुद बादशाह सलामत तुझे पकड़ने आये हैं।" फिर खप्परिये ने आवाज बदल कर और हंडिया में मुंह देकर कहा, "अरे मस्ताना, बाद-

शाह की ऐसी की तैसी, मुझे पकड़ने वाला इस दुनिया में कोई नहीं है।" यों दो-चार संवादों के बाद खप्परिये ने हंडिया औंधा कर नदी की धारा में बहा दी और बादशाह की ओर मुंह करके बोला कि हुजूर, यह दुष्ट नहीं मानता है, वह जा रहा है। बादशाह अपने कपड़े उतार कर और नंगी तलवार लेकर नदी में कूद पड़ा। अंधेरे में काली हँडिया को बादशाह ने खप्परिया का सिर समझ लिया और बहुत देर तक हँडिया के पीछे भागता रहा। अन्त में उसने लपक कर हँडिया पर तलवार का वार किया। हँडिया के टुकड़े हो कर नदी में डूब गए। बादशाह के मुंह से सहसा ही निकल पड़ा, 'उफ, धोखा'।

इधर खप्परिया बादशाह की पोशाक पहन कर तथा उसके घोड़े पर सवार हो कर चल दिया। जाते वक्त वह महल के पहरेदारों से कहता गया कि मैं (बादशाह) तो आ गया हूँ, थोड़ी देर में खप्परिया आयेगा सो फाटक मत खोलना। उधर बादशाह लौटकर उस स्थान पर आया तो वहां न कपड़े थे और न घोड़ा था। वह थककर चूर हो गया था तथा जाड़े के मारे कांप रहा था। वह पैदल महल की ओर चला। गिरता-पड़ता महल के फाटक पर पहुँचा तो पहरेदारों ने किवाड़ नहीं खोले। बादशाह ने कहा कि मैं बादशाह हूँ, लेकिन पहरेदारों ने कहा कि बादशाह सलामत तो घोड़े पर सवार होकर कभी के गये, तू खप्परिया चोर है। बादशाह अधिक देर तक वहां खड़ा नहीं रह सका और गिर पड़ा। पहरेदारों में कोई समझदार आदमी भी था, उसने कहा कि भले आदमियों, देखो तो सही, कहीं बादशाह सलामत ही न हों, यदि खप्परिया भी होगा तो हम सब को खा तो नहीं जाएगा। 'बाता' जलाकर उन्होंने देखा तो बादशाह बेहोश जमीन पर पड़ा था। बादशाह के 'जबाड़े जुप' गए थे। बादशाह को इस हालत में देख कर पहरेदारों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। वे बादशाह को उठाकर महल में ले गए। बादशाह को रूई के 'पहलों' में लिटाया गया।

स्वस्थ होने पर जब बादशाह दरबार में पहुँचा तो उसने घोषणा

करवा दी कि जो खप्परिया चोर को पकड़ कर लाएगा उसे दिल्ली का आधा राज्य दिया जाएगा। खप्परिया बादशाह के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और बोला कि हुजूर, यदि मेरे सात गुनाह माफ कर दिए जाएँ तो मैं खप्परिया को पकड़ सकता हूँ। अपने एक अदने नौकर की छोटे मुंह बड़ी बात सुनकर बादशाह को आश्चर्य हुआ। लेकिन बादशाह ने उसके सारे गुनाह माफ़ कर देने का वचन दिया। तब खप्परिया बोला कि बादशाह सलामत, मैं ही खप्परिया चोर हूँ। बादशाह को विश्वास नहीं हुआ तो खप्परिये ने सोने की ईंटें आदि सारी चीजें ला-लाकर बादशाह को दिखलाईं। तब बादशाह ने खप्परिये से कहा कि तुझे शाबाश है, यदि तेरे जैसे दो-चार आदमी हों तो दिल्ली शहर को उजाड़ बना डालें। यों कहकर बादशाह ने अपने वचनानुसार खप्परिये को अपना आधा राज्य दे दिया।

● दुनियादारी

एक लड़का एक साधु के पास जाया करता था। लड़के का विवाह हो गया तो उसका साधु के पास जाना बहुत कम हो गया। साधु ने इसका कारण पूछा तो लड़का बोला कि महाराज, मेरी स्त्री मुझे आने नहीं देती। वह कहती है कि मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकती। मेरी पत्नी मुझे बहुत प्यार करती है। इस पर साधु ने कहा कि आज तुम घर जाकर बहुत अच्छी रसोई बनवाना और जब रसोई तैयार हो जाए तो तुम मृतक के समान होकर पड़ जाना। तुम्हें असलियत का पता चल जाएगा।

लड़के ने वैसा ही किया। जब रसोई तैयार हो गयी तो वह एक खंभे में पैर फँसा कर और मृतवत् होकर पड़ रहा। स्त्री ने जब देखा कि उसका पति मर गया है तो उसने खूब छककर भोजन किया और फिर इतमीनान से रोने बैठी। पास-पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गये। वे उसके पति का पैर निकालने के लिए खंभे को तोड़ने लगे तो वह बोली कि अब यह तो मर ही गया है, इसका पैर काटकर निकाल लो,व्यर्थ में खंभा क्यों तोड़ रहे हो? पत्नी की बात सुनकर पति सहसा उठ बैठा और वह सीधा उस साधु के पास चला गया।

एक दो दिन बाद उसकी स्त्री उसे लिवाने के लिए कुटिया पर पहुँची तो वह बोला कि मैं दुनियादारी देख चुका हूँ। तुम वही तो हो जो खंभे के लिए मेरा पैर कटवा रही थी। अब तुम जाओ, मैं नहीं आने का।

● राजकुमारी फूलमदे

एक राजा के लड़के ने हठ पकड़ लिया कि मैं शादी नहीं करूँगा। राजा ने उसे बहुत समझाया, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा रहा। तब राजा ने नाराज हो कर उसे एक बुर्ज में कैद करवा दिया। राजकुमारी फूलमदे का उड़नखटोला रात को उसी बुर्ज के ऊपर से होकर जाया करता था। फूलमदे ने सोचा कि यह बुर्ज हमेशा सूनी रहा करती थी, आज इसमें कौन कैदी आ गया है ? कैदी को देखने के लिए वह बुर्ज में गयी। राजा का लड़का फूलमदे को देखते ही उस पर मोहित हो गया। फूलमदे के पूछने पर राजकुंअर ने उसे सारी बात बतलादी और फिर उससे यह भी कहा कि मैं तुमसे इसी वक्त शादी करने के लिए तैयार हूँ। फूलमदे ने अपने सिर के जूड़े में से एक सुन्दर फूल निकाला, फूल को उसने अपने कान के चारों ओर फिराया और फिर उसे एडी के नीचे दबाकर चली गयी। राजकुंअर कुछ नहीं समझा, लेकिन उसने अपने पिता से कहलवाया कि वह शादी करने के लिए तैयार है। उसे बाहर निकाला गया। उसने अपने पिता से रात की सारी बात कही, लेकिन कोई भी इस पहेली को नहीं सुलझा सका। इस पर राजकुमार ने कहा कि मैं यदि शादी करूँगा तो बस उसी स्त्री से।

राजा ने नगर में ढ़िंढोरा पिटवा दिया कि हर कोई आदमी अपनी समझ के अनुसार इस बात का अर्थ बतलाए। जो भी बात का अर्थ बतलाने आता, उसे कुछ न कुछ दे दिया जाता। एक दिन एक गंजे सिर का ग्वालिया अपने भैंसे पर चढ़कर आया। उसका वेष देखकर सब हँसने लगे, लेकिन उसने कहा कि मैं तुम्हारी पहेली अभी सुलझाये देता हूँ। बुर्ज में जो लड़की आई थी, उसका नाम फूलमदे है, कान के चारों ओर उसने जो फूल को फिराया उसका मतलब यह है कि उसके यहां फूलों का

एक बहुत सुन्दर बगीचा है और एड़ी के नीचे फूल दबाने का अर्थ यह है कि वहां तक फूलों की सड़क है। राजकुमार को उसकी बात जँच गयी और उसने गंजे ग्वाले से कहा कि तू मेरे साथ चलकर उसका पता लगा। गंजे ने कहा कि जब तक मैं लौटूंगा मेरा भैंसा मर जाएगा। राजकुमार ने भैंसे की निगरानी का अच्छा प्रबन्ध कर दिया और तब दोनों यथेष्ट धन लेकर फूलमदे की खोज में निकल पड़े।

फूलमदे के नगर में पहुँच कर उन्होंने फूलां मालिन के घर अपना अड्डा जमाया। एक दिन फूलमदे की दासी कपड़ा खरीदने के लिए बाजार गयी तो गंजे ने राजकुमार से कहा कि यह जो कपड़ा पसन्द करे उसे तुम ले लेना। राजकुमार दासी के पीछे-पीछे हो लिया। दासी ने जो कपड़ा पसन्द किया, दुकानदार ने उसके सौ रुपये मांगे। इस पर दासी मुंह बिचका कर आगे चलने लगी। लेकिन राजकुमार ने उसी कपड़े को दो सौ रुपये देकर खरीद लिया। फिर उसने कपड़े की तह में एक चिट्ठी लिख कर डाल दी और वह कपड़ा दासी को दे दिया।

कुछ ही देर में दासी लौटी। वह हर कदम पर एक फूल रखती जा रही थी। राजकुमार ने गंजे से पूछा कि इसका क्या अर्थ है तो गंजे ने कहा कि फूलमदे को अपने आने की खबर हो गई है और उसने दासी से कहलवाया है कि तुम फूलों के बगीचे में ठहरो। वे दोनों जाकर फूलों के बगीचे में ठहर गये, लेकिन फूलमदे ने उनकी फिर सुधि नहीं ली। छः महीने बीत गये और राजकुमार के सारे पैसे खत्म हो गये। तब एक दिन दासी फूलों का गजरा गूंथने के लिए बाग में आई तो गंजे ने उसे खूब पीटा। फिर उसने फूलों के गजरे में एक चिट्ठी लिख कर लगा दी कि हम इतने दिनों से तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं, और तुम हमारी सुधि नहीं लेती। हमारे पास खाने-पीने को भी पैसे नहीं रहे।

फूलमदे वास्तव में उन दोनों को भूल ही गई थी। चिट्ठी देखते ही उसे ध्यान आ गया। उसने एक काली हँडिया में बहुत से हीरे-मोती भरवाये, और उसमें एक रस्सी का टुकड़ा डलवाया। फिर हँडिया

को घोड़ों की लीद से भरवा कर उसने राजकुमार के पास भेज दी। राज-कुमार कुछ नहीं समझा, लेकिन गंजे ने कहा कि हीरे-मोती तो हमारे खर्चे के लिए हैं। लीद, हँडिया और रस्सी का मतलब यह है कि महल की एक मोरी अस्तबल में खुलती है, उसमें एक रस्सी लटकी रहेगी, तुम उसीके सहारे महल में आना।

रात को दोनों मोरी के नीचे पहुँचे। गंजे ने कहा कि महल में मैं जाता हूँ क्योंकि राजकुमारी तुम्हें जो बातें पूछेगी, उनका तुम ठीक से उत्तर नहीं दे सकोगे और वह तुम्हें इसी मोरी से नीचे फेंक देगी। लेकिन राजकुमार ने सोचा कि गंजा उससे स्वयं विवाह कर लेगा, अतः उसने गंजे का प्रस्ताव ठुकरा दिया। तब गंजे ने कहा कि मोरी से मुंह निकालते ही फूलमदे तुमसे पूछेगी कि तुम कौन हो ? तब तुम कह देना कि मैं फलां राजकुमार हूँ। फिर जब वह तुमसे पूछे कि यहां क्यों आये हो तो तुम कहना कि फूलमदे से मिलने आया हूँ। जब वह पूछे कि फूलमदे कौन सी है तो तुम कहना कि जो मुझ से बात कर रही है, वही फूलमदे है। इस पर वह अपनी सारी दासियों को वहां से हटा देगी और तुम्हें पलंग पर बैठने के लिए कहेगी। वहां बहुत से पलंग बिछे होंगे, लेकिन उन सब में से बीच वाले पलंग पर बैठना, जैसे वहां पन्द्रह पलँग हों तो दोनों तरफ के सात-सात पलंग छोड़कर आठवें पर बैठना। राजकुमार ने वैसा ही किया, लेकिन फूलमदे ने उसकी चेष्टाओं से जान लिया कि यह किसी के सिखाये अनुसार काम कर रहा है, इसे स्वयं कुछ भी ज्ञान नहीं है। राजकुमार पलंग गिनकर बीच के पलंग पर तो बैठा, लेकिन सिरहाने बैठने के बजाय पायताने की ओर बैठ गया। राजकुमारी का शक पूरा हो गया और उसने दासियों को बुलवाकर राजकुमार को उसी मोरी से नीचे फेंकवा दिया। इधर गंजा तो पहले ही जानता था कि राजकुमार इसी मोरी से फेंका जाएगा, अतः उसने वहां घास का ढेर लगा दिया था, राजकुमार घास के। ढेर में गिरा, अतः उसको चोट नहीं लगी।

गंजे न कहा कि मैं तुमसे पहले ही कह रहा था कि तुम निरे बेवकूफ

हो। फिर दोनों वहाँ से पास के एक गाँव में गये। उस गाँव के बढ़ई बहुत प्रसिद्ध थे। इनके पास हीरे-मोती तो यथेष्ट थे ही, इसलिए इन्हों ने बढ़इयों से काठ का एक बड़ा शिवालय बनवाया जो देखने में बिल्कुल ईंट-पत्थर के शिवालय जैसा लगता था। और जिसके हिस्से अलग-अलग करके कहीं भी लेजाकर शिवालय खड़ा किया जा सकता था।

जब शिवालय तैयार हो गया तो उसे रातोंरात फूलमदे के नगर में खड़ा कर दिया गया। राजकुमार पुजारी बन गया और गंजा पहरेदार बन गया। नगर के लोगों ने जब शिवालय देखा तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। सारे लोग यही कहते थे कि यह शिवालय रात को आकाश से उतरा है। नगर भर के लोग शिवालय में शिव के दर्शन करने के लिए उमड़ पड़े। गंजे ने शिवालय की परिक्रमा में एक बारी रखवाई थी। उसने एक बहुत बढ़िया रथ वहाँ हर वक्त खड़ा रखने के लिए एक रथ-वान (सारथी) को रख लिया। उसने रथवान को समझा दिया कि इशारा पाते ही रथ को हवा कर देना।

फूलमदे भी शिवालय में दर्शन करने के लिए आई तो गंजे ने उसे दूर से ही आती देख कर राजकुमार से कहा कि कुछ समय के लिए मुझे पुजारी बनने दो तो मैं तुम्हारा काम बना दूँगा, अन्यथा असफलता ही हाथ लगेगी, क्योंकि तुमसे कुछ हो नहीं सकेगा। लेकिन राजकुमारने सोचा कि गंजा स्वयं फूलमदे को ले उड़ेगा, सो उसने गंजे की बात नहीं मानी। तब गंजे ने सारी योजना राजकुमार को समझा दी कि जब फूलमदे परि-क्रमा देने जाए और बारी के पास पहुँचे तो उसे जबरन् पकड़ कर रथ में डाल लेना और हवा हो जाना। राजकुमार ने वैसा ही करने की कोशिश की, लेकिन बारी खुलते ही हवा का एक ऐसा तेज झोंका आया कि राज-कुमार फूलमदे को पकड़ने में झिझक गया। केवल फूलमदे का दुपट्टा उसके हाथों में आया और फूलमदे 'धोखा, धोखा' चिल्लाती हुई वहाँ से भागी। गंजे ने देखा कि यहाँ रहने में अब कुशल नहीं है। इसलिए वे दोनों रथ में बैठकर वहाँ से भाग गये।

वहाँ से चलकर वे एक दूसरे नगर में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उस नगर के लोग गाने–बजाने और नाचने में बहुत प्रवीण हैं। गंजे ने उन्हें काफ़ी रुपये देकर बीन बजाना और राजकुमार ने बहुत बढ़िया नृत्य करना सीख लिया। फिर दोनों वहाँ से फूलमदे के नगर में आये। नगर में आने पर उन्होंने सुना कि फूलमदे का विवाह किसी राजा के लड़के से शीघ्र ही होने वाला है। यह सुनकर राजकुमार उदास हो गया, लेकिन गंजे ने कहा कि मैं अपना आखिरी दावँ लगाता हूँ। इस में असफल हो गये तो फिर जिन्दगी भर पछताना ही पड़ेगा।

गंजे ने राजकुमार को बहुत सुन्दर जनाने कपड़े पहनाये और उसका शृंगार करके उसे एक सुन्दर नर्तकी का रूप दे दिया। वह स्वयं वीणा बजाने वाला बन गया और नगर के चौराहे पर आकर उन्होंने अपना अड्डा जमाया। गंजा वीणा बजाने लगा और राजकुमार नर्तकी के वेष में नाचने लगा। नर्तकी का नाच देख कर लोग मन्त्रमुग्ध से हो गये। सब ने कहा कि इस नर्तकी का नृत्य राजकुमारी फूलमदे के विवाह में अवश्य होना चाहिए।

बात राजा तक पहुँची और उसने उन दोनों को बुलाया। नर्तकी ने बहुत सुन्दर नृत्य किया और गंजे ने बहुत उत्तम बीन बजायी। राजा वहुत प्रसन्न हुआ और उसने बीन बजाने वाले से इनाम माँगने के लिए कहा। गंजा बोला कि अन्नदाता, पहले मुझे वचन दीजिए। राजा के वचन दे देने पर गंजा बोला कि हुजूर! मुझे सिर्फ दो रुपये चाहिएं। हम नाचने–गाने वाले नहीं हैं, हम बनजारे हैं। यह मेरी भाभी है, आज चौदह वर्ष हो गये इसका खाविंद इसको छोड़कर चला गया, हम उसे ही ढूंढ़ते फिर रहे हैं। अब खबर लगी है कि आपके नगर के पास ही एक गाँव में मेरा भाई है। मैं उसे लिवाने के लिए जाता हूँ, मुझे राह–खर्च के लिए सिर्फ दो रुपये ही चाहिएं और तब तक आप मेरी भाभी को हिफाजत से रखें। अगले दिन आकर मैं इसे ले लूंगा। राजा ने 'बनजारी' को सुरक्षित रखने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली और बनजारा चला गया। राजा ने सुरक्षा की दृष्टि से बनजारी को फूलमदे

के पास महल में भेज दिया ।

बनजारी ने अवसर पाकर फूलमदे को अपना असली परिचय दिया और उसे गंजे की बनायी हुई योजना भी बतला दी । राजकुमार को फिर से पाकर फूलमदे बड़ी प्रसन्न हुई। शाम को बारात आयी तो फूलमदे ने दूल्हे को महल में बुलवा लिया। दूल्हा फूलमदे को पसन्द नहीं आया। रात को उसे खूब शराब पिलायी गयी और 'बनजारी' ने अपना नृत्य उसे दिखलाया। जब वह नशे में चूर हो गया तो 'बनजारी' ने उसे मार-काट कर महल के नीचे से बहने वाली नहर में फेंक दिया। फिर उसने अपने कपड़े भी नहर में फेंक दिये और स्वयं मरदाने कपड़े पहन कर अस्तबल वाली मोरी से उतर गया।

सबेरे राजकुमारी ने यह बात उड़ा दी कि दूल्हा बनजारी पर आसक्त हो गया और रात को उसे लेकरभाग गया। राजा को दूल्हे की नालायकी पर बहुत क्रोध आया और उसने बारातियों को पीटकर अपने नगर से निकाल दियां ।

शाम को बनजारा अपने भाई (राजकुमार) को लेकर राजा के पास आया और सलाम करके बोला कि हुजूर ! मेरी भाभी को शीघ्र बुलवा दीजिए, मेरा भाई उसके बिना बड़ा बेचैन हो रहा है। राजा के पास कोई उत्तर न था। उसने बनजारे से सारी बात कह दी।

राजा की बात सुनकर 'बनजारों' के मुंह उतर गए और वे साँस मार कर वहीं बैठ गये। गंजे ने राजा से कहा कि हुजूर, बनजारी तो गयी सो गई, अब उसके बिना मेरा भाई भी जीवित नहीं रहेगा। खैर, जो हुआ सो हुआ, हमें तो इसी बात का बड़ा अफसोस है कि आप एक राजा होकर अपना वचन नहीं निभा सके। राजा बड़ी दुविधा में पड़ गया। अन्त में सोच विचार कर उसने अपनी सारी दासियों को शृंगार करके बुलवाया और बनजारे से कहा कि जो उसे पसन्द आये, वह उसी औरत को बदले में ले ले। सारी दासियाँ उसके सामने से निकल गयीं, लेकिन बनजारे ने किसी को पसन्द नहीं किया।

दोनों बनजारे फिर निराश होकर जाने लगे तो राजा ने सोचा कि यह तो अच्छा नहीं होगा। फिर उसने बनजारे से कहा कि यदि तुम मेरी बेटी फूलमदे को बनजारी के बदले में लेना चाहो तो मैं उसे भी दे सकता हूँ, लेकिन बाचा चूकना अच्छा नहीं समझता। फूलमदे शृंगार करके उनके सामने आई। राजा अलग हट गया। फूलमदे को इस रूप में देखकर राजकुमार बेहोश होकर गिर पड़ा। गंजे ने देखा कि बना बनाया काम बिगड़ रहा है तो उसने राजकुमार को चार जूते कसके मार दिये। राजकुमार की बेहोशी जाती रही। राजा ने गंजे से पूछा कि क्या बात है? गंजा बात को सम्हालते हुए बोला कि हुज़ूर! यह राजकुमारी के लिए भी ना-नू कर रहा है, अतः मैंने इसे जूते लगा दिये कि क्या तेरी बनजारी राजकुमारी फुलमदे से भी अधिक सुन्दर थी? अब यह राजकुमारी के साथ विवाह करने के लिए राजी हो गया है।

फूलमदे और राजकुमार का विवाह हो गया, फिर वे सब वहाँ से चल पड़े। रास्ते में एक पहाड़ के पास उन्होंने डेरा डाला। पहाड़ पर घूमते--घामते गंजा एक गुफ़ा में जा घुसा। गुफा में एक बूढ़े बाबाजी तप करते थे, जिनके केश इतने लम्बे थे कि वे जमीन पर लहरा रहे थे। गंजे ने देखा कि बाबाजी ने अपनी जटा से एक डिबिया निकाली और उसे खोल कर उसमें फूंक मारी तो वहीं अप्सराओं का नृत्य होने लगा। कुछ देर बाद बाबाजी ने डिबिया बन्द कर ली और अप्सराएँ उसमें समा गयीं। बाबाजी ने डिबिया जटा में दबा ली। गंजे ने लपक कर डिबिया जटा में से निकाल ली, गंजे के पैरों से बाबाजी के केश दबे तो वे चिल्लाने लगे कि कौन है जो मेरे केश खींच रहा है? लेकिन गंजा डिब्बी लेकर गुफा से बाहर आ गया। अब सब लोग आगे बढ़े।

राजकुमारी ने देखा कि राजकुमार में कुछ आनी-जानी नहीं है, यह सब करामात गंजे की ही है। अतः जब वे अपने नगर में पहुँचे तो राजकुमारी फूलमदे ने गंजे से कहा कि मैं तुम्हारे पीछे आयी हूँ। राजकुमार तो बस नाम का ही राजकुमार है। गंजा इस बात को पहले से ही

ताड़ गया था । उसने राजकुमारको जादू की डिबिया देकर उसे सारी तरकीब बतला दी और उसने फूलमदे से कहा कि सारी करामात इस डिबिया में है, मेरे पास कुछ नहीं है । राजकुमार ने डिबिया खोलकर उसमें फूंक मारी तो वहीं अप्सराओं का नृत्य होने लगा। अब फूलमदे को विश्वास हो गया कि सारी करामात इस डिबिया में ही है। वह राज-कुमार के साथ लग गई।

गंजे ने अपना भैंसा सँभाला। जब उसने देख लिया कि भैंसा दुबला नहीं हुआ है तो उसे बड़ा सन्तोष हुआ और वह अपने भैंसे पर सवार होकर पदड़क--पदड़क करता हुआ जंगल की ओर भाग चला।

● चाल पूतळी घर चालां

एक बादशाह और एक साहूकार का लड़का आपस में दोस्त थे । वे साथ-साथ खाते-पीते, साथ-साथ शिकार खेलने जाते और सदैव साथ ही रहते थे। इन दोनों की शादियाँ बचपन में ही हो चुकी थीं, लेकिन युवा हो जाने पर भी उनकी स्त्रियाँ अभी ससुराल नहीं आयी थीं। एक दिन वे दोनों शिकार खेलने जा रहे थे,तो उन्होंने एक मलंग को यह कहते हुए सुना कि युवा होने पर भी जिसकी पत्नी पीहर में रहती है, उसके बराबर गया—बीता भी कोई नहीं। वे दोनों वहीं से लौट आये और अपने-अपने माता-पिताओं से कहकर अपनी बहुओं को लाने चल पड़े।

पहले दोनों बादशाह के बेटे की ससुराल पहुँचे। ससुराल वालों ने उनका बहुत आदर-सत्कार किया। जब रात को बादशाह के बेटे को महल में पधारने के लिए कहा गया तो उसने कहा कि मैं महल में अकेला नहीं जाऊँगा, मेरा दोस्त भी साथ रहेगा। ससुराल की स्त्रियों ने उसे बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन वह नहीं माना तो कमरे के बीचोंबीच कनात तनवा दी गयी। एक ओर साहूकार का लड़का सो गया तथा दूसरी ओर शाहजादा और उसकी पत्नी। जब बादशाह का शाहजादा सो गया तो उसकी स्त्री धीरे से उठी और महल से नीचे उतरी। साहूकार के लड़के

को नींद नहीं आई थी, अतः वह भी उठकर उसके पीछे-पीछे चला। बादशाह की बेटी कुलटा थी और वह हर रात एक फकीर के पास जाया करती थी। आज वह कुछ देर से पहुंची थी इस लिए फकीर गुस्से में भरा बैठा था। उसने जाते ही शाहजादी को चार कोड़े लगा दिये और बोला कि हराम-जादी, आज इतनी देर कहाँ रही? वह बोली कि आज मेरा खाविंद आया है सो इसी कारण देर हो गयी। शाहजादी की बात सुनकर फकीर और भी आगबबूला हो गया और बोला कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं, जा अभी अपने खाविंद का सिर काट कर ला। वह तुरन्त गयी और अपने सोते हुए पति का सिर काट कर ले आयी। वह सिर लेकर आयी तो फकीर बोला कि दुष्टा! तू जब अपने पति की ही नहीं हुई तो मेरी क्या होगी, जा निकल यहाँ से, फिर कभी मुझे अपना मुंह मत दिखाना। साहूकार का बेटा यह सब कौतुक देख रहा था। शाहजादी चली गयी तो साहूकार के लड़के ने फकीर का सिर काट कर वहीं फेंक दिया और स्वयं शाहजादी से पहले आकर सो रहा। शाहजादी अपने पति का कटा सिर अपने साथ ले आयी थी और महल में आते ही उसने हल्ला मचा दिया कि इस आदमी ने सोते में मेरे पति को मार डाला। साहूकार के हाथों में तुरंत हथकड़ियाँ पड़ गयीं।

सबेरे बादशाह ने हुक्म दिया कि उस नालायक का मैं मुंह देखना नहीं चाहता, उसे ले जाकर फांसी दे दो। फांसी के तख्ते पर ले जाकर जब उससे पूछा गया कि तुम्हारी अन्तिम इच्छा क्या है तो उसने कहा कि मैं बादशाह से दो बातें करना चाहता हूँ। बादशाह ने कहा कि मैं ऐसे कमीने का मुंह देखना नहीं चाहता। तब वजीर के कहने पर दोनों के बीच में एक कनात तनवा दी गयी और दोनों कनात के दोनों तरफ बैठ गये। साहूकार के लड़के ने बादशाह से कहा कि तुम्हारी बेटी कुलटा है, वह नित्य आधी रात को जंगल में एक फकीर के पास जाया करती थी। गत रात को वह कुछ देरी से पहुंची तो फकीर ने उसकी पीठ पर चार कोड़े लगाये और कहा कि अपने खाविंद का सिर काट कर ला। वह सिर काट कर ले गयी तो

फकीर ने उसे दुत्कार दिया। फकीर की नापाक हरकतों पर मुझे बड़ा गुस्सा आया और मैंने उसका सिर काट लिया। आपको विश्वास न हो तो शाहजादी को बुलवाकर उसकी पीठ उघाड़ कर देख लीजिए तथा फकीर का कटा सिर भी अभी वहीं पड़ा होगा, उसे भी मंगवा कर देखलें। बादशाह ने शाहजादी को बुलवाकर उसकी पीठ देखी। उसने स्वीकार कर लिया कि साहूकार का बेटा निर्दोष है, मैंने ही अपने पति की हत्या की है। साहूकार के लड़के को छोड़ दिया गया और शाहजादी को फांसी दे दी गई।

अपने मित्र की लाश को एक गठरी में बाँध कर साहूकार का लड़का उदास मन अपनी ससुराल को चला। ससुराल की हवेली के बाहर उसने एक वृक्ष पर गठरी टाँग दी और खुद हवेली में चला गया। रात को जब उसकी स्त्री उसके लिए थाल सजाकर चली तो एक 'कोचरी' बोल गयी; इसे अपशकुन समझ कर उसने दूसरी बार थाल सजाया तो दूसरी बार भी 'कोचरी' बोली। तीसरी बार भी जब ऐसा ही हुआ तो उसने कोचरी से पूछा कि तू कौन है और क्या कहती है ? इतने वर्षों बाद तो मेरा पति आया है, अब तू बीच में क्यों विघ्न डाल रही है ? इस पर कोचरी बोली कि मैं कोचरी नहीं हूँ, मैं बेमाता हूँ। तेरा पति खाना नहीं खायेगा। उसने प्रतिज्ञा कर रखी है कि जब तक मेरा दोस्त जिन्दा नहीं होगा, मैं खाना नहीं खाऊंगा। फिर 'बेमाता' ने सारी बात विस्तार से कही। साहूकार की स्त्री ने पूछा कि मेरे पति का दोस्त जिन्दा कैसे होगा ? इसपर वह बोली कि इसका एक ही उपाय है और वह यह कि मैं बहुत दिनों से भूखी हूँ, यदि तुम पेट भर कर मुझे अपना माँस खाने दो तो वह जिन्दा हो जाएगा। साहूकार की स्त्री ने उसकी बात मान ली और वह उसके आगे खड़ी हो गयी। कोचरी ने उसके शरीर में दो चार चोंचें मारीं और तृप्त हो गयी। फिर वह बोली कि तुम्हारे पति का मित्र जिन्दा होकर इस पास वाले कमरे में आ गया है, जब भी तुम्हारा पति उसे आवाज देगा, वह दौड़ा चला आएगा। यों कह कर कोचरी उड़ गयी।

साहूकार के बेटे की स्त्री थाल सजा कर अपने पति के पास ले गयी

तो उसने मुंह फेर लिया। बहुत पूछने-ताछने पर जब उसने सारी बात कही तो स्त्री ने अपने पति से कहा कि तुम अपने दोस्त को पुकारो, वह आ जाएगा। साहूकार के लड़के के पुकारते ही सचमुच बादशाह का लड़का उसके पास आ गया। फिर सबने खूब अच्छी तरह खाना खाया और दोनों वहीं आराम से रहने लगे।

साहूकार के बेटे की स्त्री ने उनसे कहा कि तुम तीन दिशाओं में शिकार खेलने जाना, मगर दक्षिण दिशा में मत जाना। वे लोग ऐसा ही करते, लेकिन एक दिन बादशाह का बेटा एक शिकार के पीछे दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ा। साहूकार के बेटे ने उसे बहुत मना किया, लेकिन वह नहीं माना तो वह भी उसके पीछे-पीछे चलने लगा। शिकार का पीछा करते-करते वे बहुत घने जंगल में पहुंच गये। शिकार आंखों से ओझल हो गया और वे दोनों भटक गये। प्यास के मारे शाहजादे का गला सूखने लगा तो साहूकार के लड़के ने कहा कि तुम एक वृक्ष की छाया में बैठो मैं पानी खोजता हूँ। फिर उसने एक टीले पर चढ़ कर देखा तो उसे कुछ कौवे उड़ते हुए दिखलाई पड़े। साहूकार का लड़का उसी दिशा में चल पड़ा और थोड़ी ही देर में एक तालाब पर पहुँच गया। तालाब के किनारे एक बहुत सुन्दर नारी की पुतली खड़ी थी जो उस तालाब में रहने वाली नाग कन्या की मूर्ति थी। पुतली बहुत ही सुन्दर थी। साहूकार के बेटे ने सोचा कि यदि उसका दोस्त इस पुतली को देख लेगा तो वह कभी यहाँ से जिन्दा नहीं लौटेगा, अतः उसने बहुत सारा कीचड़ लेकर पुतली के ऊपर पोत दिया। फिर वह दोस्त के लिए पानी लेकर उसके पास पहुँचा। बादशाह के बेटे ने कहा कि मेरी प्यास नहीं बुझी है, मैं खुद तालाब पर चल कर पानी पीऊंगा। साहूकार के बेटे ने उसे बहुत रोकना चाहा, लेकिन वह नहीं माना। दोनों तालाब पर गये। बादशाह के बेटे ने पानी मुंह में लेकर पुतली के ऊपर कुल्ला फेंका तो उसका कुछ हिस्सा दिखलाई पड़ने लगा। अब तो वह बराबर पुतली पर कुल्ले फेंकने लगा। पुतली का कीचड़ धुल गया। पुतली के सौन्दर्य को देखकर शाहजादा

दीवाना हो गया और पुतली से लिपट कर 'चाल पूतली घर चालाँ ए, चाल पूतली घर चालाँ ए' की रट लगाने लगा । साहूकार के बेटे ने उसे बहुत समझाया, लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ । तब वह अपने घर आ गया और घर आ कर उसने अपनी स्त्री से सारी बात कही । उसकी स्त्री ने कहा कि वह नागकन्या की पुतली है । नाग हर रात तालाब से निकल कर वहाँ घूमा करताहै, लेकिन वह इतना विषैला नाग है कि उसकी फुफकार से ही घास जल जाती है । तुम्हारा मित्र रात भर वहाँ रहेगा तो उसकी फुफकार से वह मर जाएगा । तुम एक बड़ी ढाल लेकर जाओ जिसके चारों ओर नोकदार कीलें लगी हों । जब साँप अपनी मणि रखकर घूमने जाए तो तुम वृक्ष पर से रस्सी बाँध कर ढाल से मणि को ढ़क देना । साँप उस ढ़ाल पर फन मार मार कर स्वयं मर जाएगा । तब तुम उस मणि को ले लेना । मणि के छुआते ही तालाब का पानी फट जायगा और तुम्हें अन्दर जाने के लिए रास्ता मिल जायगा । उस रास्ते तुम नाग-कन्या के महल में पहुंच कर नाग-कन्या को प्राप्त कर सकोगे ।

साहूकार के लड़के ने वैसाही किया और नाग-कन्या को बाहर ले आया । पुतली के पास आकर उन दोनों ने देखा तो शाहजादा मरा पड़ा था । वे दोनों भी वहीं बैठ गये । रात को एक वृक्ष पर चकवा-चकवी बोले । चकवी ने चकवे से कहा कि 'ओ चकवा-कहनी बात, कटैनी रात' चकवा बोला कि घर-बीती कहूं या पर बीती ? चकवी बोली कि घर बीती तो सदा ही कहते हो, आज तो पर-बीती ही कहो । चकवा बोला कि तालाब के किनारे जो बादशाह का लड़का मरा पड़ा है उसे मेरी बीट घोल कर कोई पिलादे तो वह जिन्दा हो जाए । यों कह कर चकवे ने बीट डाली और साहूकार के लड़के ने चुपचाप वह बीट ले ली ।

फिर चकवी बोली कि यह जी भी उठेगा तो क्या होगा ? इसकी अभी चार मौतें और हैं । पहले तो जब यह यहाँ से जाएगा तो इसे रास्ते में एक बहुत सुन्दर कोड़ा पड़ा दिखलाई देगा, यह उसे उठाएगा और उठाते ही

वह कोड़ा साँप बन कर इसे डस लेगा। फिर आगे जायगा तो रास्ते पर एक बड़ा वृक्ष आयगा। ज्यों ही यह वृक्ष के नीचे से निकलेगा, वृक्ष का एक वड़ा 'डाला' (मोटी शाखा) इसके ऊपर गिरेगा और यह वहीं मर जाएगा। यदि वहाँ से भी बच गया तो जब यह अपने नगर में पहुँचेगा तो नगर का दरवाजा इसके ऊपर गिरेगा और यह वहीं मर जाएगा और कदाचित् वहाँ से भी बच गया तो रात को सोते में इसे काला नाग डस लेगा, उस मृत्यु से इसका बच सकना असंभव ही है और फिर बचाने वाला यदि इस बात को किसी से कह देगा तो वह तुरंत ही पत्थर का हो जाएगा। चकवे ने पूछा कि क्या बचाने वाला फिर जिन्दा हो सकता है तो चकवी बोली कि हाँ, हो तो सकता है। यदि राज कुमार जीवित रहा तो इसके एक लड़का होगा। यदि उसे मार कर उसका खून बुत पर छिड़का जाएगा तो वह जिन्दा हो जाएगा। यों कहकर दोनों पक्षी उड़ गये।

सबेरा होते ही साहूकार के बेटे ने चकवे की बीट घोल कर उसे पिलादी। पिलाते ही वह उठ बैठा और उठते ही "चाल पूतली घर चालाँ ए" की रट लगाने लगा। तब साहूकार के बेटे ने कहा कि यह सजीव पुतली तेरे सामने प्रत्यक्ष खड़ी है, अब उठकर इसके साथ घर चल। तीनों घोड़ों पर सवार हो कर चल पड़े। साहूकार के बेटे ने अपने दोस्त का घोड़ा आगे रखा और स्वयं उसके पीछे चलने लगा। थोड़ी दूर जाने पर बादशाह के लड़के ने देखा कि एक बहुत सुन्दर चिकना और काला कोड़ा रास्ते में पड़ा है। ज्यों ही वह उसे उठाने के लिए झुका, साहूकार के लड़के ने उसके घोड़े की पीठ पर एक चाबुक कस कर मार दिया। चाबुक लगते ही घोड़ा दस कदम आगे कूद गया। बादशाह के लड़के ने मुड़ कर देखा तो वह कोड़ा साँप बन कर चला जा रहा था। उसने आश्चर्य के साथ अपने मित्र से इस भेद को पूछा, लेकिन उसने बात टाल दी। आगे वह वृक्ष आया तो उसने फिर बादशाह के बेटे के घोड़े की पीठ पर एक चाबुक जमा दिया। घोड़ा फुर्ती से निकल गया और वृक्ष का 'डाला' जमीन पर गिर गया। बादशाह के बेटे ने फिर अपने मित्र से पूछा, लेकिन उसने फिर बात

टाल दी। जब वे नगर में पहुंचे तो साहूकार के बेटे ने बादशाह से जाकर कहा कि शाहजादा शादी करके आ रहा है, अतः तोरण-द्वार को मेरे कहने के अनुसार सजाया जाए। बादशाह ने हुक्म दे दिया और उसने दरवाजा तुड़वा कर उसे कागज और कपड़े से सजवा दिया। बादशाह का लड़का नीचे से गुजरा तो दरवाजा गिरा, लेकिन कागज और कपड़े का बना होने के कारण उसे कोई क्षति नहीं पहुँची।

नाग-कन्या ने भी चकवे-चकवी की बात सुनी थी, अतः उसने साहूकार के लड़के को अपने कमरे की छत में एक बड़ा छेद करके उसमें छुपा दिया। आधी रात को काला नाग फुफकारता हुआ छत से उतरने लगा। साहूकार के बेटे ने झट तलवार से उसके टुकड़े कर दिये, लेकिन साँप के विष की एक बूंद नाग-कन्या के होंठ पर गिर गई। अब साहूकार का लड़का दुविधा में पड़ गया। अन्त में उसने यही निश्चय किया कि मित्र की पत्नी को बचाना चाहिए। इसलिए वह नीचे उतरकर राजकुमारी के होंठ पर पड़ी विष की बूंद को अपने होंठ से चूसने लगा। इतने में बादशाह के लड़के की आँख खुल गयी। वह झट नंगी तलवार लेकर उसे मारने पर उतारू हो गया। साहूकार के बेटे ने कहा कि मैं निर्दोष हूँ और तुम्हारी पत्नी की जान बचाने के लिए ही मैं यह कर रहा था, लेकिन शाहजादा नहीं माना। तब साहूकार के लड़के ने सोचा कि मरना तो दोनों तरफ है ही अतः मित्र के दिल पर जो विचार आ गया है उसे दूर करदूं तो ठीक रहे। यों सोचकर उसने शाहजादे से कहा कि मैं तुम्हें सारी बात खोल कर कह देता हूँ, लेकिन मैं पत्थर का हो जाऊंगा। शाहजादे ने कहा कि चाहे जो कुछ हो, मैं इस रहस्य को अवश्य जानूंगा। तब साहूकार के बेटे ने आदि से अन्त तक सारी बात शाहजादे को कह दी और कहते ही वह पत्थर का बन गया। साहूकार के बेटे ने शाहजादे को यह बात भी बतलादी कि नौ महीने बाद तुम्हारे लड़का होगा, यदि तुम उसके रक्त के छींटे मेरे ऊपर डालोगे तो मैं फिर जिन्दा हो जाऊंगा।

नौ महीने बाद शाहजादे के लड़का हुआ, लेकिन उसने मित्र की बात

की जान बूझ कर उपेक्षा कर दी । नाग-कन्या ने उसे मित्र के उपकारों का स्मरण कराया लेकिन वह बोला कि अपनी गद्दी के उत्तराधिकारी को क्या मैं मार डालूं ? लेकिन नागकन्या से नहीं रहा गया । एक दिन जब उसका पति बाहर गया तो नागकन्या ने अपने पुत्र को मार कर उसका खून साहूकार के बेटे के बुत पर छिड़क दिया । खून के छींटे पड़ते ही साहूकार का बेटा जिन्दा हो गया । नागकन्या की भलाई के कारण उसका बेटा भी जीवित हो गया । जब शाहजादा महल में आया और उसे मित्र का बुत नहीं दिखलाई पड़ा तो उसने पूछा कि बुत कहाँ है ? नागकन्या ने कहा कि मैंने उसे जीवित कर दिया है । अब शाहजादे ने कहा कि मेरे लड़के को जल्दी से मुझे दिखला, अन्यथा तेरा सिर अभी तलवार से उड़ा दूंगा । नागकन्या ने लड़के को हाजिर कर दिया । फिर उसने साहूकार के बेटे से कहा कि तुमने मेरे पति के बहुत उपकार किये हैं जिनका बदला कभी नहीं उतर सकता, लेकिन तुम्हारे लिए यह अपने बेटे के खून की एक बूंद भी गिराने के लिए तैयार नहीं हुआ, अतः अब यही उचित है कि यहाँ से अन्यत्र चले जाओ । साहूकार के बेटे को भी यह बात बहुत भाई और वह अपनी पत्नी को लेकर अन्यत्र चला गया ।

● राजा बीर बिकरमादीत और चौबोली

राजा विक्रमादित्य के पास एक दिन शनिदेव ने आकर कहा कि राजन् ! मैं तुम्हारे पास सात वर्ष के लिए आया हूँ । चाहे तुम सात वर्षों के लिए अपनी प्रजा पर कष्ट ले लो, चाहे तुम रानीसहित सात वष का 'देसूंटा' (देश निकाला) ले लो । राजा ने रानी से सलाह की और प्रजा को कष्ट न देकर वे दोनों साधारण वेष में अपने राज्य से बाहर चले गये ।

चलते-चलते वे दोनों एक दूसरे राजा के नगर में पहुँचे । वह राजा हमेशा सदावर्त बाँटा करता था। विक्रमादित्य ने राजा से कहा कि मैं सदावर्त लेने नहीं आया हूँ, नौकरी चाहता हूँ । राजा ने विक्रमादित्य को अपने महल की ड्योढ़ी पर पहरेदार नियुक्त कर दिया । राजा ने पहरेदार को

सख्त हिदायत कर दी कि मेरी अनुपस्थिति में किसी 'मर्द' को महल की ड्योढी के अन्दर नहीं घुसने देना। एक बार राजा शिकार खेलने गया। रानी के महल के नीचे से एक इत्र बेचने वाला बनजारा गुजरा। बनजारे के पास इतना बढ़िया इत्र था कि उसकी सुगन्ध से सारा वातावरण महक उठा। रानी ने बनजारे को महल के नीचे से गुजरते हुए देखा। बड़ा सुन्दर और स्वस्थ युवकथा। रानी बनजारे और उसके इत्र पर मोहित हो गई। उसने दासी को भेजकर बनजारे को बुलवाया, लेकिन पहरेदार ने बनजारे को महल में नहीं जाने दिया। दासी ने रानी से जाकर कहा। रानी कामान्ध हो रही थी, उसने पहरेदार को बहुत डराया-धमकाया, लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। जब रानी वहाँ से नहीं टली तो पहरेदार ने बनजारे को बेंत लगाकर बाहर निकाल दिया। फिर उसने दासी और रानी को भी दो दो चार-चार बेंत लगा दिये। रानी क्रुद्ध नागिन की तरह फुफकार उठी। रानी ने अपना सारा श्रृंगार उतार फेंका और मैले वस्त्र पहिनकर महल में लेट गई। राजा आया तो उसने शिकायत की, ऐसा भी निगोड़ा क्या पहरेदार रखा है जो मेरी इज्जत लूटने के लिए उतारू हो गया। राजा ने रानी को धीरज दिया और कहा कि सबेरा होते ही उस नालायक को मरवा डालूंगा।

उस राजा के पास चार 'बीर' थे जिनकी सहायता से वह जब चाहता इच्छानुसार वेष बना लेता था। राजा साँप बनकर विक्रमादित्य के डेरे पर पहुँचा और विक्रमादित्य के जूते में छिपकर बैठ गया। उधर विक्रमादित्य की स्त्री ने अपने पति से उदासी का कारण पूछा तो विक्रमादित्य ने सारी घटना कह सुनाई और बोला कि राजा तो रानी की ही बात मानेगा और मुझे अवश्य प्राण-दंड देगा। रानी बोली कि तुम भी तो राजा विक्रमादित्य हो, तुमने भी तो बहुत फैसले किये हैं। तुमने तो राजा की इज्जत बचाई है, यदि यहाँ का राजा मूर्ख तथा अन्यायी नहीं होगा तो तुम्हें प्राण-दण्ड के बजाय पुरस्कार देगा। राजा सांप बना हुआ सारी बातें सुन रहा था। उसने जान लिया कि यह राजा विक्रमादित्य है और इसने आज मेरी इज्जत बचाई है।

दूसरे दिन उसने पहरेदार को दरबार में बुलाया। पहरेदार डर रहा था, लेकिन राजा ने उसे धैर्य बंधाया। फिर उसने दरबारियों से पूछा कि यदि कोई आदमी किसी की इज्जत बचाये तो उसे क्या देना चाहिए? आज इस पहरेदार ने मेरी इज्जत बचाई है, अतः इसे क्या पुरस्कार देना चाहिए ?

किसी ने कहा कि इसे दो गाँव देने चाहिएं, किसी ने कहा कि इसे चार गाँव देने चाहिएं। राजा ने सोचा कि विक्रमादित्य मुझ से बड़ा राजा है और इसके पास मुझसे अधिक गाँव हैं तब भला इसे दो चार गाँव क्या दिये जाएं। अन्त में सोच विचार-कर उसने अपनी बेटी का विवाह राजा विक्रमादित्य से करने की घोषणा कर दी।

विवाह हो गया। कुछ दिन बाद विक्रमादित्य ने सोचा कि मैं देश निकाला भोगने के लिए निकला हूँ, लेकिन यहाँ तो अपने घर से भी अधिक आनन्द में हूँ, अतः यहाँ से अन्यत्र चलना चाहिए। उसने राजा से कहा कि मैं अब दूसरी जगह जाऊँगा। रजा ने कहा कि आपको जो वस्तु चाहिए वह मुझसे माँग लें। विक्रमादित्य ने कहा कि कल माँगूंगा। विक्रमादित्य ने नई रानी से यह बात कही तो उसने कहा कि मेरे पिता के पास चार 'बीर' हैं, तुम वे ही मांग लेना। लेकिन पहले उसे वचनवद्ध कर लेना, नहीं तो वह किसी हालत में अपने 'बीर' नहीं देगा। विक्रमादित्य ने वैसा ही किया। दूसरे दिन जब राजा ने विक्रमादित्य से मांगने के लिए कहा तो विक्रमादित्य ने राजा से 'बाचा' ले लिया। बाचा लेने के बाद विक्रमादित्य ने राजा से कहा कि अपने चारों वीर मुझे दे दीजिए। विक्रमादित्य की बात सुनकर राजा भौंचक्का सा रह गया। उसने सपन में भी नहीं सोचा था कि विक्रमादित्य को उसके वीरों का पता भी है। फिर उसने सोचा कि हो न हो उसकी बेटी ने ही यह भेद विक्रमादित्य को बतलाया है। उसने विक्रमादित्य से कहा कि मैं तुम्हें वचन दे चुका हूँ, इसलिए वीर तुम्हें दूंगा, लेकिन पहले वीरों से पूछ लेता हूँ कि वे तुम्हारे पास जाना भी चाहते हैं या नहीं। फिर उसने चारों वीरों को बुलाकर पूछा। वीरों ने

कहा कि हम एक ही शर्त पर इसके साथ जाने को तैयार हैं कि राजा के पहले हमारा नाम आये। अब तक यह राजा विक्रमादित्य है आज से वीर विक्रमादित्य कहलाये। विक्रमादित्य ने वीरों की शर्त स्वीकार करली और राजा ने चारों वीर उसे दे दिये।

राजा अपनी दोनों रानियों और चारों वीरों को लेकर वहाँ से चल पड़ा। चलते-चलते वह चौबोली के नगर में आया। राजा कुएं पर बैठा था, इतने में चौबोली की दासी कुएं से पानी लेने के लिए आई। उसने कुएं से कहा कि कुएं! चौबोली के नाम उझल जा। कुएं का पानी उमड़-कर बाहर आ गया, दासी ने पानी भर लिया और चली गई। राजा इस बात को देखकर चकित रह गया। उसने अपने वीरों से पूछा तो वीरों ने कहा कि इस गांव की राजकुमारी का नाम चौबोली है, वह बड़ी चतुर चालाक है, उसका प्रण है कि जो उसे रात भर में चार बार बुलवा देगा उसी से वह विवाह करेगी। न बुलवा सकने पर वह उस आदमी को कैद में डलवा देती है। उसके नाम से कुएं का पानी भी ऊपर उठ आता है। राजा ने वीरों से कहा कि मैं चौबोली से अवश्य शादी करूंगा। वीरों ने कहा कि यह काम इतना आसान नहीं है, इसमें धैर्य और युक्ति से काम लेना पड़ेगा।

दूसरे दिन चौबोली की दासी पानी भरने के लिए आई तो वीरों ने विक्रमादित्य से कहा कि हम कुएं की सतह पर लेट जाएंगे और पानी नहीं उझलने देंगे। तुम दासी से कह देना कि अब तक कुआँ चौबोली के नाम से उझलता था, लेकिन अब से यह वीर विक्रमादित्य के नाम से उझलेगा। दासी ने कई बार कुएं से कहा लेकिन कुआँ नहीं उझला, तब विक्रमादित्य ने कुएं से कहा कि कुएं, विक्रमादित्य के नाम से उझलो। तुरन्त ही पानी ऊपर आ गया। दासी आश्चर्यचकित होकर लौट गयी और उसने चौबोली से सारी घटना कह सुनाई।

इधर वीरों ने विक्रमादित्य से कहा कि हम चौबोली को अवश्य बुलवा देंगे, लेकिन इसके पहले तीन परीक्षाएं और होंगी। जब तुम चौबोली के

महल में जाओगे तो तुम्हारे आगे एक बकरी खड़ी की जाएगी और तुम से कहा जाएगा कि इस बकरी का दूध निकालो। बकरी का दूध तुम कदापि नहीं निकाल सकोगे, अतः तुम केवल बकरी के थन पकड़ कर बैठ जाना, हम स्वयं उस बरतन को दूध से भर देंगे। फिर एक शेर तुम्हारे सामने दिखलाई पड़ेगा। वह शेर यद्यपि देखने में असली शेर के जैसा ही होगा, लेकिन वास्तव में वह नकली शेर है, तुम उससे जरा भी भय न करना और निधड़क आगे बढ़ जाना। आगे जाने पर तुम्हें पानी का एक दरिया दिखलाई पड़ेगा, लेकिन वास्तव में वह उस बड़े शीशे की करामात है जो चौबोली ने अपन महल पर लगा रखा है। पानी की एक बूंद भी वहाँ नहीं है, अतः तुम निडर होकर आग बढ़ते जाना। चौबोली तुम से कदापि नहीं बोलेगी, हम चारों उसके ढोलिए, दीपक, झारी और हार में अदृश्य होकर घुस जाएंगे और चौबोली को बोलने के लिए विवश करेंगे।

राजा वीरों की बतलाई हुई युक्तियों के सहारे चौबोली के महल में बिना किसी बाधा के पहुँच गया। रात्रि का पहला पहर हुआ। राजा ने चौबोली को बुलवाने की हर कोशिश की, लेकिन उसने होठ भी नहीं हिलाया, तब राजा ने पलँग से कहा कि ढोलिए, तू ही कुछ बोल जिससे यह रात तो किसी प्रकार कटे। ढ़ोलिया बोला कि राजा! तू यहाँ कहाँ आ फँसा? यह औरत बड़ी क्रूर है। ढोलिये को बोलता देख चौबोली को बड़ा आश्चर्य हुआ। ढोलिया बोला कि राजा, तुम्हें एक बात कहता हूँ जिससे तुम्हारी एक पहर रात कट जायगी। यों कहकर ढोलिये ने अपनी कहानी प्रारंभ की :—

एक साहूकार के लड़के और राजकुंवर दोनों में बड़ी दोस्ती थी। छुटपन से ही वे साथ रहते थे और उन्होंने आपस में तय कर लिया था कि दोनों में से जो भी पहले अपनी ससुराल जाये वह दूसरे को साथ ले जाये। संयोग से साहूकार का लड़का पहले मुकलावा करके लाने के लिए अपनी ससुराल चला। उसने राजा के कुंवर को भी साथ चलने के लिए कहा। राजा का कुंवर बहुत सारे घुड़सवार आदि साथ लेकर राजसी ठाठबाट

से साहूकार के लड़के के साथ चला। साहूकार के लड़के को अब यह चिन्ता हुई कि यदि कुंवर का स्वागत-सत्कार उसके योग्य नहीं हुआ तो बहुत शर्म की बात होगी। रास्ते में देवी का एक मन्दिर आया। साहूकार के लड़के ने मन्दिर में जाकर देवी से यह मनौती मानी कि यदि राजकुंवर का स्वागत-सत्कार बहुत उत्तम हो जाएगा तो मैं लौटती बार अपना सिर तुम्हारे चरणों में चढ़ा दूंगा।

साहूकार के लड़के की ससुराल वाले बहुत संपन्न व्यक्ति थे और देवी की कृपा होने से राजकुमार तथा उसके सभी साथियों का बहुत ही बढ़िया आतिथ्य हुआ। लौटती बार राजकुमार रास्ते भर उसी की प्रशंसा करता रहा। जब वे लोग देवी के मन्दिर के पास पहुँचे तो साहूकार के लड़के ने कहा कि मैं देवी के दर्शन करके अभी आता हूं। साहूकार के बेटे की मुराद पूरी हो गई थी अतः उसने जाते ही तलवार से अपना सिर काटकर देवी को चढ़ा दिया। जब बहुत देर हो गई और वह नहीं लौटा तो राजकुमार भी वहाँ पहुँच गया। राजकुमार वहाँ का दृश्य देखकर सकपका गया और उसने सोचा कि मित्र की हत्या का लांछन मुझे लगेगा, अच्छा यही है कि मैं भी यहीं अपना सिर काटकर देवी के चरणों में रख दूं। राजकुमार ने भी अपना सिर काटकर देवी को चढ़ा दिया। जब वे दोनों नहीं लौटे तो साहूकार के बेटे की बहू भी वहाँ गई। दोनों के कटे सिर देखकर उसने सोचा कि अब मुझे जीकर क्या करना है, सो वह भी तलवार से अपना सिर काटने को उद्यत हो गई, लेकिन तभी देवी ने उसे रोकते हुए कहा कि तू कटे हुए सिर धड़ों पर जोड़ दे, दोनों जीवित हो जाएंगे। उसने जल्दी से सिर उठाये और दोनों धड़ों पर रख दिए। दोनों जीवित हो गये। लेकिन जल्दी में उसने अपने पति का सिर तो राजकुमार के धड़ से जोड़ दिया और राजकुमार का सिर अपने पति के धड़ से जोड़ दिया। अब राजा तुम यह बतलाओ कि वह किस की औरत हुई, सिर वाले की या धड़ वाले की? यह सुनकर विक्रमादित्य बोला कि स्त्री पर तो धड़ वाले का ही अधिकार होना चाहिए, क्योंकि उसके शरीर पर सिर ही तो

दूसरा है, शेष सारा शरीर तो उसी का है। विक्रमादित्य की बात सुनकर चौबोली को तैश आ गया। उसने राजा से कहा कि तुम कहते हो कि मैं राजा वीर विक्रमादित्य हूं, और मैंने अपने जीवन में न्याय ही किया है; बस, देख लिया तुम्हारा न्याय, औरत धड़ वाले की नहीं सिर वाले की होगी, क्योंकि सिर के बिना धड़ का क्या मोल है? विक्रमादित्य ने कहा कि ऐसा ही सही, तुम बोल गई यही मेरे लिए काफी है। फिर विक्रमादित्य ने नगारची से कहा :—

चौबकली बोली पैलै बोल।
मार रे नगारची ढ़ोल पर चोब॥

नगारची ने ढोल पर डंका लगा दिया।

फिर राजा ने चौबोली की झारी (सुराही) से कहा कि एक पहर रात तो ढोलिये ने कटवा दी, एक पहर रात तू कटवा। प्रारंभिक बातचीत के बाद झारी ने कहना शुरू किया :—

एक साहूकार और राजा के बेटे में बड़ी दोस्ती थी। उन्होंने छुटपन में ही यह प्रतिज्ञा करली थी कि विवाह के बाद जिसकी भी औरत पहले आये वह पहली रात अपने पति के मित्र के पास रहे। संयोग से साहूकार के बेटे की बहू पहले आई। रात को दोनों पति-पत्नी महल में गये तो पति उदास मुंह चुपचाप बैठ गया। कुछ देर तो बहू भी चुपचाप बैठी रही, लेकिन फिर उसने अपने पति से पूछा कि सुहाग-रात को ही आप इतने उदास क्यों हैं? या तो मैं आपको पसंद नहीं आई या मेरे पिता ने जो दहेज दिया है वह आपको नहीं भाया? तब साहूकार के बेटे ने अपनी पत्नी को सारी बात बतलाई। इस पर वह बोली कि आप इसकी चिंता न करें, मैं सारी रात आपके दोस्त के पास रह आऊँगी। यों कह कर वह मिष्ठान्न का थाल सजाकर और हाथ में चौमुखा दीया लेकर राजा के कुंअर के पास चली। रास्ते में उसे चार चोर मिले। चोरों ने उसे पकड़ लिया। उन्हें सु नारी और सोना दोनों मिल गए। स्त्री ने उनसे कहा कि मैं अपने पति का एक कार्य सिद्ध करने जा रही हूँ, आते वक्त तुम जैसा कहोगे

वैसा ही कर लूंगी । पहले तो चोरों ने उसकी बात नहीं मानी, लेकिन उसके अधिक विश्वास दिलाने पर चोरों ने उसे जाने दिया । आधी रात को साहूकार के बेटे की बहू राजकुंअर के महल में पहुँची । उसे एकाएक सामने देखकर वह बोला कि देवी ! तू कौन है ? बचपन का वायदा उसे याद नहीं रहा था । साहूकार के बेटे की स्त्री ने उसे अपने पति की कही हुई सारी बात कह दी । राजकुमार को उसकी बात सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई और उसने अपने मित्र की स्त्री को चुनरी उढ़ाकर अपनी बहिन बना ली तथा उसका थाल हीरे-मोतियों से भर कर उसे सम्मान सहित लौटा दिया । साहूकार के बेटे की स्त्री वहाँ से चलकर चोरों के पास आई और उसने चोरों से कहा कि अब चाहो तो मुझे लूट लो । चोरों ने उससे पूछा कि तू कहाँ गई थी और क्या करके आई है ? यह हमें सच-सच बतला । साहूकार के बेटे की स्त्री ने आदि से अन्त तक की सारी बात उन्हें बतला दी । चोरों ने सोचा कि जब राजकुंवर ने ही इसे बहिन बना कर चुनरी उढ़ादी तो हम भी इसे अपनी बहिन ही बनायेंगे। यों आपस में सलाह करके उन्होंने अपने पास जो कुछ भी था सो देकर उसे अपनी बहिन बना ली और उसे अपने घर जाने को कह दिया । अब राजा तुम यह बतलाओ कि इसमें भलमनसी किसकी रही, चोरों की या राजा के लड़के की ? राजा ने कहा कि भलमनसी चोरों की रही । इस पर चौबोली फिर झुंझलाकर बोली कि भलमनसी तो राजा के कुंअर की रही, क्योंकि उसने पत्नी रूप में प्राप्त हो सकने वाली सुन्दरी को बहिन बना लिया । विक्रमादित्य ने कहा कि जैसा तुम कहती हो वही सही । यों कह कर उसने नगारची से कहा :—

चौबकली बोली दूजै बोल,
मार रे नगारची ढ़ोल पर चोब ।

नगारची ने ढोल पर दूसरी बार डंका लगाया ।

दो पहर रात बीत गई तो विक्रमादित्य ने दीये से कहा कि रात्रि का तीसरा पहर अब तू ही कटवा दे । तब दीपक ने कहना शुरू किया :—

एक ब्राह्मण और एक साहूकार का लड़का आपस में दोस्त थे । जब

वे दोनों युवा हो गए तो अपनी-अपनी बहुओं को लाने के लिए साथ-साथ ससुराल चले। जब वे दोनों एक ऐसे स्थान पर पहुँचे कि जहाँ से उनके रास्ते अलग-अलग होते थे, तो दोनों ने इक़रार किया कि जो पहले बहू को लेकर यहाँ आये वह दूसरे के आने तक यहीं उसकी बाट देखे। यों कहकर वे अलग-अलग हो गये।

ब्राह्मण का लड़का अकेला था, किन्तु साहूकार के लड़के के साथ एक नाई था। साहूकार का लड़का ससुराल पहुँचा तो उसका बहुत सत्कार हुआ। नाई चिलम पर आग रखने के लिए हवेली में गया तो स्त्रियों ने आपस में बातचीत की। एक ने पूछा कि खातिरदारी नाई की अधिक होनी चाहिए या जँवाई की? दूसरी ने कहा कि यदि जँवाई की खातिरदारी न भी हो तो भी वह जाकर किसी से कुछ कहेगा नहीं। इसलिए नाई की खातिरदारी ही अधिक होनी चाहिए, जिससे वह सबके सामने बड़ाई करे। ऐसा ही किया गया। जँवाई बाबू को किसी ने पूछा भी नहीं और नाई की बड़ी खातिरदारी हुई। इससे साहूकार के लड़के को बड़ा रंज हुआ। उसने अपने पिता की ओर से एक चिट्ठी लिखी कि घर में तक-लीफ हो रही है, इसलिए बहू को फौरन भेज दिया जाए। दूसरे दिन सबेरे ही साहूकार के लड़के ने अपने श्वसुर को चिट्ठी दे दी और श्वसुर ने उसी वक्त दामाद और बेटी को रथ में बिठलाकर बिदा कर दिया। रास्ते में नाई साहूकार के लड़के से छेड़खानी करता जाता था कि जँवाई बाबू की खातिरी अधिक हुई है या नाई की? इससे साहूकार के लड़के का क्रोध और भी बढ़ गया। चलते-चलते वे एक तालाब पर पहुँचे। बहू ने जान लिया कि उसका पति बिल्कुल भूखा है। इसलिए उसने एक थाल में मिठाई भर कर थाल उसके सामने रखा, लेकिन वह तो बहुत नाराज था। वह अपनी बहू को वहीं छोड़ कर और नाई को साथ लेकर चला गया। बहू ने उसे रोकने की बहुत चेष्टा की, लेकिन वह नहीं रुका। जब वे दोनों चले गये तो बहू ने रथ के बैलों से कहा कि जहां से आये हैं वहीं चलो। रथ वापिस चल पड़ा, लेकिन बैल दूसरे रास्ते पड़ गए और रथ एक

अनजान नगर में पहुँच गया। वहां साहूकार की लड़की फूलां मालिन के घर ठहर गई। मालिन रोज बादशाह के लिए हार गूंथ कर ले जाया करती थी। उस दिन साहूकार की लड़की ने हार गूंथा तो उसे देख कर बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ। बादशाह ने कहा कि मैं इस हार गूंथने वाली को देखना चाहता हूँ। मालिन ने बहुत कुछ छिपाने की चेष्टा की, लेकिन बादशाह नहीं माना।

साहूकार की लड़की को देखकर बादशाह उस पर मोहित हो गया। उसने साहूकार की लड़की से शादी का प्रस्ताव किया। साहूकार की लड़की ने कहा कि मेरा पति मुझे छोड़ गया है, यदि छः महीने में वह लौट कर आ जाएगा तो मैं उसके साथ चली जाऊँगी और यदि वह छः महीने में नहीं आया तो मैं तुमसे शादी कर लूंगी। लेकिन तब तक मेरे लिए एक अलग महल बनवा दीजिए। बादशाह ने कहा कि तू ही अपनी पसन्द का महल बनवाले। यों कह कर उसने महल बनवाने का प्रबन्ध कर दिया। साहूकार की स्त्री मरदाने वेष में रह कर महल बनवाने लगी।

उधर साहूकार का लड़का आगे बढ़ा तो उसे पूर्व निश्चित स्थान पर ब्राह्मण का लड़का प्रतीक्षा करता हुआ मिला। साहूकार के लड़के ने उससे पूछा कि तुम्हारी स्त्री कहां है? ब्राह्मण के लड़के ने उत्तर दिया कि वह कुलटा थी, अतः उसे नहीं लाया, वहीं छोड़ आया। फिर उसने साहूकार के लड़के से पूछा कि तुम्हारा स्त्री कहां है? इसपर उसने कहा कि मैं उसे छोड़ आया हूँ और फिर उसने अपनी पत्नी को छोड़ने का कारण भी बतला दिया। ब्राह्मण ने कहा कि तुम भी कैसे पगले हो जो इतनी सी बात पर बहू को छोड़ आये। इसमें भला उस का क्या दोष था? अब वे तीनों उसे ढूंढ़ने निकले और घूमते–फिरते उसी नगर में जा पहुँचे। नाई ने मरदाने वेष में भी साहूकार के बेटे की बहू को पहिचान लिया। वे तीनों वहीं काम पर लग गये। बहू ने भी अपने पति को पहिचान लिया। शाम को वह तीनों को अपने घर ले गई और उन्हें खाने के लिए बैठाया। वह तीनों के लिए थाल लाई तो तीनों बार अपनी पोशाकें बदल कर आई। साहूकार के लड़के ने

पूछा कि महल का मालिक कहां है ? तब सारा रहस्य खुल गया। साहूकार के बेटे की वहू ने बादशाह से कहा कि मेरा पति आ गया है, अतः मैं इसके साथ जा रही हूँ। बादशाह ने भी अपने वचन का पालन किया और उसे जाने दिया। अब राजन्, तुम यह बतलाओ कि इसमें भलमनसी किसकी रही ? राजा बोला कि इसमें भलमनसी तो साहूकार के लड़के की ही रही कि उसने अपनी छोड़ी हुई स्त्री को फिरसे अपना लिया। राजा की बात सुनकर चौबोली फिर चहकी, राजा वीर विक्रमादित्य ! क्या तुम ऐसा ही न्याय करते रहे हो ? इसमें भलमनसी तो वास्तव में साहूकार के लड़के की बहू की थी, जो अकारण त्यागी जाने पर भी अपने सत पर कायम रही। तब विक्रमादित्य ने कहा कि तुम जो कहती हो वही सही। फिर उसने नगारची से कहाः—

चोबकली बोली तीजो बोल,
मार रे नगारची, ढ़ोल पर चोब।

अब रात्रि का चौथा पहर आया तो विक्रमादित्य ने चौबोली के हार से कहा कि तीन पहर रात तो बीत गई है अब चौथा पहर तू ही कटवा दे। इस पर हार बोलाः—

एक ब्राह्मण, एक खाती, एक दर्जी और एक सुनार ये चार दोस्त थे। वे चारों कमाने निकले। रात हो गई तो तीन आदमी सो गये और खाती का लड़का पहरा देने लगा। उसने एक पहर तक पहरा दिया और इस बीच उसने एक काठ की सुन्दर पुतली बनाकर खड़ी कर दी। फिर दर्जी का पहरा आया, उसने पुतली को सुन्दर वस्त्र पहना दिये। दो पहर रात बीत गई तो सुनार का पहरा आया ! सुनार ने पुतली को सुन्दर सुन्दर गहनों से सजा दी। अन्तिम पहरा ब्राह्मण का आया। उसने देखा कि एक सुन्दर पुतली गहने कपड़ों से सजी खड़ी है। ब्राह्मण ने अपने मन्त्र-बल से पुतली में जान डाल दी। सबेरे चारों झगड़ने लगे। उनमें से हर एक यही कहता था कि यह मेरी स्त्री है। अब राजन् ! तुम्हीं बतलाओ कि वह किसकी स्त्री बने ? राजा ने कहा कि खाती ने पुतली को बनाया था, इसलिए वह

उसी की स्त्री बननी चाहिए । इस पर चौबोली फिर बोल उठी कि खाती ने उसे जन्म दिया (बनाया) था, अतः वह उसका बाप (जनक) बन गया । वर-पक्ष वाले जब ब्याहने जाते हैं तो बहू के लिए गहना ले जाते हैं । सुनार ने पुतली को गहना पहनाया अतः वही उसका पति हुआ । इस पर विक्रमादित्य ने कहा कि यही सही । फिर उसने नगारची को पुकारा:—

चोबकली बोली चोथौ बोल ।
मार रे नगारची ढ़ोल पर चोब ॥

चौबोली चार बार बोल चुकी थी अतः शर्त के अनुसार राजा वीर विक्रमादित्य से उसका विवाह हो गया । राजा ने सारे कैदियों को मुक्त करा दिया । उसके देशनिकाले की अवधि पूरी हो गई और वह तीनों रानियों को साथ लेकर अपनी नगरी में आ गया ।

● करी पण कर कोनी जाणी

एक बादशाह ने सपने में देखा कि उसके महल पर एक कौआ 'राबड़ी' खा रहा है । बादशाह ने सबेरे दरबार में सपने का अर्थ पूछा, लेकिन कोई नहीं बता सका । तब बादशाह ने वजीर से कहा कि तुम्हें मेरे सपने का अर्थ बतलाना होगा । वजीर ने डर के मारे हां भर ली और तीन महीने की अवधि लेकर घर आ गया ।

वजीर के तीन लड़कियां थीं । उन्हें पढ़ाने के लिए एक उस्ताद आया करता था । वजीर की भूख-प्यास मिट गई थी और वह दिन प्रतिदिन सूखता चला जाता था । एक दिन उस्ताद ने वजीर से इसका कारण पूछा तो वजीर ने बादशाह के सपने की बात उस्ताद से कह दी । उस्ताद बोला कि अवधि पूरी होने पर आप मुझे दरबार में ले चलें । मैं इसका अर्थ बादशाह को बलता दूँगा । उस्ताद के विश्वास दिलाने पर वजीर को आशा बंध गई कि यह अवश्य ही बादशाह के सपने का अर्थ ठीक-ठीक बतला देगा।

अवधि समाप्त होने पर वजीर उस्ताद को लेकर दरबार में गया और बादशाह से बोला कि यह आदमी आपके सपने का अर्थ बतलायेगा। उस्ताद

बेचारे को कुछ पता नहीं था कि सपने का क्या अर्थ है। उसने बादशाह से कहा कि दरबार में एक 'तमोटी' (छोटा तंबू) तनवा दीजिए, मैं एक घण्टे उसमें रहूँगा और इसके पश्चात् आपके सपने का अर्थ बतला दूँगा, लेकिन इस एक घण्टे की अवधि में कोई आदमी एक शब्द भी मुंह से न निकाले अन्यथा मैं कुछ नहीं बतलाऊंगा। उस्ताद ने अपने बचने की एक तरकीब निकाली थी, लेकिन बादशाह ने 'तमोटी' तनवा दी और सारे लोगों को बिल्कुल चुप रहने का आदेश दे दिया। जब एक घण्टा बीतने को आया तो बादशाह ने कहा कि तुम्हारा मांगा हुआ समय पूरा हो गया है, अब मेरे सपने का अर्थ ठीक-ठीक बतलाओ अन्यथा तुम्हें सपरिवार घानी में पिलवा दिया जाएगा। उस्ताद ने सोच-विचार कर कहा कि हुजूर! आपके सात बेगमें हैं, उनमें से एक बेगम चरित्र-भ्रष्ट हो गयी है, बस, यही आपके सपने का अर्थ है। बादशाह ने पूछा कि इसकी परीक्षा कैसे हो तो उस्ताद बोला कि आप बेगमों के महलों का पहरा स्वयं दें और जिस बेगम के महल में आपके मना करने पर भी रात को दीया जल उठे, उसे ही आप कुलटा जानें। एक महीने की अवधि में आपको इस बात का पता लग जायेगा।

बादशाह ने ऐलान करवा दिया कि किसी बेगम के महल में दीया न जले और वह स्वयं रात को छुपकर महलों का पहरा देने लगा। एक दिन आधी रात को एक बेगम के महल में अचानक दीया जल उठा। बादशाह छुपे तौर पर महल में गया तो उसने देखा कि पहरेदारों का अफसर बेगम से बातें कर रहा है। कुछ देर बाद बेगम पहरेदार के साथ उसके घर गई और कुछ देर वहां रहने के पश्चात् महल में लौट आई। बादशाह ने छुपकर उनकी सारी करतूत देख ली।

दूसरे दिन बादशाह ने दरबार में आते ही उक्त बेगम को कहलवाया कि वह शृंगार करके दरबार में आये। पहले तो बेगम ने ना की, लेकिन बादशाह के दुबारा हुक्म देने पर वह शृंगार करके दरबार में आ गई। बादशाह के उसका पर्दा हटवा दिया और बेगम से कहा कि दरबार में जो

आदमी तुम्हें अच्छा लगे उसका हाथ पकड़ ले। बादशाह का हुक्म सुनकर रात वाले पहरदार को बड़ी खुशी हुई। वह कहीं दूर खड़ा था लेकिन किसी बहाने से बेगम के पास तक आ पहुँचा। बेगम तो उसे ढूंढ़ ही रही थी, उसने झट पहरेदार का हाथ पकड़ लिया। तब बादशाह ने हुक्म दिया कि इन दोनों को चौरंगा करके (हाथ-पांव काटकर) चौराहे पर गाड़ दो। बादशाह के हुक्म का तुरन्त ही पालन हुआ।

तब बादशाह ने वजीर को हुक्म दिया कि तुम एक बड़ा रजिस्टर लेकर उन दोनों के पास बैठ जाओ और उन दोनों को देखकर लोग-बाग जो कुछ भी कहें उसे रजिस्टर में दर्ज करते रहो। वजीर रजिस्टर लेकर वहां बैठ गया और उन दोनों को देखकर लोग जो कहते वह लिखने लगा। देखने वालों का तांता लगा था, कोई कुछ कहता, कोई कुछ, वजीर को पलक मारने की फुर्सत न थी।

उस्ताद को तो बादशाह ने रोक लिया था। उसकी अनुपस्थिति में उसकी औरत वजीर की लड़कियों को पढ़ाने आया करती थी। यों वह ठीक वक्त पर आ जाया करती थी, लेकिन आज वह भी बेगम और पहरे-दार का 'तमाशा' देखने लगी थी, अतः उसे आने में देर हो गई। जब वह देरी से आई तो वजीर की लड़कियों ने इसका कारण पूछा। उस्ताद की औरत ने उन्हें सारी बात बतलाई। शाम हुई तो तीनों लड़कियां भी मर-दाने वेष बना कर और घोड़ों पर सवार होकर 'तमाशा' देखने चलीं। उन दोनों की हालत देखकर एक ने कहा, करनी का फल है, दूसरी ने कहा जैसी करी वैसी भरी। इस पर तीसरी ने कहा 'करी तो तो सरी, पण कर कोनी जाणी, करती तो करके दिखा देती।' यों कहकर तीनों चली गईं। वजीर ने तीनों की बातें दर्ज कीं और अन्धेरा हो गया तो उठकर अपने घर आ गया। रजिस्टर उसने बादशाह के पास भेज दिया। बादशाह रजिस्टर को उलटता-पलटता रहा। देखते-दिखाते उसकी नजर वहाँ पहुँच गई जहां वजीर की तीनों लड़कियों की बातें लिखी थीं। बादशाह वहीं रुक गया। उसने वजीर को बुलाकर कहा कि इन तीनों आदमियों को मेरे

सामने हाजिर करो । वजीर ने कहा कि हुजूर ! मैं लोगों की बातें लिखने में इतना तल्लीन था कि मैंने किसी को आंख उठाकर भी नहीं देखा । लेकिन वह तो शाही हुक्म था। लाचार वजीर फिर तीन महीने की अवधि लेकर घर आ गया । उसका खाना-पीना छूट गया । वजीर की बेटियों ने पूछा तो वजीर ने बादशाह का हुक्म उन्हें सुना दिया । लड़कियों ने कहा कि बस इतनी सी बात के लिए क्यों घुले जा रहे हो ? हम स्वयं ही बादशाह को इसका उत्तर दे देंगी ।

जिस दिन तीन महीने की अवधि समाप्त हुई और दरबार लगा उस दिन वजीर की लड़कियां उसी प्रकार मरदाने कपड़े पहिनकर और घोड़ों पर सवार होकर दरबार में गयीं और उन्होंने बादशाह से कहा कि वे बातें हमने कही थीं । बड़ी बोली कि मैंने कहा था 'करनी का फल है' दूसरी बोली कि मैंने कहा था 'जैसी करी वैसी भरी' फिर तीसरी बड़ी मुस्तैदी से छाती ठोंककर बोली, 'करी पण कर कोनी जाणी, करती तो करके दिखा देती ।' बादशाह को उसके हाव-भाव से यह सन्देह हो गया कि यह पुरुष नहीं लड़की है । अतः उसने छोटी लड़की को एकान्त में ले जाकर पूछा कि सच-सच बतला तू कौन है ? वजीर की लड़की ने पहले तो बहुत टालने की चेष्टा की लेकिन अन्त में बतला दिया कि हम तीनों वजीर की बेटियां हैं । अब बादशाह ने वजीर से कहा कि अपनी छोटी लड़की का विवाह मेरे साथ कर दे । वजीर की इच्छा नहीं थी, लेकिन उसने बादशाह के साथ अपनी छोटी लड़की का विवाह कर दिया ।

जब विवाह हो गया तो बादशाह ने नई बेगम के लिए जंगल में एक महल चिनवा कर उसमें बेगम को भेज दिया । महल में एक भी दरवाजा या खिड़की नहीं रखी गई । सिर्फ एक छोटा सा झरोखा रखा गया । एक बांदी नित्य आकर झरोखे में से बेगम को खाना दे जाती । महल के बाहर पहरा बिठला दिया गया । कुछ दिन तो बेगम बादशाह की राह देखती रही, लेकिन फिर निराश होने लगी । एक दिन उसने महल की दीवार पर लिखा देखा, 'करी पण कर कोनी जाणी, करती तो करके दिखा देती ।"

वह समझ गई कि बादशाह ने इसी बात के लिए मुझे यहां कैद किया है। एक दिन उसने अपनी बहिन के नाम एक चिट्ठी लिखी कि अपने घर से लेकर यहां तक सुरंग खुदवाई जाए और वह चिट्ठी लेकर झरोखे के पास बैठ गई। किसी राह जाते के साथ उसने वह चिट्ठी अपने बाप के घर भेज दी। वजीर ने अपने घर से लेकर महल तक सुरंग बनवा दी। वजीर की छोटी लड़की अपने बाप के घर आ गई और उसने अपनी दासी को महल में भेज दिया। दासी उसी प्रकार झरोखे से खाना ले लिया करती।

वजीर की लड़की ने दो तीन सेर सोने के बाजरे जितने छोटे-छोटे दाने बनवाये और वह एक फकीर का वेष बनाकर नगर के बाहर अपना धूना धुका कर बैठ गयी। धूने की राख में उसने सोने के कण मिला दिये। अब जो भी आदमी धूने पर आता फकीर उसे एक मुट्ठी राख धूने में से उठा कर दे देता और उससे कह देता कि इस राख को पानी में घोल लेना। पानी में राख डालते ही सोना अलग हो जाता। नगर भर में फकीर की बड़ी ख्याति फैल गयी। बात बादशाह तक पहुँची कि एक बड़ा सिद्ध फकीर आया है। बादशाह भी वजीर को साथ लेकर फकीर के पास पहुँचा। फकीर ने उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। जब वे जाने लगे तो फकीर ने उन्हें भी एक एक मुट्ठी राख दे दी और उनसे कह दिया कि कल इसी वक्त आना। जब वे चले गये तो फकीर ने शेष लोगों से कह दिया कि कोई भी तीन दिन तक धूने पर न आये, अन्यथा उसे बहुत हानि उठानी पड़ेगी। दूसरे दिन बादशाह और वजीर नियत समय पर आ पहुँचे। बादशाह ने पानी में राख घोल कर देखी थी और उसमें उसे काफी सोने के दाने मिले थे। बादशाह को निश्चय हो गया था कि यह अवश्य ही कोई करामाती फकीर है।

फकीर ने वजीर से कहा कि तुम भी जाओ। वजीर चला गया और बादशाह बैठा रहा। कुछ देर बाद जब बादशाह जाने को तैयार हुआ तो फकीर ने बादशाह की पीठ पर चार चिमटे कस कर जमा दिये और बोला कि साले जाता कहां है? तुझे तीन दिन यहीं रहना होगा, मैं एक

आवश्यक काम से तीन दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ। शाम को मेरी चेली तुम्हारे लिए भोजन लेकर यहां आ जाएगी सो तुम भोजन कर लिया करना। यदि तुम्हें अकेले में डर लगे तो उसे भी साथ रख लेना। लेकिन खबरदार, जबतक मैं नहीं आऊँ, यहां से कहीं मत जाना और न किसी को यहां आने देना। बादशाह ने नतमस्तक होकर फकीर की आज्ञा शिरोधार्य कर ली।

फकीर चला गया। शाम को एक अत्यन्त सन्दर स्त्री सोलहों शृंगार किये भोजन का थाल लेकर वहां आई। बादशाह ने छककर भोजन किया और फिर धूने पर बैठ गया, लेकिन उसे कल नहीं पड़ रही थी। बादशाह का मन चेली को देखकर चलायमान हो रहा था, लेकिन साथ ही फकीर का भय भी बना हुआ था। अन्त में चेली के सौन्दर्य ने फकीर के भय पर विजय पा ली और दोनों वहीं सो रहे। जब चेली सबेरे उठ कर जाने लगी तो उसने बादशाह से कहा कि मुझे अपनी कोई पहिचान दे दें, क्योंकि मैं तो फकीर के साथ रहती हूँ। आज इस गांव में हूँ तो कल किसी दूसरे गांव में। बहुत संभव है फिर कभी तुम्हारे नगर में आना हो जाए। बादशाह ने अपना दुपट्टा, कटार और अँगूठी उसे दे दी। तीसरे दिन फकीर आ गया और उसने बादशाह को छुट्टी दे दी। जाते वक्त फकीर ने बादशाह को धूने में से उठाकर बहुत सारी राख भी दे दी। बादशाह चला गया तो फकीर ने भी अपनी माया समेट ली और वहां से चलता बना। वह चेली और कोई नहीं वही वजीर की बेटी थी। उसका काम बन गया था। अब उसने फकीर का वेष त्याग दिया और सुरंग के रास्ते महल में चली गई। बांदी को उसने लौटा दिया। नौ महीने बाद उसके लड़का हुआ। बच्चे के रोने की आवाज सुनकर पहरेदारों ने डरते-डरते बादशाह को इसकी सूचना दी। बादशाह ने कहा कि महल में परिन्दा भी पर नहीं मार सकता, तब बच्चे के रोने की आवाज कैसे आ सकती है? बादशाह नंगी तलवार लेकर महल की ओर चल पड़ा। दीवार तुड़वाकर उसने महल में प्रवेश किया। इधर बेगम ने बच्चे की उँगली में बादशाह

की अँगूठी पहना दी, कमर में कटार खोंस दी और उसके गले में बादशाह का दुपट्टा लपेट कर उसे अलग सुला दिया। बादशाह ने बेगम से कड़क कर पूछा कि यह बच्चा कहां से आया, शीघ्र बतला, नहीं तो तेरा सिर अभी धड़ से अलग करता हूँ। बेगम ने कहा कि उधर बच्चा सोया है उसी से पूछ लो, वही सब कुछ बतला देगा। बादशाह ने बच्चे को देखा, दुपट्टा, कटार आदि देख कर भी उसे कुछ ध्यान नहीं आया। उसने बच्चे से कई बार पूछा, लेकिन वह बेचारा क्या जवाब देता? बादशाह गुस्से में भरा फिर बेगम के पास आकर बोला कि हरामजादी, वह तो कुछ नहीं बोलता, अब या तो तू सही उत्तर दे अन्यथा अभी तेरा काम तमाम करता हूँ। इस पर बेगम ने तुनक कर कहा कि वह तो कुछ नहीं बोलता, लेकिन क्या तुम्हारे भी हिये की फूट गई हैं? दुपट्टा, कटार और अंगूठी जो बच्चा पहिने हुए है वे किसके हैं? बादशाह कुछ याद करता हुआ-सा बोला कि वे हैं तो मेरे ही, लेकिन वे तो मैंने उस फकीर की चेली को दिये थे, तुम्हारे पास कहां से आ गये? इस पर बेगम फिर बोली कि तुम्हारी पीठ पर जो चिमटे मैंने लगाये थे वे तो तुम नहीं भूले होगे? तुमने इस महल की दीवार पर जो यह लिखवाया है, 'करी पण कर कोनी जाणी, करती तो करके दिखा देती।' सो मैंने तुम्हें यही करके दिखलाया है। बादशाह की गर्दन झुक गई और वह सम्मान के साथ वजीर की बेटी को अपने महल में ले गया।

● बीर संयमराय

संवत् १२०० के लगभग महाराज पृथ्वीराज चौहान ने मोहबा पर चढ़ाई की। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। स्वयं महाराज पृथ्वीराज घायल और मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़े। उस समय गीधों ने महाराज के नेत्र अपनी चोंचों से निकालने चाहे। वीरवर संयमराय भी उनसे थोड़ी ही दूरी पर घायल हुए पड़े थे, उन्होंने यह दृश्य देखा तो उनसे रहा नहीं गया। अधिक घाव लगने के कारण वे उठ तो नहीं सके, लेकिन वहीं

से अपने शरीर से मांस काट-काट कर गीधों के पास फेंकने लगे, जिससे गीध महाराज के नेत्रों को छोड़ कर उधर लग जायँ। वीरवर संयमराय की प्रशंसा में यह दोहा अत्यन्त प्रसिद्ध है:—

गीधन को पल भख दिये, नृप के नैन बचाय।
सैं देही बैकुण्ठ में, गये जु संयम राय॥

● महाराजा पद्मसिंह

बीकानेर महाराज कर्णसिंह के पुत्र पद्मसिंह बड़े वीर थे। जब बादशाह औरंगजेब दक्षिण-विजय के लिए गया तो पद्मसिंहजी व उनके छोटे भाई मोहनसिंहजी भी उनके साथ थे। मोहनसिंह का कोतवाल से हिरनों के लड़ाने पर कुछ विवाद हो गया। मोहनसिंह को कोतवाल ने अकेले में मार डाला और फिर स्वयं अपनी जान बचाने के लिए दरबार में जा बैठा। इधर जब पद्मसिंह जी को इस बात का पता चला तो वे उसी वक्त दरबार में गये और वहीं भरे दरबार में कोतवाल का सिर धड़ से उड़ा कर अपने भाई की मृत्यु का बदला लिया। इसी बात को लेकर पद्म सिंह जी की प्रशंसा में निम्न दोहा कहा गया है जो बहुत प्रसिद्ध है:—

एक घड़ी आलोच, मोहण रे करतो मरण।
सोह जमवारो सोच, करताँ हि जातो करणवत॥

● ठाकुर केसरी सिंह

बीकानर के महाराज जोरावर सिंहजी के समय में जोधपुर नरेश अभय सिंहजी ने बीकानर पर घेरा डाला। इस पर बीकानेर महाराज ने जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंहजी से सहायता मांगी। उन्होंने एक दोहा जयपुर नरेश को लिखा:—

अभो ग्राह बीकाण गज, मारू समँद अथाह।
गरुड़ छांडि गोविन्द ज्यूं, स्हाय करो जयसाह॥

अर्थात् मरुस्थल रूपी अथाह समुद्र में बीकानेर रूपी हाथी को अभय

सिंह रूपी ग्राह ने पकड़ रक्खा है। हे जयसिंह, गरुड़ को छोड़कर भगवान ने जैसे हाथी को बचाया था—उसी शीघ्रता से आकर हमारी सहायता कीजिए ।

इस पर जय सिंहजी ने एक बड़ी फौज लेकर जोधपुर पर चढ़ाई कर दी। अभयसिंहजी को खाली हाथ जोधपुर लौटना पड़ा। उधर जयसिंहजी की फौज बहुत बड़ी थी और उनके पास भारी तोपखाना था अतः अभयसिंह जी ने बिना लड़े ही कुछ दे, दिलाकर जयसिंह को वापिस किया ।

जयसिंहजी की फौज बिना लड़े ही वापिस चल पड़ी । मार्ग में भखरी का ठिकाना पड़ा । फौज के लोग गर्वपूर्वक आपस में बातें करते जाते थे कि मारवाड़ के लोग बड़े कायर हैं जो उनसे तोपें खाली नहीं करवाई गई और हम अपनी भरी की भरी तोपें वापिस लिये जा रहे हैं । उस वक्त भखरी के ठाकुर केसरीसिंह थे । उनसे यह ताना नहीं सहा गया । वे अवसर पाकर श्री गोविन्ददेवजी की सवारी के हाथी को अपने किले में ठेलकर ले गये और किले का दरवाजा बन्द कर लिया । महाराज सवाई जयसिंह ने उन्हें बहुत समझाया, लेकिन वे नहीं माने । निदान किले की दीवारों को तोड़ने के लिए जयपुर वालों को तोपें चलानी पड़ीं और ठाकुर केसरी सिंहजी वीरतापूर्वक लड़कर वहीं कट मरे ।

जब महाराज अभयसिंहजी ने यह बात सुनी तो उन्होंने कहा कि इतनी बड़ी फौज से लड़ने में ठाकुर की कौन सी बुद्धिमानी थी ? इस पर एक चारण ने महाराज से कहा कि नहीं अन्नदाता, केसरीसिंह अमर हो गये हैं, उन्होंने मारवाड़ के मुंह पर सदैव के लिए कालिख नहीं पुतने दी:—

केहरिया करनाळ, जुड़तो नहँ जयसाह सूं ।
आ मोटी अवगाळ, रहती सिर मारू धरा ।।

● जगदेव पँवार

धारा नगरी से एक ब्राह्मण कमाने के लिए प्रातःकाल ही चला । नगर से बाहर निकला तो उसे सामने से धारा नगरी का राजा उदयदीप

आता दिखलाई पड़ा। राजा को देखते ही ब्राह्मण का माथा ठनका और वह वहीं से लौटने लगा। राजा भी ब्राह्मण की बात को ताड़ गया। उसने ब्राह्मण से पूछा कि तुम वापिस क्यों चल पड़े? ब्राह्मण ने टालने की बहुत चेष्टा की लेकिन राजा के अधिक पूछने पर ब्राह्मण ने कहा कि महाराज, मैं कमाने के लिए जा रहा था, लेकिन सामने निपुत्र राजा के दर्शन हो गये, यह अपशकुन हुआ, अतः घर लौट रहा हूँ। राजा को ब्राह्मण की बात सुनकर बड़ा दुःख हुआ। वह उसी वक्त अपने महल में आया। राजा ने सारा राज-काज अपने मंत्री को संभला दिया और स्वयं घोड़े पर सवार होकर उत्तराखंड की ओर चल पड़ा। राजा चलते-चलते एक बियावान जंगल में पहुँच गया। वहां गुरू गोरखनाथजी बारह वर्षों की समाधि लगाये बैठे थे। राजा प्रणाम करके महात्मा के आगे बैठ गया। तीन दिन तक राजा वहीं बैठा रहा। तीन दिन बाद योगी की समाधि पूरी हुई और उसने अपने नेत्र खोले। राजा को सामने देखकर योगी ने कहा कि राजन्, तुम जिस प्रयोजन से आये हो वह मैं जनाता हूँ। सामने जो आम का वृक्ष दिखलाई पड़ रहा है, वहां जाकर वृक्ष पर एक तीर मारो, दो आम गिर जाएंगे उन्हें लेकर यहां आ जाओ। राजा ने जा कर तीर मारा तो दो आम धरती पर गिर गये। राजा ने लालचवश फिर एक तीर मारा, लेकिन इस बार धरती पर गिरे दोनों आम भी वृक्ष पर चले गये। राजा गुरु के पास आया और उसने सारी बात गुरू से कही। गुरू ने कहा कि तुमने लालच किया, इसी से दोनों आम वृक्ष पर फिर जा लगे। अब लालच न करना। इस बार एक ही तीर मारना। राजा ने वैसा ही किया और आम लेकर गुरू के पास आ गया। गुरू गोरखनाथ ने दोनों आमों में बारह-बारह हाथियों का बल भर दिया और उन्हें राजा को देते हुए कहा कि इन्हें ले जाकर अपनी दोनों रानियों को दे देना, तुम्हारे दो पुत्र हो जाएंगे। राजा आम लेकर अपने नगर को लौट पड़ा।

राजा उदयदीप के दो रानियां थीं; एक को सुहाग था तथा दूसरी को दुहाग था। राजा ने एक आम सुहागिन रानी को दिया तथा दूसरा

दुहागिन को। सुहागिन रानी ने उपेक्षा से आम को उठाकर आले में रख दिया कि आम खाने से भी कहीं बेटे पैदा होते हैं, लेकिन दुहागिन रानी ने राजा के हाथ से आम पाया तो उसने अपने भाग्य को सराहा और उसने नहा-धोकर आम खा लिया। तीसरे दिन राजा फिर सुहागिन रानी के महल में पहुँचा तो रानी को आम की बात याद आयी। रानी ने आम खा लिया, लेकिन आम की करामात तब तक खत्म हो चुकी थी। दोनों रानियां गर्भवती हो गईं।

इधर राजा उदयदीप को दिल्ली के बादशाहका बुलावा आ गया तो वह अपने सरदारों के साथ दिल्ली चला गया।।

नौ महीने बाद दोनों रानियों के दो लड़के हुए। पहले दुहागिन रानी के लड़का हुआ जिसका नाम 'जगदेव' रखा गया, फिर सुहागिन रानी के कुंवर हुआ, उसने अपने कुंवर का नाम 'रल धवल' रखा। सुहागिन रानी ने घुड़सवारों को बधाई का संदेश देकर दिल्ली भेजा, लेकिन दुहागिन रानी के पास कुछ था नहीं, अतः उसने एक साधारण हरकारे को राजा के पास भेजा। घुड़सवारों ने जाकर राजा उदयदीप को सुहागिन रानी के कुंवर होने की बधाई दी। राजा ने प्रसन्न होकर सारा राजपाट उसके नाम कर दिया। कुछ दिनों बाद दुहागिन का हरकारा राजा के पास पहुँचा और उसने राजा को बधाई का संदेश देते हुए कहा:—

द्वापर जुग की बात साल एक बात इकाणूं।
चैतमास चतरदसी बार आदीत बखाणूं।
राज उदिया दीप सहर में उदो सवायो।
जलम लियो जगदेव पूर नख्तर जस पायो।
राजा उदियादीप घर बंटै बधाई बो घणी।
औतार इन्द घर ऊतर्यो दल थंभण धारा धणी।

संदेश सुनकर राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई, लेकिन उसने हरकारे से कहा कि मैं तो सारा राजपाट 'रल-धवल' के नाम कर चुका हूँ। फिरभी

राजा ने दुहागिन रानी का 'पेटिया' बढ़ा दिया तथा उसे और भी कई छोटी-मोटी सुविधाएं दे दीं।

दोनों कुंअर बड़े होने लगे। जगदेव बारह हाथियों का बल लेकर जन्मा था, अतः वह बचपन में ही बहुत बली था, लेकिन 'रलधवल' साधारण लड़कों की तरह ही था। अपने पिता की अनुपस्थिति में जगदेव गद्दी को सलामी देने जाया करता। जगदेव बचपन से ही सवा मन की सांग अपने पास रखता था। जब वह सलामी देने जाता तो सांग को धरती पर मारता। पूरी की पूरी सांग धरती में समा जाती, सिर्फ दो अंगुल सांग बाहर रहती। लौटते वक्त जगदेव उसे 'चिमटी' (अंगूठे और तर्जनी ऊँगली की पकड़) से खींच कर निकाल लिया करता। 'रलधवल' ने जाकर अपनी मां से सारी बात कही और बोला कि यह जगदेव कभी न कभी मुझे मार डालेगा। दूसरे दिन रानी ने लोहे के सात मोटे तवे उस स्थान पर गड़वा दिये। जगदेव ने सांग मारी तो वह सातों तवों को छेदकर उसी प्रकार जमीन में समा गयी। जाते वक्त जगदेव ने सांग निकाली तो सातों तवे सांग में पिरोये हुए साथ ही निकल आये। यह देखकर रलधवल को और भी भय हो गया। उसने फिर जाकर अपनी मां से सारी बात कही। रानी ने कहा कि तुम डरो मत, तुम्हारे पिता को आने दो; मैं सारा बन्दोबस्त कर दूँगी।

बारह वर्ष पूरे होने पर राजा उदयदीप अपनी नगरी को आया। जब वह नगर के समीप पहुँचा तो अचानक उसकी उँगली में भयंकर पीड़ा होने लगी। राजा सीधा सुहागिन रानी के महल में गया, लेकिन उसे चैन नहीं था, पीड़ा बहुत अधिक थी और उसे किसी करवट कल नहीं पड़ती थी। सुहागिन रानी की जीभ में 'अमी' थी और वह राजा की उँगली अपने मुंह में लेकर चूसने लगी। राजा को इससे शान्ति मिली और उसे नींद आ गई। सबेरे जब राजा उठा तो भला चंगा था। राजा ने प्रसन्न होकर रानी से कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो वह माँगो। रानी ने राजा से वचन ले लिया और वचन लेकर उसने जगदेव के लिए बारह वर्ष का 'देसूंटा' (देश-निकाला) माँग लिया।

नृपत बचन नादान राव सें आखै राणी ,
मेरो धवल अनाथ बसत ना तकै बिराणी
या सें धवल बड़ो, जगदेव मोडमन धारालेवै
कंथ किरोध राणी अखै, सहना लिखो सनेह नें
उदत भान देसूंटो जगदेव नें ।

रानी की बात सुनकर राजा को बड़ा दुःख हुआ। अपने वीर पुत्र को देखने की उसे बड़ी इच्छा थी, लेकिन वचनबद्ध होने के कारण वह लाचार था। राजा ने जगदेव के लिए काला घोड़ा और काले वस्त्र किले के फाटक पर लगा दिये। उधर जगदेव को भी पिता के दर्शन करने की बड़ी लालसा थी, वह बड़ी उमंग से पिता के दर्शन करने के लिए चला, लेकिन जब किले के फाटक पर उसने अपने लिए काला घोड़ा बंधा और काले वस्त्र टंगे देखे तो उसकी सारी लालसाओं पर पानी फिर गया। 'देसूंटा' स्वीकार करते हुए उसने सबको सम्बोधित करते हुए कहा—

काळा बस्तर किया कस्यो तुरंग ताजी काळो,
छत्री म्हानै दे दियो देस निकाळो ।
मात पिता सबही खड़े, सभी खड़ी सिरकार,
लुळ के मुजरो मानियो , जगदेव तणी जुंहार ।

जगदेव वहाँ से चलकर 'फूल-भाटी' की राजधानी में आया। फूलभाटी ने जगदेव का बहुत सम्मान किया और उसने अपनी लड़की फुलवादे का विवाह जगदेव के साथ कर दिया। कुछ दिन वहाँ रह कर जगदेव रानी को साथ लेकर कन्नौज की ओर चल पड़ा। कन्नौज का राजा जयचन्द बड़ा वीर था तथा 'दलाँ पाँगलो राजा जयचन्द' के नाम से उसकी ख्याति थी। जगदेव ने देश-निकाले के शेष दिन वहीं पूरे करने का विचार किया और रानी सहित घोड़े पर चढ़कर कन्नौज के रास्ते चल पड़ा।

चलते-चलते दोनों एक ऐसे स्थान पर पहुँचे, जहाँ से दो रास्ते फंटते थे। जगदेव ने जंगल में बकरी चराने वाले एक ग्वाले से पूछा कि कौन सा रास्ता कन्नौज को जाता है ? ग्वाले ने कहा कि दोनों ही रास्ते कन्नौज को

जाते हैं, लेकिन एक रास्ता तीन दिन का है और दूसरा छः महीने का। छः महीने वाला रास्ता निरापद है जब कि तीन दिन वाला रास्ता अत्यन्त खतरनाक है। तीन दिन वाले रास्ते में पहले नौहत्थे शेर की चौकी है, फिर मगने हाथी की । इस रास्ते से जाने वाला इन दोनों से बचकर नहीं जा सकता। जगदेव ने रानी से पूछा तो रानी ने तीन दिन वाला रास्ता ही पसंद किया। जगदेव रानी-सहित उसी रास्ते चल पड़ा तो ग्वाला भी अपने बछेड़े पर सवार होकर उनके साथ हो लिया। रानी ने ग्वाले से पूछा कि तुम क्यों यह खतरा मोल ले रहे हो तो ग्वाले ने उत्तर दिया—

सिंह मार्‌यां तो बन घणो, नर मार्‌याँ घरनार।
दोनूं हाथां हे सखि, मेरै माँझल घूमै बार॥

तब जगदेव ने ग्वाले को भी साथ ले लिया। काफी दूर जाने पर उन्होंने देखा कि शेर सो रहा है और शेरनी उसको हवा कर रही है। जगदेव ने रानी से कहा कि मैं 'जनानी' (शेरनी) से क्या बात करूँगा, अतः तू शेरनी से कह कि वह अपने शेर को जगा ले। इस पर रानी ने शेरनी से पुकार कर कहा:—

सिंघणी सिंघ जगाय दे, म्हाँनैं होय अँवार।
थारै म्हारै पीव का, रळ देखां बीहार॥

सिंहनी ने उत्तर दिया:—

मेरो सिंघ उजाड़ को सूत्यो है मैंमंत,
मत मरवावै कामणी तेरो जीवत लेज्या कंत।

रानी ने फिर कहा:—

तेरो सिंघ उजाड़ को, म्हारो बावन बीर,
मिस्री सूंतै म्यान में नदी खळक्के नीर॥

सिंहनी ने फिर उत्तर दिया—

मो बोल्याँ गिरवर डिगै, डिगै गजहस्ती का दंत।
मत मरवावै कामणी, तेरो जीवत लेज्या कंत॥

इस पर रानी ने व्यंग्य से कहा :—

नोटंकी कबाण है, सवा हाथ की भाल ।
कई'क तपसी ओढ़सी तेरै बाघ अमर की खाल ।।

इस पर सिंहनी ने अपने पति को जगाते हुए कहा :—

उठो कंत निनाल्वा, दो राह् बटेऊ जंत ।
एक बल्हल नैणी एक ऊजल दंतो, ऊभा बाद करंत ।।

सिंह उठा तो रानी ने अपने पति से कहा :—

कंथा ऐसी चोट कर, ऐसी अंग लगाय ।
सिर चक्कै मूठी डिगै तो सिंघ छवाँ नें खाय ।।

जगदेव ने एक ही वार में सिंह को धराशायी कर दिया तो सिंहनी भयभीत होकर भागने लगी। जगदेव ने रानी से कहा कि मैं जनानी पर हाथ नहीं उठाता, अतः तुम इसका काम तमाम करो । रानी ने कछौटा मारा और सिंहनी के पीछे दौड़ी। सिंहनी की पूंछ पकड़ कर रानी ने उसे घुमाकर चट्टान पर दे मारी । सिंहनी का भी काम तमाम हो गया । तब वे रात भर के लिए वहीं ठहर गये । रानी ने हाथी की बात चलाई तो जगदेव ने गर्व-पूर्वक कहा कि हाथी के दाँत उखाड़ कर तुम्हें दे दूंगा सो उसके खूब चूड़े बनवा लेना ।

सबेरे वे लोग चले तो कुछ दूर चलने पर मगने हाथी की चौकी आई। हाथी मस्ती में झूम रहा था। हाथी को देखकर रानी ने अपने पति से कहा:—

रात'ज बोल्या बोलणा, इब निरभावो कंथ ।
चूड़ा चिरावण थे कह्या गजहस्ती का दन्त ।।

जगदेव ने हाथी का भी एक ही वार में काम तमाम कर दिया । फिर वे निर्विघ्न कन्नौज पहुँच गये । कन्नौज पहुँचकर जगदेव एक ब्राह्मणी के घर ठहर गया । रानी ने ब्राह्मणी से कहा कि मुझे थोड़ा चमेली का तेल लाकर दे। रानी ने उसे एक सोने का टका दिया । ब्राह्मणी तेली के घर गयी, लेकिन तेली ने ब्राह्मणी को तेल नहीं दिया और उसे घर से निकाल दिया । तब जगदेव स्वयं तेल लाने के लिए गया । तेली ने चिढ़कर जगदेव को गाली

दे दी। तेली के घर में लोहे की एक मोटी 'कुश' पड़ी थी, जगदेव ने तेली और उसकी स्त्री को पास-पास खड़ा करके लोहे की कुश उन दोनों के गले में डाल कर मोड़ दी। अब दोनों आपस में बंध गये। तेली लम्बा था और उसकी स्त्री नाटी थी। दोनों मुश्किल में पड़ गये। तेली और तेलिन ने सोचा कि राजा जयचन्द 'दलाँ पांगला' कहलाता है, उसके दरबार में एक से एक शूरवीर हैं, अतः वहीं चलना चाहिए, सम्भव है कोई वीर इसे निकाल दे। तेली-तेलिन दोनों गिरते-पड़ते दरबार की ओर चल पड़े।

उधर जगदेव भी राजा जयचन्द के दरबार में पहुँच गया। दरबार सूरों-सरदारों से खचाखच भरा था। तेली-तेलिन ने दरबार में पहुँच कर पुकार की। राजा ने अपने सरदारों को हुक्म दिया कि इनके गले से यह लोहे की सलाखा निकाल दो, लेकिन कोई भी सरदार उसे निकालने में समर्थ नहीं हो सका। तब जगदेव ने उठकर बड़ी आसानी से सलाखा खोलकर दोनों को मुक्त कर दिया। सब लोग जगदेव की ओर देखने लगे। राजा ने सोचा कि ऐसा शूरवीर दरबार में रहे तो अच्छा है। जगदेव से जब राजा ने पूछा तो जगदेव ने उत्तर दिया कि मैं लाख टके रोज के लूंगा और काम सिर्फ वही करूँगा जो दूसरों से न हो सके। राजा ने जगदेव को लाख टके रोज पर रख लिया। जगदेव उन लाख टकों में से सिर्फ चार टके अपने लिए रखता था और शेष सब गरीबों को बाँट देता था।

एक दिन राजा जयचन्द ने सोचा कि जगदेव को मैं लाख टके रोज देता हूँ सो देखना चाहिए कि यह इन टकों का क्या करता है? दूसरे दिन जब दरबार समाप्त होने पर जगदेव उठकर गया तो राजा जयचन्द भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। ज़गदेव ने नित्य की तरह आज भी अपने लिए चार टके रख कर शेष बाँट दिये। आगे चलने पर जगदेव को चार जोगिनियाँ मिलीं। दो हँस रही थीं, दो रो रही थीं। जगदेव ने जोगिनियों से इसका कारण पूछा तो हँसने वाली दोनों जोगिनियों ने कहा कि हम आज राजा जयचन्द को मार कर उसके खून से अपने खप्पर भरेंगी, इसी खुशी में हम हँस रही हैं। रोने वाली जोगिनियों ने कहा कि राजा जयचन्द बड़ा प्रतापी

और धर्मात्मा राजा है, आज इसकी मृत्यु हो जाएगी, इसी दुःख से हम रो रही हैं। तब जगदेव ने उनसे पूछा कि क्या राजा किसी प्रकार बच भी सकता है? जोगिनियों ने कहा कि यदि कोई आदमी अपने जेठे लड़के को मार कर हमारा खप्पर भर दे तो राजा बच सकता है।

जगदेव के तब तक एक लड़का हो चुका था। जगदेव जोगिनियों को घर ले गया। बच्चा पालने में सोया था और उसकी माँ रसोई बना रही थी। जगदेव ने जाते ही बच्चे को मार कर जोगिनियों के खप्पर भर दिये। वे संतुष्ट हो कर चली गयीं।

राजा जयचन्द सारी लीला देख रहा था। वह मन ही मन कहने लगा कि आज जगदेव ने अपने बच्चे को मारकर मुझे जीवन-दान दिया है, वह अपने महल को लौट गया। जगदेव भी बाहर चला गया।

कुछ समय पश्चात् उधर से शिव-पार्वती निकले। पार्वती ने शिवजी से पूछा कि प्रभो, यह बच्चा पालने में क्यों मरा पड़ा है? शिवजी ने सारी बात कही तो पार्वती बोली कि इसे जिन्दा करोगे तभी मैं आपके साथ कैलाश को चलूंगी। पार्वती ने हठ पकड़ लिया तो शिवजी ने बालक को जिन्दा कर दिया। कुछ देर पश्चात् जगदेव घर में आया तो उसने देखा कि रानी बच्चे को दूध पिला रही है। जगदेव ने सोचा कि सदाशिव ने मुझे नेकी का पुरस्कार दिया है।

दूसरे दिन जगदेव दरबार में गया तो राजा जयचन्द उस पर बड़ा प्रसन्न था। राजा ने अपनी लड़की 'कमोला' जगदेव को व्याह दी तथा उसे उच्च पद प्रदान किया।

नगर में 'कालिया' नाम का एक दाना आया करता था। प्रत्येक घर की बारी बंधी हुई थी। जिस घर की बारी होती उस घर के एक आदमी को दाने की बलि के लिए जाना पड़ता था। साथ में एक बकरा, शराब का घड़ा और 'बाकला' राज्य की ओर से दाने के लिए जाया करते। एक दिन जगदेव घर आया तो जिस घर में वह रहता था वह ब्राह्मणी रो रही थी और 'गुलगुले' उतार रही थी। जगदेव ने ब्राह्मणी से इसका कारण

पूछा तो उसने रोते-रोते कहा कि मेरा एक लड़का पहले ही दाने की बलि में चला गया था, अब आज दूसरे की बारी है। ये गुलगुले उसी के लिए बना रही हूँ। जगदेव ने बुढ़िया को धीरज बंधाया और कहा कि तुम्हारे बेटे की बारी में मैं चला जाऊँगा। जब रात को राज्य के आदमी आयें तो मुझे जगा देना। बुढ़िया को विश्वास तो नहीं हुआ कि उसके बेटे की बारी में कोई दूसरा आदमी मरने के लिए चला जाएगा, लेकिन फिरभी उसने कुछ धैर्य धारण किया। जगदेव खा-पीकर सो गया।

डेढ़ पहर रात गये राज्य के आदमी आये, बुढ़िया ने किसी प्रकार जगदेव को जगाया। जगदेव उनके साथ हो लिया। राज्य के कर्मचारियों ने कहा कि यह शराब का घड़ा आदि अपने सिर पर रखकर ले चलो तो जगदेव बोला कि ये चीजें तुम स्वयं अपने सिरों पर रखकर चुपचाप मेरे आगे-आगे चलो, अन्यथा तुम्हारी भी खैर नहीं। उन लोगों ने वैसा ही किया। निश्चित स्थान पर पहुँच कर उन्होंने बकरे को बाँध दिया और शेष चीजें वहां रखे हुए कुण्डों में डाल दीं। फिर जगदेव को वहाँ छोड़कर राज्य-कर्मचारी लौट गये। आधी रात को कालिया दाना खूं-खां करता वहाँ आया। जगदेव ने बकरे को खोल दिया था और 'बाकले' वगैरह सब बिखेर दिये थे। दाने को यह सब देखकर बड़ा क्रोध आया। उसने जगदेव से क्रोध-भरी आवाज में पूछा कि यह सब तुमने क्या किया है? जगदेव ने भी दाने को ललकारा। दोनों आपस में गुंथ गए। तीन पहर रात बीतने तक जगदेव ने दाने को पछाड़ दिया, वह उसकी छाती पर बैठ गया और उसे मारने को उतारू हो गया। दाने ने कहा कि माँ कंकाली ने मुझसे कहा था कि तुझे जगदेव पँवार के अतिरिक्त और कोई नहीं मार सकेगा, लेकिन जगदेव तो धारा-नगरी में रहता है, तुम कौन हो? जगदेव ने कहा कि मैं ही जगदेव हूँ। इस पर दाना बोला कि यदि यह बात तुम मुझे पहले ही बतला देते तो मैं तुमसे उलझता ही नहीं। लेकिन अब मुझे मारो मत, मैं तुम जो कहो वही करने के लिए तैयार हूँ, आगे फिर इस राज्य में कभी नहीं आऊँगा। दाने के बहुत गिड़-गिड़ाने पर जगदेव ने उसका एक कान काट कर उसे छोड़ दिया।

दाने को परास्त कर जगदेव घर आकर सो रहा। सवा पहर दिन चढ़ा तो वह दाने का कान लेकर दरबार में पहुँचा। दाने के कान को देखकर सारे दरबारी भयभीत हो उठे। उधर कालिया दाना अपनी माँ कंकाली के पास पहुँचा और बोला कि माँ, मेरा बड़ा तिरस्कार हुआ है, अब मैं विष का प्याला पीकर मरूँगा। काली ने पूछा कि तेरी ऐसी दुर्दशा किसने की है तो काळू बोला कि उसी जगदेव ने। अब या तो मुझे उसका सिर लाकर दे अन्यथा मैं तेरे सामने ही विष का प्याला पीकर मरता हूँ। काली ने कहा कि मैं उसका सिर तुझे दूंगी तो नहीं लेकिन उसका कटा सिर तुझे दिखला अवश्य दूंगी। काळू इतने पर मान गया।

अब देवी ने विकराल वेष बनाया और 'ल्याव, ल्याव' कहती हुई राजा जयचन्द के दरबार में पहुँची। उसने दरबार में पहुँच कर जगदेव से दान माँगा। जगदेव ने कहा कि देवी ! मेरे घर चलें, अपने वित्त के अनुसार मैं तुम्हें दान दूंगा। राजा जयचन्द ने इसमें अपना अपमान समझा। उसने काली से कहा कि मेरे दरबार में आकर तू मेरे से दान न माँग कर मेरे एक अदने नौकर से दान माँग रही है, वह बेचारा क्या दान देगा ? देवी ने कहा कि जो दान वह दे सकता है, वह तुम नहीं दे सकते। इस पर जयचन्द ने रोष पूर्वक कहा कि जितना वह देगा उससे चौगुना दान मैं तुम्हें दूंगा।

काली जगदेव के साथ उसके घर चल पड़ी :—

छत्री खड्ग समाय ऊठ दिस घर ने हाल्यो,
गैल हुई कंकाल पोळ बड़ताई दकाल्यो।
नेत्रां, सरवणां इलणा फड़ साजै तनै,
छत्री मूंछ संवार सीस दीजै मनै ॥

काली की माँग सुनकर जगदेव को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने सोचा कि सिर तो मेरे पास ही है, इसे दे देना तो बहुत ही सरल है, यदि यह कोई ऐसी चीज माँग बैठती जो मेरे पास नहीं थी तो बड़ी मुश्किल होती। घर में घुसते ही जगदेव ने नयी रानी कमोला से पुकार कर कहा:—

कमोला कमोद भर झारी ल्याय झिंगार ।
बाद मंड्यो जयचन्द हूँ सूंपां सीस कंकाल ।।

लेकिन कमोला इस बात के लिए जरा भी राजी नहीं हुई। उसने जगदेव से कहा कि हीरे, मोती आदि से कंकाली का खप्पर भर दीजिए, मेरे पास हीरे, मोतियों की कमी नहीं है। लेकिन जगदेव ने सोचा कि हीरे-मोतियों की कमी तो राजा जयचन्द के पास भी नहीं है, वह मेरे से चौगुने क्या हजार गुने हीरे-मोती भी दे सकता है। तब वह रानी फुलवादे के पास गया और उसने संक्षेप में सारी बात उससे कही। फुलवादे ने सुनते ही कहा कि हाँ, एक सिर आपका और एक सिर मेरा दीजिए। जगदेव ने कहा कि यह तो ठीक है, लेकिन मेरा सिर काली को भेंट कौन करेगा ? मैं अपना सिर काट कर देता हूँ, तुम उसे थाल में धर कर काली को भेंट कर देना। इतना कहकर जगदेव ने अपना सिर काट डाला। फूलवादे उसे थाल में रखकर काली को भेंट देने गयी तो उसकी एक आँख में पानी की एक कनी झलक पड़ी। देवी ने कहा कि जो रो कर भेंट देते हैं, मैं उनकी भेंट नहीं लेती। इस पर फुलवादे ने आँसू पोंछ कर कहा कि देवी, मैं रोती नहीं हूँ, स्वामी के साथ मैं भी अपना सिर देना चाहती थी, लेकिन उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की, इसी दुःख से मेरी आँख में पानी आ गया था, मैं सहर्ष यह भेंट तुम्हें दे रही हूँ। देवी ने सिर ले लिया और फुलवादे से कहा कि जगदेव के धड़ को सुरक्षित रखना, उस पर मक्खी न बैठने पाये। फिर वह दरबार को चल पड़ी। रास्ते में देवी को जगदेव का खीची भानजा मिला, उसके एक ही आँख थी। मामा की भेंट देख कर भानजे ने भी अपनी वह आँख देवी को भेंट कर दी। अब देवी 'ल्याव-ल्याव' करती हुई जयचन्द के पास पहुँची। जयचन्द ने सोचा कि जगदेव ने हीरे-मोती आदि दिये होंगे, लेकिन जब थाल पर से वस्त्र हटाया गया और जयचन्द ने थाल में जगदेव का कटा सिर देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गया। जगदेव के मुंह की कान्ति वैसी ही बनी हुई थी। जयचन्द को आश्चर्य में डूबा देख जगदेव का सिर जोर से हंस पड़ा।

राजा जयचन्द ने जगदेव से चौगुना दान देने का वायदा किया था।

अतः वह रनिवास में गया। लेकिन एक भी रानी अथवा कोई पुत्र सिर देने के लिए तैयार नहीं हुआ। तब वह उदास मुंह काली के सामने आकर खड़ा हो गया और काली से बोला कि ले मेरा सिर काट ले। काली ने उपेक्षा से कहा कि यों तो कसाई सिर को काटा करते हैं, तू वचन हार गया है, अतः सात बार इस थाल के नीचे से निकल और सात बार कह कि जगदेव जीता, जयचन्द हारा। लाचार जयचन्द ने वैसा ही किया। काली ने सिर ले जाकर कालू को दिखला दिया। फिर वह जगदेव के घर की ओर चल पड़ी। रास्ते में खीची भानजा मिला, देवी ने उसकी दोनों आँखें साबित कर दीं। फिर देवी जगदेव के घर पहुँची। वह जानती थी कि जगदेव दान दिया हुआ सिर फिर स्वीकार नहीं करेगा, अतः उसने 'कथिया' नारियल का सिर जगदेव की धड़ पर लगा दिया। जगदेव हंसता हुआ उठकर खड़ा हो गया।

दूसरे दिन जगदेव जयचन्द के दरबार में जा बैठा। जगदेव को पुनः जीवित हुआ देखकर जयचन्द को बड़ा अचंभा भी हुआ और विषाद भी। उसने कहा कि यदि ऐसी ही बात थी तो मैं अपने सारे परिवार के लोगों के सिर काटकर भेंट दे देता।

जगदेव के आगे जयचन्द को नीचा देखना पड़ा था, अतः अपने दरबारियों की सलाह से जयचन्द ने एक नकली धारा-नगरी बनाई और उसे तोड़कर अपने अपमान का बदला लेना चाहा। जब जगदेव को इस बात का पता चला तो वह 'धारा नगरी' की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध हो गया। जगदेव ने कहाः—

धारा भीतर मैं बसूं मो भीतर है धार।
जै में चालूं पीठ दे तो लाजै जात पँवार॥

जयचन्द उस धारा नगरी को नहीं तोड़ सका।

जगदेव के देश निकाले के बारह वर्ष पूरे हो गये थे, अतः वह अपनी दोनों रानियों और पुत्र को लेकर धारा नगरी को चल दिया। धारा-नगरी

में आने पर उसका बहुत स्वागत-सत्कार हुआ और उसके माता-पिता आदि सब बड़े स्नेह से उससे मिले ।

● हंसां को बदळो

एक साल वर्षा नहीं हुई, सरोवर सूख गये तो दो हंस-हंसी सरोवर से उड़कर आश्रय की तलाश में एक साहूकार के बगीचे में आ गये । साहूकार बगीचे में गया तो उसने हंस-हंसी को एक वृक्ष पर बैठे देखा । बड़ी सुन्दर जोड़ी थी। साहूकार ने कहा कि तुम दोनों मेरे घर चलो । हंस ने कहा कि हम एक-दो दिन के लिए तो नहीं चलेंगे, यदि तुम पूर साल भर हमें रख सको तो हम तुम्हारे साथ चले चलेंगे । साहूकार बारह महीने का वायदा करके दोनों को अपने घर ले आया । हंसों के लिए उसने एक छोटी तलैया बनवा दी और वह नित्य हंसों को अढ़ाई सेर अबीज मोती खाने के लिए देने लगा । साहूकार बहुत संपन्न था और जिस-तिस तरह करके मोती डालता रहा । साल पूरा होने में दो दिन शेष रहे तो साहूकार के पास मोती नहीं रहे । एक दिन का काम उसने अपनी पत्नी का हार बेचकर चलाया, लेकिन दूसरे दिन साहूकार की स्त्री ने कहा कि अब मेरे पास भी कुछ नहीं है, लेकिन तुम ऐसा करो कि एक कीमती पत्थर पड़ा है उसी के मोती उतरवा कर हंसों को डाल दो । साहूकार ने पत्थर के मोती बनवाये और उन्हें हंसों के आगे रख दिए। हंस ने हंसी से कहा:—

सूक ताल पटपड़ भया, कहो हंसा कित जाय ।
प्रीत पुराणी कारणै, चुग-चुग काँकर खाय ।।

हंसों ने वे मोती चुग लिये । संयोग से उसी शाम को उत्तर दिशा में काली घटाएं उठीं और सर्वत्र भरपूर वर्षा हुई । साहूकार की बात रह गयी । हंस साहूकार से बिदा होकर उड़ चले ।

साहूकार कुछ दिन अपने घर रहा, लेकिन उसका सारा धन खत्म हो चुका था, अतः वह कमाने के लिए घर से निकल पड़ा । चलते-चलते संयोग से वह उसी सरोवर पर पहुँच गया, जहाँ वे दोनों हंस-हंसी रहते थे ।

साहूकार दुशाला ताने उसी सरोवर की पाल पर सोया था। हंस-हंसी ने दुशाला पहिचान लिया। उन्होंने आपस में कहा कि यह तो अपना आश्रय दाता साहूकार ही है। उन्होंने साहूकार को वहीं रख लिया और उससे कह दिया कि हम तुम्हें जहाज भर मोती देंगे, अतः तुम नदी के किनारे एक जहाज लगा लो।

साहूकार ने जहाज किनारे पर लगा दिया और हंस-हंसी उसमें नित्य मोती डालने लगे। एक रात साहूकार सोया था और हंस-हंसी जाग रहे थे। उसी समय चकवा-चकवी बोले कि यदि यह साहूकार आज रात को अपने घर पर होता तो इसके एक ऐसा सुन्दर पुत्र होता जो नित्य सबेरे सवा लाख का एक लाल उगलता। हंस ने चकवे-चकवी की बात सुनकर हंसी से कहा कि आज हम साहूकार के उपकार का बदला चुका सकते हैं, क्योंकि साहूकार के कोई संतान नहीं है और इस कारण साहूकार-दम्पति बड़े दुःखी रहते हैं। हंस ने साहूकार को जगाया और उसे अपने पंखों पर बिठलाकर उज्जैन की ओर उड़ चला। हंस ने रातोंरात साहूकार को उसके घर पहुँचा दिया। साहूकार ने अपनी स्त्री को जगाया। चौसर मंड गई और पासे ढ़लने लगे, 'ढ़ल म्हारा पासा ढुल हाणा, अठारा गुन्नीस पौबारा पच्चीस, कदे तीन काणा।' साहूकार रातभर घर रहकर सबेरा होते-होते हंस के पंखों पर बैठकर लौट चला। जाते वक्त उसने अपनी स्त्री से कह दिया कि मेरे आने की बात मेरे मां-बाप से मत कहना अन्यथा वे कहेंगे कि स्त्री से तो मिल गया और माँ-बाप से नहीं मिला। साहूकार की स्त्री ने सास-ससुर से इस बात का कोई जिक्र नहीं किया।

नौ महीने बाद साहूकार की स्त्री के लड़का हुआ। पैदा होते ही लड़के ने सवा लाख का एक लाल उगला, लेकिन घरवालों ने कहा कि बहू कुलटा है और उसे धक्के पर धक्का देकर घर से निकाल दिया। साहूकार की स्त्री नवजात शिशु को लेकर घर से निकल पड़ी। उसने सोचा कि यह नालायक बेटा ही मेरे कलंक और दुःख का कारण बना है। अतः नगर से बाहर निकलते ही उसने बच्चे को फेंक दिया और स्वयं आगे बढ़ गई।

सामने से बादशाह की सवारी आ रही थी, उसे देखकर वह इधर-उधर छुप गई, लेकिन बादशाह की नजर उस पर पड़ गई। उसने साहूकार की स्त्री को अपने पास बुलाया। स्त्री की बात सुनकर बादशाह ने उसे धर्म की बेटी बना ली और उसे अपनी राजधानी में ले गया। बेटी ने बादशाह से कहा कि मैं नित्य प्रत्येक मांगने के लिए आने वाले दीन दुःखी को एक सेर का एक लड्डू और एक रुपया बांटा करूंगी। बादशाह ने वैसा ही प्रबन्ध करवा दिया। इधर साहूकार के बच्चे को एक बनजारा जो अपनी 'बाळद' लेकर उस रास्ते से जा रहा था, उठाकर ले गया। उसके भी कोई संतान नहीं थी, अतः वह उसका बड़े लाड़-चाव से पालन-पोषण करने लगा।

मोतियों का जहाज भर जाने पर साहूकार हंसों से बिदा लेकर अपने घर आया। घर आने पर जब उसे पत्नी के निकाले जाने की बात मालूम हुई तो वह पागल होकर घर से निकल गया। घूमते-फिरते वह उसी बादशाह की राजधानी में जा पहुँचा और किसी ने गरीब जानकर उसे वहाँ पहुँचा दिया जहाँ बादशाह की बेटी रुपये और लड्डू बांटा करती थी। साहूकार की स्त्री ने उसे देखते ही पहिचान लिया। साहूकार की स्त्री ने उसे अपने पास बुलाया और उसे नहलाया-धुलाया। फिर उसने अपने हाथ से वही रसोई बनाई जो वह अपने घर पर अपने पति के लिए बनाया करती थी और उसने वही पोशाक पहनी। साहूकार को भोजन और पोशाक देखकर अपनी स्त्री की याद आने लगी और जब उसकी स्त्री उसके सामने आई और उसने कहा कि मैं तुम्हारी पत्नी हूँ तो साहूकार का चित्त सहसा ही ठिकाने आ गया। साहूकार की स्त्री ने अपने पति को काफी रुपये दिये और कहा कि एक ऐसा बढ़िया ऊंट लाओ जो 'जै-जै करतां जैपर जा, उठतै पाण उदैपर जा।' साहूकार वैसा ही ऊंट ले आया और एक रात को वे दोनों ऊंट पर सवार होकर निकल भागे। पकड़े जाने के भय से वे रास्ता छोड़कर जंगल में हो कर चलने लगे।

उस जंगल में वासुकी-नाग रहता था, वह तालाब से निकलकर जंगल में घूम रहा था। उसने अपनी मणि एक स्थान पर छोड़ रखी थी जिससे

बहुत दूर में प्रकाश हो रहा था । साहूकार ने कहा कि इस मणि को ले चलें तो बहुत अच्छा हो, बड़ी कीमती मणि है । साहूकार की स्त्री ने मना किया, लेकिन साहूकार नहीं माना । साहूकार ऊंट को मणि के पास ले गया और उसे उठा कर ज्यों ही चलने को हुआ, नाग ने आकर उसे डस लिया । साहूकार वहीं गिर पड़ा । नाग अपनी मणि को लेकर पास के तालाब में चला गया । साहूकार की स्त्री रोती-कलपती इधर-उधर भटकने लगी । इतने में चार चोर आये, उन्होंने साहूकार की स्त्री से सारा धन छीन लिया और फिर वे आपस में साहूकार की स्त्री के लिए लड़ने लगे । प्रत्यक यही कहता था कि इसे मैं व्याहूंगा । अन्त में यह तय हुआ कि इसे शहर में ले जाकर बच दिया जाए और इसकी कीमत स्वरूप मिलने वाले रुपयों को बराबर बांट लिया जाए । आपस में यों तय करके वे उसे दिल्ली ले गए और उसे एक वेश्या के हाथ बेच दिया । वेश्या ने किसी तगड़े असामी की प्रतीक्षा में साहूकार की स्त्री को छुपा कर रखलिया ।

कुछ दिनों बाद वही बनजारा दिल्ली शहर में आया । लड़का भी अब युवा होने लगा था । वह बहुत ही सुन्दर था । नगर में उसके रूप की बहुत प्रसिद्धि हो गयी ।

वह वेश्या उसे अपने घर बुला ले गयी । साहूकार की स्त्री से वेश्या ने कहा कि आज तू खूब श्रृंगार कर ले । जब लड़का कोठे पर चढ़ा और तीन सीढ़ियां शेष रहीं तो साहूकार की स्त्री ने ईश्वर से प्रार्थना की कि हे प्रभो, मेरे सत की रक्षा कर। उसके इतना कहते ही उसके स्तनों से दूध की 'बत्तीसों' धार छूटी और उनसे लड़के का मुंह भीग गया । लड़का उलटे पैरों भागा । साहूकार की स्त्री की इस हरकत पर वेश्या को बड़ा गुस्सा आया । उसने कोड़ा उठाया और साहूकार की स्त्री की पीठ पर दस-बीस कोड़े सड़ासड़ लगा दिये । साहूकार की स्त्री को बड़ा दुःख हुआ और वह मौका देख कर वेश्या के घर के नीचे से बहने वाली नहर में कूद पड़ी । काठ का एक बड़ा लट्ठा उसके हाथ आ गया और वह उसी के सहारे नहर के बहाव में बह चली। बहते-बहते वह जंगल में पहुँच गयी, वहां एक

ग्वाला अपनी गायें चरा रहा था, उसने उसे बाहर निकाल ली। ग्वाले के भी कोई संतान नहीं थी अतः वह उसे अपनी बेटी बना कर अपने घर ले आया और साहूकार की स्त्री वहीं रहने लगी। एक दिन साहूकार की स्त्री ने ग्वालिन से कहा कि मैं भी अन्य स्त्रियों के साथ शहर में दूध-दही बेचने जाया करूंगी। ग्वालिन ने अपने पति से पूछा तो ग्वाला बोला कि यदि उसकी इच्छा है तो उसे जाने दिया कर। दूसरे दिन वह भी अन्य स्त्रियों के साथ दही बेचने शहर में गयी। 'बनजारे' का लड़का अपने घोड़े पर सवार होकर शहर में घूमने निकला था। उसने जान बूझ कर शरारत से उन ग्वालिनों के बीच अपना घोड़ा चला दिया। सब स्त्रियों के बरतन गिर कर टूट-फूट गये। अन्य ग्वालिनें रोने लगीं, लेकिन साहूकार की स्त्री कुछ न बोली। 'बनजारे' के लड़के ने सारी स्त्रियों को पांच-पांच रुपये दे दिये। उनका दही अधिक से अधिक दो-दो रुपये का रहा होगा सो वे प्रसन्न हो गईं। लेकिन साहूकार की स्त्री ने रुपये नहीं लिये, उसे दही गिर जाने की जरा भी चिन्ता नहीं थी। बनजारे के लड़के ने उससे इसका कारण पूछा तो साहूकार की स्त्री बोली :—

सुत डार चली, बदसाह लई, बन मांय गई,
पिय भंग डस्यो अरु चोर लई, मनैं बेच दई,
गनिका घर रे, काठ की नाव नदी तिर रे,
महाराज कुमार भई गुजरी,
अब छाछ को सोच कहा करि रे।

उसके इतना कहते ही उसके स्तनों से फिर दूध की धार छूटी और लड़के के मुंह पर गिरी। तब साहूकार की स्त्री ने लड़के से कहा कि मैं तेरी मां हूँ और तू मेरा बेटा है। इस पर लड़के ने पूछा कि पिताजी कहां हैं ? साहूकार की स्त्री बोली कि चलो मैं तुम्हारे पिता को दिखलाती हूँ।

जब साहूकार को जंगल में सांप ने डस लिया था तो उसकी स्त्री को तो चोर बेचने के लिए दिल्ली ले गये थे और उसकी लाश वहीं तालाब

के किनारे पड़ी रही। वासुकी-नाग की कन्या सबेरे सूर्य भगवान की पूजा करने के लिए तालाब से निकली तो उसे साहूकार की लाश दिखलाई पड़ी, वह लौट कर अपने पिता के पास गई। पिता के पूछने पर उसने कहा कि पिताजी, आपके भय के कारण कोई पशु-पक्षी भी यहां नहीं आता है, और मैंने आज तक किसी नर पशु-पक्षी के दर्शन भी नहीं किये। आज मैंने एक आदमी को तालाब की पाल पर पड़े देखा है, वही मेरा प्रथम पुरुष-दर्शन है और वही मेरा पति है, अतः आप उसे जिन्दा करके उसी के साथ मेरा विवाह कर दीजिए। नाग ने अपना विष चूस लिया और साहूकार जिन्दा हो गया। नाग ने अपनी लड़की का उसके साथ विवाह कर दिया। साहूकार कुछ दिन वहां रहा, फिर उसने एक दिन अपनी स्त्री से कहा कि मैं साहूकार हूँ, किसान लोग खाकर कमाते हैं (खा-पी कर खेत में कमाने जाते हैं) हम कमा कर खाते हैं, अतः यहां बैठा-बैठा नहीं खाऊंगा, मैं तो कुछ व्यापार करूंगा। नाग-कन्या ने उसे काफी धन दे दिया और साहूकार दिल्ली शहर में आकर एक दूकान चलाने लगा। उसकी पहले वाली स्त्री जब वेश्या के यहां रहती थी तब सौदा खरीदने के लिए अक्सर बाजार जाया करती थी और उसने अपने पति को पहिचान लिया था। अब वह लड़के को लेकर अपने पति के पास गयी। साहूकार दोनों को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ। तीनों जने बादशाह के दरबार में पहुँचे। साहूकार और साहूकार की स्त्री ने कहा कि यह हमारा बेटा है, लड़के ने कहा कि ये मेरे माता-पिता हैं, बनजारा मेरा बाप बना हुआ है, लेकिन वह मेरा बाप नहीं है। बादशाह ने बनजारे और उसकी स्त्री को दरबार में बुलवाया। शक्ल सूरत से बादशाह ने निश्चय किया कि लड़का वास्तव में साहूकार का बेटा है। उसने बनजारे से पूछा कि तुम्हें लड़का कहां मिला तो बनजारे ने भय के मारे सारी बात सच-सच कह दी। बादशाह ने लड़का साहूकार को दिलवा दिया। अब साहूकार अपनी स्त्री, लड़के और नाग-कन्या को लेकर अपने घर आ गया और सब आनन्द-पूर्वक रहने लगे।

● राम-गाय

जाट के खेत में फसल बहुत अच्छी थी। वह रात को खेत में रह कर खेत की रखवाली किया करता था। एक रात को बूंदी का एक बड़ा शेर खेत में आ घुसा। पत्तों की सरसराहट सुनकर किसान शेर के पास गया। किसान ने न कभी शेर देखा था और न शेर का नाम ही सुना था। शेर ने ज्यों हीं मुंह फाड़ कर 'हा' की तो जाट ने अपनी 'जेली' उसके कंठों में घुसेड़ दी। शेर वहीं मर गया। सबेरे गांव का ठाकुर जाट के खेत में से गुजरा तो जाट ने पूछा कि ठाकरां, यह कौन जानवर है ? ठाकुर ने जाट को भुलावा देते हुए कहा कि अरे, यह तो राम-गाय है, किस पापी ने इसकी हत्या कर दी ? जाट डरते-डरते बोला कि यह राम-गाय रात को खेत में घुस गयी थी और मैंने ही इसे मार डाला, अब इसका क्या प्रायश्चित्त होना चाहिए ? ठाकुर बोला कि इसकी पूंछ को गले में डाल कर गंगाजी जाना चाहिए और पूंछ को गंगाजी में प्रवाहित करनी चाहिए तथा सारे गांव को भोज देना चाहिए। जाट उदास मन अपने घर आया और उसने अपने बेटों से सारी बात कही। बड़ा लड़का बोला कि राम-गाय की पूंछ मैं गंगाजी में प्रवाहित कर आऊँगा तथा आने के बाद गांव को भोज दे दिया जाएगा, इसमें घबड़ाने की क्या बात है ? फसल इस बार बहुत अच्छी हुई है। लड़का पूंछ लेकर गंगाजी को चल पड़ा।

इधर ठाकुर ने मरे शेर का सिर काटा और उसे ले कर राजधानी की ओर चल पड़ा। राजा के पास पहुँच कर उसने राजा को शेर का सिर दिखलाया और कहा कि मैंने इस शेर का शिकार किया है। शेर वास्तव में बड़ा जबरदस्त था। राजा ने प्रसन्न होकर ठाकुर को ऊंचा ओहदा तथा एक गांव बख़्श दिया। शेर का सिर किले के फाटक पर टांग दिया गया।

इधर जाट का बेटा 'राम-गाय' की पूंछ को गंगाजी में प्रवाहित करके घर आ गया तो भोज की तैयारी करने लगा। जाट ने सोचा कि मैंने

राम-गाय को मार कर बड़ा अपराध किया है। यदि राजा को पता चलेगा तो वह नाराज होकर न जाने क्या दंड देगा, अतः राजा भी भोज में शामिल हो तो ठीक रहे। यों सोच कर जाट राजा को लिवाने चल पड़ा। किले के फाटक पर उसने 'राम-गाय' का सिर टंगा देखा और देखता ही रह गया। वह सोचने लगा कि यह तो उसी गाय का सिर है, इसे यहां लाकर किसने टांग दिया ? जब वह बहुत देर तक उस सिर की ओर देखता रहा तो पहरेदार ने पूछा कि तू इस प्रकार क्या देख रहा है ? यह शेर का सिर है। जाट बोला कि यह तो 'राम-गाय' का सिर है, यह गाय तो मेरे हाथ से मर गयी थी। पहरेदार ने राजा को खबर की। राजा ने जाट को बुलवाया, ठाकुर भी वहीं बैठा था, जाट को देखते ही वह सकपका गया। जाट ने आदि से अन्त तक सारी बात राजा से निवेदन कर के कहा कि इसमें मेरा कोई दोष नहीं है, मेरे 'हा' की चिढ़ है, जो मेरे सामने 'हा' कहता है उसे मैं बिना मारे नहीं छोड़ता। राजा ने परीक्षा लेने के लिए जोर से हाका किया—'हा. . . . . '। राजा के हाका करते ही ठाकुर भय के मारे नीचे लुढ़क गया लेकिन जाट राजा पर पिल पड़ा। उसने राजा को अधमरा कर दिया। दरबारियों ने बड़ी मुश्किल से राजा को छुड़वाया। राजा को निश्चय हो गया कि शेर को जाट ने मारा है। उसने ठाकुर को पदच्युत कर दिया, उसका गांव छीन लिया और जाट को भारी पुरस्कार दे कर विदा किया।

● परालब्ध जाग्यां सै काम बणै

दो जाट भाई थे। एक गरीब था तथा दूसरा बहुत मालदार। एक दिन गरीब भाई के यहां एक पाहुना आ गया। उसे खेत में ठहरा कर जाट अपनी भाभी के पास गया और बोला कि भाभी ! आज एक पाहुना आ गया है, सो उसे भोजन कराना है, लेकिन मेरे पास थाली नहीं है, सो कुछ देर के लिए मुझे एक थाली दे दो। भोजन करने के बाद पाहुना चला गया और जाट काम में लग गया। शाम हुई तो वह अपने घर आ गया।

घर आते ही उसकी भाभी ने अपनी थाली मांगी। उसने कहा कि मैं थाली खेत पर भूल आया हूँ, सबेरा होते ही ला दूंगा। लेकिन भाभी ने सोचा कि देवर गरीब है और इसने थाली को कहीं गिरवी रख दिया है। अतः वह बोली कि मुझे तो इसी वक्त थाली लाकर देनी पड़ेगी। वह बेचारा डरते-डरते खेत की ओर चल पड़ा। खेत के पास पहुँच कर उसने देखा कि एक आदमी उसके भाई के खेत की रखवाली कर रहा है। उसने हिम्मत करके पूछा कि तू कौन है? पहरेदार ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारे भाई का प्रारब्ध हूँ जो उसके सोते में भी उसके खेत की रखवाली करता हूँ। जाट ने पूछा कि मेरा प्रारब्ध कहाँ है? उसने उत्तर दिया कि तुम्हारा प्रारब्ध सात समुन्दर पार फलां जगह सो रहा है। जाट ने थाली लाकर भावज को दे दी और सबेरा होते ही स्वयं अपने प्रारब्ध को जगाने के लिए चल पड़ा।

चलते-चलते वह एक खेजड़े के वृक्ष के नीचे से गुजरा। खेजड़े ने उससे पूछा कि भाई! तू कहाँ जा रहा है? जाट ने उत्तर दिया कि मैं अपना प्रारब्ध जगाने जा रहा हूँ। खेजड़े ने जाट से कहा कि न तो कोई राहगीर मेरी छाया में बैठता है और न मेरे सांगर ही लगता है। कृपा करके अपने प्रारब्ध से पूछना कि इसका क्या कारण है? खेजड़े की बात सुन कर जाट आगे बढ़ा।

आगे बढ़ने पर एक नगर आया। उस नगर के चारों ओर एक आदमी बड़ी व्याकुलता से 'हाय जला, हाय जला,' कहता हुआ चक्कर लगा रहा था। उसने भी जाट से कहा कि मेरे तन-मन में आग लगी है, कृपा करके अपने प्रारब्ध से पूछ कर आना कि यह किस प्रकार शान्त हो सकती है।

जाट वहाँ से आगे बढ़ा। चलते-चलते थक गया तो एक वट-वृक्ष के नीचे सो गया। थोड़ी देर बाद उसे कुछ आवाज सुनायी पड़ी और वह उठ बैठा। उसने देखा कि एक बड़ा काला नाग वृक्ष पर चढ़ रहा है और उसी के डर से वृक्ष पर बने एक घोंसले में किसी पक्षी के बच्चे चीं-चीं कर रहे हैं। जाट ने सांप को मार डाला और निश्चिंत हो कर सो गया।

यह घोंसला गरुड़-जाति के एक पक्षी का था। काला नाग उसके बच्चों को खा जाया करता था और इसलिए गरुड़ दम्पति बड़े दुखी रहते थे। शाम को वे दोनों लौटे तो उन्होंने देखा कि वृक्ष के नीचे कोई सोया हुआ है। गरुड़ ने सोचा कि हो न हो यही आदमी बच्चों को खा जाया करता है, इस लिए वह उसे मार डालने के लिए उसकी ओर झपटा। लेकिन गरुड़ की स्त्री ने उसे ऐसा करने से मना किया और बच्चे भी चीं-चीं करने लगे। बच्चों ने जब सारी बात बतलाई तो वे राहगीर पर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे जगाया। जाट ने काले नाग को अपने सिरहाने से निकाल कर दिखलाया। गरुड़ वहाँ से उड़ा और जाट के लिए खाने-पीने की सामग्री ले आया। जब वह खा-पी चुका तो गरुड़ ने जाट से कहा कि तुमने हमको बड़े दुःख से छुटकारा दिलाया है, हम तुम्हारा क्या प्रिय करें, हमें बतलाओ। जाट ने सारी बात उन्हें बतला दी। सबेरा होते ही गरुड़ ने जाट को अपनी पीठ पर बिठलाया और वह समुद्र को लाँघता हुआ उड़ चला। समुद्र में एक बड़ा मगर रहता था। उसने जाट से पुकार कर कहा कि भाई! मेरी भी एक बात सुनते जाओ। इतने बड़े समुद्र में रहकर भी मैं भूखा-प्यासा मर रहा हूँ। मेरा कष्ट कैसे दूर होगा, यह पूछ कर आना। सात-समुद्र पार पहुँचकर जाट ने उस स्थान को खोजा, जहाँ उसका प्रारब्ध सोया पड़ा था। जाट का प्रारब्ध उस वक्त करवट ले रहा था। जाट ने उसे जगाया। प्रारब्ध ने जागकर कहा कि अब तुम निश्चिन्त रहो, मैं जग गया हूँ। जाट के तीनों प्रश्नों का उत्तर उसने संक्षेप में यों दिया कि उस मगर के गले में सवा मन सोने की मणि है, यदि वह मणि किसी को दे-दे तो उसका सारा कष्ट मिट जाएगा। उस आदमी के पास बड़ी विद्या है यदि वह अपनी विद्या किसी दूसरे को सिखलादे तो उसे शान्ति मिल सकती है और उस खेजड़े के वृक्ष के नीचे धन के चार 'टोकने' गड़े हुए हैं, यदि वह वृक्ष चारों टोकने किसी को दे-दे तो राहगीर उसकी छाया में बैठने लगेंगे और उस में 'सांगर' भी लगने लगेगा।

जाट गरुड़ पर सवार होकर लौटा। रास्ते में मगर मिला। अपने

दुःख का कारण जानकर मगर ने सवा मन सोने की मणि उसी जाट को दे दी। जाट समुद्र के इस पार आ गया। फिर उसे वह विद्वान् पंडित मिला। उसने अपनी सारी विद्या जाट को सिखला दी। वहाँ से चलकर वह 'खेजड़े' के वृक्ष के पास पहुंचा। खेजड़े ने कहा कि धन के टोकने तुम्हीं निकाल कर ले जाओ। अब जाट हर तरह से सम्पन्न और विद्वान् बन गया। घर आकर उसने गरुड़ को विदा दी और अब वह खूब आनन्द और ठाट से रहने लगा।

● मींडकै की चतराई

एक चतुर मेंढक पानी के एक नाले के किनारे पर बैठा टर्र-टर्र कर रहा था कि अचानक एक कौवे ने पीछे से उसकी टांग पकड़ली और उसे आकाश में ले उड़ा। मेंढक बहुत घबराया और किसी प्रकार बचने का उपाय सोचने लगा। कौवा उसे ले जाकर एक वृक्ष पर बैठा और उसे खाने की तैयारी करने लगा। इतने में मेंढ़क जोर-जोर से हँसने लगा। कौवे को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने मेंढ़क से पूछा कि साक्षात् मृत्यु को देख कर भी तू हँस क्या रहा है? मेंढ़क बोला कि मृत्यु मेरे सामने नहीं, तेरे सामने खड़ी है। यहाँ मेरी एक मौसी बिल्ली रहती है, यदि तू ने मुझे यहाँ कुछ भी क्षति पहुँचायी तो तेरी खैर नहीं। बिल्ली मौसी तेरा एक-एक पर बिखेर देगी और तेरा कलेजा खा जाएगी। मेंढ़क की बात सुनकर कौवा फिर उसकी टांग पकड़ कर उड़ा और उड़ता-उड़ता एक चट्टान पर जा बैठा, लेकिन जैसे ही वह मेंढ़क के शरीर पर चोंच मारने को तैयार हुआ, मेंढ़क फिर हँस पड़ा। कौवे के पूछने पर मेंढ़क ने कहा कि यहाँ मेरा एक मामा काला नाग रहता है। यदि तूने मुझे जरा भी हानि पहुँचाई तो तेरी जान की खैर नहीं। अब कौवा मेंढ़क को लेकर वहाँ से भी उड़ा और उड़ते-उड़ते भैरोंजी के एक 'थान' पर पहुँचा। लेकिन मेंढ़क वहाँ भी हंसने लगा और बोला कि मुझे भैरोंजी का इष्ट है और यदि उनके 'थान' पर ही तूने मुझे मारने की कुचेष्टा की तो वे तुझे भस्म कर देंगे। हताश हो कर कौवा

मेंढ़क को लेकर वहाँ से भी उड़ा और घूम फिर कर उसी नाले के पास आ गया। नाले को देखकर मेंढ़क उदास हो गया। कौवे ने पूछा कि शायद यहाँ तुझे बचाने वाला कोई नहीं है, इसी से तू उदास है। मेंढ़क ने उदास होकर उत्तर दिया कि बेशक, यहाँ मेरा कोई नहीं है। अब आप मुझे अच्छी तरह खा सकते हैं लेकिन एक प्रार्थना मेरी भी सुन लें तो बड़ा अच्छा हो। मुझे तो खैर मरना ही है, लेकिन आप की चोंच बड़ी 'भोथरी' है। आप इसे सिला पर घिस कर कुछ पैनी करलें तो मुझे कष्ट कम होगा और मैं मर कर भी आप का उपकार मानूंगा। कौवे ने मेंढ़क की बात मानली और वह उससे बोला कि मैं नाले से पानी लाकर अपनी चोंच पैनी कर लेता हूँ लेकिन खबरदार, तू यहाँ से इधर-उधर मत हो जाना। मेंढ़क ने कौवे को भरोसा दिलाया, लेकिन कौवे के जाते ही मेंढ़क फुदककर पानी में घुस गया। कौवे ने सिल पर घिस-घिस कर अपनी चोंच पैनी की और फिर वह मेंढ़क को इधर उधर देखने लगा। जब मेंढ़क उसे कहीं दिखलाई नहीं पड़ा तो वह उसे पुकारने लगा कि मेंढ़क, जल्दी आओ मैंने अपनी चोंच पैनी कर ली है। कौवे की बात सुनकर मेंढ़क ने पानी में से ही उत्तर दिया कि तूने अपनी चोंच तो पैनी कर ली है, लेकिन तेरी बुद्धि बहुत मोटी है। तू उसे भी पैनी कर ले तब मैं तेरे हाथ लग सकूंगा। बेचारा कौवा अपना-सा मुंह लेकर वहाँ से उड़ गया।

● भगवान खुद अवतार क्युं लेवै ?

एक दिन एक बादशाह ने अपने वजीर से पूछा कि तुम्हारे भगवान् स्वयं ही क्यों अवतार लेते हैं, क्या उनके पास नौकर-चाकरों की कमी है ? पृथ्वी का भार हलका करने के लिए वे उन्हें भी तो भेज सकते हैं। वजीर ने उत्तर दिया कि बादशाह सलामत ! मैं इसका उत्तर आपको फिर कभी दूंगा।

घर आकर वजीर ने नगर के सबसे कुशल कारीगर को बुलवाया और उससे कहा कि मुझे बादशाह के पोते की एक ऐसी उत्कृष्ट काठ की

मूर्ति बनाकर दे जो हूबहू उससे मिलती हो तथा सहसा ही कोई उनमें भेद न कर सके। कारीगर ने कुछ ही दिनों में मूर्ति तैयार कर दी। मूर्ति को देखकर वजीर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने मूर्ति को बादशाह के पोते के जैसे ही गहने-कपड़े पहना दिये।

एक दिन बादशाह अपने बहुत से साथियों के साथ नौका-विहार को निकला। बादशाह का पोता भी साथ था। मौका पाकर वजीर ने बादशाह के पोते को छुपा दिया और उस मूर्ति को अपने पास ले लिया। जब नाव नदी के बीचोंबीच पहुँची तो वजीर ने अवसर देखकर मूर्ति को नदी में गिरा दिया। बादशाह ने जाना कि मेरा पोता ही नदी में गिर गया है, उसने आव देखा न ताव, झट पोते को बचाने के लिए नदी में कूद पड़ा। तभी वजीर ने बादशाह से कहा कि हुजूर! इतने सेवकों के पास होते हुए भी जैसे आप स्वयं ही नदी में कूद पड़े, इसी प्रकार भगवान् अपने भक्तों को कष्ट में देखकर स्वयं इस धरा पर अवतार लेतें हैं। वजीर की बात सुनकर बादशाह ला जवाब हो गया

● सींत की खीर

एक औरत नित्य श्री रामचन्द्रजी के मंदिर में जाया करती थी। मन्दिर में हनुमानजी की भी मूर्ति थी। वह औरत हमेशा खाली हाथ जाया करती, मन्दिर में चढ़ाने के लिए वह कुछ भी नहीं ले जाती, लेकिन प्रसाद ग्रहण करने में सबसे आगे रहती। हनुमानजी की मूर्ति के आगे खड़ी होकर वह एक 'मंत्तर' बोला करती :—

गऊ माता दूधो देसी, चावल देसी राम।
बीं दूधै की खीर बणैगी, जीमैगो हणमान॥

पुजारी भी उसकी 'सूखी' भक्ति से तंग आ गया था। एक दिन जब वह उपर्युक्त मंत्र पढ़ रही थी तो पुजारी ने उससे कहा कि इस खीर में तुम्हारा क्या साझा है? गऊ माता दूध दे देगी और राम चावल देंगे। जब खीर बन जाएगी तो हनुमान स्वयं ही भोग लगा लेंगे, तुम्ह

व्यर्थ ही क्यों तकलीफ उठाया करती हो ? पुजारी की बात सुनकर स्त्री लजा गई ।

● गादड़ै की कुटलाई

एक जंगल में एक हाथी मरा पड़ा था । एक गीदड़ उधर से निकला तो मरे हाथी को देखकर वह फूला नहीं समाया । उसने सोचा कि कई महीनों का आहार इकट्ठा ही मिल गया । लेकिन हाथी का चमड़ा यूं भी काफी मोटा होता है । फिर धूप में पड़े रहने के कारण सूखकर वह और भी सख्त हो गया था । गीदड़ किसी प्रकार, उसका भेदन नहीं कर सकता था । गीदड़ वहीं बैठकर हाथी को चिरवाने की कोई तरकीब सोचने लगा । इतने में वहाँ एक शेर आ गया । गीदड़ ने शेर को देखते ही उठकर नमस्कार किया और बोला कि महाराज, मैं आपका कदीमी सेवक हूँ । आपके लिए ही इस शिकार की मैं देख-भाल कर रहा हूँ कि कोई मुंह लगाकर इसे जूठा न कर जाय । गीदड़ की नम्रता देखकर सिंह बड़ा खुश हुआ और बोला कि मैं मुर्दा मांस नहीं खाता । इस हाथी को कई दिनों तक खाओ । यों कहकर सिंह चला गया । लेकिन उसके जाते ही एक बाघ आ गया । गीदड़ ने सोचा कि अब इसको भी टरकाना चाहिए । यों सोचकर उसने बाघ से कहा कि आज तुम यहाँ कहाँ आ गये ? इस हाथी को एक बड़ा शेर मारकर गया है, उसने मुझे रखवाली पर छोड़ा है, यदि अपनी जान की खैर चाहो तो इसी वक्त यहाँ से चले जाओ । यह सिंह खास तौर से बाघ का तो जानी दुश्मन है, क्योंकि एक बार एक बाघ ने इसके शिकार को जूठा कर दिया था । गीदड़ की बात सुनकर बाघ वहाँ से नौ-दो ग्यारह हो गया ।

बाघ के जाते ही वहाँ एक चीता आ गया । अब गीदड़ ने सोचा कि इस चीते से हाथी को चिरवाना चाहिए । यों सोचकर गीदड़ ने चीते से कहा कि आज तो तुम बहुत भूखे नजर आ रहे हो, तुम बहुत दिनों से मिले हो, अतः तुम्हारी मनुहार करना मेरा कर्त्तव्य है । इस हाथी को अभी-अभी

एक सिंह मारकर गया है। वह नहा-धोकर थोड़ी ही देर में लौट आएगा। तब तक तुम इस हाथी का थोड़ा मांस खा लो। मैं उधर बैठकर सिंह की राह देखता हूँ, लेकिन जैसे ही मैं कहूँ कि सिंह आ रहा है, तुम एकदम भाग जाना, नहीं तो तुम्हारी हत्या का पाप मुझे लगेगा। यों कहकर गीदड़ एक ऊँचे टीले पर बैठकर सिंह को देखने लगा और चीता उस मृत हाथी को चीरने लग गया। चीते ने अपने तेज दाँतों और नुकीले पंजों से हाथी की कड़ी खाल को चीर डाला। गीदड़ बैठा-बैठा सब कौतुक देख रहा था। जब गीदड़ ने देखा कि काम बन गया है तो वह दौड़ा-दौड़ा चीते के पास आया और बोला कि शेर आ गया है। गीदड़ की बात सुनते ही चीता सिर पर पैर रखकर भागा। गीदड़ ने सोचा कि अब सारी बाधाएँ दूर हो गई। वह हाथी को मुंह लगाने ही वाला था कि एक दूसरा गीदड़ और आ गया। पहले वाले गीदड़ ने गुर्राकर कहा कि दुष्ट ! अपने प्राणों की खैर चाहता है तो यहाँ से इसी क्षण भाग जा। आने वाला गीदड़ कुछ अकड़ने लगा तो पहले वाला गीदड़ उस पर टूट पड़ा और उसने उसके पुरजे-पुरजे बिखेर दिये फिर उसने कई दिनों तक बिना किसी बाधा के हाथी का माँस खाया।

● अद्भुत सिलोक

राजा भोज के पास जो कोई पंडित नया श्लोक बनाकर ले जाता उसको राजा पुरस्कार स्वरूप एक स्वर्ण-मुद्रा दिया करता था। एक दिन राजा महल में चौसर खेल रहे थे, आकाश में मेघ घिर रहे थे। इतने में एक पंडितजी राजा के महल में पहुँचे और उन्होंने एक श्लोक सुनाया जिसका भावार्थ था :—

कालो उजलो बरण है, बिन पग भाज्या जाय।
बिना जीव बोलै घणा, जाचै जगती आय॥

श्लोक सुनकर महल के झरोखे में खड़ी दासी ने अपने पास से एक स्वर्ण-मुद्रा निकाली और पंडितजी से कहने लगी कि पंडितजी ! आपने यह श्लोक मेरे लिए कहा है, इसलिए मैं आपको यह क्षुद्र भेंट देती हूँ। दासी

की बात सुनकर राजा ने उससे पूछा कि पंडितजी का श्लोक तेरे ऊपर कैसे घटता है ? दासी ने उत्तर दिया कि पृथ्वीनाथ , मैं झरोखे से आकाश की ओर देख रही थी, आकाश में श्वेत रंग के बादल हैं, काली घटाएँ घिर रही हैं, बादलों के पैर नहीं हैं, लेकिन दौड़े चले जा रहे हैं, बिना प्राणों के ही वे बहुत बोलते हैं (गरजते हैं), वे स्वयं किसी से याचना नहीं करते, दूसरे ही उनकी याचना करते हैं । इस प्रकार, यह श्लोक पंडितजी ने मेरे ऊपर ही कहा है । इतने में पास बैठे हुए दीवानजी जो एक पत्र लिख रहे थे बोल पड़े कि नहीं, नहीं, पंडितजी ने यह श्लोक मेरे लिए कहा है, अतः पंडितजी को पुरस्कार मैं दूंगा। देखिए श्वेत रंग के कागज हैं, जिन पर काली स्याही से लिखा जाता है, अक्षरों में प्राण नहीं हैं, लेकिन ये बोलते हैं, पत्र के पैर नहीं हैं, लेकिन यह एक जगह से दूसरी जगह जाता है, यह किसी से कुछ नहीं चाहता, दूसरे ही इसकी कामना करते हैं । इतने में रानी भानुमती जो शीशे में अपना शृंगार निहार रही थी, बोल उठी कि पंडितजी का यह श्लोक तो मेरे नयनों पर खूब घटता है, आँखों में श्वेत और श्याम दोनों रंग मौजूद हैं, नेत्रों के पैर नहीं होते लेकिन बिना पैरों के ही ये एक जगह से दूसरी जगह जाने में समर्थ हैं, इनके जिह्वा नहीं है, लेकिन बिना जीभ के ही ये बातें कर सकते हैं (आँखों से बातें करना) ये स्वयं किसी से कुछ नहीं माँगते, दूसरे ही इनकी कामना करते हैं, अस्तु ! रानी की बात पूरी होते न होते राजा भोज बोल उठे कि पंडितजी ने यह श्लोक मेरे लिए कहा है, क्योंकि सफेद रंग के पासे हैं जिन पर काली लकीरें बनी हैं , इनके पैर नहीं हैं, लेकिन ये एक खाने से दूसरे खाने में जाते हैं। इनमें प्राण नहीं हैं, लेकिन ('पौ बारा' आदि) बोलते हैं, ये स्वयं किसी से कुछ नहीं चाहते, दूसरे ही इनकी चाह करते हैं ।

आखिर चारों ने ही पंडितजी को पुरस्कार देकर विदा किया ।

● कमेड़ी और साँप

एक कमेड़ी एक वृक्ष पर रहा करती थी । वह वहीं अपना घोंसला बना लेती और उसी में अंडे दे दिया करती । लेकिन वृक्ष के नीचे एक साँप बिल

बना कर रहने लगा। कमेड़ी के अंडों से जब बच्चे निकलते तो वह उन्हें खा जाया करता। साँप की दुष्टता के कारण कमेड़ी बहुत दुखी रहती। एक दिन कमेड़ी ने वह वृक्ष छोड़ दिया और दूसरे वृक्ष पर जाकर रहने लगी। वहीं उसने घोंसला बनाया। लेकिन सर्प वहाँ भी पहुँच गया। उसने कमेड़ी से कहा कि तू मुझ से बच कर कहाँ जाएगी ? अब देखूं तेरे बच्चों को कौन बचाता है ? कमेड़ी ने सर्प से बहुत प्रार्थना की कि हे नागराज ! कृपा करके आज आप मेरे बच्चों को न खाओ, कल भले ही खा लेना, आज सोमवती अमावस्या है, इससे तुम्हें भी अधिक पाप लगेगा। नाग किसी तरह उसकी प्रार्थना मान गया और बेचैनी से अगले दिन की प्रतीक्षा करने लगा। कमेड़ी वृक्ष की डाल पर बैठी आठ-आठ आँसू रो रही थी, तभी वहाँ एक कौवा आया। कमेड़ी की कष्ट-कथा सुनकर कौवे को बड़ी दया आयी, उसने एक उपाय सोच कर कमेड़ी को बतलाया। कौवे की तरकीब कमेड़ी को भी पसन्द आयी। वह उसी वक्त वहाँ से एक नेवले की खोज में उड़ चली। थोड़ी ही दूर उड़ने पर उसे एक नेवला दिखलाई पड़ गया। वह नीचे आयी। नेवले को राखी बाँध कर कमेड़ी ने उसे अपना भाई बनाया और अगले दिन उसे अपने यहाँ जीमने का न्योता दे आयी। कमेड़ी ने घर आकर नेवले के लिए भोजन की अच्छी तैयारी की। सबेरे ही नेवला आ गया। कमेड़ी और कौवे ने मिलकर उसे बहुत अच्छी प्रकार भोजन करवाया। नेवला जाने लगा तो कमेड़ी की आँखों से आँसू बरसने लगे। नेवले के पूछने पर कमेड़ी ने उसे अपनी कष्ट-कथा कह सुनाई और बोली कि अब वह दुष्ट साँप आता ही होगा। नेवले ने कमेड़ी से कहा कि तुम फिक्र मत करो। आज मैं उसका काम तमाम कर दूंगा। इतने में काला नाग फुफकारता हुआ आया और वृक्ष पर चढ़ने लगा। नेवले ने लपक कर उसकी पूंछ पकड़ ली और उसे घसीट कर नीचे ले आया। फिर उसने साँप को बुरी तरह से क्षत-विक्षत कर डाला। थोड़ी देर छटपटाकर साँप मर गया और चींटियाँ आकर उसे खाने लगीं। नेवला कमेड़ी से विदा लेकर चला गया और कमेड़ी उस वृक्ष पर सुखपूर्वक रहने लगी।

● काल आयां बंचै कोनी

एक ब्राह्मण अपनी स्त्री और लड़के के साथ अपनी झोंपड़ी में सोया हुआ था। आधी रात को एक साँप झोंपड़ी पर से उतरा और उसने ब्राह्मणी और लड़के को डस लिया। उन दोनों की तत्काल मृत्यु हो गयी। उन दोनों को डस कर साँप वहाँ से चल पड़ा, ब्राह्मण ने उसका पीछा किया। थोड़ी दूर पीछा किये जाने पर साँप शेर की शक्ल में बदल गया, लेकिन ब्राह्मण ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। तब वह शेर सहसा ही मनुष्य बन गया और उसने ब्राह्मण से पूछा कि तू मेरे पीछे क्यों चला आ रहा है? ब्राह्मण ने कहा कि तू है कौन? यह बात मुझे सच-सच बतला। उस आदमी ने कहा कि मैं काल हूँ जो सबका भक्षण करता हूँ। ब्राह्मण ने कहा कि तू ने मेरी स्त्री और मेरे पुत्र का तो भक्षण किया लेकिन मेरा भक्षण क्यों नहीं किया? इस पर काल भगवान् ने उत्तर दिया कि उनकी आयु पूरी हो गयी थी, तुम्हारी आयु अभी शेष है, आज से बारह वर्ष बाद तुम्हारी आयु पूरी होगी और तब गंगा-किनारे हरिद्वार में मगर बन कर तुम्हारा भक्षण करूँगा। काल की बात सुनकर ब्राह्मण लौट गया। उसने सोचा कि मैं हरिद्वार कभी जाऊँगा ही नहीं।

वहाँ से जा कर ब्राह्मण ने एक राजा के यहाँ नौकरी की। राजा के कोई संतान नहीं थी। ब्राह्मण के पहुँचने के कुछ दिन पश्चात्, राजा के एक लड़का हो गया। अब ब्राह्मण का सम्मान बहुत बढ़ गया। लड़का जब कुछ बड़ा हुआ तो ब्राह्मण उसे पढ़ाने लगा। ब्राह्मण लड़के को खूब मन लगा कर पढ़ाता था तथा लड़का भी अपने गुरू का बहुत आदर करता था। जब लड़का बारह साल का होने को हुआ तो उसने अपने पिता से कहा कि पिताजी, आप हम सब को लेकर हरिद्वार चलिए। वहीं मेरा यज्ञोपवीत संस्कार होगा, तथा हम सब वहीं कुछ दिन आराम से रहेंगे। राजा ने लड़के की बात स्वीकार कर ली, लेकिन ब्राह्मण किसी तरह हरिद्वार जाने को तैयार नहीं होता था। बहुत समझाने-बुझाने पर वह इस शर्त पर हरिद्वार जाने को तैयार हुआ कि वह गंगा से बहुत दूर अलग झोंपड़ी में रहेगा और गंगा तट पर कदापि नहीं जाएगा।

सब लोग हरिद्वार पहुँच गये। ब्राह्मण के लिए गंगा तट से बहुत दूर एक अलग झोंपड़ी बना दी गयी। लेकिन जब यज्ञोपवीत का दिन आया तो लड़के ने कहा कि मैं तो गंगा के पानी में गुरूजी के हाथ से ही यज्ञोपवीत लूंगा। राजा के पूछने पर ब्राह्मण ने अपनी व्यथा राजा से कह दी। राजा ने कहा कि आप निश्चिंत रहिये, मैं इसका सारा प्रबन्ध कर दूंगा। राजा ने मछुओं को बुलवाकर गंगा में चारों तरफ जाल डलवा कर सारा पानी छनवा डाला। मछुओं ने कहा कि महाराज! इस जाल के घेरे में मगरमच्छ तो क्या एक छोटी मछली भी नहीं है। तब राजा ने चारों ओर नंगी तलवारों का पहरा लगवा दिया और कार्य शुरू हो गया। ब्राह्मण और राजकुमार जब गंगा में घुटनों तक पानी में गये तो लड़का स्वयं ही मगर बन कर ब्राह्मण को दबोच गया और बोला कि मैंने कहा था न कि मैं फलाँ दिन तुम्हारा गंगा-तट पर भक्षण करूँगा। मैं काल हूँ, मेरे से कोई बच नहीं सकता। सारे लोग अवाक् रह गये, किसी से कुछ करते धरते नहीं बना।

● भीमसेन को झोटो

एक बार भीमसेन कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि एक औरत झूले पर बैठी धीरे-धीरे झूल रही है। औरत के पास 'झोटा' देने वाला कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था। औरत ने भीमसेन से कहा कि ओ राहगीर, ज़रा एक झोटा तो देते जाना। भीमसेन ने एक झोटा दिया तो झूला आसमान में जा चढ़ा। भय के मारे औरत की आँखें मुंद गयीं। उसने कल्पना भी न की थी कि झोटा इतने ज़ोर से लगेगा। झोटा लगने पर उसने जाना कि राहगीर वास्तव में भीमसेन है, अतः उसने भय से काँपते हुए आर्त स्वर में भीमसेन से पुकार कर कहा :—

चढ़तां दीख्यो माल़वो, उतरतां दीखी नाल़।
भीवां पड़ती नै झेलिये, तूँ पुरस मैं नार।

● हरी कंकेड़ी हर की पैड़ी

एक बार अकाल पड़ा तो एक जाट काम-धन्धा छोड़ कर साधु बन

गया। अपने गाँव को छोड़ कर वह अन्यत्र चला गया और भिक्षा माँग कर अपना पेट भरने लगा। एक कँकेड़े के वृक्ष के नीचे उसने अपना आसन जमा लिया। धीरे-धीरे उसकी मान्यता बढ़ने लगी। चेले-चेलियों का आना-जाना बढ़ गया और अब बाबा जी को किसी प्रकार का कष्ट न रहा। एक दिन कुछ लोग उधर से होकर उस जाट के गाँव की ओर जा रहे थे तो बाबा जी ने उनके हाथ निम्न सन्देश जाटनी को कहलवाया :—

हरी कंकेड़ी हर की पैड़ी, बैठ्या ध्यान लगावाँ हाँ,
गोदारी नै या कह दीज्यो, साढ़ लागतै आवाँ हाँ।
माई बाई आवैं भतेरी, दो-दो पातर पावाँ हाँ ॥

● कागलो न्हाणै सूं धोळो कोनी होवै

एक तालाब पर एक हंस रहता था। हंस का सफेद रंग देख कर कौवे को डाह हुई। उसने सोचा कि पानी में अधिक रहने और स्नान करने के कारण ही हंस का रंग सफेद हो गया है। अतः वह भी सारे काम-धाम छोड़ कर हर समय नहाने-धोने में लग गया। उसने गौरवर्ण होने की धुन में खाना-पीना और उड़ना भी छोड़ दिया, लेकिन कौवे का काला रंग तनिक भी सफेद नहीं हुआ। इस पर किसी ने व्यंग्य करते हुए कहा :—

कौवा रै तूं मलमल न्हाय, तेरी कालुंस कदे न जाय।

● ना'र की खाल और गधेड़ो

एक गधे को एक सिंह की खाल जंगल में पड़ी मिल गई। गधे ने सोचा कि यदि यह खाल ओढ़ कर मैं सिंह बन जाऊँ तो फिर मुझे किसी हिंसक जानवर का डर न रहे, फिर निर्भय हो कर बड़े ठाठ से रहूँ। यों सोच कर गधे ने वह खाल अच्छी तरह ओढ़ ली। फिर पानी के नाले में उसने अपनी छाया देखी तो वह सहसा अपने को पहचान भी नहीं सका। जंगल के सारे जानवर अब उससे डरने लगे। कुछ ही दिनों में गधा मोटा-ताजा हो गया। अब उसने सारे जानवरों को इकट्ठा किया और उनका राजा बन गया।

नये राजा ने हुक्म दे दिया कि कोई जानवर किसी दूसरे जानवर को न मारे, यदि किसी ने राजा का हुक्म नहीं माना तो उसे जान से मार दिया जाएगा। माँसाहारी जीवों के लिए राजा की यह आज्ञा पूरी मुसीबत बन गई। माँस न मिलने के कारण वे दिन-दिन घुलने लगे।

एक दिन एक गीदड़ ने नये राजा को घास चरते देख लिया। गीदड़ जान गया कि नया राजा कदापि शेर नहीं है, उसने सिंह के पास जाकर नये राजा का रहस्य खोला, लेकिन सिंह की हिम्मत नहीं हुई कि वह राजा का मुकाबला करे। अब गीदड़ किसी प्रकार नये राजा की पोल खोलने की ताक में रहने लगा। नये राजा के खोज (पग-चिह्न) देख कर गीदड़ जान गया कि यह तो निरा गधा है। एक दिन जब पूरा दरबार लगा हुआ था तो गीदड़ ने एक मोटी-ताजी गधी लाकर दरबार में खड़ी कर दी। जेठ का महीना था। थोड़ी देर तो गधी चुपचाप खड़ी रही, लेकिन फिर वह दरबार का अदब-कायदा भूल गई और चींपों-चींपों करने लगी। अब नये राजा से भी नहीं रहा गया। वह भी ऊँचा मुंह करके सप्तम स्वर में चींपों-चींपों करने लगा। गीदड़ ने लपककर राजा के बदन पर से सिंह की खाल उतार ली और अब राजा अपने असली रूप में दिखलाई पड़ने लगा। सारे माँसा-हारी जीव क्रुद्ध तो थे ही, उन्होंने गधे की बोटी-बोटी नोंच डाली।

● भैंस को सींग लपोदर नांव

एक साधु जंगल में कुटिया बना कर रहता था। आस-पास के क्षेत्र में उसकी बहुत मान्यता हो गई थी और काफी लोगों पर उसका प्रभाव जम गया था। एक दिन एक जाट साधु के पास आया और उसने कहा कि गुरूजी, मुझे भी गुरू-मंत्र दीजिए। साधु ने सोचा कि यह गँवार जाट भला मंत्र की बात क्या जानेगा? साधु ने उसे बहुत टाला, लेकिन जब वह नहीं माना तो जाट को टालने के लिए साधु ने कह दिया 'भैंस को सींग लपोदर नाँव' यही तेरे लिए गुरुमंतर है। जाट ने गुरू की बात पर विश्वास कर लिया और उसी मन्त्र को पूर्ण विश्वास के साथ रटने लगा। जाट के सिर में सींग

निकल आये और उसकी काया भैंसे के समान हो गई। उसे मन्त्र सिद्ध हो गया। तब एक दिन वह अपने गुरूजी के पास गया और कुटिया के बाहर से ही उसने गुरू को आवाज़ लगाई। गुरू ने वहीं से कहा कि कुटिया में आ जाओ। चेले ने कहा कि गुरूजी, कुटिया का दरवाज़ा चौड़ा करवाइए, यों मैं नहीं आ पाऊँगा। गुरु ने बाहर आकर देखा तो वह अवाक् रह गया। उसे अपने प्रति बड़ी घृणा हुई कि मैंने यों ही आडम्बर में अपना जीवन खो दिया। यदि इसकी तरह पूर्ण विश्वास से परमात्मा को याद करता तो आज मुझे परमात्मा अवश्य मिल जाता। साधु ने उसी क्षण सारा आडम्बर त्याग दिया और सच्चे मन से ईश्वर के भजन में लग गया।

● दो पणिहारी

एक युवती दो घड़े (दोघड़) लेकर पानी लाने के लिए पनघट को चली। रास्ते में उसकी सहेली का घर आया तो उसने सहेली को आवाज़ दी कि आओ पनघट को चलें। इस पर सहेली ने उत्तर दिया कि मैं तो पनघट को नहीं चलूंगी, क्योंकि :—

पनघट जाते पन घटे, पनघट वाको नाम।
कहिए पन कैसे रहे, पनिहारिन को धाम॥

पनघट जाने से पन घट जाता है, क्योंकि उसका नाम ही पन घट है। फिर पनिहारिन का पन वहाँ जा कर कैसे रह सकता है?

यह दोहा सुनकर पहली ने उत्तर दिया—

पनघट जाते पन घटे, यही कहे सब कोय।
पनघट जा नहीं पन घटे, जो घट में पन होय॥

सखी का उत्तर सुन कर वह लजा गई और घड़ा लेकर उसके साथ पनघट को चल पड़ी।

● लालच बुरी बलाय

एक बार एक सिंह ने एक खरगोश का पीछा किया। खरगोश उसकी पकड़ में आने ही वाला था कि सिंह को एक मोटा-ताजा हिरन दिखलाई पड़ा। सिंह ने खरगोश का पीछा छोड़ दिया और वह हिरन के पीछे दौड़ा। लेकिन सिंह को झपटते देख कर हिरन जान लेकर भागा और शीघ्र ही शेर की आँखों से ओझल हो गया। अब शेर उस स्थान पर आया जहाँ उसने पकड़ में आये हुए खरगोश को छोड़ दिया था, लेकिन अब वहाँ खरगोश कहाँ था? वह कभी का गायब हो चुका था। अब सिंह को अपनी भूल ज्ञात हुई और वह पछताता हुआ एक तरफ को चला गया।

● गादड़ै की कुटळाई

एक जंगल में एक बाघ, एक भालू, एक बिलाव, एक गीदड़ और एक चूहा रहा करते थे। वे पाँचों आपस में दोस्त थे। वे आपस में मिलकर शिकार करते और फिर बाँट कर खाते। एक दिन बाघ ने एक हिरन का पीछा किया लेकिन हिरन उसकी पकड़ में नहीं आया और दूर निकल गया। तब उन पाँचों ने आपस में सलाह की कि हिरन का पीछा न किया जाए। हिरन बहुत थक गया है, वह अपना पीछा न होता जान कर किसी वृक्ष की छाया में सो जाएगा। तब चूहा जा कर चुपके से उसके पैर की नसें कुतर डाले। नसें कुतरी जाने पर हिरन भाग नहीं सकेगा और उसे आसानी से मार लिया जाएगा। इसी योजना के अनुसार काम किया गया। हिरन के पैरों की नसें चूहे ने कुतर डालीं और तब बाघ ने उसे अनायास ही मार लिया। अब गीदड़ ने सोचा कि एक हिरन के यदि पाँच हिस्से हो गए तो फिर खाने का पूरा आनन्द नहीं आएगा, अतः शेष चारों को यहाँ से टरकाना चाहिए। उसने अपने मित्रों से कहा कि तुम सब कितने गये बीते हो कि न नहाते हो न धोते हो, यों ही माँस-मिट्टी खा लेते हो और पड़े रहते हो। मैं तो बड़े सबेरे ही नहा धो लेता हूँ। पास ही नदी है, तुम भी जा कर नहा आओ।

अब यह हिरन यहाँ से भाग कर तो जाएगा नहीं, फिर मैं इसकी चौकसी करूँगा। चारों जने नहाने के लिए चले गए।

बाघ सबसे पहले लौटा तो उसने देखा कि गीदड़ उदास बैठा है। बाघ ने गीदड़ से उसकी उदासी का कारण पूछा तो गीदड़ बोला कि चूहा कह रहा था कि शिकार तो अकेले मैंने किया है और खाने को सब तैयार हैं, बाघ जैसा बलवान जानवर भी मेरे मारे हुये शिकार पर जीभ लपलपा रहा है। गीदड़ की बात सुनकर बाघ ने गुस्से में भर कर कहा कि बेचारे चूहे की क्या बिसात है जो वह मेरा पेट भरे। मैं आज से अपना किया हुआ शिकार ही खाऊँगा। यों कह कर बाघ वहाँ से चलता बना। इतने में भालू आ गया। गीदड़ उसी तरह मुंह लटकाये बैठा था। रीछ के पूछने पर गीदड़ बोला कि आज तक हम सब मिल-जुल कर रह रहे थे और बड़े आनन्द में थे, लेकिन अब लगता है कि दुर्भाग्य हमारे पीछे पड़ गया है, हम सब बिछुड़ जाएँगे। तुमने न जाने बाघ को क्या कह दिया कि वह गुस्से में लाल-पीला हो रहा था, वह क्रोध में भरा तुम्हारी ही तलाश में गया है कि आज उसे देखते ही जान से मारूँगा। गीदड़ की बात सुनते ही रीछ के होश उड़ गये, वह जान बचा कर भाग खड़ा हुआ। इतने में बिलाव आया। बिलाव को देखते ही गीदड़ बोला कि लो तुम आ गये इस मुर्दे को संभालो, आज काली अमावस्या के दिन हिरन को मारकर हमने बड़ा पाप किया है। बाघ और भालू तो प्रायश्चित्त करने हरिद्वार गये हैं, अब मैं भी जा रहा हूँ। गीदड़ की बात सुन-कर बिलाव ने सोचा कि कहीं सारा पाप मेरे गले न पड़े, इसलिए वह गीदड़ से पहले ही प्रायश्चित्त करने के लिए हरिद्वार को चल पड़ा। अन्त में चूहा आया। चूहे को देखते ही गीदड़ बोला कि आज तुम्हारी खैर नहीं। बिलाव कह रहा था कि चूहे ने मेरी मूंछें कुतर डाली हैं, आज उसको इसका खूब मजा चखाऊँगा। आज वह तुम्हें देखते ही दबोच डालेगा। गीदड़ की बात सुन कर चूहा भी भाग गया। अब गीदड़ की बन आई। उसने मृत हिरन को अकेले ही खूब स्वाद से खाया।

● कांवळी और राजकुमारी

एक राजा के सात लड़के थे। राजा ने यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि जिस आदमी के सात लड़कियाँ होंगी उसी के यहाँ अपने सातों लड़कों की शादी करूँगा। राजा ने काफी धन देकर एक ब्राह्मण को ऐसे आदमी की तलाश में भेजा जिसके सात लड़कियाँ हों। ब्राह्मण बहुत दिनों तक खोजता रहा, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। ब्राह्मण के पास का सारा धन चुक गया। अब उसके पास केवल एक टका बचा था। ब्राह्मण एक बाग में पहुँचा। उस टके को देखकर कभी वह हँसने लगता और कभी उदास हो जाता। वह बाग उस नगर के राजा का था जिसके सात विवाह-योग्य लड़कियाँ थीं। उस राजा ने भी यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि मैं अपनी लड़कियों का विवाह ऐसे राजा के यहाँ करूँगा कि जिसके सात राजकुमार हों। सातों लड़कियाँ बाग में घूमने आयीं तो उन्होंने ब्राह्मण को देखा। सारी बात जान कर वे उसे अपने पिता के पास ले गयीं। सातों लड़कियों का विवाह पक्का हो गया। ब्राह्मण अपने नगर को चला आया।

नियत दिन बारात पहुँच गई। सातों राजकुमार अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो कर नगर देखने के लिए निकले। और सब भाई तो घूम-फिर कर वापिस आ गए, लेकिन सबसे छोटा राजकुमार उनसे अलग हो गया। वह घूमता-घामता एक दरवाजे के पास पहुँचा और उस दरवाजे पर चढ़ गया। दरवाजे के ऊपर एक सुन्दर 'चौबारा' था जिसमें एक पलंग बिछा हुआ था। राजकुमार विश्राम करने के लिए पलँग पर लेटा और उसे निद्रा आ गयी। उस जगह चार 'काँवली' आया करती थीं। वे अपने नियत समय पर वहाँ आयीं और उन्होंने कंकन-डोरे बंधे और तेल-बान चढ़े राजकुमार को वहाँ सोया देखा। उसे देख कर वे एक साथ बोल उठीं कि अहा, आज तो देखो कैसा चिकना-चुपड़ा शिकार अपने आप ही आ गया है? लेकिन इसे यों नहीं, सुखा कर खाएंगी। जाते समय वे खाट के पाये पर एक कच्चे सूत का धागा बाँध गयीं जिससे राजकुमार वहीं बेहोश पड़ा रहे।

उधर बहुत खोज-बीन के बाद भी जब राजकुमार का कुछ पता नहीं

चला तो लड़कों के बाप ने बेटी वालों से कह दिया कि छोटे राजकुमार को हम राज्य की रक्षा के लिए वहीं छोड़ आये हैं, अतः छोटी राजकुमारी को उसके खांडे के साथ फेरे दिलवा दिये जाएँ। निदान ऐसा ही हुआ और सातों राजकुमारियों का विवाह हो गया। राजा सातों बहुओं को लेकर अपने नगर को आ गया। घर आकर भी जब छोटी बहू ने अपने पति को वहाँ नहीं देखा तो उसने सही बात का पता लगाया और वह पीहर जाने के बहाने कुछ आदमियों को साथ लेकर वहाँ से निकल पड़ी। कुछ दूर जाकर उसने साथी अनुचरों को बिदा कर दिया और स्वयं मरदाना वेश बना कर वहाँ से अकेली ही आगे बढ़ी।

खोजते-खोजते वह उसी 'चौबारे' पर पहुँच गई। वहाँ उसने अपने पति को कंकन-डोरे बाँधे सोया देखा। उसका शरीर बहुत कृश हो गया था, क्योंकि 'काँवलियाँ' उसे खाने के लिए सुखा रही थीं। वे चारों अपने नियत समय पर आतीं, उसके साथ चौसर खेलतीं और जाते समय उसे फिर बेसुध करके वहीं लिटा जातीं। खाने के लिए वे उसे कुछ नहीं देतीं। राजकुमारी अपने पति के पलंग पर बैठी तो 'जादू का धागा' टूट गया और राजकुमार उठ बैठा। आज उसने पहली बार किसी दूसरे आदमी को अपने सामने बैठा पाया। राजकुमार ने अपनी सारी कथा आगन्तुक को कह सुनाई। आगन्तुक ने कहा कि मैं एक साहूकार का बेटा हूँ और इसी नगर में अपना व्यापार करता हूँ, आज से हम दोनों मित्र हैं और मैं तुम्हें यहाँ से छुटकारा दिलाने का भरसक प्रयत्न करूँगा। आगन्तुक चला गया और राजकुमार वहीं पड़ा रहा। अब "साहूकार का बेटा" वहाँ नित्य आता और राजकुमार को बढ़िया खाना खिला जाता। राजकुमार अब हृष्ट-पुष्ट होने लगा। तब एक दिन "काँवलियों' ने विचार किया कि यहाँ तो कोई चोर लग गया है, हम तो इसे खाने के लिए सुखा रही हैं और यह दिन-दिन मोटा होता जा रहा है। यों सोचकर वे उसे समुद्र पार ले गयीं और उसे एक सुरक्षित बुर्ज पर टिका दिया।

'साहूकार का लड़का' भी किसी तरह वहाँ तक पहुँच गया। जिस

बुर्ज के ऊपर राजकुमार को रखा गया था उस पर चढ़ने के लिए कोई सीढ़ी नहीं थी। 'साहूकार का बेटा' वहीं बुर्ज के नीचे बैठा रहा। आधी रात को वहाँ 'चकवा-चकवी' बोले कि यहाँ जो ढेर-सी बीट पड़ी है यह सर्वरोग नाशक दवा है, यदि कोई सुनता गिनता हो और इस बीट को उठा ले जाए तो इसे पीस कर चाहे जिस रोग पर लगाये, वह रोग तीन दिन में जड़-मूल से चला जाएगा। साहूकार के बेटे ने चकवे-चकवी की बात सुनी। सबेरा होते ही उसने सारी 'बीट' बटोर ली। फिर उसने वैद्य का स्वाँग बनाया और समुद्र पार के उस नगर में निकल गया। गली-कूचों में वैद्य जी आवाज़ लगाते घूम रहे थे कि गंजापन, बहरापन, अन्धापन कोई भी रोग हो, मैं तीन दिन में ठीक कर दूंगा। वैद्य की आवाज़ सुनकर एक कोढ़ी ने उसे अपने पास बुलाया। कोढ़ से उसके सारे अंग गल गए थे, उसके पास खड़ा हो सकना भी दूभर था। लेकिन वैद्य जी ने कहा कि घबड़ाने की कोई बात नहीं है, मैं तुम्हें बहुत शीघ्र चंगा कर दूंगा। वैद्य जी ने बीट पीस कर कोढ़ी के सारे शरीर पर लगवाई और कहा कि तीन दिन तक ऐसे ही रहने देना, आज के तीसरे दिन मैं यहाँ फिर आऊँगा। वैद्य तीसरे दिन आया तो कोढ़ी एकदम स्वस्थ हो चुका था। वैद्य को देखते ही वह उसके पैरों में गिर पड़ा। उसने अपनी लड़की का विवाह भी उसके साथ कर दिया।

वास्तव में यह आदमी उन चारों 'काँवलियों' में से एक का पिता था और वैद्य जी से उस ने एक 'काँवली' की ही शादी की थी। विवाह होने के बाद वहाँ की प्रथा के अनुसार, वह बाहर नहीं जा सकती थी, अतः अब राज-कुमार के पास तीन ही 'काँवलियाँ' जाने लगीं। 'साहूकार के बेटे' ने सोचा कि चलो एक से तो पीछा छूटा। दूसरी 'कांवली' का पिता अन्धा था, तीसरी का गंजा और चौथी का लकवे से पीड़ित था। 'वैद्य जी' ने उन तीनों को भी नीरोग कर दिया और उन तीनों 'काँवलियों' से शादी कर ली। अब वे चारों घर से बाहर नहीं निकल सकती थीं। 'साहूकार का बेटा' अब अपने दोस्त के पास बेखटके आने-जाने लगा। वह उसको अब और अच्छी तरह-खिलाने पिलाने लगा। उधर वैद्यजी ने अपनी पत्नियों से कहा कि

अब मैं अपने देश को जाऊँगा। काँवलियों ने कहा कि हमें भी अपने साथ ले चलो। एक ने कहा कि मेरे पिता के पास उड़न-खटोला है, तुम वह माँग लो, दूसरी ने कहा कि मेरे पिता के पास लग-लग घोटा है, तीसरी ने कहा कि मेरे बाप के पास 'झर-झर कंथा' है और चौथी ने कहा कि मेरे बापके पास संजीवन बूटी है। वैद्यजी ने चारों चीज़ें हथिया लीं और अपनी 'पत्नियों' से कहा कि मेरे साथ मेरा एक मित्र है, वह तुम्हें उड़न-खटोले में नहीं बैठने देगा। इसलिए यदि तुम मेरे साथ चलना चाहती हो तो उड़न-खटोले के पाये पकड़ लेना। चारों ने अपने पति की आज्ञा मान ली। साहूकार का बेटा अपने दोस्त को उड़न-खटोले में बैठा कर उड़ चला। काँवलियों ने खटोले के पाये पकड़ लिये। जब उड़न-खटोला बीच समुद्र में पहुँचा तो साहूकार के बेटे ने अपने दोस्त को एक तलवार दी। राजकुमार ने उन चारों 'काँव-लियों' के हाथ काट डाले और वे चारों 'हाय-हाय' करती समुद्र में गिर पड़ीं। राजकुमार अपने घर आ गया। चारों ओर आनन्द उत्सव होने लगे। मौका पाकर 'साहूकार का बेटा' अपने महल में चला गया और उसने राजकुमार की पत्नी का अपना असली वेश बना लिया। जब राजकुमार को सारा रहस्य ज्ञात हुआ तो उसके आनन्द की सीमा न रही।

● साँप और कागलो

एक कौवा और एक कौवी एक वृक्ष पर रहते थे। उसी वृक्ष के नीचे एक बड़ा साँप बिल बनाकर रहने लगा। कौवी के बच्चों को वह खा जाया करता। साँप की दुष्टता के कारण कौवा और कौवी बड़े दुखी रहते।

एक गीदड़ कौवे का मित्र था। एक दिन कौवा अपने मित्र के पास गया और उसने गीदड़ को अपनी सारी कथा कह सुनाई। गीदड़ ने कौवे को एक युक्ति बतलाई और कौवा अपने घर आ गया। दूसरे दिन कौवा उड़कर रानी के महल पर गया। रानी उस वक्त स्नान कर रही थी। उसने अपना नौलखा हार उतार कर वहीं रख छोड़ा था। मौका पाकर कौवा हार को लेकर उड़ चला। राजा के सिपाही कौवे के पीछे दौड़े। कौवा अपने वृक्ष पर आया

और उसने हार को साँप के बिल में डाल दिया। राजा के सिपाही कौवे का पीछा करते-करते वहाँ आ गये। सिपाहियों ने साँप को मार डाला और हार लेकर चले गए। साँप के मर जाने से कौवा-कौवी निर्भय होकर उस वृक्ष पर रहने लगे।

● मणियार की चतराई

एक मनिहार बहुत सारी टोपियाँ लेकर मेले में बेचने चला। रास्ते में वह एक वृक्ष के नीचे सो गया। उस वृक्ष पर बहुत सारे लँगूर रहते थे। मनिहार टोपी ओढ़े हुए था। लँगूरों की भी इच्छा टोपियाँ ओढ़ने की हुई। उन्होंने मनिहार की गठरी खोली और सब एक-एक टोपी लेकर वृक्ष पर चढ़ गये। टोपियाँ ओढ़कर वे बहुत खुश थे। अब उन्होंने मनिहार को छकाने की सोची। वृक्षका एक फल तोड़ कर एक लँगूर ने मनिहार के मुंह पर दे मारा। मनिहार अचकचा कर उठ बैठा। टोपियों की गठरी भी उसे दिखलाई नहीं पड़ी। मनिहारने ऊपर की ओर देखा तो सारे लँगूरटोपियां ओढ़े हुए थे। अब मनिहार ने एक युक्ति सोची। उसने अपनी टोपी सिर से उतार कर और गुस्से में भर कर लँगूरों की तरफ फेंकी। लँगूर उस टोपी को नहीं पकड़ सके और टोपी नीचे आ गिरी। अब सारे लँगूरों ने अपनी टोपियाँ उतार-उतार कर मनिहार की ओर फेंक दीं। मनिहार तो यही चाहता था। उसने शीघ्रता से सारी टोपियाँ बटोरीं और वहाँ से चलता बना।

● खाती की बेटी

एक खाती के तीन लड़के थे। दो का विवाह हो गया था और एक अभी अविवाहित था। वह भोजन करने के बाद थाली में ही कुल्ले किया करता था। एक दिन उसकी भावज ने बोल मारा कि थाली में कुल्ले करते हो जैसे रिड़मल खाती की बेटी को ब्याह कर लाओगे। देवर ने कहा कि रिड़मल की बेटी को ही ब्याह कर लाऊँगा। वह उसी समय रिड़मल खाती के घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसने एक मरी हुई भैंस देखी। खाती के लड़के

ने भैंस के सींग काट लिये और उन सींगों के चावल बना लिये। चावल बना कर वह रिड़मल के घर पहुँचा। रिड़मल की बेटी ने हड्डियों के तिल बना रखे थे। उसके साथ विवाह की इच्छा से जो आदमी उसके घर आता उसे 'कलेवे' के लिए वह हड्डियों के तिल दिया करती और इस प्रकार आने वाले की परीक्षा लेती। इस खाती के बेटे को भी कलेवे के लिए तिल भेजे गए लेकिन उसने कहा कि मुझे अभी भूख नहीं है, मेर पास थोड़े चावल हैं सो इनकी खीर बनवा दो। रिड़मल की बेटी ने वे चावल दूध में डाल दिये और खीर बनाने लगी, लेकिन हड्डियों के चावलों की क्या खीर पकती? उसने जान लिया कि यह आदमी बड़ा चतुर है। दोनों का विवाह हो गया और दोनों वहीं रहने लगे। एक दिन भौजाई ने ताना मारा कि बाई जी ने तो यहीं घर बसा लिया, यह पेट में से तो निकली, लेकिन 'हाँडी' में से नहीं निकली। खाती की बेटी ने अपने पति से कहा कि तुम निठल्ले क्यों बैठे हो? कुछ कमा कर लाओ। और कुछ नहीं तो मेरे बाप के बहुत बड़ा वन है उसी में से लकड़ी काट लाओ और उसकी चीज़ें बनाकर बेचो। दूसरे दिन तड़के ही खाती का बेटा लकड़ी लाने के लिए चला। वन में पहुँचकर उसने लकड़ियों से पूछना शुरू किया कि लकड़ी, काम की या बेकाम की? हर लकड़ी ने यही उत्तर दिया कि बेकाम की। वह निराश होकर लौटने लगा। सहसा उसे एक टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ी दिखाई पड़ी जिससे उपर्युक्त प्रश्न नहीं पूछा गया था। खाती के बेटे ने उससे भी यही प्रश्न किया। उसका प्रश्न सुनकर लकड़ी ने कहा कि मैं काम की हूँ। खाती उसी लकड़ी को काट कर घर ले आया और उसे अपनी खटिया के नीचे डालकर सो रहा। दूसरे दिन खाती ने उस लकड़ी का एक अटेरन बनाया और उसे अपनी बहू को देकर बोला कि इसे ले जाकर शहर में बेच आ। इस अटेरन को लाख टके से कम पर मत बेचना। खातिन अटेरन लेकर शहर को चली गई। अटेरन बहुत सुन्दर था, लेकिन मोल सुनकर सब हैरान हो जाते थे। शाम तक अटेरन नहीं बिका। शाम को एक सेठ अपने घर जा रहा था। उसने भी अटेरन देखा और उसका मूल्य पूछा। मूल्य सुन कर सेठ ने पूछा कि इसमें गुण क्या है? खाती की बहू ने उत्तर दिया कि

गुण है तभी तो लाख टके मोल के हैं। सेठ ने अटेरन ले लिया और कहा कि लाख टके सबेरे ले जाना। उसन अटेरन ले जा कर अपने गोदाम में डाल दिया जहाँ सैकड़ों मन रेशम उलझा हुआ पड़ा था। अटेरन ने रात भर में सारे रेशम को सुलझा कर गोदाम में तरतीब से लगा दिया। सबेरे जब गोदाम खोला गया तो सेठ को बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ। उसने खातिन को बुला कर एक लाख टके तो दिये ही, उसे अतिरिक्त पुरस्कार भी दिया। खातिन अपने घर चली गई और अब दोनों फिर आराम से रहने लगे। लेकिन खाते-खाते तो कुआँ भी खाली हो जाता है, अतः एक दिन खातिन ने पति से कहा कि वह धन तो चुक गया है, अब और कुछ बनाओ। खाती उसी प्रकार एक लकड़ी और लाया और इस बार उसने एक पलंग बनाया। पलंग देकर उसने अपनी बहू को शहर में भेजा और कहा कि इसका मूल्य नौ लाख टके हैं। खाती की बहू पलंग लेकर शहर में गई। पलँग बहुत सुन्दर था, लेकिन मोल सुनकर सब पीछे हट जाते थे। शाम को राजा की सवारी निकली तो उसकी निगाह भी पलँग पर गई। उसने पलँग ले लिया और कहा कि सबेरे दरबार में आकर कीमत ले जाना। राजा ने पलँग महल में भिजवा दिया।

सारे नगर में यह चर्चा फैल गयी कि आज राजा ने नौ लाख टके का पलँग खरीदा है। राजा की बेटी ने अपनी माँ से कहा कि मैं भी पलँग देखकर आती हूँ। रानी ने कहा कि पलँग भले ही देख आ लेकिन उस पर बैठना नहीं और यदि बैठ ही जाए तो उस पर सोना नहीं। लड़की गई। उसने पलँग पर बैठ कर देखा, फिर लेट गई और लेटते ही उसे नींद आ गई। रात को राजा आया और महल पर चढ़ने लगा। जब चार सीढ़ियाँ शेष रहीं तो पलँग के एक पाये में से एक पुतली निकली और उसने राजा से कहा कि राजा आगे कदम मत रखना, अन्यथा तू उसी प्रकार पछताएगा कि जिस प्रकार चकवे को वचन देकर चकवी पछताई थी। यों कह कर उसने एक कहानी कहनी शुरू की—एक राजा के कोई संतान नहीं थी। दुहागिन रानी से मिलकर एक पंडित ने राजा से कहा कि यदि आप दुहागिन रानी के महल में पधारें

तो आपके एक लड़का हो सकता है। पंडित की बात मान कर राजा दुहागिन रानी के महल में गया। पंडित के कहने से रानी ने झूठ-मूठ ही यह बात फैला दी कि वह गर्भवती है। राजा को बड़ी खुशी हुई। पंडित के माँगने पर राजा ने उसे नगर में तीन दिन की लूट बख्श दी। पंडित मालामाल हो गया। नौ महीने पूरे होने पर रानी ने यह प्रकट किया कि उसके कुंवर जन्मा है। चारों ओर आनन्द-उत्साह छा गया। राजा की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। लेकिन पण्डित ने राजा से कह दिया कि विवाह होने के पहले यदि कुंवर को कोई देख लेगा तो कुंवर की अकाल मृत्यु हो जाएगी। राजा ने ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि कोई कुंवर को न देख सके। दिन निकलने लगे और कुंवर अपनी माँ के महल में ही 'बड़ा' होने लगा। कुंवर की सगाई के टीके आने लगे। पंडित टालता गया, टालता गया। अन्त में राजा ने पण्डित से कहा कि आज जो टीका आया है, उसे तो स्वीकार करना ही होगा। हार कर पण्डित ने कहा कि एक ही शर्त पर टीका स्वीकार किया जा सकता है कि कुंवर को बन्द पालकी में बैठा कर मैं ब्याह करवा के लाऊँगा। आप बारात में नहीं जा सकेंगे। राजा ने शर्त स्वीकार कर ली। नियत दिन पण्डित ने आटे का एक 'कुंवर' बनाया और उसे सजा कर पालकी में बैठा दिया। पालकी चारों ओर से ढक दी गई। राजा ने बहुत सारे सैनिक और सेवक साथ दे दिये। बारात चल पड़ी। रात को बारात ने एक बड़े वृक्ष के नीचे पड़ाव डाल दिया। आधी रात को चकवा-चकवी बोले। चकवे ने कहा कि कल हजारों घरों में रोना-पीटना मचेगा, क्योंकि पालकी में आटे के 'लोथड़े' के सिवाय कुछ भी नहीं है। लड़की वालों को जब इस बात का पता चलेगा तो वे इसमें अपना अपमान समझेंगे और इन सब आदमियों को निश्चिय ही मार डालेंगे। चकवी ने पूछा कि इनको कैसे बचाया जा सकता है तो चकवा बोला कि यदि तू कहे तो मैं राजा का लड़का बन कर ब्याह कर लाऊँ। चकवी ने उसे अनुमति दे दी। चकवे ने अपना वह 'चोला' त्याग दिया और राजा का कुंवर बन कर पालकी में आ बैठा। आते ही उसने पण्डित से पुकार कर कहा कि इस पालकी के पर्दे खोलो, मेरा दम घुटा जा

रहा है। पंडित ने पालकी का पर्दा उठा कर देखा तो उसकी जान में जान आ गई। कुंवर के कहने पर उसने राजा-रानी और सारे राजपरिवार को बुलवा लिया।

खूब धूम-धाम से विवाह हो गया। जब बारात लौटी तो चकवी ने 'चकवे' से कहा कि अब आ जाओ। उसने उत्तर दिया कि दो दिन और ठहरो, बारात को घर तो पहुँचा दूं। जब दो दिन बीत गये और चकवा नहीं लौटा तो चकवी उसके पास गई कि अब चलो, लेकिन चकवे ने चकवी को रूखा उत्तर दे दिया कि कंकड़ चुगते-चुगते मेरा गला बैठ गया और वृक्ष के ठूंठ पर बैठे-बैठे पंजे दुखने लगे। बड़े संयोग से मैंने राजकुंवर का 'चोला' पाया है। अब मैं नहीं आने का, तुम जाओ। चकवी अब पछताने लगी कि न मैं चकवे को जाने के लिए कहती और न मुझे यह दिन देखना पड़ता। सो हे राजा, यदि तू आगे कदम रखेगा तो उस चकवी की तरह ही पछताएगा। यों कह कर वह पुतली उसी पाये में समा गई।

कुछ देर बाद राजा ने दूसरी सीढ़ी पर पैर रखा तो दूसरे पाये में से एक पुतली निकली और उसने राजा से कहा कि राजा खबरदार, आगे पग मत बढ़ाना। यदि तूने आगे कदम बढ़ाया तो मंत्री के लड़के को मरवा देने वाले राजकुमार की तरह पछताएगा। यों कहकर दूसरी पुतली ने अपनी कहानी शुरू की:—एक राजा के लड़के ने एक रात स्वप्न में एक ऐसी राजकुमारी को देखा कि जिसके हंसने से फूल झड़ते थे और रोने से मोती बरसते थे। राजकुमार ने अपना सपना मंत्री के लड़के को सुनाया और कहा कि मैं यदि शादी करूँगा तो इसी राजकुमारी से। मंत्री के लड़के ने उसे भरोसा दिलाया और बहुत खोज-बीन के पश्चात् उस राजकुमारी का पता लगा लिया। राजकुमार के साथ उसका विवाह हो गया। लेकिन उस राजकुमारी के प्राण एक हार में स्थित रहते थे। इस रहस्य को एक धोबिन की लड़की जानती थी। विवाह के झमेले में हार वाला कमरा खुला रह गया और धोबिन की लड़की ने हार चुरा लिया। हार चुराते ही राजकुमारी का जी मितलाने लगा। उसने अपनी माँ से कहा कि जैसे ही धोबिन की लड़की हार पहनेगी,

मेरी मृत्यु हो जाएगी। लेकिन जबतक हार को तोड़ा नहीं जाएगा मेरी पूर्ण मृत्यु नहीं होगी, अतः मरने के बाद मुझे जलाना नहीं। जिस राजकुमार से मेरा विवाह हुआ है, उस राजा की सीमा में मेरी देह को रखा देना।

धोबिन की लड़की ने जैसे ही हार पहना, राजकुमारी की मृत्यु हो गई। घरवालों ने इस बात को किसी पर प्रकट नहीं किया। धोबिन की लड़की को ही राजकुमारी बनाकर राजकुमार के साथ भेज दिया गया। राजकुमारी का शव राजकुमार के राज्य की सीमा में रखवा दिया गया। जहाँ राजकुमारी का शव रखा गया, वहाँ एक सुन्दर महल बन गया। अब राजकुमारी का शव महल में सुरक्षित हो गया। दिन में जब धोबिन की लड़की हार पहने रहती, राजकुमारी का शरीर मृतवत् पड़ा रहता और रात को जब वह हार निकाल कर रख देती तो राजकुमारी जीवित हो जाती। उधर राजकुमार ने देखा कि 'राजकुमारी' में कोई विशेषता नहीं है, न उसके हँसने से फूल झड़ते हैं और न रोने से मोतियों की वर्षा होती है। उसने सोचा कि वज़ीर के लड़के ने मुझे धोखा दिया है सो उसने वज़ीर के लड़के को जान से मरवा डाला।

एक दिन राजकुमार शिकार के लिए गया तो उसने अपने राज्य की सीमा पर एक सुन्दर महल बना देखा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह महल कब बन गया ? वह महल के अन्दर गया तो उसने एक सुन्दर राजकुमारी को सोती हुई देखा। राजकुमार वहीं बैठ गया। रात हुई तो राजकुमारी उठ बैठी। राजकुमारी ने सारा रहस्य राजकुमार पर प्रकट कर दिया और साथ ही धोबिन की लड़की से हार छीनने की तरकीब भी बतला दी।

राजकुमार चला गया। दूसरे दिन उसने अपनी स्त्री से कहा कि मैं विदेश जा रहा हूँ और उसने विदेश जाने की तैयारी भी कर ली। 'राजकुमारी' अपने पति को विदा करने के लिए उसकी 'आरती' उतारने के लिए तत्पर हुई तो राजकुमार ने अपने सेवकों को संकेत कर दिया। उन्होंने उसकी दोनों भुजाएँ कस कर पकड़ लीं। राजकुमार ने 'राजकुमारी' के गले से हार निकाल लिया। इसके बाद उसने धोबिन की लड़की को फांसी दिलवा

दी। हार लेकर राजकुमार उस महल में गया। उसने सोई हुई राजकुमारी के गले में हार पहना दिया। हार पहनते ही वह उठ बैठी। राजकुमार उसे घर ले आया। इस राजकुमारी के हँसने से फूल झड़ते थे और रोने से मोती बरसते थे। अब राजकुमार पछताने लगा कि मैंने मंत्री के लड़के को व्यर्थ ही मरवा डाला। उस बेचारे ने मेरे लिए क्या नहीं किया ? लेकिन अब पछताने से क्या होता ? सो हे राजा, तूने आगे कदम बढ़ाया तो उसी तरह पछताएगा। मेरा समय हो गया है, अतः मैं अब जा रही हूँ।

दूसरी पुतली के जाते ही राजा ने फिर कदम बढ़ाया तो तीसरे पाये से एक और पुतली निकली। इसने भी राजा को आगे बढ़ने से मना किया और अपनी कहानी शुरू की:—एक राजा और एक साहूकार के लड़के आपस में दोस्त थे। दोनों अपनी-अपनी ससुराल को चले। पहले राजकुमार की ससुराल आई। शर्त के अनुसार साहूकार का लड़का भी राजकुमार के पास महल में सोया। राजकुमार की स्त्री बदचलन थी। वह आधी रात को उठकर एक फकीर के पास जाया करती थी। जब राजकुमार सो गया तो वह चुपचाप उठी। साहूकार के बटे को नींद नहीं आई थी, वह भी चुपके से उठकर उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। आज फकीर गुस्से में भरा बैठा था। उसने जाते ही राजकुमारी की पीठ पर तड़ातड़ चार चिमटे जड़ दिये और बोला कि हरामजादी इतनी देर कहाँ लगा दी ? राजकुमारी ने कहा कि आज मेरा पति आ गया था, इसीलिए देर हो गई। फकीर ने कहा कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं, जा इसी समय उसका सिर काट ला। राजकुमारी गई और तुरन्त अपने पति का सिर काट लाई। तब फकीर ने उसे लानत देते हुए कहा कि बदकार औरत, यहाँ फिर कभी मत आना, इसी समय यहाँ से चली जा। जो अपने पति की नहीं हुई, वह और किसी की क्या होगी ? राजकुमारी अपने पति का सिर लिये हुए महल को चल पड़ी। साहूकार का बेटा यह सारी लीला देख रहा था। वह राजकुमारी से पहले ही आकर सो गया। राजकुमारी ने आते ही हल्ला मचा दिया कि इस साहूकार के बेटे ने मेरे पति को मार डाला। उस बेचारे को तुरन्त

पकड़ लिया गया और राजा ने हुक्म दिया कि उस दुष्ट को ले जाकर तोप से उड़ा दो। किसी तरह साहूकार के बेटे ने राजा को सच्ची बात बतलाई और राजकुमारी के शरीर पर पड़े चिमटे के निशान दिखला दिये। राजा ने साहूकार के लड़के को छोड़ दिया और वह राजकुमार की लाश को एक सन्दूक में रखकर अपनी ससुराल को चल पड़ा। वह बहुत उदास था। ससुराल पहुँचने पर जब रात को उसे महल पधारने के लिए कहा गया तो वह बोला कि पहले मेरा संदूक वहाँ पहुँचा दो। संदूक को पास रखकर साहूकार का लड़का चुपचाप लेट रहा। उसकी औरत आई और उसे गुदगुदाने लगी, लेकिन वह सिर्फ हाँ-हूँ करता रहा और थोड़ी देर बाद नींद आने का बहाना करके पड़ रहा। औरत आधी रात को शिवजी की पूजा करने के लिए जाया करती थी। पति को सोया जान वह उठी और आरती सजा कर पूजा करने को चल पड़ी। साहूकार के लड़के ने उसका भी पीछा किया। शिवजी की आरती करने के पश्चात् स्त्री ने कहा कि प्रभो! आज मेरा पति आया है, लेकिन वह बहुत उदास है, कृपया उसे प्रसन्न रखें। शिवजी ने वर दिया कि तू बूढ़ सुहागिन हो। साहूकार का बेटा तुरन्त वहाँ से अपने महल में लौट आया। उसने राजकुमार की लाश संदूक से निकाल कर बाहर सुला दी और उसे कपड़ा ओढ़ा दिया तथा स्वयं सन्दूक में घुसकर बैठ गया। उसकी पत्नी पूजा करके आई और उसने वस्त्र हटाया तो वह देखकर हक्की-बक्की रह गई। उसने जाना कि उसके पति को किसी ने मार डाला है। वह तुरन्त शिवजी के पास गई और बोली कि प्रभो, आपने तो मुझे सोहाग दिया है, मेरा पति तो वहाँ मरा पड़ा है। शिवजी ने कहा वह तेरा पति नहीं है, लेकिन उसका सिर धड़ से जोड़ दे, वह जी उठेगा। स्त्री ने आ कर वैसा ही किया। सिर के जुड़ते ही राजकुमार उठ बैठा और बोला कि आज तो खूब नींद आई। साहूकार के बेटे ने मित्र को जीवित हुआ जाना तो सन्दूक से बाहर निकल आया। कुछ दिन वहाँ रहकर वे अपने नगर को लौट आये।

एक रात साहूकार के बेटे के महल में एक बिल्ली घुस आई। साहूकार की स्त्री ने दासी से कहा कि बिल्ली को निकाल दे, मुझे डर लगता है। दासी

ने कहा कि बहूजी बिल्ली का डर मुझे भी बहुत लगता है, वे आपस में इस प्रकार बातें कर ही रहीं थीं कि साहूकार का बेटा महल में पहुँच गया। उसने मन में विचारा कि उसकी पत्नी कितनी सीधी है कि बिल्ली से भी डरती है। कुछ दिन पश्चात्, एक दिन साहूकार का बेटा अपने महल में सोया था कि नदी में एक लाश तैरती हुई आई। एक गीदड़ बोला—

कोक पढंती कामणी, सुगणा लेओ बिचार।
नदी बीच मुरदा बहै, जाँघ लाल हैं च्यार॥

वह स्त्री पशु-पक्षियों की बोली समझती थी।

गीदड़ की बात सुनकर साहूकार के बेटे की बहू ने लपक कर लाश पकड़ ली। लेकिन उसके पास कोई हथियार नहीं था, अतः उसने अपने दाँतों से मुर्दे की जंघा चीर कर उसमें से चारों लाल निकाल लिये और लाश को फिर पानी में बहा दिया। इतने में उसका पति जग गया। उसने अपनी बहू का यह कृत्य देख लिया। उसे विश्वास हो गया कि उसकी पत्नी डाकिन है। उसने तुरन्त अपनी स्त्री को मार डाला। लेकिन जब उसने अपनी पत्नी के पास चार बहुमूल्य लाल देखे तो उसे सही बात का अनुमान लगाते देर नहीं लगी। अब वह हाथ मल-मल कर पछताने लगा। सो हे राजा, यदि तू आगे बढ़ेगा तो उसी साहूकार के बेटे की तरह पछताएगा। यों कह कर तीसरी पुतली गायब हो गई।

अब चौथी पुतली आई और उसने अपनी कहानी यों शुरू की:—

एक मदारी के पास दो बंदर थे। वह गाँव-गाँव घूम कर तमाशा दिखलाता और तमाशे से होने वाली आय से अपनी जीविका चलाता। एक जाट ने देखा कि तमाशा दिखलाने के बाद ही मदारी पर पैसों की वर्षा होने लगती है। उसने सोचा कि यह धंधा बड़ा उपयोगी है। उसने मदारी से दोनों बंदर खरीद लिये और उन्हें नचाना भी सीख लिया। जाट के पास एक ऊँट था। वह ऊँट पर सवार होकर गाँव-गाँव में तमाशा दिखलाने लगा। थोड़े ही दिनों में उसके पास काफी रुपये जुट गये। वह अब सूद पर भी रुपये देने लगा। एक दिन एक दूसरा जाट उससे रुपये उधार लेने के लिए आया।

लेकिन इसने रुपये नहीं दिये। उसे बड़ा गुस्सा आया और बोला कि बंदर नचा-नचा कर तो पैसे इकट्ठे किये हैं और आज बड़ा धन्ना सेठ बन कर बैठ गया है। जाट को इससे बड़ी शर्म महसूस हुई और उसने दोनों बंदरों को मार डाला। अब उससे न खेती होती थी, न उसके पास और कोई आय का साधन था। उसकी सारी पूंजी खत्म हो गई और अब वह दिन-रात पछताने लगा कि मैंने बंदरों को क्यों मार डाला ? सो हे राजन, यदि तूने आगे पैर बढ़ाया तो उस जाट की तरह ही पछताएगा। राजा वहीं का वहीं खड़ा रह गया। पुतली चली गई। इतने में राजा की लड़की की आँखें खुल गईं और वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। अपने को पलँग पर सोया जान वह डर गई और शीघ्रता से अपनी माँ के पास भाग गई। राजा सोचने लगा कि मेरी बेटी इस पलँग पर सोई पड़ी थी और यदि मैं उस समय ऊपर आ जाता तो वास्तव में ही मुझे पछताना पड़ता।

अब राजा ऊपर गया और पलँग पर सो गया, लेकिन उसे नींद नहीं आई। थोड़ी ही देर में पलँग के एक पाये ने शेष तीनों से कहा कि भाइयों, मैं गश्त करके आता हूँ, तुम मजबूत रहना। वह गश्त लगाने चला गया। राजा को मन ही मन हँसी आई कि देखो पलँग का पाया भी ग़श्त लगाने के लिए जाता है। लेकिन उसने पाये को हाथ लगा कर देखा तो सचमुच ही पाया गायब था। थोड़ी देर बाद पाया गश्त लगा कर आया और उसने अपने साथियों से कहना शुरू किया कि आज तो अपने राजा के खजाने से चोर धन चुरा कर ले जा रहे थे कि इतने में मैं पहुँच गया। मैंने चोरों को खूब पीटा और सारा धन लाकर महल के बायें कोने पर गाड़ दिया। फिर दूसरा पाया बोला कि अब मैं जा रहा हूँ, तुम सब सावधान रहना। यों कह कर वह चला गया। थोड़ी देर बाद पाया लौटा और उसने कहा कि आज तो अपने राजा का मित्र अमुक साहूकार मर गया। दूत उसे लिये जा रहे थे। मैंने उनका पीछा किया और उनमें से कुछ को पीटा भी, लेकिन वे साहूकार को ले ही गये। अब तीसरा पाया चला। उसने आकर अपनी रिपोर्ट दी कि जिन दूतों को दूसरे पाये ने पीटा था उन्होंने जाकर चित्र गुप्त के पास पुकार

की और चित्रगुप्त ने हुक्म दिया कि दूतों की सेना ले जा कर उस राजा की नगरी को नष्ट कर दो। वे लोग आकर अपना काम शुरू कर ही रहे थे कि मैं पहुँच गया। एक हवेली का एक कोना तो उन्होंने गिरा दिया था लेकिन मैंने उन्हें इस बुरी तरह से पीटना शुरू किया कि वे सब भाग गये। राजा को पायों की बातें निरी गप्प लग रहीं थीं, अतः वह मन ही मन हँस रहा था। अब चौथा पाया गया। उसने आकर कहा कि आज सबेरे तो अपना राजा भी मर जाएगा। एक नागिन आकर राजा के जूते में छिप जाएगी। सबेरे उठकर जैसे ही राजा जूता पहनेगा, वह उसे काट लेगी और राजा की मृत्यु हो जाएगी। लेकिन एक उपाय है। राजा सबेरे उठते ही जूतों की तरफ न जाए और किसी दूसरे आदमी से अपने जूते मँगवाये तो नागिन राजा के स्थान पर उसे ही काट कर चली जाएगी। अपनी मृत्यु का सन्देश सुनकर राजा को नींद नहीं आई। वह सबेरे उठा और दूसरी तरफ को चला गया। इतने में सामने से एक बूढ़ा चपरासी आता दिखलाई पड़ा। राजा ने उसे जूते लाने का हुक्म दिया। बूढ़ा जूते लाने के लिए गया और जैसे ही उसने जूतों में हाथ डाल कर उन्हें उठाया, नागिन ने बूढ़े को काट लिया। अब राजा को विश्वास हो गया कि रात की सारी बातें सर्वथा सच हैं। उसने महल का कोना खुदवाया तो चुराया हुआ सारा धन मिल गया। तभी किसी ने आकर राजा के मित्र की मृत्यु का समाचार सुनाया। राजा ने उस मकान को स्वयं जाकर देखा कि जिसे पायों के कथनानुसार दूतों ने रात को तोड़-फोड़ दिया था। पायों की सारी बातें सच हुई जानकर राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई और उसने खाती की बेटी को दरबार में बुलवाकर उसका खूब सम्मान किया तथा उसे पलँग की कीमत के अतिरिक्त भारी पुरस्कार दे कर विदा किया।

अब खाती का बेटा पुष्कल धन और बहू को लेकर अपने घर आ गया।

● कविता को मोल

'जसाणे' के ठाकुर सा'ब ने मामराज़ ढाढ़ी की कविता पर खुश होकर

उसे पोशाक के रूप में एक कुर्ता बख्शा। कुर्ता कई वर्षों का पुराना पड़ा हुआ था और पाँच-सात रोज में ही फट गया। मामराज को बड़ा अफसोस हुआ और उसने जाकर ठाकुर सा'ब को खरी-खरी सुनाई :—

कवि अण भाखै कीत देख कै बड़ा दुआरा।
दूहै रोटी दोय, गीत का आना ग्यारा॥
सुण कर दूहो गीत सुरापत होज्या सूरा।
बकसै कपड़ो दान पाँच दिन चालै पूरा॥

अर्थ–: (कविगण ठाकुरों और सरदारों के बड़े दरवाजे देखकर उनकी प्रशंसा में न कहने योग्य बातें भी कहते हैं। लेकिन ठाकुर एक दोहे के लिए दो रोटी और एक गीत के लिए बहुत हुआ तो एक कच्चा रुपया दे देते हैं। सरदार गीत सुन कर बहुत खुश होकर ऐसा कपड़ा दान करते हैं जो पूरे पाँच दिन चलता है)

(ठाकुर साहब बहुत प्रसन्न होते तो अधिक से अधिक एक कच्चा रुपया दे देते जिसकी कीमत ग्यारह आने ही होती थी)

● छिनाळ कुण ?

एक दिन बादशाह ने वज़ीर से पूछा कि छिनाल औरत की क्या पहिचान होती है? वज़ीर ने सादे कपड़े पहने और बादशाह को भी सादे कपड़े पहना दिये। फिर दोनों चौराहे पर जाकर खड़े हो गये। जो भी औरत उधर से गुजरती, वज़ीर कहता कि यह छिनाल है। वह बेचारी सुनकर चुपचाप चली जाती। अन्त में एक औरत आई, वज़ीर ने जैसे ही उसे 'छिनाल' कहा वह जूता निकाल कर गालियाँ देती हुई वज़ीर की ओर लपकी कि तेरी माँ छिनाल, तेरी बहिन छिनाल आदि-आदि। लोगों ने बीच-बचाव किया। तब वज़ीर ने बादशाह से कहा कि यह औरत असल छिनाल है।

(छिनाल की तरह ही 'गोले' की पहिचान बतलाई जाती है।)

● ठाकुर सुजानसिंह

झिरमिर झिरमिर मेवा बरसै, मोरां छतरी छाई ।
कुळ में छै तो आव सुजाणा फोज देवरै आई ।।

औरंगज़ेब की आज्ञा से दराबखां ने एक बड़ी फौज लेकर खंडेले के मंदिर को तोड़ने के लिए चढ़ाई की। खंडेले का राजा बहादुर सिंह भागकर छुप गया। उस वक्त ठाकुर सुजानसिंह जो छापोली के भोजाणी साख में खंडेले के भाई बन्धुओं में थे, विवाह के लिए मारवाड़ गये हुए थे। लौटते समय जब उन्होंने सुना कि खंडेले का मन्दिर तोड़ा जाने वाला है तो उन्होंने नव-वधू का मोह त्याग दिया और काँकड़ डोरड़े सहित अपने साथियों को लेकर वहाँ आ डटे और मन्दिर की रक्षा करने लगे। उनके जीते-जी मन्दिर नहीं टूट सका। मन्दिर की रक्षा में वीरतापूर्वक लड़ते हुए वे वीर-गति को प्राप्त हुए। उनके विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है :—

ढातां मन्दिर सिर दियो, आतां दळ अवरंग ।।
इण बातां सूजो अमर, रायसलोतां रंग ।।

अर्थ—: मन्दिर को गिराने के लिए आई हुई औरंगजेब की सेना का मुकाबला करने में सुजानसिंह ने अपने को वलिदान कर दिया। इससे वह अमर हो गया। रायसल के वंशज धन्य हैं।

● धनजी-भींवजी

जोधपुर के महाराजा अजीतसिहजी ने पाली के ठाकुर मुकुन्दसिंह को राजकार्य के बहाने बुलवाया तो ठाकुर मुकुन्दसिंह दलबल सहित जोधपुर को चले। रास्ते में वे धनजी-भींवजी की ढाणी के समीप विश्राम के लिए ठहरे। धनजी-भींवजी का रेवड़ चर रहा था। मुकुन्दसिंहजी के आदमियों ने रेवड़ में से दो 'खाजरू' (बकरे-बकरियाँ) बलपूर्वक उठा लिये और अपने डेरे में लाकर काट डाले। रक्षा करने वाले ग्वालों को उन्होंने डाँट-डपट कर निकाल दिया। ग्वालों ने यह समाचार जाकर अपने मालिकों

से कहा। वे दोनों आये और वृक्ष पर से कटे हुए 'खाजरू' उतार कर ले चले। जाते समय उन्होंने कहा कि क्षत्रियों के 'खाजरू' खाना आसान नहीं है, जिसकी हिम्मत हो वह सामने आये। उन दोनों का सामना करने की हिम्मत किसी की नहीं हुई, लेकिन जब मुकुन्दसिंह अपने डेरे पर आये तो उन्होंने ठाकुर के कान भरे। पर मुकुन्दसिंह वीर होने के साथ-साथ बुद्धिमान भी थे। वे अपने भृत्यों द्वारा किये गये अपराध के लिए माफी माँगने के लिए खुद धनजी-भींवजी के पास गये और उनसे बातचीत करके उन दोनों वीरों को भी अपने साथ जोधपुर लेते गये। धनजी-भींवजी दोनों मामा-भानजे थे। धनजी गहलोत राजपूत थे और भींवजी 'नाहर चहुवान' थे।

जोधपुर में 'छिपिया' के ठाकुर प्रतापसिंह उक्त ठाकुर मुकुन्दसिंह से वैमनस्य रखते थे और वे ठाकुर मुकुन्दसिंह को मारने की घात में थे लेकिन ठाकुर मुकुन्दसिंह को इस बात का कतई गुमान न था। एक दिन ठाकुर मुकुन्दसिंह बाहर के चौक में काम कर रहे थे कि महाराजा ने इनको याद किया। इधर से प्रतापसिंह महाराजा के पास से बाहर जा रहे थे। 'तासळी' की पोल में दोनों आमने-सामने हुए। ठाकुर मुकुन्दसिंह के पास कोई शस्त्र नहीं था और न वे प्रतापसिंह के इरादे को जानते थे, लेकिन प्रतापसिंह सजग था। उसने मुकुन्दसिंह को वहीं मार डाला और स्वयं पोल में जाकर छुप रहा तथा पोल के कपाट बन्द कर लिये। जब धनजी-भींवजी को इस बात का पता चला तो वे दोनों वीर वहाँ आये। अपने बल से उन्होंने पोल के कपाट तोड़ डाले और पोल के भीतर पहुँचकर उन्होंने प्रतापसिंह को मार डाला। फिर दोनों वीर राजसेना से वीरतापूर्वक लड़कर काम आये। इनकी प्रशंसा में बहुत से दोहे कहे जाते हैं, यथा :—

गढ़ साखी गहलोत, कर साखी पातळ कमध ।
मुकन रुधारी मोत, भली सुधारी भींवड़ा ।।
आजूणी अधरात, महलज रूंनी मुकनरी ।
पातळ री परभात, भली रुवाणी भींवड़ा ।।

पहर एक लग पोलि, जड़ी रही जोधाण री ।
गढ़ में रोला रोलि, भली मचाई भींवड़ा ।।
मुकनूं पूछै बात, 'कहो पातल आया कयां' ।
"सुरगापुर में साथ, भेला मेल्या भीमड़ै ।।"

● हाथी और ऊंदरो

चूहों की एक नगरी थी जिसमें असंख्य चूहे थे और असंख्य ही उनके बिल थे । एक बार हाथियों का झुंड उधर से पानी पीने के लिए गुजरा । चूहों के सरदार ने जाकर हाथियों के सरदार से विनयपूर्वक कहा कि महाराज, यहाँ चूहों की नगरी है, आपके हाथियों के पैरों से रुँद कर सारी नगरी चौपट हो जाएगी, अतः आप कृपा करके अपने झुंड को दूसरी तरफ से ले जाएँ तो बड़ी कृपा होगी । हाथियों के सरदार ने चूहे की बात मान ली और अपने झुंड को दूसरी ओर से लेकर जाने लगा । चूहों के सरदार ने बड़ा आभार माना और हाथियों के सरदार से उसने कहा कि आपने मुझ पर और सारी नगरी पर बड़ी कृपा की है, कभी आवश्यकता पड़े तो मुझे याद करना, मैं भी आपकी यथाशक्ति मदद करूँगा । चूहे की बात सुनकर हाथी को हँसी आ गई ।

एक दिन शिकारियों के जाल से हाथी एक गहरे खड्ड में गिर गया । खड्ड में पड़ जाने के कारण हाथी का बल बेकार हो गया । उसने बहुत चेष्टा की, लेकिन सब व्यर्थ । तब उसे चूहों के सरदार की कही हुई बात याद आई । उसन चूहों के सरदार को याद किया । याद करते ही चूहों का सरदार वहाँ भागा आया । हाथी की दशा देखकर उसने कहा कि मैं अभी अपने साथियों को लेकर आता हूँ और हम सब मिलकर आपको बाहर निकाल लेंगे । चूहे की बात सुनकर हाथी को उस वक्त भी हँसी आये बिना न रही । चूहों का सरदार गया और अपनी सारी प्रजा को वहाँ बुला लाया । सरदार के आदेश के अनुसार, सारे चूहे खड्डे कों धूल से भरने लगे । चूहों के पैरों से इतनी धूल उड़ी कि अँधेरा छा गया । हाथी अपने पैरों से धूल को दबाता हुआ ऊपर उठने लगा । जल्दी ही सारा खड्ड धूल से भर गया

और हाथी ऊपर आ गया। बाहर निकलकर हाथी ने चूहों के सरदार को अपनी सूंड में उठाकर अपने गले लगाया और उसे बहुत धन्यवाद दिया।

● पंगातपुरो

एक सेठ के दो लड़के थे। बड़े का विवाह हो गया था और छोटा अभी अविवाहित था। एक दिन भोजन करते समय देवर ने भाभी से कहा कि आज तो सब्जी में नमक ज्यादा डाल दिया है। इस पर भाभी ने ताना मारा कि जो बढ़िया सब्जी बनाये उसे ले आओ, मैं भी देखूं कैसी बहू लाते हो ? देवर उठ खड़ा हुआ। सेठ ने छोटे लड़के की सगाई करने के लिए जगह जगह आदमी भेजे। उन्होंने कई लड़कियों के फोटो उतरवा कर भेजे। एक लड़की का चित्र बहुत सुन्दर था। सेठ ने सगाई कर ली। संयोग से वह चित्र बड़े भाई की स्त्री के हाथ लग गया, उसने चर्खे का तकुआ गड़ा कर लड़की की एक आँख फोड़ दी और फिर वह चित्र अपने देवर को दिखला दिया। उस बेचारे ने भाभी की चालाकी नहीं समझी और उसका मन भावी पत्नी की ओर से फिर गया।

विवाह हो गया, बहू घर आ गई, लेकिन सेठ का लड़का उसके पास फटकता भी नहीं था। बहू सयानी थी, उसने जान लिया कि किसी ने मेरे पति को बहका दिया है। उसने चार बढ़िया पोशाकें बनवाई, एक हीरों की, एक मोतियों की, एक पन्नों की और एक लालों की। एक दिन वह हीरों की पोशाक पहन कर बाग में सैर करने को गई, वहीं उसका पति भी सैर करने के लिए आया हुआ था। स्त्री के सौन्दर्य को देखकर सेठ का बेटा मोहित हो गया। थोड़ी देर की बातचीत के बाद स्त्री ने चौसर खेलने का प्रस्ताव किया। सेठ के बेटे ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। लड़के ने अपना कंठा दावँ पर लगाया और हार गया। दूसरे दिन फिर वहीं मिलने का वादा करके दोनों चले गये। अब बहू रोजाना नई पोशाक पहनकर बाग में जाने लगी। दूसरे दिन लड़का 'चूड़' हार गया, तीसरे दिन 'कंठी' और चौथे दिन कानों की 'बालियाँ' हार गया। स्त्री ने जब लड़के से फिर अगले दिन आने के

लिए कहा तो उसने उत्तर दिया कि अब शर्त बदने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है, अतः फिर कभी खेलेंगे। लड़की ने कहा कि मैं भी कल अपने नगर को जा रही हूँ। लड़के ने पता माँगा तो लड़की ने कहा कि मेरे नगर का नाम 'पंगातपुरा' है और वह यहाँ से उत्तर दिशा में है। दोनों अलग अलग हो गये।

लड़के को अब उसके बिना चैन नहीं पड़ता था। उसने अपनी माँ से कहा कि मैं कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा हूँ। बहू समझ गई। उसने चार लड्डू बनाये और उनमें कंठा, चूड़, कंठी और बालियाँ डाल दीं। लड़का लड्डू लेकर 'पंगातपुरे' को चल पड़ा। लेकिन 'पंगातपुरा' तो एक कल्पित नाम था। वह दिन भर भटकता रहा लेकिन कहीं 'पंगातपुरे' का अता-पता नहीं चला। शाम को हार कर वह एक तालाब पर बैठ गया। हाथ-मुंह धोकर जैसे ही उसने एक लड्डू को तोड़ा उसमें मोतियों का 'कंठा' निकल आया। अपना 'कंठा' पहिचान कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर उसने शेष तीनों लड्डू भी तोड़ कर देखे, उनमें भी 'चूड़' आदि चीज़ें निकलीं। लड़का घर चला आया। घर आने पर जब उसके सामने सारा रहस्य खुला तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई और वह अपनी पत्नी के साथ आनन्दपूर्वक रहने लगा।

● विमला और विद्याधर

एक ब्राह्मण एक वेश्या के यहाँ जाया करता था। एक रात को वह फूलों की एक माला तथा बढ़िया इत्र की एक फुरेरी लिए वेश्या के यहाँ जा रहा था कि रास्ते में उसका जी मिचलाने लगा और उसके प्राण निकलने लगे। वहीं भगवान् शंकर का एक मन्दिर था। ब्राह्मण ने वे दोनों चीज़ें भगवान् शंकर को अर्पित कर के देह छोड़ दी। उसी पुण्य के प्रभाव से वह दूसरे जन्म में विद्याधर नाम से एक उच्चकोटि का विद्वान् पंडित बना जिसे पिछले जन्मों की बातें भी याद थीं। विद्याधर की ख्याति चारों ओर फैलने लगी। वह भूत-भविष्य की सभी बातें ठीक-ठीक बतला दिया करता था। इतना सब होते

हुए भी घर में खुशी का वातावरण नहीं था, क्योंकि विद्याधर की स्त्री बड़ी कलहकारिणी थी ।

उस नगर के राजा के सिर में बड़ी पीड़ा रहा करती थी । किसी ने कहा कि विद्याधर नामक पंडित को बुलवाकर उससे इसका उपाय पूछना चाहिए । राजा ने विद्याधर को बुलाने के लिए आदमी भेजे । विद्याधर की स्त्री उस समय अपने पति को खरी-खोटी सुना रही थी । राजा का सन्देश सुनकर पंडित ने कहा कि तुम्हारा राजा पिछले जन्म में संन्यासी था । एक दिन वह अर्द्धकपाली (आधा कमंडलु) सिर पर ओढ़े-ओढ़े तपस्या कर रहा था कि उस की मृत्यु हो गई । वह कपाली उसके सिर में ही रह गई । राजा के सिर से वह कपाली निकलवा दो तो राजा की पीड़ा मिट जाएगी । अनुचरों ने जाकर राजा से पंडित की बात कही तो राजा ने कहा कि पंडित जी को आदर के साथ यहाँ ले आओ, वे ही आकर सिर से कपाली निकलवायेंगे । पंडित ने आकर 'कपाली' निकलवा दी और राजा भला-चंगा हो गया । राजा ने पंडित को बहुत पुरस्कार दिया और उसे अपने यहाँ ही रख लिया । अनुचरों ने राजा से यह बात भी कह दी कि पंडित जी की स्त्री बड़ी कलहकारिणी है । राजा ने पंडित से इसका कारण पूछा तो पंडित ने कहा कि एक जन्म में मैं कौवा था और मेरी स्त्री ऊँट थी । ऊँट की पीठ पर एक 'पाखी' पड़ गई थी । मैं नोंच-नोंच कर ऊँट का माँस खाया करता, उसी का बदला यह इस जन्म में मुझ से ले रही है । पाव-आध-पाव जितना माँस मैंने इसके शरीर से खाया है, जब तक यह मेरा उतना माँस नहीं खा लेगी तब तक यह इसी प्रकार करती रहेगी ।

पंडित की बात सुनकर राजा ने विद्याधर की स्त्री को बुलवा कर महल में रानी के पास रख लिया । उसने जर्राह को बुलवा कर पंडित के शरीर से पाव भर खून निकलवाया और उसे रानी को दे दिया । रानी ने उस खून को मिलाकर पंडित की स्त्री के लिए बढ़िया लड्डू बनवाये और उसे नित्य एक-एक करके लड्डू खिलाने लगी । पंडितानी के स्वभाव में दिन-दिन परिवर्तन होने लगा और सारे लड्डू खाते-खाते वह बिल्कुल सीधी हो गई ।

अब वह पंडित की हर तरह से सेवा करती और उसकी हर बात को वेद-वाक्य समझती। उसके बिना अब उसे एक क्षण भी चैन नहीं पड़ता था।

एक दिन रानी का एक भाई मर गया। रानी ने पंडिताइन से कहा कि मेरे भाई की मृत्यु हो गई है और मेरी भौजाई सती होगी सो आज तुम भी मेरे साथ वहाँ चलो। पंडिताइन ने उपेक्षा से कहा कि उँह, काहे की सती होगी ? सती तो मैं तब जानती कि जब पति की मृत्यु का समाचार सुनते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ जाते। रानी को यह बात बहुत बुरी लगी। उसने पंडिताइन से कहा कि ऐसी सती तो तुम ही हो। पंडिताइन ने भी उत्तर दिया कि हाँ मैं तो हूँ ही।

रानी ने यह बात राजा से कही। राजा ने कहा कि कभी मौका आने पर देखा जाएगा। एक दिन पंडित बाहर गया हुआ था। रानी ने चुपचाप पंडित के कपड़े मँगवाये और उन्हें खून में भिगोकर पंडिताइन के पास ले गई और बोली कि आज तो बड़ा गजब हो गया, पंडितजी किसी दूसरे गाँव गये थे सो रास्ते में शेर ने उन्हें मार डाला। पंडिताइन ने कहा 'हें' और इस 'हें' के साथ ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। रानी सन्न रह गई। उसने कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसा हो जाएगा। पंडिताइन का शरीर राजकीय सम्मान के साथ ले जाकर जला दिया गया। जब पंडित आया और उसे सारी बात का पता चला तो वह पागल-सा चिता की ओर भागा। लेकिन अब वहाँ एक राख की ढेरी मात्र थी। पंडित अपनी पत्नी का नाम ले लेकर 'हाय विमला, हाय विमला' करने लगा। सबने उसे बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन इस समझाने-बुझाने का उस पर कोई असर नहीं हुआ।

एक दिन घूमते-घामते वहाँ गुरु गोरखनाथ जी आ पहुँचे। उन्होंने भी अपना आसन वहीं लगा दिया। पंडित की दशा देखकर उन्हें बड़ी दया आई। उन्होंने जान-बूझ कर अपनी 'तूमड़ी' फोड़ डाली और अब वे भी 'हाय तूमड़ी, हाय तूमड़ी' कह-कह कर विलाप करने लगे। अत्यन्त दुखी होने पर भी गोरखनाथ का विलाप देखकर पंडित को हँसी आ गई। उसने गोरखनाथ जी से कहा कि महात्मन् ! इस दो टके की तूमड़ी के लिए आप

क्यों विलाप करते हैं ? आप कहें तो मैं दूसरी 'तूमड़ी' ला देता हूँ । इस पर गोरखनाथ जी ने कहा कि तुम स्त्री के लिए क्यों विलाप करते हो, मेरे साथ चलो, मैं राजा से कह कर तुम्हारी दो शादियाँ करवा देता हूँ । इस पर पंडित बोला कि नहीं मैं तो अपनी 'विमला' को ही लूंगा । तब गुरु गोरखनाथ-जी ने अपने योग का चमत्कार दिखलाया । पंडित के सामने हजारों 'विमलाएं' खड़ी हो गईं । गोरखनाथ जी ने कहा कि ले अब अपनी 'विमला' को पहिचान ले ।

अब पंडित के ज्ञानचक्षु खुल गये और वह वैरागी बनकर शिष्य रूप में गुरु गोरखनाथ के साथ हो लिया ।

● नाई की चतराई

एक नाई एक गाँव से दूसरे गाँव को जा रहा था । रास्ते में जंगल पड़ा । जंगल में एक आदमखोर शेर रहता था । आज संयोग से वह नाई उसके सामने पड़ गया । शेर नाई पर झपटा, लेकिन नाई ने हिम्मत नहीं हारी । उसे एक उपाय सूझा । शेर के झपटते ही नाई ठठाकर हँस पड़ा । नाई की यह नई बात देखकर शेर आश्चर्य में डूब गया । वह सोचने लगा कि मुझे देखकर आदमी तो क्या हाथी भी काँपने लगते हैं , फिर यह नाकुछ आदमी मेरे आगे क्यों हँस रहा है ? शेर ने नाई से पूछा कि तू क्यों हँस रहा है, क्या तुझे प्राणों का भय नहीं ? नाई ने और भी जोर से हँसकर कहा कि प्राणों का भय तो टल गया है । हमारे राजा के कुंअर का पेट दुखता है, राजवैद्य ने दवा के लिए दो सिंहों के कलेजे मँगवाये हैं । राजा ने यह काम मुझे सौंपा है । दो सिंहों के कलेजे ले जाने पर मुझे भारी पुरस्कार मिलेगा, अन्यथा मेरी मृत्यु तो निश्चित ही थी, अब तुम्हारे मिल जाने से वह टल गई है । एक सिंह तो मेरे हाथ पहले ही लग गया था, अब तू दूसरा भी मिल गया । यों कह कर नाई ने अपनी 'रछैनी' में से दर्पण निकाल कर सिह को दिखलाया । शेर ने एक दूसरे क्रोधित शेर को अपने सामने देखा तो उसे नाई की बात का पक्का विश्वास हो गया । वह डर के मारे काँपने लगा । तब नाई ने दर्पण को 'रछैनी' में रख दिया और उस्तुरा निकाल कर शेर के सामने किया ।

धार किया हुआ उस्तुरा दोपहरी की धूप में बिजली की तरह चमक उठा। शेर की आँखें चौंधिया गईं। नाई ने डपट कर कहा कि इसी से तुम दोनों के कलेजे चीर कर निकाले जाएंगे। नाई की बात सुनकर शेर का रहा-सहा धैर्य भी जाता रहा और वह वहाँ से प्राण बचा कर भागा। नाई ने शेर को ललकारते हुए दो एक बार ज़मीन पर पैर पटके कि भागता कहाँ है खड़ा रह, लेकिन शेर ने तो पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा। अब नाई की जान में जान आई और वह बड़ी शीघ्रता से वहाँ से खिसक गया।

● सोन चिड़ी को सूण

एक साहूकार दिसावर से कमा कर आ रहा था। रास्ते में उसे एक आदमी मिला। उसके पास सोन चिड़ी का एक 'सूण' था। साहूकार ने सौ रुपये देकर (शकुन) 'सूण' ले लिया और आगे बढ़ा। आगे बढ़ने पर उसे एक सोनचिड़ी मिली। सोनचिड़ी उसके साथ हो ली। अब दोनों आगे बढ़े तो उन्होंने देखा कि कीचड़ में एक मेंढ़क फँसा हुआ है। सोनचिड़ी के कहने पर साहुकार ने मेंढ़क को निकाल दिया। कुछ दूर जाने पर उन्होंने देखा कि एक शेर दलदल में फँसा हुआ है। सोनचिड़ी के कहने पर साहूकार ने उसे भी निकाल दिया। अब वे एक नगर में पहुँचे। सोनचिड़ी एक सुन्दर स्त्री बन गई और उसने साहूकार से कहा कि तुम जाकर राजा के यहाँ नौकरी करो, लेकिन लाख टके रोज से कम मत लेना। राजा ने कोई बड़ा गुणी समझ कर लाख टके रोज पर उसे नौकर रख लिया। लेकिन सारे दरबारी उससे जलने लगे।

एक दिन राजा शिकार खेलने के लिए जंगल में गया तो उसके हाथ की अँगूठी कालेनाग की बाँबी में जा गिरी। राजा ने अपने दरबारियों से कहा कि मेरी अँगूठी बाँबी में से निकाल कर लाओ। दरबारियों ने कहा कि हुजूर 'लखटकिया' रोज़ के लाख टके लेता है, वही यह काम करेगा। तब राजा ने लखटकिया को अँगूठी लाने का हुक्म दिया। लखटकिया घर गया तो उसकी स्त्री ने कहा कि तुम उस मेंढ़क के पास जाओ, वह

तुम्हें अँगूठी ला देगा । साहूकार ने जाकर मेंढ़क से कहा और मेंढ़क ने बाँबी में घुस कर अँगूठी ला दी । लख-टकिया की सफलता पर सारे दरवारी और भी जल उठे ।

एक दिन राजा के पेट में बड़ा दर्द होने लगा । वैद्यों ने कहा कि सिंहनी का दूध पीने से ही दर्द जाएगा । दरबारियों के कहने पर राजा ने फिर लखटकिये को भेजा । लखटकिया अपनी स्त्री के कहने पर उसी सिंह के पास गया । उसने सिंहनी का दूध साहूकार को ला दिया । राजा ने प्रसन्न होकर लख-टकिये को और भी अधिक पुरस्कार दिया । सारे दरबारी अब उसे किसी प्रकार मारने की चेष्टा करने लगे ।

राजा की नाइन लखटकिये के घर उसकी स्त्री का सिर 'गूंथने' के लिए जाया करती थी । लखटकिये की स्त्री के बाल सोने के थे और वह नाइन को सोने चाँदी के 'आखों' का थाल भर कर दिया करती थी । दरबारियों ने नाई को लालच देकर लख-टकिये को मारने की योजना बनाई । एक दिन अवसर पाकर नाई ने राजा से कहा कि अन्नदाता, आपके माता-पिता को गुजरे कई वर्ष हो गये, आपने कभी उनका हाल-चाल ही नहीं पुछवाया, भला वे क्या समझते होंगे ? आपके पास 'लखटकिये' जैसा होशियार आदमी है, वह वहुत शीघ्र आपके पिताजी और माताजी की खबर ले कर आ जाएगा । राजा को यह बात जँच गई । दूसरे दिन दरबार में आते ही उसने लखटकिये को हुक्म दिया कि वह स्वर्ग में जा कर स्वर्गीय महराजा और राजमाता की खबर लाये । लखटकिया उदास मुंह लेकर घर आया । उसकी स्त्री ने कहा कि तुम चिन्ता मत करो, मैं सारा काम स्वयं ही पटा दूंगी । उसने चुपचाप अपने पति को एक कमरे में बन्द कर दिया और कहा कि तुम सात आठ मास इसी कमरे में रहो । रहने के लिए कमरे में ही सारी व्यवस्था कर दी गई ।

तब लखटकिये की स्त्री (सोनचिड़ी) लखटकिये का वेष बना कर उस स्थल पर पहुँची जहाँ नाई ने लखटकिये को स्वर्ग भेजने की सारी तैयारी कर रखी थी । झोंपड़ी के आकार की एक बड़ी चिता

बनाई गई थी और उसे बहुत अच्छी तरह से सजाया गया था। चिता में कई मोरियाँ बनाई गई थीं। राजा समेत सारा नगर वहाँ इकट्ठा हो रहा था, नगाड़े बज रहे थे। लखटकिये को उस झोंपड़े में भेज दिया गया और उसमें आग लगा दी गई। 'लखटकिया' (जो वास्तव में सोन-चड़ी ही थी) सोनचिड़ी बन कर मोरी में से बाहर निकल कर अपने घर आ गया और उसने घर आ कर फिर लखटकिये की स्त्री का रूप बना लिया।

आठ-दस महीने गुज़र जाने के बाद एक दिन लख टकिये की स्त्री ने अपने पति को बाहर निकाला। उसके केश और नख बहुत बढ़ गये थे और वह सहसा ही पहिचाना नहीं जा सकता था। उसकी स्त्री ने अपने पति को सारी बात समझाई और उसे दरबार में भेज दिया। उसे देखते ही सारे दरबार में एक प्रकार का सन्नाटा-सा छा गया। लख-टकिया सीधा राजा के पास गया और नमस्कार करके बोला कि हुजूर को याद होगा कि इस सेवक को कई मास पहले स्वर्ग भेजा गया था। मैं बड़े महाराजा साहब और महारानी जी से मिलकर आ रहा हूँ। तब राजा ने उसे पह-चाना और उत्सुकता पूर्वक अपने माँ-बाप के समाचार पूछने लगा। लख-टकिये ने कहा कि हुज़ूर, वहाँ और तो सब आनन्द हैं, किसी प्रकार की कमी नहीं, लेकिन वहाँ नाई और नाईन नहीं हैं, आपके पिताजी के बाल धरती को छूने लगे हैं और माताजी का सिर भी यहाँ से जाने के बाद कभी गूंथा नहीं गया। अत: आपके पिताजी ने हुक्म दिया है कि अपने नाई और नाइन को जाते ही भेज देना। थोड़े से दिनों में ही मेरे बाल और नख इतने बढ़ गये हैं सो आप कल्पना कर सकते हैं कि उनके बाल और नख कितने बढ़े होंगे? माता-पिता के कष्ट को समझकर राजा ने उसी समय हुक्म दिया कि हमारे नाई और नाइन को शीघ्र स्वर्ग भेजा जाए।

स्वर्ग जाने की तरकीब पहले आजमाई हुई थी ही। मैदान में उसी तरह की दो चिताएँ बनाई गईं। सारा नगर इकट्ठा हो गया, नगाड़े बजने लगे। नाई और नाइन को नये कपड़े पहना कर स्वर्ग भेज दिया गया।

घर आने पर लखटकिये की स्त्री ने अपने पति से कहा कि अब यहाँ रहना उचित नहीं है। दोनों वहाँ से चल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर स्त्री 'सोनचिड़ी' बन कर एक वृक्ष पर जा बैठी। उसने 'साहूकार' से कहा कि मेरा 'सूण' पूरा हो गया, अब तुम अपने घर जाओ। यों कह कर सोनचिड़ी उड़ गई और साहूकार अपने घर को चल पड़ा।

● कफन चोर फकीर

एक मुसलमान औरत बड़ी नेक-नीयत और भली स्त्री थी। न कभी वह झूठ बोलती, न चोरी करती। उसी गाँव में एक फकीर रहता था। वह कब्र खोद कर मुर्दों के कफन निकाला करता था। उस औरत ने कहा कि भले आदमी, मैं तुम्हें उतना कपड़ा पहले ही दे देती हूँ। मरने पर मेरी कब्र न खोदना। फकीर ने उसकी बात मान ली तो उस स्त्री ने फकीर को उतना कपड़ा दे दिया।

लेकिन उस औरत के मरने पर फकीर अपनी आदत के अनुसार कब्र खोदने लगा तो उसने देखा कि वह औरत फूलों के झूले में झूल रही है और हर तरह के ऐश-आराम का सामान उसके चारों ओर जमा है। लेकिन फकीर ने देखा कि उस औरत के गाल पर एक जख्म हो रहा है। उसने औरत से पूछा कि यह जख्म काहे का है तो उसने ठंढी साँस भर कर कहा कि मैंने अपनी दाढ़ कुरेदने के लिए मालिक से बिना पूछे उसकी बाड़ का एक कांटा तोड़ लिया था, उसी कांटे ने नाग बनकर मेरे गाल पर डस लिया। औरत की बात सुनकर फकीर की आँखें खुल गईं। उसी क्षण से उसने अपना यह घृणित कार्य त्याग दिया और खुदा की इबादत में लग गया।

● हाथी सें बदळो

एक चिड़िया ने एक छोटे वृक्ष पर अपना घोंसला बनाया और उसमें अंडे दे दिये। समय पाकर अंडों में से छोटे-छोटे गुलाबी बच्चे निकले। बच्चे अभी बहुत छोटे ही थे कि एक दिन एक मस्त हाथी उधर आ निकला--

हाथी ने वृक्ष को अपनी सूंड की लपेट में ले लिया। चिड़िया ने हाथी से बहुत विनय की, लेकिन हाथी ने चिड़िया की एक न सुनी और वृक्ष को जड़ से उखाड़ कर ज़मीन पर पटक दिया। चिड़िया के बच्चे हाथी के पैर के नीचे आ कर पिस गये। चिड़िया को बहुत दुःख हुआ। वह चिड़े को साथ ले कर हाथी से बदला लेने के लिए अपने दोस्तों के पास गई। एक मच्छर, एक मेंढ़क और एक कठफोड़वा उनके दोस्त थे। चिड़ी और चिड़े ने अपनी कष्ट-गाथा अपने मित्रों को सुनाई। उन तीनों ने चिड़ी और चिड़े को ढाढस बँधाया और सबने मिलकर हाथी से बदला लेने की योजना बनाई।

मस्त हाथी झूमता हुआ चला जा रहा था। मच्छर उसके कान में घुस गया और भन-भन करके गाने लगा। हाथी गाना सुनकर मोहित हो गया और अपनी सूंड ऊपर उठा कर गाने का आनन्द लेने लगा। जब हाथी गाना सुनने में तल्लीन हो गया तो कठफोड़वे ने अपनी चोंच से हाथी की दोनों आँखें फोड़ डालीं। चिड़ी और चिड़े ने आक का दूध अपनी चोंचों में भर कर हाथी की दोनों आँखों में डाल दिया। हाथी की आँखों में बड़ी जलन होने लगी और वह पीड़ा से कराहता हुआ सरोवर की तलाश में भाग पड़ा। अन्धा हो जाने के कारण वह कभी-एक वृक्ष से टकरा जाता था कभी दूसरे वृक्ष से। गिरता-पड़ता वह किसी कदर भागा जा रहा था। मेंढ़क ने भी अपनी तैयारी पूरी कर रखी थी। वह एक बड़े और गहरे खड्ड में बैठा हाथी के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। हाथी को देख कर वह टर्र-टर्र करने लगा। हाथी ने सोचा कि तालाब आ गया है। वह मेंढ़क की आवाज़ को लक्ष्य करके उधर ही दौड़ा और धड़ाम से खड्ड में जा गिरा। मेंढ़क दूर भाग गया। हाथी की हड्डी पसली टूट गई और वह वहीं पड़ा-पड़ा कराहने लगा। तभी चिड़े और चिड़ी ने आकर हाथी से कहा कि हमने तुम से बहुत प्रार्थना की थी, लेकिन तुम अपनी शक्ति के जोश में थे, हमने तुमसे बदला ले लिया। अब यहीं पड़े-पड़े अपनी करनी का फल भोगो।

● लाल को मोल

एक जाट अपना खेत जोत रहा था। खेत जोतते समय उसे बहुमूल्य लालों की एक हँडिया मिली। जाट ने सोचा कि ये पत्थर हैं। 'डूंचे' पर खड़ा होकर वह पक्षियों को उड़ाने लगा और उसने अपने 'गोफिये' से सारे लाल पक्षियों के पीछे फेंक दिये, सिर्फ एक लाल बच रहा। जाटनी छाक ले कर आई। जाट के छोटे बच्चे ने वह लाल अपने हाथ में ले लिया और उससे खेलने लगा। जाट ने सोचा कि वह 'पत्थर' भी पक्षियों के पीछे फेंका जाए, लेकिन जाटनी ने मना करते हुए कहा कि इतने सारे पत्थर तो तुमने फेंक ही दिये हैं, बच्चे के हाथ का पत्थर भी क्यों छीनते हो ? जाट मान गया। जाटनी बच्चे को ले कर घर आगई। घर में उस दिन नमक नहीं था और जाटनी के पास नमक लाने के लिए पैसा भी नहीं था, अतः वह उस सुन्दर पत्थर को ले कर एक दुकान पर गई और उसने बनिये से कहा कि मुझे एक पैसे का नमक दो और यह पत्थर रख लो। मैं कभी पैसा दे जाऊँगी और अपना पत्थर ले जाऊंगी। बनिये ने नमक दे दिया। उस समय बनिये के पास एक जौहरी बैठा हुआ था। उसने जान लिया कि यह लाल बहुत कीमती है। उसने जाटनी का पता ठिकाना पूछ लिया और बनिये को पैसा दे कर वह लाल उससे ले लिया। जौहरी ने शहर में आकर उस लाल को बेच दिया और उस के जितने रुपये मिले वह सब लाकर जाटनी को दे दिये और उससे कहा दिया कि यह तेरे लाल की कीमत है।

आषाढ़ से लेकर कार्तिक तक जाट अपने खेत में ही रहा करता था, जाटनी उसे वहीं छाक दे आया करती। जाटनी के पास रुपये आ गये तो उसने एक अच्छा मकान बनवा लिया और उसे हर तरह की सामग्रियों से भर दिया। जाटनी अब खूब ठाट-बाट से रहने लगी। दीवाली आई तो जाटनी ने जाट से कहा कि आज तो दीवाली है, घर चले चलो। जाट घर आया तो उसने सारा ही नक्शा बदला हुआ देखा। उसने जाटनी से कड़े स्वर में पूछा कि यह सब क्या है, कैसे हो गया ? क्या तू ने किसी की

रकम मार ली है ? जाटनी ने सारा रहस्य खोला तो जाट सिर पकड़ कर बैठ गया। वह अफसोस करने लगा कि एक लाल की यह माया है तो उतने लालों से तो न जाने मैं क्या से क्या हो जाता ? अफसोस करते-करते जब उसे बहुत देर हो गई तो जाटनी ने अपने पति को समझाते हुए कहा कि अब इस प्रकार सोच करने से क्या फायदा है ? जो गया सो गया, अब जो शेष है इसका तो आनन्द लो, इसका मजा भी क्यों खोते हो ?

[इसी कथानाक को संत लोग मनुष्य जीवन पर घटाया करते हैं कि हमारा हर श्वास एक कीमती लाल है। जितने लाल हमने अनजाने खो दिये, वे तो खो दिये, लेकिन जब हम इसकी कीमत जान गए तब तो इसका सदुपयोग करना चाहिए।]

● रोजीना तीन सौ कमाऊँ

एक जाट का ऊँट मर गया तो वह बेकार हो गया। न वह शहर से बोझ ढो कर मजदूरी कर सकता था न खेती कर सकता था। अब वह बिल्कुल निश्चिन्त होकर छैल-छबीला बना आवारा घूमा करता। पास के शहर में एक सेठ के यहाँ उसका आना-जाना था। एक दिन सेठ ने उससे पूछा कि चौधरी, आजकल तो बहुत छैल-चिकनिया बना रहता है, क्या बात है ? जाट ने कहा कि सेठजी आजकल तीन सौ रुपये रोज कमाता हूँ। सेठ ने आश्चर्य से पूछा कि कैसे ? जाट ने बड़ी तत्परता से उत्तर दिया कि मेरा ऊँट मर गया है, जो वास्तव में दो सौ रुपये का था, लेकिन आजकल जो भी कोई पूछता है, मैं कहता हूँ कि मेरा पाँच सौ रुपये का ऊँट था। इस प्रकार आजकल तीन सौ रुपये नित्य कमाता हूँ ।

● तेरो बी ब्याह होग्यो दीखै ?

एक ग्वाला नित्य जंगल में भेड़-बकरियाँ चराने जाया करता था। घर वाले उसका विवाह करना चाहते थे, लेकिन वह विवाह का नाम सुनते ही बिदकता था। उसने विवाह का नाम तो अवश्य सुना था, लेकिन वास्तव में उसे पता नहीं था कि विवाह क्या होता है।

घरवालों ने उसका बलपूर्वक विवाह कर दिया और बहू भी बड़ी कर्कशा आई। वह उस बेचारे को नित्य तंग किया करती, कभी कहती यह ला, कभी कहती वह ला, कभी कहती यह कर, कभी कहती वह कर। एक दिन परेशान होकर वह जंगल में निकल गया। जंगल में एक भेड़ अपने 'रेवड़' से बिछुड़ गई थी। वह काँटों के एक झाड़ में उलझ गई और वहाँ से निकल नहीं सकी। भूख-प्यास से व्याकुल वह उस झाड़ में उलझी बैठी थी। ग्वाले को आते देख भेड़ ने अपनी आवाज़ में उसे सहायता के लिए पुकारा। ग्वाला वहाँ गया तो भेड़ बोली 'म्याँ'। ग्वाले ने भेड़ को अत्यन्त व्याकुल देखकर संवेदना के स्वर में कहा "मालूम होता है कि इस बार तुम्हारा भी 'विवाह' होगया है।"

● अरजन को पिराछट

एक बार अर्जुन और श्रीकृष्ण रथ में बैठे कहीं जा रहे थे। उसी समय एक ब्राह्मण अपने खेत से सिट्टों का गट्ठर बाँध कर लिये जा रहा था। गट्ठर में से दो सिट्टे खिसक कर धरती पर गिर पड़े तो अर्जुन ने अपने रथ के घोड़ों को वे सिट्टे खिला दिये। इस पर भगवान् कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि तुमने ब्राह्मण से बिना पूछे सिट्टे लेकर घोड़ों को खिला दिये, इसका प्रायश्चित्त करो। श्री कृष्ण के कहने के अनुसार अर्जुन उस ब्राह्मण के घर गया। घर में ब्राह्मण और ब्राह्मणी दो प्राणी थे। अर्जुन उनके यहाँ रह कर उन दोनों की सेवा करने लगा। उनके कोई संतान न थी, इसलिए वे अर्जुन को पुत्रवत् मानने लगे। अब ब्राह्मण की जगह अर्जुन भिक्षाटन के लिए जाने लगा। भिक्षा भी अब अधिक मिलने लगी। भिक्षा में से जो अनाज बच रहता उसको ब्राह्मण-ब्राह्मणी दान कर दिया करते। अर्जुन ने ब्राह्मणी से कहा कि माताजी, इसमें से कुछ अनाज बचाकर रखना चाहिए, जब खेती की ऋतु आयेगी तो मैं खेत जोतूंगा। ब्राह्मणी अब कुछ बचाने लगी और वर्षा-ऋतु के आते आते उसके पास कुछ पैसे इकट्ठे हो गये। अर्जुन उन पैसों से कुछ अनाज खरीद लाया और खेत को चल पड़ा। सारा अनाज उसने गायों को खिला दिया और स्वयं खेत में जाकर लेट

रहा। और सब लोग हल चलाते, अर्जुन सोया रहता। दूसरे लोग अर्जुन की माँ (ब्राह्मणी) से कहते कि अर्जुन तो दिन भर खेत में सोया रहता है। ब्राह्मणी अर्जुन से कहती तो वह उत्तर देता कि तुम चिन्ता न करो, खेती तैयार हो रही है। मैं औरों से अधिक ही तुम्हें ला दूंगा। खेती पक गयी और लोग अनाज निकाल-निकाल कर घर लाने लगे तो अर्जुन ने एक दिन अपना खेत खोदा। खेत में से ढ़ेर के ढ़ेर हीरे-मोती निकले। अर्जुन ने लाकर वे ब्राह्मण और ब्राह्मणी को दे दिए। दोनों निहाल हो गये। अर्जुन पर अब उनका स्नेह और भी अधिक हो गया।

कुम्भ का पर्व आया तो गाँव के लोग गंगा-स्नान के लिए चले। अर्जुन की माँ ने अर्जुन से कहा कि बेटा, मैं भी गंगा-स्नान करना चाहती हूं। अर्जुन ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हें गंगा-स्नान अवश्य करा लाऊँगा, जिन्हें जल्दी है उन्हें जाने दो। सब लोग चले गए। जब पर्व के तीन दिन बाकी रहे तो अर्जुन ने ब्राह्मणी से कहा कि माँ आओ तुम्हें भी गंगा-स्नान करा लाऊँ। ब्राह्मणी अर्जुन के साथ हो ली। दूसरे दिन सवेरे तक वे गाँव से पाँच कोस पहुँच गए। अर्जुन ने वहीं गंगाजी का आवाहन करते हुए कहा कि हे गंगा माई, यदि मैंने मन-वचन और कर्म से ब्राह्मण और ब्राह्मणी की सेवा की है तो तू यहीं प्रकट हो जा। तत्काल ही गंगाजी वहाँ प्रकट हो गई। ब्राह्मणी ने खूब स्नान किया और गंगाजी ने नारी रूप में प्रकट हो कर ब्राह्मणी को बहुमूल्य गहने और कपड़े दिये। अर्जुन ब्राह्मणी को स्नान करवा के घर को लौट चला। गाँव के सब लोग आश्चर्य में डूब गये कि सबको महीने भर से अधिक हो गया और अर्जुन दो दिन में अपनी माँ को गंगा-स्नान करा लाया। गंगाजी द्वारा दिये गये गहने-कपड़ों को देखकर स्त्रियाँ कहने लगीं कि वास्तव में गंगा-स्नान तो ब्राह्मणी ने ही किया है।

गंगा स्नान करवाने के बाद अर्जुन ने सोचा कि अब मेरे पाप का प्रायश्चित्त हो गया है, अतः वह भगवान् श्रीकृष्ण के पास चला गया। अर्जुन को न देख कर ब्राह्मण-ब्राह्मणी छाती पीट-पीट कर और 'हाय अर्जुन,

हाय अर्जुन' कह के विलाप करने लगे। भगवान् कृष्ण ने अर्जुन से पूछा कि तू ब्राह्मण-ब्राह्मणी को ढ़ाढ़स देकर और समझा-बुझा कर आया है कि नहीं ? अर्जुन ने कहा कि मैं तो ऐसे ही चला आया। तब भगवान् के कहने पर अर्जुन फिर वहाँ गया। जाकर उसने देखा तो ब्राह्मण-ब्राह्मणी औंधे मुंह पड़े हैं। अर्जुन ने सारा प्रसंग बतलाकर उन दोनों को समझाया कि यों तो ब्राह्मण-ब्राह्मणी होने के नाते तुम मेरे माता-पिता ही हो, लेकिन वास्तव में मैंने दो सिट्टे ब्राह्मण को बिना पूछे अपने घोड़ों को खिला दिये थे, मैं उसी पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए यहाँ आया था। अब तुम अपने घर में रहो और मैं अपने स्थान को जाता हूँ।

● कायथ की खोपरी

अच्छी वर्षा हो गई तो गाँव के सारे लोग हल ले-ले कर अपने खेतों को चले। एक जाट जब अपने खेत को जा रहा था, तो राह में पड़ी एक खोपड़ी को उसके पैर की ठोकर लगी। खोपड़ी ने हँस कर कहा कि इस साल तो बड़ा अकाल पड़ेगा, तुम लोग व्यर्थ ही खेतों की ओर भागे जा रहे हो। खोपड़ी को बोलते देख कर जाट को विश्वास हो गया कि इस साल तो अकाल ही पड़ेगा। वह सारा सामान ले कर घर लौट आया और खेती का विचार उसने सर्वथा ही त्याग दिया। सब लोगों ने उसे बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन वह यही कहता रहा कि इस वर्ष तो अकाल ही पड़ेगा। कुछ दिन बाद फिर वर्षा हो गई। लोग-बाग 'निनाण' करने लगे तो वह जाट फिर खोपड़ी के पास गया और बोला कि इस साल तो फसल अच्छी होती दिखलाई पड़ती है। लेकिन खोपड़ी ने उसे फिर विश्वास दिलाया कि नहीं, अकाल ही पड़ेगा। कुछ दिनों बाद लोग 'मतीरे-सिट्टे' आदि लाने लगे तो जाट फिर खोपड़ी के पास गया। खोपड़ी ने कहा 'मतीरों और काचरों' से क्या होता है ? खेती खूब अच्छी पक गई तो जाट फिर खोपड़ी के पास गया। खोपड़ी ने कहा क्या पकी-पकाई खेती नष्ट नहीं होती ? ये लोग जब अनाज ले जा कर 'कुठलों' में भरें तब देखना, मैंने जो कह दिया कि इस साल अकाल

पड़ेगा तो अकाल ही पड़ेगा। जाट फिर अपने घर आ गया। और सालों की अपेक्षा इस साल बहुत अधिक अनाज हुआ और लोगों ने अनाज ला-ला कर अपने घर भर लिये। तब वह जाट झुंझलाता हुआ फिर उस खोपड़ी के पास गया और बोला कि इस साल तो अनाज बहुत अच्छा हुआ है। तूने तो मुझे डूबो दिया। न मैं तेरी बातों में आता और न यों कोरा रहता। इस पर खोपड़ी ने फिर हँस कर कहा कि यदि हमारे में ही गुण होता तो यों ठोकरें खाती क्यों रुलतीं? जाट अपना सा मुंह ले कर घर आ गया।

● स्याणो ऊँदरो

एक बिल्ली ने चूहे के बिल के पास जा कर चूहे से पुकार कर कहा:—

इस बिल केरा ऊँदरा, इस बिल में आज्याय।
लाख टका दूं रोकड़ा, बैठो बैठो खाय॥

(बिल के चूहे, यदि तू इस बिल को छोड़ कर दूसरे बिल में आ जाए तो तुझे नकद लाख टके दूंगी, सो बैठे बैठे आराम से खाना।)

लेकिन चूहा बिल्ली के मर्म को समझ गया। उसने बिल के अन्दर से ही उत्तर दिया:—

भूं थोड़ी भाड़ो घणो, जीवन जोखा माँय।
बीच माँहि गटको हुवै, लाख टका कुण खाय?

(जमीन थोड़ी है और तुम किराया अधिक दे रही हो। सच तो यह है कि मेरा जीवन जोखिम में है, बिल से निकलते ही तुम मुझे गटक जाओगी, फिर भला लाख टके कौन खायेगा?)

चूहे का रूखा उत्तर पाकर बिल्ली अपना-सा मुंह लेकर चली गई।

● करी जिसी पाई

एक राजा अकसर आने-जाने वालों से पूछा करता था कि मैंने अपने पूर्व जन्म में ऐसा कौन-सा पुण्य किया था कि जिसके फल से मैं राजा बना।

लेकिन राजा को कोई संतोषप्रद उत्तर कभी नहीं मिला। एक दिन एक साधु राजा के पास आया। राजा ने उससे भी वही प्रश्न किया। साधु ने राजा से कहा कि तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें इसका उत्तर दूँगा। राजा साधु के साथ चल दिया। चलते-चलते वे दोनों एक साधु की कुटिया में पहुँचे, वह साधु कोयले खा रहा था। राजा ने उससे अपना प्रश्न पूछा तो वह बोला कि मेरे से बड़ा साधु फलाँ जगह तपस्या कर रहा है, तुम दोनों वहाँ जाओ, वह तुम्हें उत्तर देगा। दोनों वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि दूसरा साधु 'भोभर' (गरम राख जिसमें जलती चिनगारियाँ भी मिली होती हैं) खा रहा है। साधु ने प्रश्न सुनकर उन दोनों को तीसरे साधु के पास जाने को कहा। तीसरा साधु 'खीरें' (अंगारे) खा रहा था। प्रश्न सुनकर तीसरे साधु ने राजा से कहा कि तुम और हम तीनों साधु पूर्वजन्म में भाई थे। घर में बहुत घाटा था। एक दिन एक महात्मा भिक्षा के लिए आया। एक भाई ने (पहले साधु) महात्मा से कहा कि रोटियों के बदले कोयले खा, दूसरे ने कहा कि 'भोभर' खा और मैंने कहा कि रोटियों के बदले अंगारे खा। महात्मा ने हम तीनों से कहा कि ऐसा ही होगा। लेकिन तुमने अपने पास की दोनों रोटियाँ महात्मा को दे दीं। महात्मा तुम्हें आशीर्वाद देकर चला गया। उन्हीं दोनों रोटियों के पुण्य से तुम इस जन्म में राजा बने हो और हम तीनों ने जैसा कहा था वैसा भुगत रहे हैं। हमने जैसा किया वैसा पा रहे हैं, लेकिन अगला जन्म तो सुधरे, इसलिए तपस्या कर रहे हैं। राजा को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया और वह अपने नगर को लौट आया।

● हणमानजी और सिन्दूर

एक दिन हनुमानजी ने श्रीरामचन्द्रजी से प्रश्न किया कि प्रभो, आप को सीताजी इतनी प्रिय क्यों हैं ? श्रीरामजी ने सीताजी की माँग में भरे हुए सिंदूर की ओर इशारा करते हुए कहा कि सीताजी अपनी माँग में सिंदूर भरती हैं (सौभाग्यचिह्नस्वरूप मुझे ही अपना सर्वस्व मानती हैं).

इसलिए वह मुझे सर्वाधिक प्रिय लगती हैं। दूसरे दिन हनुमानजी अपने सारे शरीर में खूब सिंदूर पोत कर श्रीरामजी के पास गए। रामजी को यह देख कर हँसी आ गई, लेकिन अपने में हनुमानजी की अत्यन्त अनुरक्ति देखकर भगवान् बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने हनुमानजी को वरदान दिया कि आज से तुम मुझे अत्यन्त प्रिय रहोगे तथा जो भी तुम्हें सिंदूर चढ़ाएगा वह भी मुझे बहुत प्रिय होगा।

● आज तो मारूजी का नैण राता ?

एक चमार गाँव के ठाकुर के यहाँ काम-धन्धा करने के लिए जाया करता था। एक दिन चमार के माँगने पर ठाकुर ने उसे कुछ शराब दे दी। शराब पी कर चमार नशे में झूमता हुआ घर की ओर चला। चमारी ने चमार के डगमगाते कदमों को देखकर चमार से कहा "आज तो मारूजी का नैण राता ?" चमार ने भी तुक मिलाते हुए उत्तर दिया "दारूड़ी पीई ये मेरी माता"। जब चमार ने नशे में अपनी स्त्री को माता बना लिया तो उसने फिर प्रश्न किया, 'कठै पीई रे मेरा जामी?" इस पर चमार ने कहा कि "रावलै पीई ये मेरी मामी।" चमारी ने फिर पूछा 'कुण प्याई रे मेरा सूवा ?" चमार ने नशे में झूमते हुए उत्तर दिया "ठाकर प्याई ये मेरी भूवा।"

● ठाकर अर डूम

एक ठाकुर शाम को अपनी 'कोटड़ी' के आगे हुक्का लगा कर बैठता तो एक 'डोम' हमेशा "चिलम का पान" लेने के लिए आ जाया करता। ठाकुर उसको एक 'पान' (चिलम में भर कर एक बार पीने योग्य तम्बाकू) दे दिया करता। डोम इधर-उधर की बातें करके चला जाता। एक दिन ठाकुर का मूड बिगड़ा हुआ था, उसने डोम को पान नहीं दिया। डोम ने कहा, 'ठाकरां थे पीवो म्हे तरसां' ?इस पर ठाकुर ने कह दिया "नित नित कठैऊं बरसां ?" बहुत आरजू-मिन्नत करने पर भी जब ठाकुर ने 'पान' नहीं दिया तो डोम को भी तैश आ गया ?उसने कहा—

मांग्या मिलज्या कड़ा बाँकड़ा,
माँगी मिलज्या घोड़ी ।
बेईमान बदकार राँघड़ा,
एक पान बेई तोड़ी ।

डोम की बात सुन कर ठाकुर शर्मिन्दा हो गया और उसने पान दे कर डोम को पार किया ।

● भगवान सब चोखी करै

एक गाँव में एक साहूकार अपने बेटे और बहू के सहित रहता था। पहले वह मालदार था, लेकिन धीरे-धीरे ऐसी स्थिति में पहुँच गया कि अब वह अपने घर की मरम्मत भी नहीं करवा सकता था। एक छोटी-सी दूकान पर साधारण कारोबार करके किसी तरह अपना काम चलाता था। एक दिन उसके मकान की एक दीवार गिर पड़ी। बेटे ने बाप से जा कर कहा तो बाप बोला कि भगवान जो करता है अच्छा ही करता है। फिर एक रात को उसके घर में चोर घुसे और आँगन में से अनाज का 'खास' खोद कर ले गये। लड़के ने अपने बाप से कहा तो बाप ने वही बात दोहरा दी कि भगवान जो करता है अच्छा ही करता है। लड़का फिर चुप रह गया। एक दिन अकस्मात् लड़के की बहू मर गई। लड़के ने अपने बाप को यह दुःखद संवाद सुनाया तो उसके बाप ने कहा कि भगवान जो करता है अच्छा ही करता है। लड़के को अपने बाप की बात सुन कर बहुत रंज हुआ, लेकिन वह कुछ नहीं बोला।

कुछ दिन पश्चात्, उस इलाके में भगदड़ मची और लोग इधर-उधर भागने लगे। साहूकार के लड़के ने अपने बाप से कहा कि हम भी कहीं अन्यत्र भाग चलें। लेकिन उसके बाप ने कहा कि भगवान सब अच्छी करेगा, भाग कर कहाँ जाएंगे? लोग-बाग घोड़ों, बैलों, ऊंटों और गायों पर अपना कीमती सामान लाद-लाद कर इधर-उधर भाग रहे थे। संयोग से मोहरों से भरा एक खच्चर रात को भटक कर सेठ के घर की तरफ

आ निकला । सेठ के घर की दीवार तो गिरी हुई थी ही, खच्चर घर में घुस गया और जहाँ से चोरों ने जमीन खोदकर 'खास' निकाला था उस गड्ढे में जा गिरा । सबेरे सेठ के बेटे ने मोहरों से लदे खच्चर को खास में पड़ा देखा । उसने अपने बाप को सूचना दी तो बाप ने कहा कि भगवान जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है । बेटे के पूछने पर बाप ने उसे समझाया कि यदि घर की दीवार न गिरती तो खच्चर घर में न घुसता और यदि चोर गड्ढा नहीं खोदते तो खच्चर घर में आकर भी वापिस निकल जाता । और यदि तुम्हारी बहू न मरती तो वह हमें अब तक यहाँ कदापि न टिकने देती, और लोगों के साथ हमें भी यहाँ से भागना पड़ता और हम इतने द्रव्य से वंचित रह जाते । उस दिन तुम्हें मेरी बात बुरी लगी होगी, लेकिन आज तुम्हें मालूम हो गया होगा कि भगवान जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है; अब तुम चाहो तो एक की जगह दो बहू ला सकते हो ।

● हाँसी में फाँसी

एक सेठ के घर में बहुत घाटा हो गया । सेठ अपनी स्त्री और छोटे बच्चे के साथ किसी तरह अपने दिन काट रहा था । एक दिन उसकी स्त्री ने कहा कि ऐसे किस तरह काम चलेगा ? कुछ दिन मेरे पीहर चल कर रहा जाए, दिन-दशा पलटने से फिर कुछ काम धंधा करना । साहूकार अपनी पत्नी की बात मान गया और बच्चे को साथ लेकर दोनों घर से निकल पड़े । रास्ते में साहूकार की स्त्री सोचती जाती थी कि अपने दामाद की ऐसी गिरी अवस्था देखकर मेरे पीहर वाले क्या कहेंगे ? भाभियाँ तो तानों के मारे जीने ही नहीं देंगी ।

चलते-चलते एक कुआँ दिखलाई पड़ा तो पत्नी ने पति से कहा कि कुएँ पर चलो, मुझे बड़ी प्यास लगी है । वे लोग कुएँ पर गये और अवसर पाकर साहूकार की स्त्री ने अपने पति को कुएँ में धकेल दिया । फिर वह अपने नन्हें बच्चे को लेकर बाप के यहाँ चल पड़ी । इधर साहूकार को भी किसी

ने कुएँ से बाहर निकाल दिया और वह पास के शहर में जाकर काम-धंधा करने लगा। थोड़े ही अर्से में उसके पास अच्छा द्रव्य जुट गया। तब एक दिन वह अपनी ससुराल पहुँचा। पति को देखते ही पत्नी सफेद पड़ गई। उसने इशारे से अपने पति को समझा दिया कि उस रहस्य को गुप्त ही रखना। दो चार दिन ससुराल में ठहरकर साहूकार अपनी स्त्री को लेकर अपने घर आ गया। अब लड़का भी सयाना हो गया और साहूकार ने उसका विवाह कर दिया। लेकिन संयोग से बहू बड़ी कर्कशा आई। वह रात दिन सास से लड़ती-झगड़ती।

एक दिन साहूकार भोजन कर रहा था। सूर्य की धूप उसके शरीर पर पड़ रही थी। साहूकार की स्त्री ने पति के शरीर पर धूप पड़ती देख कर अपने आँचल से छाया कर दी। साहूकार ने सोचा कि एक दिन इसी स्त्री ने मुझे कुएँ में गिराया था और आज यह इस प्रकार आँचल से साया कर रही है। इस बात पर साहूकार को हँसी आ गई। साहूकार के बेटे की बहू ने अपने श्वसुर को हँसते देख लिया। उसका पति घर आया तो उसने अपने पति से कहा कि अपने पिता से पूछ कर आओ कि आज वे भोजन करते समय क्यों हँसे? बेटे के पूछने पर बाप ने बात टालने की बहुत चेष्टा की, लेकिन अन्त में उसने सारी बात अपने बेटे को बता दी। सास को छकाने के लिए बहू को मंत्र मिल गया। दूसरे दिन उसने बातों-बातों में सास से कह दिया कि तुम तो वही हो न कि जिसने ससुरजी को कुएँ में पटक दिया था। बहू की बात सुनकर सास को बड़ी ग्लानि हुई। वह ऊपर के कमरे में चली गई और वहीं फांसी लगाकर मर गई। थोड़ी देर में साहूकार घर आया और पत्नी को नीचे न देख कर ऊपर गया, लेकिन उसे इस प्रकार मरी देख कर उसे बहुत दुःख हुआ और वह भी फांसी लगा कर मर गया। थोड़ी देर बाद साहूकार का बेटा आया। उसने अपनी स्त्री से पूछा कि माँ कहाँ है तो उसने तीखे स्वर में कहा कि यहीं ऊपर नीचे कहीं ससुरजी के कान भर रही होंगी और कहाँ जातीं? लड़का ऊपर गया और माँ-बाप को मरा देख कर वह स्वयं भी उसी प्रकार फांसी लगा कर मर गया। जब बहुत देर

हो गई और ऊपर से कोई नहीं लौटा तो बहू खुद ऊपर गई। वहाँ का दृश्य देख कर वह स्तंभित रह गई और अत्यन्त शोक के कारण वह भी फांसी पर लटक गई। इस प्रकार, ज़रा-सी हँसी के कारण चार व्यक्ति फांसी पर चढ़ गये ।

● आठूं पहर रोवै

एक ग्वाला नित्य जंगल में बकरियाँ चराने के लिए जाया करता था। जंगल में एक बकरी उन बकरियों में आकर हमेशा मिल जाती और शाम को उनसे अलग होकर अपने स्थान को चली जाती। एक दिन ग्वाला उस बकरी के पीछे-पीछे गया। बकरी एक गुफा में जाकर रुक गई। ग्वाले ने देखा कि गुफा में एक महात्मा तपस्या कर रहे हैं। महात्मा ने ग्वाले से कहा कि तू शायद बकरी की 'चराई' (चराने की मजदूरी) लेने आया है, यों कह कर महात्मा ने उसे एक मुट्ठी राख धूने में से उठा कर दे दी और कहा कि जा अब तेरे किसी चीज़ की कमी नहीं रहेगी, लेकिन यह बात किसी को न बतलाना। ग्वाला चला गया। अब उसके सब राजसी ठाट हो गये। रहने के लिए सुन्दर महल, विविध प्रकार की भोग-सामग्री तथा सेवा के लिए अनेक दास-दासियाँ। उसके वैभव को देखकर सब लोग ईर्ष्या करते, लेकिन उसने घोषणा करवा दी कि यदि कोई मुझसे इस विषय में कुछ पूछेगा तो उसे जान से मरवा दूंगा। वह ग्वाला दिन भर में एक पहर रोया करता था। एक दिन एक वृद्ध आदमी ने सोचा कि यह ग्वाला जो अब इतने आराम से रहता है आखिर एक पहर रोता क्यों है ? उसने सोचा कि अब मुझे मरना तो है ही अतः इस रहस्य को पूछ लूं तो अच्छा रहे।

वृद्ध आदमी के पूछने पर 'ग्वाले' ने कहा कि इसका रहस्य मेरा गुरू बतला सकता है जो फलाँ जगह रहता है। बूढ़ा उस महात्मा के पास पहुँचा, लेकिन उसे यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि जहाँ ग्वाला दिन भर में एक पहर रोया करता, वहाँ यह महात्मा दिन भर में दो पहर रोता है। महात्मा ने कहा कि तुम मेरे गुरू के पास जाओ, वह तुम्हें इसका रहस्य बतला सकेगा।

बूढ़ा उसके गुरू के पास गया जो तीन पहर रोता था। उसने बूढ़े को फिर अपने गुरू के पास भेजा जो चार पहर रोया करता था। बूढ़े के पूछने पर महात्मा ने उसे चार सन्दूक दिखलाये और उनकी चाभियाँ बूढ़े को संभलाते हुए कहा कि मैं अपने गुरू के पास जा कर आता हूँ, तब तक तुम यहीं रहना। लेकिन इन सन्दूकों को मत खोलना और यदि एक सन्दूक को खोल भी लो तो दूसरे को न खोलना और यदि उत्सुकतावश दूसरे सन्दूक को भी खोल लो तो तीसरे को मत खोलना और यदि तीसरे को भी खोल लो तो चौथे को तो किसी भी हालत में मत खोलना।

महात्मा चला गया और बूढ़े को सन्दूक खोलने की धुन सवार हुई। उसने एक सन्दूक खोला, उसमें से एक बहुत सुन्दर सफेद हाथी निकला। हाथी ने बूढ़े से कहा कि तुम मेरे ऊपर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें कैलाश की यात्रा करा दूंगा। बूढ़ा हाथी पर सवार हुआ और सवार होते ही हाथी उड़ चला। हाथी ने कुछ ही क्षणों में उसे कैलाश पर पहुँचा दिया जहाँ भगवान् शंकर पार्वती के सहित विराजमान थे। वहाँ पहूँचते ही बूढ़े को अलौकिक आनन्द मिला। बूढ़ा आनन्द में मग्न हो गया। कहीं 'गणेश' भांग घोट रहे थे तो कहीं षडानन मोरों का नृत्य देख रहे थे। जब कुछ देर हो गई तो हाथी ने बूढ़े से कहा कि अब चलो। बूढ़ा हाथी पर सवार हो कर अपनी जगह लौट आया। लेकिन आनन्द से अब भी उसका शरीर पुलकित हो रहा था। हाथी सन्दूक में समा गया और बूढ़े ने सन्दूक को ताला लगा दिया।

अब उसने दूसरा सन्दूक खोला। उसमें से एक घोड़ा निकला, वह उसे स्वर्गपुरी की यात्रा करा लाया। बूढ़े की यह यात्रा भी बहुत सुखद रही। अब उसने तीसरा सन्दूक खोला, तीसरे सन्दूक में से गरुड़ निकले जिन्होंने उसे विष्णुलोक की यात्रा करवा दी। अन्त में बूढ़े ने चौथा सन्दूक भी खोल डाला। चौथे सन्दूक में से एक गधा निकला। गधे ने बूढ़े से कहा कि मैं तुम्हें तुम्हारे माता-पिता, भाई तथा पत्नी आदि से मिला सकता हूँ, लेकिन तुम वहाँ एक पहर से अधिक मत ठहरना, अन्यथा मैं तुम्हें वहाँ से वापिस नहीं ला सकूंगा। बूढ़े ने गधे की बात स्वीकार कर ली और गधा उसे अपनी पीठ

पर चढ़ा कर उस लोक में ले गया जहाँ उसके माँ-बाप आदि थे। अपने परिवार के लोगों से मिलकर बूढ़ा गधे की बात को भूल गया और एक पहर की जगह तीन पहर निकल गये। अब बूढ़े को सहसा गधे की बात का ध्यान आया, लेकिन अब क्या हो सकता था? गधा वहाँ से जा चुका था। बूढ़ा हाथ मल-मल कर पछताने लगा कि मैं कैलाश गया, स्वर्गलोक गया तथा विष्णुलोक गया, लेकिन वहाँ नहीं ठहरा और यहाँ आकर इस जंजाल में उलझ गया, जहाँ से मेरा किसी भी प्रकार छुटकारा संभव नहीं है। बूढ़ा जोर-जोर से रोने लगा, उसने सोचा कि ग्वाला एक पहर रोता था, उसका गुरू दो पहर रोता था, तीसरा साधु तीन पहर रोता था, चौथा साधु चार पहर रोता था, लेकिन अब मुझे तो नित्य आठों पहर रोना ही रोना है।

● ठग की बेटी

एक साहूकार का लड़का कमाकर दिसावर से लौट रहा था। उसके पास चार लाल थे, जिन्हें उसने अपनी जांघ चीर कर उसमें छुपा रखे थे। संयोग से वह एक ठगों की नगरी में पहुँच गया और 'रात-बासे' के लिए एक ठग के घर में टिक गया। उस ठग के एक युवा लड़की थी जो आये-गये 'शिकार' को फँसाकर उसका सर्वस्व लूट लेती और उसे मार डालती। रात हुई तो ठग की लड़की साहूकार के लड़के के पास पहुँची। साहूकार का लड़का उसका मन्तव्य समझ गया था। उसने ठग की लड़की से कहा कि तू मेरे प्राण मत ले, मेरे पास कुछ भी नहीं है। यदि तू मुझे मारेगी तो उसी प्रकार पछताएगी कि जिस प्रकार बनजारा अपने कुत्ते को मार कर पछताया था, यों कह कर उसने बनजारे और कुत्ते की कहानी सुनाई:—

एक बनजारे के पास रास्ते में धन की कमी हो गई। उसके पास एक कुत्ता था, जो बहुत समझदार तथा सिखाया पढ़ाया था। बनजारे ने एक सेठ के पास से रुपये उधार लिये और अपना कुत्ता सेठ के पास बंधक रख दिया। एक रात को सेठ के घर में चोर घुसे और सारा माल असबाब निकाल कर ले गए। कुत्ते ने भूंक-भूंक कर घर वालों को जगाने की बहुत चेष्टा

की, लेकिन कोई नहीं जगा। चोरों ने सारा धन जंगल में ले जाकर गाड़ दिया, कुत्ता उनके पीछे-पीछे गया और वह स्थान देख आया।

सबेरा हुआ तो सेठ के घरवालों को बड़ा दुःख हुआ। कुत्ता सबको उस स्थान पर ले गया और सेठ को उसका सारा धन ज्यों का त्यों मिल गया। सेठ कुत्ते पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बनजारे का सारा ऋण चुकता कर दिया। सेठ ने इस आशय की एक चिट्ठी कुत्ते के गले में बांध दी और उसे बनजारे के पास जाने की छूट दे दी। बनजारा कुत्ते को आता देख बड़ा क्रोधित हुआ, उसने कुत्ते को गोली मार दी। कुत्ता वहीं मर गया। फिर बनजारे ने कुत्ते के गले में बँधी चिट्ठी पढ़ी तो बहुत पछताया, लेकिन फिर क्या हो सकता था? सो हे ठग की बेटी, यदि तू मुझे मारेगी तो फिर उस बनजारे की तरह ही तुझे भी पछताना पड़ेगा।

रात्रि का एक पहर बीत गया। ठग की बेटी ने साहूकार के लड़के से कहा कि मुझे अपने पिता का हुक्म है, अतः चाहे जो कुछ भी हो मैं तुम्हें अवश्य मारूँगी। इस पर साहूकार के लड़के ने दूसरी कथा सुनाईः—

एक राजा शिकार का पीछा करता हुआ जंगल में बहुत दूर निकल गया। संगी-साथी सब पीछे छूट गए। प्यास के मारे राजा के प्राण निकलने लगे। भटकते-भटकते राजा एक ऐसे स्थान पर पहुँचा, जहां कई वृक्ष पास-पास लगे थे, उनके नीचे शीतल छाया थी। राजा वहां ठहर गया। उसने देखा कि एक वृक्ष के ऊपर से बूंद-बूंद पानी टपक रहा है। राजा ने अपना चाँदी का कटोरा निकाला और पानी के नीचे रख दिया। थोड़ी देर में ही प्याले में दो घूंट पानी जमा हो गया। राजा ने कंठ गीले करने के लिए ज्यों ही प्याला उठाया, राजा के बाज ने प्याला गिरा दिया। राजा ने फिर उसी स्थान पर प्याले को रख दिया और सुस्ताने लगा। इस बार भी जब राजा ने पानी पीना चाहा तो बाज ने फिर पानी गिरा दिया। राजा को बड़ा गुस्सा आया और उसने बाज को मार डाला। इतने में राजा के सेवक भी वहां आ पहुँचे। राजा ने पेट भर कर पानी पी लिया। फिर उसने अपने नौकरों को आदेश दिया कि इस बात का पता लगाओ कि वृक्ष पर से पानी क्यों-

कर आ रहा है ? नौकरों ने जाकर देखा कि वृक्ष पर एक बड़ा अजगर मरा पड़ा है और उसी के मुंह से विष बह बह कर नीचे टपक रहा है। राजा को सही बात जानकर बाज को मारने का बहुत अफसोस हुआ, वह हाथ मल-मल कर पछताने लगा। सो हे ठग की बेटी, यदि तू मुझे मारेगी तो उस राजा की तरह ही पछताएगी। दो पहर रात बीत गई। ठग की बेटी ने फिर कहा कि मैं तो तुम्हें मारूँगी ही। इस पर साहूकार के बेटे ने उसे तीसरी कहानी सुनाई:—

एक राजा के पास एक बहुत सुन्दर समझदार सूआ था। राजा सुग्गे को बहुत चाहता था और सुग्गा जो कुछ कह देता राजा उसे ही मान लेता। सुग्गे के मान को देखकर सारे दरबारी सुग्गे से डाह रखते थे और किसी न किसी प्रकार उसका अन्त करना चाहते थे।एक बार राजा का यह प्यारा सुग्गा अन्य सुग्गों के साथ एक भोज में गया। वहां उसे एक 'अमर फल' मिला। सुग्गे ने वह फल लाकर राजा को दिया। राजा के दरबारियों को अब मौका मिल गया। उस अमरफल को उन्होंने कूड़े के ढ़ेर में फेंक दिया और उसके स्थान पर एक 'विष फल' लाकर रख दिया। जब राजा ने उस फल को खाने की इच्छा प्रकट की तो दरबारियों ने राजा के कान भरे कि महाराज ! यह जानवर न जाने क्या उठा लाया है ? अतः इस फल की पहले परीक्षा कर लेनी चाहिए। राजा को दरबारियों की सलाह ठीक लगी और उस फल का एक टुकड़ा एक कुत्ते को डाला गया। कुत्ता तुरन्त मर गया। राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने उसी क्षण सुग्गे को मरवा डाला।

उस राजा के महल के नीचे एक कोढ़ी रहता था। राजा के महल से जो जूठन वगैरह फेंकी जाती उसी से वह अपना गुज़ारा किया करता। राजा के महल से फेंका गया वह अमरफल भी कोढ़ी के हाथ लगा, उसने अमरफल खाया और खाते ही वह भला-चंगा बन गया। अब वह अत्यन्त रूपवान् और स्वस्थ पुरुष था। एक दिन राजा ने उक्त आदमी से पूछा कि यहां एक कोढ़ी रहा करता था वह आजकल कहां चला गया ? उस आदमी ने उत्तर दिया कि पृथ्वीनाथ, वह कोढ़ी मैं ही हूँ, एक दिन आपके महल से एक अमर-

फल फेंका गया था, वह मैंने खा लिया और खाते ही मेरी काया कंचन जैसी हो गई। राजा की समझ में दरबारियों का षड्यंत्र आ गया। अब वह बहुत पछताने लगा, लेकिन अब क्या हो सकता था? सो हे ठग की बेटी, तू मुझे मारकर उस राजा की तरह ही पछताएगी, अतः मेरी जान मत ले।

ठग की बेटी ने कहा कि मैं मजबूर हूँ, मेरा बाप ही मुझसे यह दुष्ट कर्म करवाता है, मैं युवा हो गई, लेकिन इसी लोभ के मारे वह मेरी शादी भी नहीं करता। साहूकार के लड़के ने कहा कि तुम मेरे साथ भाग चलो। ठग की बेटी उसके साथ जाने को तैयार हो गई। उसने साहूकार के बेटे से कहा कि अब एक पहर रात्रि शेष है। मेरे बाप के पास दो ऊँट हैं, एक दिन में चलने वाला है तथा दूसरा रात्रि में। तुम दिन में चलनेवाला ऊँट चुपचाप खोलकर ले आओ। साहूकार का लड़का ऊँट ले आया और दोनों उस पर सवार हो कर भाग चले। सबेरे जब ठग को सारी बात का पता चला तो उसने ऊँट पर सवार होकर उनका पीछा किया। साहूकार का लड़का भूल से रात में चलने वाला ऊँट खोल कर ले गया था अतः सबेरा होते ही वह ऊँट एक वृक्ष के नीचे अड़कर खड़ा हो गया। बहुत मारने-पीटने पर भी वह टस से मस नहीं हुआ। इतने में ठग उनका पीछा करता हुआ पास आ पहुँचा। उसके डर से दोनों जने वृक्ष की डाल पकड़कर वृक्ष पर चढ़ गये। ठग ने ऊँट को वृक्ष के नीचे खड़ा कर दिया और स्वयं वृक्ष पर चढ़ने लगा। अवसर पाकर वे दोनों दिन में चलने वाले ऊँट की पीठ पर आ बैठे और वहां से भाग छूटे। ठग टापता रह गया। उसके पास रात में चलने वाला ऊँट रह गया था अतः वह घर लौटने के लिए संध्या होने की प्रतीक्षा करने लगा।

● लुगाई को के भोळी ?

एक आदमी के दो स्त्रियां थीं। एक दिन एक स्त्री गाय दुह रही थी तथा दूसरी उसी समय पानी की 'दोघड़' (दो घड़े) लेकर आई। आते ही उसने गाय दुहने वाली अपनी सौत से कहा कि मेरे घड़े उतरवा दे, लेकिन

उसने कह दिया कि मैं तो गाय दुह रही हूँ। इस पर उसे बड़ा गुस्सा आया और उसने अपनी 'इंडुली' को उसकी तरफ सांप बनाकर फेंका। दूसरी भी कुछ कम न थी, उसने अपने पास ही पड़ी नेत्री को नेवला बनाकर सांप के मुकाबले में खड़ा कर दिया। उन दोनों का पति यह सब कुछ देख रहा था। उसने सोचा कि दोनों ही स्त्रियां बड़ी जादूगरनियां हैं, किसी न किसी दिन ये मुझे मार डालेंगी। यों सोच कर वह वहां से भाग निकला। लेकिन दोनों ने जादू के बल से उसे भैंसा बनाकर वापिस बुला लिया। एक दिन अवसर पाकर वह फिर भाग निकला और गांव की सीमा से बाहर निकल गया। अब उन दोनों का वश नहीं चल सकता था।

चलते-चलते वह किसी दूसरे गांव में पहुँचा और वहीं नौकरी करने लगा। एक दिन वह एक गली में से गुज़र रहा था कि एक घर में से उसे आवाज़ सुनाई दी, "अम्मा, तुम बाहर जा रही हो तो मुझे यह तो बतला जाओ कि खिचड़ी में नमक कितना डालूं?" उस आदमी ने सोचा कि यह लड़की बड़ी भोली है जिसे खिचड़ी में नमक डालने का भी पता नहीं। इसी से विवाह हो जाए तो अच्छा रहे। यों सोच कर वह उस घर में चला गया और उसने अपना विचार घर वालों को बताया। दोनों का विवाह हो गया और वह आदमी वहीं रहने लगा।

एक दिन उसकी दोनों पहले वाली पत्नियों को सारी बात का पता चल गया। वे दोनों वहां से चील बन कर उड़ीं। उस आदमी ने अपनी नई पत्नी से कहा कि आज मेरी पहले वाली दोनों पत्नियां चील बन कर आ रही हैं सो आज खैर नहीं है। इस पर नई पत्नी बोली कि तुम किसी बात की चिन्ता न करो मैं स्वयं ही उनसे निपट लूंगी। यों कह कर वह वहां से बाज बनकर उड़ी और उसने दोनों चीलों को मार कर जमीन पर गिरा दिया। यह देखकर उस आदमी के आश्चर्य की सीमा न रही। उसने कल्पना भी न की थी ऐसी भोली-भाली दिखलाई पड़ने वाली उसकी पत्नी इतनी क्रूर है। अन्त में जान बचा कर एक दिन वह चुपचाप जंगल में निकल गया और फिर उसने कभी विवाह करने की बात नहीं सोची।

● चरड़ मरड़ को नूंतो

चार पड़ोसिनें थीं। एक ने अपने लिए नये जूते बनवाये, दूसरी ने घाघरा बनवाया, तीसरी ने नया चूड़ा पहना और चौथी ने अपने दांतों में सोने की चोंप जड़वाई। फिर चारों ने आपस में सलाह की कि हमने अपने लिए चीज़ें तो बनवाईं पर इन्हें किसी ने देखा नहीं। अतः अपनी नई चीज़ें सारे गांव को दिखलानी चाहिएं। सोच-विचार कर उन चारों ने एक योजना बनाई। जिसने अपने लिए नये जूते बनवाये थे वह अपने नये जूते पहन कर गांव में गई और "चरड़ मरड़ को नूंतो छैजी, चरड़ मरड़ को नूंतो छै।" कह कर सारे गांव को जीमने का न्योता दे आई। उसके चरमर करने वाले जूते सारे गांव ने देख लिये। तब दूसरी स्त्री अपना नया घाघरा पहन कर जीमने वालों को बुलावा देने के लिए गई, 'घमक घाघरो जीमण चालो, घमक घाघरो जीमण चालो।' सारे लोग जीमने के लिए आ गए तो चूड़े वाली ने अपने हाथ आगे कर करके सबको अपना चूड़ा दिखलाया और बोली, "अट्ठै बैठो, अट्ठै बैठो।' सारे लोग जीमने के लिए बैठ गए, लेकिन वहां तो जीमने के लिए कुछ भी नहीं था। अब चौथी की बारी आई और वह अपनी 'चोंप' दिखलाती हुई खीसें निपोर-निपोर कर कहने लगी 'क्युंईं न कांई, क्युंईं न कांई।" सारे लोग निराश होकर उठ-उठ कर चले गए।

● सूझे सें बूझ्यो भलो

एक सेठ और उसका बेटा ऊँट पर चढ़े चले जा रहे थे। थोड़ी देर बाद सेठ ने अपने लड़के से पूछा कि अपना ऊँट कहां गया? लड़के ने आश्चर्य से कहा कि ऊँट गया कहां? ऊँट पर तो हम दोनों चढ़े हुए हैं न। तब सेठ ने संतोष की सांस लेते हुए कहा कि इतना तो मैं भी जानता था, लेकिन खातरी के लिए पूछ लिया, क्योंकि सूझने से बूझना अच्छा होता है।

● भील की विद्या

एक बार एक भील जंगल में एक वृक्ष पर चढ़ा हुआ कुल्हाड़े से लक-

ड़ियां काट रहा था। संयोग से उसके हाथ से कुल्हाड़ा छूट कर धरती पर आ गिरा। भील ने अपनी विद्या के बल से वृक्ष पर बैठे-बैठे ही अपना कुल्हाड़ा वापिस मंगा लिया। उसी समय राजा का मंत्री उस तरफ से गुज़र रहा था, उसने सारी बात देख ली। उसने भील से कहा कि मुझे अपनी यह विद्या सिखला दो। भील ने बहुत टालने की चेष्टा की, लेकिन मंत्री ने हठ पकड़ लिया और भील ने बे मन से वह विद्या मंत्री को सिखला दी। मंत्री खुशी-खुशी अपने घर गया, लेकिन भील उदास था। घर आने पर भीलनी ने भील से उदासी का कारण पूछा तो भील ने कहा कि आज हमारी पुस्तैनी विद्या चली गई। वज़ीर ने आज मुझ से वह विद्या ले ली। भीलनी ने कहा कि अभी इस बात का निश्चय नहीं हुआ कि विद्या चली गई है। तुम लकड़ी का एक भार दरबार में ले जाओ, यदि वज़ीर गुरू मान कर तुम्हारा आदर करे और लकड़ी का भार स्वयं अपने सिर पर ले ले तब जानना कि वास्तव में विद्या चली गई है। भील ने वैसा ही किया। मंत्री ने भील को देखते ही प्रणाम किया और कहा कि गुरुदेव ! यह भार आप मुझे दे दें, आप जहां कहें वहीं मैं इसे डाल दूंगा। यों कह कर मंत्री ने भील के सिर पर से भार उठाकर अपने सिर पर ले लिया। भील ने जान लिया कि विद्या चली गई है, वह अपने घर लौट गया। लेकिन उधर वज़ीर के आचरण से राजा बड़ा अप्रसन्न हुआ और उसने वज़ीर को हटा दिया। वज़ीर अपने घर जाकर बैठ गया।

कुछ दिनों बाद उस राजा पर किसी दूसरे राजा ने चढ़ाई कर दी। राजा किसी प्रकार दुश्मन से जीत नहीं सकता था, क्योंकि दुश्मन के पास बहुत बड़ी फ़ौज थी जो सब तरह के हथियारों से लैस थी। सोचते-सोचते राजा ने अपने पुराने मंत्री को बुलाया। मंत्री ने आते ही कहा कि आप निश्चिन्त रहिये, मैं सारी फ़ौज से अकेला ही निपट लूंगा। रात हुई और सारे सैनिक सो गये तो वज़ीर ने अपनी विद्या के बल से शत्रु के सारे हथियार अपने पास मँगवा लिये। जब दुश्मनों ने अपने को अस्त्र-शस्त्रों से रहित पाया तो सबेरा होने से पहले ही वे भाग खड़े हुए। राजा को

अनायास ही विजय प्राप्त हो गई। उसने वज़ीर को बहुत पुरस्कार दिया और उसे फिर से अपना प्रधान मंत्री बना लिया।

● आंधो और लंगड़ो

एक अन्धा था और एक था लँगड़ा। एक दिन दोनों कमाने के लिए चले। लँगड़ा अन्धे की पीठ पर सवार हो गया और रास्ता बताने लगा। चलते-चलते वह एक कुएँ के पास पहुँचा। अन्धे ने पूछा कि कुएँ पर क्या है? लँगड़े ने कहा कि एक 'लाव' पड़ी है, एक "पंजाली" पड़ी है और एक सूखा "चड़स' भी पड़ा है। अन्धे ने कहा कि इन्हें मेरी पीठ पर लाद दे। लँगड़े ने तीनों चीज़ें उसकी पीठ पर लाद दीं और फिर दोनों आगे बढ़े। थोड़ी दूर पर एक कुतिया ब्याई हुई थी, उसके पिल्ले चीं-चीं कर रहे थे। जब वे दोनों वहाँ से गुजरे तो अन्धे ने कहा कि इन पिल्लों को भी मेरे ऊपर डाल दे। लँगड़े ने सोचा कि अन्धा पागल हो गया है, लेकिन उसने पिल्ले उठा कर अन्धे की पीठ पर डाल दिये। चलते-चलते शाम हो गयी और वे एक जंगल में पहुँच गये। वे दोनों वहीं एक अच्छा स्थान देखकर ठहर गये। आधी रात को चार चोर वहाँ आये और चोरी किये गये माल का बँटवारा करने लगे। अन्धे ने लँगड़े से पूछा कि क्या बात है तो लँगड़े ने सारी बात बता दी। अन्धे ने विचित्र आवाज़ करते हुए कुतिया के पिल्लों को उन चोरों के ऊपर फेंका कि बालों में कितनी जुंएँ पड़ गई हैं। चोर अचकचा कर जूंओं को देख ही रहे थे कि अन्धे ने 'चड़स' फेंका और बोला कि इस 'टोपले' में भी जुंएँ पड़ गई हैं। अब तो चोर बहुत ही डर गये। फिर अन्धे ने लाव फेंकी और कहा कि इस चोटी में भी जुंएँ पड़ गई हैं, अतः इसे भी काट फेंकता हूँ और फिर उसने 'पंजाली' फेंकते हुए कहा कि जब चोटी ही काट डाली तो फिर कंघे का क्या करना है? अब तो चोरों का वहाँ टिक सकना दूभर हो गया, वे जान बचा कर वहाँ से भाग छूटे और सारा धन वहीं छोड़ गये। अन्धे और लँगड़े ने सारा धन बाँट लिया और खुशी-खुशी अपने घर आ गये।

● प्रेम सें भगवान् परगटै

एक साधु पीपल के वृक्ष के नीचे तपस्या किया करता था तथा दूसरा इमली के वृक्ष के नीचे। तपस्या करते-करते उन्हें बहुत दिन बीत गये। एक दिन नारदजी भगवान् के पास जाते हुए उधर से गुजरे तो उन दोनों साधुओं ने नारद से कहा कि महात्मन्, आप भगवान् से पूछ कर आना कि वे हमें कब दर्शन देंगे ? नारद चले गये। उन्होंने भगवान् से दोनों साधुओं के प्रश्न पूछे तो भगवान ने कहा कि यदि वे इसी प्रकार तपस्या करेंगे तो जितने पत्ते उन वृक्षों के हैं उतने ही दिनों बाद मैं उन्हें दर्शन दूंगा। नारदजी लौटे तो उन्होंने दोनों साधुओं से भगवान् का सन्देश कह सुनाया। पीपल के नीचे वाले महात्मा ने तो एक बार पीपल के अनगिनत पत्तों की ओर देखा और हताश हो गया कि पीपल में तो बहुत पत्ते हैं, उसने तपस्या त्याग दी और वहाँ से चलता बना। इमली वाले महात्मा को भगवान् का संदेश सुन कर बड़ी भारी प्रसन्नता हुई। वह आनन्द में मग्न हो गया और भगवान् के प्रेम में बावला होकर नृत्य करने लगा कि प्रभु मुझे कभी तो दर्शन देंगे ही। उसकी यह स्थिति देखते ही भगवान् तुरन्त उसके सामने प्रकट हो गये। भगवान् ने कहा कि सच्चा प्रेमी मुझे तुरन्त ही पा जाता है, अतः तुम्हारे लिए पत्तों की गिनती का कोई बंधन नहीं रहा। भगवान् की बात सुन कर और उनके दर्शन पाकर भक्त गद्गद हो गया।

● सब सें मीठी चीज ?

एक बादशाह ने अपने मन्त्री से पूछा कि सब से मीठी वस्तु क्या है ? मंत्री ने उत्तर दिया कि किसी दिन आपको इसका उत्तर दूँगा। कुछ समय बाद एक दिन मंत्री ने बादशाह की प्रधान बेगम को अपने यहाँ निमंत्रित किया। मंत्री ने सजावट और बेगम के स्वागत-सत्कार में कोई कमी न रखी। बेगम के महल से लेकर अपने घर तक मंत्री ने गुलाबजल, केवड़े और बढ़िया इत्र का छिड़काव करवाया, बहुमूल्य कालीन बिछाये। दास-दासियों की कोई कमी नहीं थी। सोने के थालों में अनेक प्रकार के

भोज्य पदार्थ परोसे गये। भोजन के उपरान्त भी बेग़म के आराम की हर तरह से व्यवस्था की गई। बेगम ने सोचा कि इतना ठाठ और आराम तो बादशाह के यहाँ भी नहीं है। लेकिन जब बेगम वहाँ से जाने लगी तो मंत्री ने उसे सुनाकर घरवालों से कहा कि अपने घर में 'तुरकणी' ने भोजन किया है, सो सारे घर को गंगाजल से धुलवाना। बेगम ने मंत्री की बात सुनी तो वह आग-बबूला हो गई, उसने जाकर बादशाह से शिकायत की। बादशाह ने तुरन्त ही मंत्री को बुलवा कर पूछा तो मंत्री ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया कि जहाँपनाह, मैंने तो सिर्फ आपकी बात का जवाब दिया है कि सब से मीठी ज़बान होती है। मैंने बेगम साहिबा का इतना स्वागत-सत्कार किया, लेकिन जबान की ज़रा-सी कड़ुआहट के कारण सारा करा-कराया चौपट हो गया। इसलिए मैं कहता हूँ कि सब से मीठी ज़बान होती है, जिससे सब काम बनते हैं।

● सरणागत रख सांवरा

एक राजा ने एक बार एक बड़ा तालाब खुदवाया, लेकिन वह पानी से भरा नहीं। पण्डितों ने राजा से कहा कि जब तक तालाब में नर-बलि नहीं दी जाएगी, तब तक यह नहीं भरेगा। राजा ने नर-बलि देने के लिए एक आदमी की तलाश शुरू कर दी। नगर में एक ग़रीब बनिया रहता था। उसके तीन लड़के थे। बड़ा लड़का बाप को बहुत प्रिय था और छोटा माँ को, लेकिन मझले लड़के पर माँ-बाप का उतना प्यार न था। राजा ने बनिये को धन का लालच दिया और उसने अपने मझले लड़के को बलि के लिए दे दिया। उसे ले जाकर तालाब के किनारे पर बिठला दिया गया। बेचारा लड़का बड़े कष्ट में था वह ज़मीन पर चार लकीरें खींचता और कहता—

माता-पिता धन का लोभी,
राजा लोभी सागरा।
देई-देवता बलि का लोभी,
सरणागत रख साँवरा॥

(माँ-बाप धन के लोभी हैं, राजा को सरोवर भरने का लोभ है और देवी-देवता बलि के लोभी हैं। हे साँवरे, तू ही शरणागत की रक्षा कर) तीन लकीरों को वह मिटा देता और चौथी लकीर को नमस्कार करता। परमात्मा ने शरणागत की पुकार सुन ली और तालाब पानी से लबालब भर गया। बालक पर भगवान् के अनुग्रह का बड़ा प्रभाव पड़ा और वह भगवान् का सच्चा भक्त बन गया।

● भगवान कठै है ?

एक बार एक बादशाह ने अपने वज़ीर से पूछा कि भगवान् कहाँ रहते हैं तथा वे कैसे मिल सकते हैं ? वज़ीर को इसका कोई उत्तर नहीं सूझा अतः उसने तीन महीने की मोहलत माँग ली। दिन बीतने लगे, लेकिन वज़ीर को कोई उत्तर नहीं सूझा, वह दिन-दिन घुलने लगा। एक दिन वज़ीर एक खेत में से गुजर रहा था। उसने देखा कि एक लड़का धरती पर बिखरे हुए गेहूं के दानों को एक-एक करके चुगता और खाता है। वज़ीर ने लड़के से कहा कि बच्चे, तू एक दाना चुगता है और वही खा लेता है, इसमें भला तुझे क्या स्वाद आता है ? यदि तू मुट्ठी भर दाने पहले इकट्ठे करले और फिर उन्हें खाये तो तुझे कुछ आनन्द भी आये। इस पर लड़के ने उत्तर दिया कि महाशय, श्वासों का कोई भरोसा नहीं, न जाने कब श्वास आये और कब न आये। इसलिए जो दाना मैं चुगता हूँ उसका तो आनन्द ले लूं, मैं मुट्ठी-भर दाने इकट्ठे करूँ और श्वास निकल जाए तो मुझे क्या आनन्द आएगा ? बालक की बात सुन कर वज़ीर ने सोचा कि शायद यह बालक मेरी उलझन को सुलझा दे, अतः उसने बादशाह का प्रश्न बालक से किया। लड़के ने कहा कि जिसने आपसे यह प्रश्न पूछा है मैं उसी को इसका उत्तर दूँगा। वज़ीर लड़के को अपने साथ ले आया और नियत दिन दरबार में पहुँचा। बादशाह के पूछने पर वज़ीर ने कहा कि जहाँपनाह, आपके प्रश्न का उत्तर तो यह बालक ही दे देगा। जब बालक से पूछा गया तो बालक ने निधड़क उत्तर

दिया कि हाँ मैं आप के प्रश्न का उत्तर दूँगा। लेकिन वक्ता ऊँचे आसन पर बैठता है और श्रोता नीचे बैठते हैं, इसलिए आप अपना सिंहासन त्याग कर नीचे बैठें। बादशाह ने लड़के को सिंहासन पर बिठला दिया और स्वयं नीचे बैठा। तब लड़के ने एक दही का पात्र मँगवाया और उसमें वह इधर-उधर उँगली चलाने लगा। जब बहुत देर हो गई तो बादशाह ने लड़के से कहा कि बच्चे, हमारे प्रश्न का उत्तर दे, व्यर्थ ही क्यों टालने की चेष्टा कर रहा है? बालक ने गंभीर होकर कहा कि हुजूर, मैं आपके प्रश्न का उत्तर ही दे रहा हूँ। मैंने सुना है कि दही में घी रहा करता है, सो मैं उँगली से उसे ही खोज रहा हूँ कि वह किधर है? इस पर बादशाह ने कहा कि दही में घी अवश्य है, लेकिन वह इस प्रकार थोड़े ही मिलता है? उसे प्राप्त करने के लिए तो बड़ा प्रयत्न करना होता है। तब लड़के ने कहा कि बस यही आपके प्रश्न का उत्तर है। ईश्वर सर्वत्र व्यापक है, लेकिन उसे वही प्राप्त कर सकता है जो उसके लिए पूर्ण रूप से प्रयत्नशील होता है, भगवान् का निरन्तर भजन-स्मरण करता है और अच्छे रास्ते पर चलता है।

बालक का उत्तर सुन कर बादशाह को संतोष हो गया।

● एक लुगाई तीन सगाई

एक ब्राह्मण अपनी लड़की की सगाई एक गाँव में करके आया। ब्राह्मणी ने उसी लड़की की सगाई किसी दूसरे गाँव में कर दी और लड़की के भाई ने अपनी बहिन की सगाई किसी तीसरे लड़के से कर दी। विवाह के लिए नियत दिन तीन बारातें ब्राह्मण के घर पहुँचीं। लेकिन संयोग से इसी समय लड़की का देहान्त हो गया। घर के लोग उसकी अरथी श्मशान की ओर ले चले। तीनों दूल्हे भी साथ चले। श्मशान पहुँच कर जब लड़की की चिता में आग लगाई गई तो एक दूल्हा उसके वियोग में उसी के साथ जल कर मर गया, दूसरा वैरागी हो कर वहीं कुटिया बना कर रहने लगा और तीसरा संन्यासी बन कर वहाँ से चल दिया।

भिक्षाटन करते-करते वह संन्यासी एक दिन उसी ब्राह्मण के घर पहुँच गया। घर में छोटा लड़का अपनी माँ को बहुत सता रहा था सो उसकी माँ ने क्रोध में आ कर बच्चे को मार डाला। संन्यासी ने ब्राह्मणी का यह बीभत्स कर्म देखा और वह बिना भिक्षा लिये ही घर से बाहर निकला। सामने से ब्राह्मण आता दिखाई पड़ा। ब्राह्मण ने संन्यासी से कहा कि मैं तुम्हें बिना भिक्षा लिये नहीं जाने दूँगा। संन्यासी ने कहा कि यह घर ब्राह्मण का नहीं कसाई का घर है, जिसमें माँ ने अपने छोटे बच्चे को मार डाला है। ब्राह्मण ने कहा कि मैं बच्चे को अभी जिला देता हूँ, लेकिन तुम्हें भिक्षा ले कर ही जाना होगा। ब्राह्मण ने लड़के को जिला दिया तो संन्यासी ने ब्राह्मण से कहा कि यदि तुम मुझे भिक्षा ही देना चाहते हो तो मुझे यह विद्या सिखला दो। ब्राह्मण ने वह संजीवनी-विद्या संन्यासी को सिखला दी।

अब संन्यासी वहाँ से चलकर अपनी मंगेतर की चिता पर आया और मंत्र पढ़ कर जैसे ही उसने चिता के स्थान पर जल छिड़का तैसे ही वह लड़की जीवित हो कर उसके सामने खड़ी हो गई, लेकिन साथ ही साथ ब्राह्मण का वह लड़का भी जो उसके साथ जल गया था जीवित हो गया। तीसरा लड़का वहाँ बैरागी बना बैठा ही था। अब तीनों आपस में 'पत्नी' के लिए झगड़ने लगे। तीनों में से प्रत्येक यही कहता था कि यह मेरी पत्नी है। इतने में वहाँ से एक पंडित गुजरा। तीनों ने उसे पंच बनाया और कहा कि आप जो फैसला कर देंगे वह हमें स्वीकार है। पंडित बोला कि जिस युवक ने इसे पुनर्जन्म दिया है, वह इसका पिता अर्थात् जनक हो गया और जो चिता में जल कर मर गया था वह इस लड़की के साथ ही फिर जन्मा है, अतः वह इसका भाई बन गया। इसलिए अब इस लड़की पर तीसरे युवक का अधिकार रह जाता है जो इसके दर पर कुटी बना कर रह रहा है, वही इसे पत्नी रूप में स्वीकार करे। तीनों ने पंडित का निर्णय मान लिया।

● सत्यनारायण की माया

एक सेठ हर पूर्णिमा को सत्यनारायण भगवान् की कथा सुना करता था। एक पंडित आकर उसे कथा सुनाया करता। एक दिन सेठ का छोटा इकलौता बच्चा गहने कपड़ों से सजा गली में खेल रहा था, पंडित कथा बाँचने आया। लड़के के गहनों को देख कर उसका मन चलायमान हो गया। वह लड़के को भुलावा देकर अपने घर ले गया, उसने बच्चे को मार डाला और उसके गहने-कपड़े निकाल कर घर में रख लिये। जब समय हो गया और पंडित कथा बाँचने नहीं आया तो सेठ ने एक सेवक को भेजा, लेकिन पंडित ने उसे टाल दिया। तब सेठ स्वयं पंडित को बुलाने गया। वहाँ जाकर उसने देखा कि पंडित ने बच्चे को मार डाला है। लेकिन उसने पंडित से कुछ नहीं कहा। पंडित ने सेठ के घर आ कर कथा बाँची और उसके बाद सब को भोजन कराया गया।

सेठ ने अपनी स्त्री से कहा कि आज मैं यह भोजन नहीं करूँगा। तू मेरे लिए खिचड़ी बना दे। सेठानी ने कहा कि आप यह भोजन नहीं करेंगे तो मैं भी नहीं करूँगी। मैं भी खिचड़ी खा लूंगी। सेठानी खिचड़ी बनाने लगी। वह कोई चीज लाने के लिए उठी तो सेठ ने मौका पाकर खिचड़ी में विष मिला दिया। सेठ ने सोचा कि जब हमारा इकलौता लड़का ही चला गया तो अब हमें जी कर क्या करना है? खिचड़ी बन गई तो दो साधु द्वार पर आ गये। सेठ उन्हें खीर-पूड़ी देने लगा, लेकिन वे बोले कि हम तो खिचड़ी खाएँगे। सेठ ने बहुत टालने की चेष्टा की, लेकिन साधु नहीं माने। अन्त में चार पत्तलें लगाई गईं। साधुओं ने कहा कि अपने छोटे बच्चे को भी साथ ले आओ। सेठ ने कहा कि वह यहाँ नहीं है, लेकिन साधु बोले कि वह उस सामने के कमरे में है। सेठ मन मार कर कमरे की ओर गया तो सचमुच उसमें लड़का खेल रहा था। सेठ ने मुड़ कर देखा तो वहाँ न साधु थे और न चारों पत्तलें। अब उसकी समझ में आया कि यह सत्यनारायण भगवान् की कृपा का ही फल है। फिर

तीनों ने भगवान् सत्यनारायण का नाम लेकर भोजन ग्रहण किया।

● भगवान की सेवा को फल

एक ब्राह्मण शालग्राम की नित्य पूजा किया करता था। एक दिन वह शालग्राम जी को स्नान कराने के लिए गंगाजी गया तो चार चोरों ने उसे पकड़ लिया। चोर बोले कि हम तुम्हें मारेंगे। ब्राह्मण ने कहा कि मेरे पास कुछ नहीं है, सिर्फ शालग्राम की मूर्ति है। लेकिन चोर अपनी बात पर अड़े रहे। अंत में ब्राह्मण ने कहा कि तुम नहीं मानते तो मैं मूर्ति को गंगाजी में प्रवाहित करदेता हूँ, तब फिर मुझे मार डालना। चोर उस ब्राह्मण की बात को मान गये। ब्राह्मण ने मूर्ति को लेकर गंगाजी में प्रवेश किया और उसने मूर्ति से कहा कि भगवन्, मैं इतने दिनों से आपकी सेवा-पूजा कर रहा हूँ, फिर आप इन चोरों से मेरी रक्षा क्यों नहीं करते ? ब्राह्मण की बात सुन कर शालग्राम ने कहा कि हे ब्राह्मण, तू ने पिछले जन्म में इन चारों को मारा था, अतः वे भी तुझे मारेंगे। लेकिन मेरी सेवा-पूजा करने का फल यह है कि ये चारों तुम्हें चार जन्मों में बारी-बारी से मारते, लेकिन अब चारों एक ही बार मारेंगे। चोरों ने ब्राह्मण से पूछा कि तुम गंगाजी में किस से बात कर रहे हो तो ब्राह्मण ने सारी बात सच-सच बतला दी। इससे चोरों का मन शुद्ध हो गया और उन्होंने ब्राह्मण से कहा कि तू भगवान् शालग्राम की पूजा किया कर, हम तुझे नहीं मारेंगे और आज से यह निंद्य कर्म भी नहीं करेंगे। यों कह कर वे चारों चले गये।

● नहचो धारयां भगवान मिलै

एक पारधी नित्य जंगल में जानवरों को मारा करता था। एक दिन वह एक साधु की कुटिया के सामने से गुजरा तो साधु ने 'पारधी से कहा कि आज तू ऐसे जीव को पकड़ना कि जिसके चार भुजाएँ हों, और उन चारों भुजाओं में शंख, पद्म, गदा, चक्र हों, जिसके माथे पर मुकट हो, गले में वैजयन्ती-माला हो तथा जो पीताम्बर पहने हो। अन्य किसी जीव की तरफ आँख उठा कर भी मत देखना। पारधी ने कहा कि ऐसा ही करूँगा।

वह दिन भर जंगल में भटकता रहा, लेकिन उसे ऐसा जीव दिखलाई नहीं पड़ा। यों सात दिन निकल गये। पारधी भूख-प्यास के मारे बेहाल हो गया। अन्त में उसने तय किया कि आज मैं छाती में छुरा भोंक कर मर जाऊँगा। लेकिन ज्योंही वह छुरा भोंकने को उद्यत हुआ, उसने देखा कि सामने से एक अत्यन्त सुन्दर जीव उसी तरफ चला आ रहा है जिसमें साधु की बतलाई हुई सारी बातें मौजूद हैं। पास आने पर पारधी ने उसके गले में फँदा डाल दिया और उसे साधु के पास ले गया। साधु जान गया कि स्वयं भगवान् भक्त के वश में हो कर यहाँ तक आये हैं। साधु ने भगवान् को दंड-प्रणाम किया और फिर बोला कि प्रभो! मेरा जन्म आपकी सेवा-पूजा करते बीत गया, आपने दर्शन नहीं दिये और इस पारधी को आपने इतनी जल्दी ही दर्शन दे दिये, इसका क्या कारण है? भगवान् ने कहा कि इसने जीवन का मोह त्याग दिया था और सच्चे मन से मेरी कामना की थी, इसलिए मैंने इसे दर्शन दिये हैं। सच्ची आराधना से ही मैं द्रवित होता हूँ।

● जाण की पिछाण

एक बार राजा भोज गंगू तेली के साथ तेलियों के मुहल्ले में गया। तेलियों में गंगू का बहुत सम्मान था। जब वे दोनों एक तेली के घर पहुंचे तो तेली ने गंगू का बहुत आदर-सत्कार किया और बैठने के लिए उसे एक मूढ़ा दे दिया। लेकिन राजा को वह नहीं जानता था। तेली के घर में एक मोगरी पड़ी थी। राजा भोज उसी पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद एक जानकार आदमी वहाँ आ निकला। उसने राजा का अवमान देख कर कहा कि सच है जान-चीन होने से ही सत्कार होता है इसके लिए किसी को गुस्सा नहीं करना चाहिए, यदि कोई गुस्सा करे तो वह मूर्ख है :—

जाण की पिछाण, रीस करै सो रुड्डा
राजा भोज नैं मोगरी, गाँगलै नैं मुड्डा ॥

● खाताँ खाण न पीतां पाणी

एक मठ में बहुत से साधु रहते थे। उन सब के पास ओढ़ने के लिए एक ही 'उपराँत' (बहुत बड़ी सोड़) थी। जाड़े के दिन थे। शाम से ही सर्दी बरसने लगती। सारे साधु उसी 'सोड़' में घुस जाते। सभी 'सोड़' को ओढ़ने की चेष्टा करते और सब उसे अपनी-अपनी ओर खींचते। अच्छी खासी हल-चल मची रहती। इसी को लक्ष्य करके किसी ने कहा—

एक सोड़ अर जणा पचास।
सारा करै ओढ़ण की आस॥
साँझ पड़े ई खींचा ताणी।
खाताँ खाण न पीताँ पाणी॥

● आसकरण

राजा भोज के दो रानियाँ थीं, एक को सुहाग था, जिस का नाम भानमती था और दूसरी को दुहाग, जिसका नाम फूलवंती था। लेकिन राजा के कोई संतान नहीं थी। एक बार रानी भानवंती गर्भवती हुई तो उसने राजा से कहा कि महाराज ! मेरे जब संतान होगी तो आपको पता कैसे चलेगा? आप तो दिन भर दरबार में रहते हैं। राजा ने दरबार में एक घंटा लटका दिया और रानी भानवंती के महल से दरबार तक एक जंजीर बाँध दी गई। जंजीर को खींचते ही घंटा बज उठता था। एक दिन दासी ने रानी से कहा कि घंटा तो लग गया, लेकिन क्या तुमने कभी परीक्षा भी ली कि घंटा बजने से राजा आएंगे भी या नहीं। रानी ने जंजीर खींच ली, घंटा बज उठा और राजा आ गया। राजा ने आते ही पूछा कि क्या हुआ ? राजकुमार अथवा राजकुमारी ? रानी ने कहा कि हमने तो जंजीर खींची ही नहीं शायद कोई पक्षी जंजीर पर बैठ गया हो, जिससे जंजीर हिल गई। राजा चला गया और इधर रानी के एक सुन्दर राजकुमार जन्मा। रानी की दासी ने बार-बार जंजीर

हिलाई, लेकिन राजा नहीं आया। रानी फूलवंती ने बच्चा जनवाने का काम अपने ऊपर ले लिया। उसने जच्चा रानी की आँखों पर पट्टी बाँध दी और उसकी छाती में घुटने लगा दिये। जब बच्चा पैदा हुआ तो उसने बच्चे को उठाकर पास के बगीचे में डाल दिया और एक हाल की ब्याई हुई कुतिया के पिल्ले को लाकर वहाँ सुला दिया। राजा को खबर हुई। उसने आकर पूछा कि क्या हुआ तो रानी फूलवंती ने वह पिल्ला दिखला दिया। राजा को बड़ा गुस्सा आया और उसने एक रथवान को बुला कर हुक्म दिया कि रानी को देश-निकाला दिया गया है, तुम उसे राज्य की सीमा से बाहर छोड़ आओ। दुःख और दर्द से पीड़ित रानी रथ में बैठ कर चल पड़ी। जब वह बाग के द्वार पर पहुँची तो उसने रथवान से कहा कि मैं तो अब जा ही रही हूँ, लेकिन जाते-जाते मेरी इच्छा है कि अन्तिम बार अपने बाग को देख लूं। रथवान ने रथ रोक लिया और रानी बाग में चली गई। बाग में रानी ने क्या देखा कि एक घने वृक्ष के नीचे एक नवजात शिशु सो रहा है और एक काला नाग उस पर अपना फन फैलाये 'टूल' रहा है तथा उसके फन से बच्चे के होठों पर अमृत की बूंदें टपक रही हैं, जिन्हें बच्चा चूह रहा है। रानी को देखकर नाग चला गया। रानी ने शिशु को उठाकर अपने आँचल में छिपा लिया और फिर आकर रथ में बैठ गई। रानौ की 'आसा' पूरी हुई थी, इसलिए रानी ने उसका नाम 'आसकरण' रख लिया।

चलते-चलते रथवान रानी को ले कर दूसरे राजा की सीमा में पहुँच गया। उस राजा का राजकुमार शिकार खेलने के लिए अपने साथियों सहित वहाँ आया हुआ था। रथ को देख कर उसने अपने साथियों से शर्त लगाई कि रथ को लूटा जाए, रथ के अन्दर की चीज मेरी और बाहर की चीजें तुम्हारी। सब लोगों ने अपने धोड़े रथ की ओर दौड़ा दिये। राजकुमार ने रथ का पर्दा उठा कर देखा कि एक औरत अपने बच्चे को लिये रथ में बैठी है। राजकुमाम के पूछने पर औरत ने कहा कि भाई! मेरे आगे-पीछे कोई नहीं है, आकाश ने मुझे पटक दिया और धरती ने झेल लिया, मैं

बड़ी दुखिया हूँ। अब मामला दूसरा ही बन गया। राजकुमार को उसने भाई कह कर संबोधित किया था, इसलिए राजकुमार उसे अपनी धर्म की बहिन बना कर अपने घर ले आया। उसने अपने पिता से सारी बात कही। उसके पिता राजा ने कहा कि बेटा! अच्छा किया, तुम्हारे कोई बहिन नहीं थी और मेरे कोई बेटी नहीं थी। अब रानी वहाँ रहने लगी।

आसकरण कुछ बड़ा हो गया तो अपने संगी-साथियों को तंग करने लगा, क्योंकि वह अपने साथियों में सबसे बलिष्ठ था। वह एक लड़के को घोड़ी बना लेता और उस पर सवारी करता। एक दिन लड़के ने अपनी माँ से कहा तो उसने आकर आसकरण को ताना दिया कि तेरे बाप का तो पता ही नहीं कि कौन है और तू मेरे बेटे को घोड़ी बनाता है। आस-करण को यह बात लग गई और वह सीधे अपनी माँ के पास पहुँचा। बहुत हठ करने पर उसकी माँ ने सारी बात उसे बतला दी। तब आसकरण राजा के पास जाकर बोला कि नानाजी, अब हम अपने नगर को जाएँगे सो आप हमें विदा दीजिए। राजा ने उसे बहुत समझाया-बुझाया लेकिन आसकरण नहीं माता तो राजा ने उससे आग्रहपूर्वक कहा कि तुम कम से कम एक वर्ष और यहाँ रहो। आसकरण ने कहा कि आप मुझे सौ घोड़े और सौ सवार दें तो मैं रह सकता हूँ। राजा ने उसे सौ घोड़े और सौ सवार दे दिये। अब आसकरण किले से निकला तो वह पूरी गारद के साथ अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाता हुआ निकला। कुछ लोग कुचले गये। अब आसकरण का नित्य का यही धंधा हो गया। लोग राजा के पास शिकायत ले कर पहुँचे तो राजा ने उनसे कहा कि मैंने आसकरण को साल भर के लिए रख लिया है, इसलिए जैसे-तैसे करके साल भर तो निभाओ, इसके बाद उसे रहना नहीं और हमें रखना नहीं। आसकरण तो इसीलिए यह काम करता था कि राजा फिर उसे रहने के लिए न कहे। साल पूरा हुआ तो राजा ने आसकरण को चारसौ घोड़े और चारसौ सवार दिये। आसकरण की माँ के लिए बहुत सुन्दर रथ मँगवाया और फिर उन्हें खूब धन-दौलत और नौकर-चाकर दे कर ठाठ-बाट से विदा कर दिया।

आसकरण दल-बल, सहित वहाँ से चला। राह में एक दूसरे राजा का नगर आया। आसकरण से भयभीत हो कर उस राजा ने अपनी बेटी आसकरण को ब्याह दी और फिर उसने भी उसे खूब धन-दौलत देकर विदा किया। वहाँ से चलकर आसकरण अपने नगर में आया और अपनी माँ के बाग में अपने साथियों सहित ठहर गया। राजा को खबर हुई तो वह गले में सूत की आटी डाल कर नंगे पैरों आसकरण के पास आया। आसकरण ने राजा से कहा कि घबड़ाने की कोई बात नहीं है। किसी समय मेरे पुरखे यहीं रहते थे। आज मैं अपने पूर्वजों के नगर में काम की तलाश में आया हूँ। राजा ने आसकरण को लाख टके रोज़ पर रख लिया।

एक रात को सोते में राजा की आँखें खुल गईं तो उसे एक स्त्री के रोने की आवाज सुनाई पड़ी। राजा ने आसकरण को बुला कर कहा कि कौन रो रहा है, इस बात का पता लगाओ। आसकरण जिधर से आवाज आ रही थी, उसी दिशा की ओर चल पड़ा। कुछ दूर जाने पर उसने देखा कि एक सुन्दर स्त्री खड़ी रो रही है। आसकरण ने उसके पास जाकर पूछा कि तू कौन है, और क्यों रो रही है? उस स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं इन्द्र की परी हूँ और मुझे इन्द्र-सभा में जाना है, लेकिन आज मुझे देर हो गई है और इन्द्र मुझे दण्ड देगा। यदि तुम मुझे अपने सिरपर खड़ी करके अपने हाथों से ऊपर की ओर ज़ोर से धकेल दो तो मैं उड़ जाऊँगी। आसकरण ने उसकी बात मान ली। लेकिन जैसे ही वह स्त्री आसकरण के सिर पर चढ़ी उसने आसकरण की चोटी पकड़ ली और उसे खाने की चेष्टा करने लगी। आसकरण उसकी मनशा ताड़ गया और उसने कटार निकाल कर एक वार किया। कटार से उसका एक पैर कट गया और वह उड़ गई। इधर आसकरण ने कटे पैर को देखा। पैर में एक बहुत सुन्दर पैंजनी थी। आसकरण ने वह पैंजनी ले ली और सबेरे दरबार में ले जाकर राजा को दे दी। राजा ने वह पैंजनी अपनी रानी को ले जाकर दी। रानी के महल में एक सुग्गा था। रानी अपने पैर में पैंजनी पहन कर

सुग्गे के पास गई और बोली कि देख रे सूआ, मैं कैसी सजी ? सुग्गे ने व्यंग्य से कहा कि एक पैर में पैंजनी क्या सजती है ? दूसरे पैर में भी ऐसी ही पैंजनी चाहिए। रानी 'आटी-पाटी' ले कर सो गई। राजा आया तो रानी ने कहा कि मुझे दूसरे पैर की पैंजनी और मँगवा कर दो। दूसरे दिन राजा ने आसकरण से एक पैंजनी और लाने के लिए कहा।

राजा की आज्ञा सुन कर आसकरण उदास मुंह घर आया। भोजन करने बैठा तो मुंह का ग्रास मुंह में और हाथ का ग्रास हाथ में रह गया। अपनी माँ के पूछने पर आसकरण ने सारी बात बतलाई और दूसरे दिन सबेरे ही वह घोड़े पर सवार हो कर चल पड़ा। चलते-चलते शाम के वक्त वह एक नगर के पास पहुँचा। नगर के फाटक बंद हो चुके थे, अतः वह बाहर ही सो रहा। सबेरे दरवाजा खुला तो राजा के कर्मचारी आसकरण को राजा के पास ले गये। राजा ने इस बात की घोषणा कर रखी थी कि कल सबेरे जो आदमी फाटक पर मिलेगा, उसी के साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया जाएगा। आसकरण का राजा की बेटी के साथ विवाह हो गया। अब आसकरण वहाँ से आगे बढ़ने लगा तो उसकी नई बहू ने कहा कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी। आसकरण ने उसे बहुत समझाया कि मैं लौटते वक्त तुम्हें ले चलूंगा, लेकिन वह नहीं मानी तो आसकरण ने कहा कि मेरे साथ चलना ही चाहती हो तो मर्दाना वेष बनाकर घोड़े पर सवार हो लो। दोनों घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। चलते-चलते वे दोनों समुद्र के किनारे पहुँच गये जहाँ नीचे सिर्फ पानी और ऊपर आकाश दिखलाई देता था। दोनों ने अपने घोड़ों के पैर बाँध कर वहाँ छोड़ दिये और स्वयं दोनों वृक्ष के एक बड़े लकड़े पर जो समुद्र के किनारे पड़ा था, बैठकर समुद्र में तैर चले। बीच समुद्र में पहुँच कर लक्कड़ के दो टुकड़े हो गये और दोनों अलग-अलग दिशाओं में बहने लगे। स्त्री ने अपने पति से कहा कि राजा के बेटे, तुमने मेरे साथ धोखा किया। लेकिन राजकुमार ने कहा कि यह तो मेरे वश की बात नहीं थी, ईश्वर ने मिलाया तो फिर मिलेंगे। दोनों बहते गये, बहते गये।

राजकुमारी का तख्ता बहते-बहते किनारे लगा तो वहाँ एक धोबी कपड़े धो रहा था। धोबी के कोई सन्तान न थी। उसने सोचा कि इसे मैं अपना लड़का बना लूंगा, लेकिन उसने कहा कि मुझे छूना मत। इस पर धोबी ने कहा कि यदि तुम लड़के हो तो मेरे बेटे हो और यदि लड़की हो तो मेरी बेटी बनकर मेरे घर रहो। राजकुमारी ने कहा कि मैं लड़की हूँ। इस पर धोबी उसे अपनी बेटी बनाकर घर ले गया और वह धोबी के घर रहने लगी। लेकिन किसी ने राजा से जा कर चुगली खाई कि धोबी के घर एक बड़ी सुन्दर कन्या है जो आपके लायक है। धोबी को तलब किया गया। धोबी ने कहा कि इसका निर्णय मेरी बिरादरी ही कर सकती है। राजा के भय से बिरादरी ने आज्ञा दे दी तो धोबी की लड़की को बुलवाया गया। धोबी की लड़की ने कहा कि मेरी प्रतिज्ञा है कि मैं छः महीने तक पुरुष का स्पर्श नहीं करूंगी, अतः मुझे छह महीने की मोहलत दीजिए, राजा ने उसे एक अलग महल में ठहरा दिया जहाँ कोई आता-जाता नहीं था।

इधर आसकरण भी किनारे लगा। वहाँ बियावान जंगल था। आसकारण बहुत थका हुआ था, अतः एक वृक्ष के नीचे सोने लगा, लेकिन तभी उसने वृक्ष पर किसी पक्षी के बच्चों की चीं-चीं की आवाज सुनी। आसकरण ने देखा कि एक बड़ा साँप वृक्ष पर चढ़ रहा है। उसने साँप को मार डाला और फिर सो गया। वे बच्चे गरुड़ पक्षी के थे। शाम को गरुड़-दम्पति आये तो बच्चों ने सारी बात कही। वे दोनों आसकरण पर बड़े प्रसन्न हुए। अब आसकरण वहीं रहने लगा। भोर होते ही गरुड़ दम्पति उड़ जाते और शाम होते-होते अपने बच्चों और आसकरण के लिए खाना लेकर लौट आते। ऐसा करते-करते कई दिन हो गये तो एक दिन गरुड़ ने अपने बच्चों से कहा कि अब हम बूढ़े हो चले, अतः अब तुम चारों खाना लाने के लिये जाया करो। दूसरे दिन चारों बच्चे सबेरा होते ही चार दिशाओं में उड़ गये और शाम को खाना लेकर लौटे। आसकरण ने चारों से पूछा कि तुमने क्या-क्या देखा सो मुझ से कहो। एक ने कहा

कि मैंने समुद्र के उस पार दो घोड़ों को देखा, जिनके पैर बँधे हुए थे। आसकरण ने उससे कहा कि वे घोड़े मेरे हैं और कल जब उधर जाओ तो उनसे कह देना कि वे अपने-अपने स्थान को चले जाएँ। अब दूसरे बच्चे ने कहा कि मैं एक ऐसे नगर में पहुँचा कि जहाँ एक महल में एक अकेली औरत को बन्द करके रखा गया है और वहाँ का राजा उससे विवाह करना चाहता है, लेकिन उस औरत ने छह महीने की मोहलत माँग रखी है,अब वह मोहलत पूरी होने वाली है। आसकरण समझ गया कि वह उसकी स्त्री ही है। उसने दूसरे बच्चे से कहा कि वह मेरी ही स्त्री है और कल जाकर उस से कह देना कि चिन्ता मत करो, आसकरण तुम्हें शीघ्र ही यहाँ से ले जाएगा। अब तीसरे बच्चे ने कहा कि मैं एक ऐसे नगर में पहुँचा जहाँ एक बाग में पाँच सौ घोड़े और पाँच सौ ही सवार थे, लेकिन सब बड़े उदास थे और आस-करण, आसकरण कह रहे थे। आसकरण ने कहा कि वे भी मेरे ही आदमी हैं, कल जाकर उनसे कहना कि आसकरण शीघ्र आ रहा है। अब चौथे ने कहना शुरू किया कि मैंने एक लंगड़ी परी देखी, जो हाय आसकरण, हाय आसकरण कह रही थी। उसकी बात सुनते ही आसकरण उछल पड़ा और बोला कि मैं उसी की तलाश में आया हूँ।

दूसरे दिन आसकरण गरुड़ के बच्चे पर सवार हो कर लंगड़ी परी के पास पहुँचा। वह उसे देखते ही पहचान गई। उसने आसकरण से कहा कि तुमने मुझे कहीं की न छोड़ी। लंगड़ी हो जाने के कारण इन्द्र ने मुझे निकाल दी। अब तुम मेरे साथ विवाह करो, अन्यथा मेरी मुक्ति नहीं होगी। आसकरण ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ विवाह तो कर लूंगा लेकिन शर्त यह है कि विवाह करते ही तुझे मार डालूंगा। परी के स्वीकार करने पर आसकरण ने उसके साथ विवाह कर लिया और विवाह करते ही उसे मार डाली। फिर उसने परी के दूसरे पैर से पैंजनी निकाली और गरुड़ के बच्चे पर सवार हो कर अपने स्थान को आ गया।

वहाँ पहुँच कर उसने अपनी स्त्री के पास सन्देश भेजा कि मैं कल आऊंगा सो कल फलाँ वक्त अपने महल की सबसे ऊँची छत पर तैयार

मिलना। दूसरे दिन आसकरण गरुड़ के बच्चे पर सवार होकर अपनी स्त्री के पास पहुँच गया। वहाँ उसने अपनी स्त्री को भी गरुड़ पर बैठा लिया और फिर अपने बाग में उतरा। गरुड़ के बच्चे को उसने बिदाई दे दी। गरुड़ का बच्चा जाते जाते आसकरण से कह गया कि तुम्हें जब भी आवश्यकता हो मुझे याद कर लेना, मैं तुरंत हाजिर हो जाऊँगा।

आसकरण ने पैंजनी ले जा कर राजा को दी। राजा ने रानी को दी और रानी पैंजनी पहन कर सुग्गे के पास गई और उसने सुग्गे से पूछा—'देख रे सूआ, मैं कैसी सजी?' सुग्गे ने कहा कि इन पैंजनियों पर तो सच्चे हाथीदाँत का चूड़ा पहनो, तब ठीक सजोगी। रानी फिर 'आटी-पाटी' लेकर सो गई। राजा आया तो उसने सच्चे हाथीदाँत का चूड़ा मँगवाने की माँग की। दूसरे दिन राजा ने फिर आसकरण को बुलवा कर सच्चे हाथी-दाँत का चूड़ा लाने का हुक्म दिया। आसकरण उदास मुंह घर आया तो रानी ने पूछा कि आज क्या बात है? आसकरण के बतलाने पर उसकी स्त्री ने कहा कि इसका उपाय मैं कर दूँगी। मैं तुम्हें एक चिट्ठी लिख कर देती हूँ सो ले जा कर मेरी बहिन को दे देना, वह तुम्हें सच्चे हाथी-दाँत का चूड़ा दे देगी। यहाँ से तुम अमुक दिशा में चले जाओ, जाते-जाते एक बहुत बड़ा सरोवर आयेगा जिसके आसपास ताड़ के बड़े ऊँचे-ऊँचे पेड़ होंगे। तुम एक बहुत ऊंचे और मजबूत ताड़ के वृक्ष पर छिप कर बैठ जाना। वहाँ बहुत से हाथी पानी पीने के लिए आएँगे और पानी पी कर चले जाएँगे। सबसे अन्त में एक बहुत बड़ा हाथी आएगा, जो तालाब में नहाकर और पानी पीकर तालाब के किनारे लेट जाएगा। जब हाथी सो जाएगा तो उसके कान में से एक बहुत सुन्दर राजकुमारी निकलेगी। वही मेरी बहिन है। तुम वृक्ष पर से उतर कर यह चिट्ठी उसको दे देना। वह तुम्हें सच्चे हाथीदाँत के चूड़े दे देगी। राजकुमार आसकरण ने वैसा ही किया। चिट्ठी पाकर उस राजकुमारी ने कहा कि बहनोई जी, चूड़े तो मैं आपको अभी दे देती, लेकिन इस बीच हाथी जग गया तो वह हम दोनों को मार डालेगा। क्या कोई ऐसी तरकीब नहीं कि हम दोनों यहाँ

से भाग चलें ? आसकरण ने गरुड़ के बच्चे को याद किया और याद करते ही वह आकर हाज़िर हो गया । दोनों जने उस पर सवार होकर उड़ चले । हाथी को इस बात का पता चला तो वह क्रोध में भर कर खूब चिंघाड़ने लगा । लेकिन तब तक वे दोनों अपने स्थान पर पहुँच गये । राजकुमारी ने आसकरण से विवाह कर लिया । नई रानी के रोने से असली हाथी-दाँत के चूड़े तैयार होते थे, अतः नई रानी ने रातों-रात चूड़े तैयार करके अपने पति को दे दिये । आसकरण ने चूड़े ले जाकर राजा को दिये । राजा ने चूड़े ले जाकर रानी को दिये और रानी चूड़ा पहनकर सुग्गे को दिखलाने गई । इस बार सुग्गे ने कहा कि इस चूड़े पर तो 'पैप' के फूलों की माला चाहिए । रानी ने राजा से 'पैप' के फूलों की माला लाकर देने की फरमायश की और राजा ने आसकरण को हुक्म दे दिया । नई रानी के हँसने से 'पैप' के फूल बरसते थे, अतः आसकरण ने पैप के फूलों की माला तैयार करवा कर राजा को दे दी ।

अब राजा के मंत्रियों ने राजा के कान भरे कि ज़ब आसकरण के पास ऐसी-ऐसी दुर्लभ वस्तुएँ हैं तो इसके 'रावले' में रानियाँ भी अत्यन्त रूपवती होंगी, वे आपके रनिवास में आ जाएँ तो रनिवास की शोभा बढ़ जाएगी । लेकिन राजा आसकरण के बल को जानता था, फिर भी आसकरण की रानियों को देखने के लिए उसकी इच्छा प्रबल हो उठी । अपने मंत्रियों की सलाह से राजा ने सारे गाँव को भोज का निमंत्रण दे दिया और यह घोषणा करवा दी कि बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सब भोज में आएं । जो नहीं आएगा, उसे मृत्यु-दंड दिया जाएगा । सारे लोग भोज में आये, आसकरण स्वयं भी आया, लेकिन उसके घर से कोई स्त्री नहीं आई । राजा के पूछने पर आसकरण ने साफ कह दिया कि मेरे घर से कोई स्त्री नहीं आएगी । राजा को नगर भर के लोगों को भोज देने का कोई लाभ नहीं हुआ । आसकरण की नई रानी ने कहा कि आप भी नगर को भोज दीजिए । इसकी सारी व्यवस्था मैं कर दूँगी । आसकरण ने नगर के लोगों को और राजा को रनिवास सहित निमंत्रण दे दिया । राजा ने सोचा कि अब आसकरण

की रानियों को देखने का अवसर मिलेगा, लेकिन आस करण ने ऐसा प्रबन्ध किया कि स्त्री और पुरुष अलग-अलग बैठें। स्त्रियों के बैठने के स्थान पर उसने कनातें तनवा दीं। राजा निराश हो गया। लेकिन उसकी इच्छा इतनी बलवती हो गई कि उसने कनात को अपनी कटार से फाड़कर उसके अन्दर झांका। सामने आसकरण की माँ आई हुई स्त्रियों को भोजन करा रही थी। उसे देखते ही राजा को अपनी रानी की याद हो आई और उसकी आँखों से आँसू टपक पड़े। आसकरण आया तो उसने राजा से कहा कि क्या आप मेरा काम बिगाड़ना चाहते हैं? मैंने हँसी-खुशी आपके भोज में सहयोग दिया था और आप मेरी बदनामी कराने पर तुले हुए हैं।

उधर रानी घूंघट निकाल कर और लजाकर एक तरफ खड़ी हो गई। एकान्त पाकर रानी ने आसकरण को सारी बात बतलाई तो आस-करण राजा के पैरों पर गिर पड़ा और बोला कि आप मेरे पिता हैं और ये मेरी माँ हैं। सारा रहस्य खुला तो राजा को बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ। उसने आसकरण को राज-पाट दे दिया और स्वयं तपस्या करने के लिए वन को चला गया।

● कटोरा-पेंच

एक गाँव में एक गुरूजी अपने शिष्यों को कुश्ती लड़ना सिखलाया करते थे। राज्य की ओर से उनके दस रुपये मासिक बँधे हुए थे। गुरूजी के शिष्यों में एक शिष्य बड़ा होशियार हो गया। उसने सोचा कि अब मैं कुश्ती में गुरूजी को पछाड़ सकता हूँ, अतः उसने गाँव के राजा से निवेदन किया कि महाराज, राज्य की ओर से दी जाने वाली राशि मुझे मिलनी चाहिए। अब मैं गुरूजी को कुश्ती में पछाड़ सकता हूँ। राजा ने कहा कि दोनों में कुश्ती हो जाए, जो जीतेगा उसे ही रुपये मिला करेंगे। कुश्ती का दिन नियत हो गया।

नियत दिन गाँव भर के लोग कुश्ती देखने के लिए मैदान में इकट्ठे हो गये। गुरूजी अभी नहीं आये थे, लेकिन शिष्य लंगोट कसे अखाड़े में

तरह तरह के हुनर दिखला रहा था। जब गुरूजी नहीं आये तो उनको बुलाने के लिए हरकारा भेजा गया। गुरूजी दूध पीकर कटोरे को मल रहे थे। उन्होंने हरकारे से कहा कि मैं कटोरा-पेच करके अभी आ रहा हूं। हरकारे ने आ कर वैसे ही कह दिया। हरकारे की बात सुनकर शिष्य सोच में पड़ गया कि यह कटोरा-पेच क्या बला है? यह दावँ तो गुरूजी ने मुझे सिखलाया ही नहीं। वह विचार में पड़ गया। निश्चित समय पर कुश्ती शुरू हुई। शिष्य के मन में दुविधा बनी थी कि न जाने गुरूजी का कटोरा-पेच क्या है। इतने में गुरूजी ने अवसर पाकर शिष्य को पछाड़ दिया। सब लोग वाह-वाह कर उठे। गुरू जी को आजीवन राज्य से मासिक वृत्ति मिलने की बात तय हो गई।

● काल कोनी आवै

एक सेठ एक खाती के कुछ रुपये माँगता था। सेठ रोज खाती के घर रुपये माँगने जाता और खाती हमेशा सेठ को 'कल दूँगा' कह कर टाल देता। यों करते-कराते बहुत दिन बीत गये। एक दिन खाती की बेटी ने अपने बाप से पूछा कि पिताजी! आप सेठ को रोजाना 'कल' का वायदा करके टरका देते हैं, क्या सेठ को रुपये नहीं देने हैं? खाती ने कहा कि ये सामने हमने जो वृक्ष लगाये हैं, ये उगेंगे और बढ़ेंगे, जब ये बड़े-बड़े हो जाएंगे तब इनके डाले काटे जाएंगे ; डालों को चीरकर उनके फाटके बनाये जाएंगे। फिर उन फाटकों (तख्तों) की चीज़ें बनाई जाएंगी और फिर उन चीज़ों को बेंचकर सेठ को रुपये दिये जाएंगे। खाती की लड़की ने अपने बाप से कहा कि ऐसा होने में तो युग बीत जायेंगे।

खाती ने उत्तर दिया कि चाहे जो कुछ हो रुपये तभी दिये जाएँगे। दूसरे दिन सेठ खाती के घर आया तो घर पर खाती की बेटी ही थी, खाती बाहर गया हुआ था। खाती की बेटी ने सेठ से सारी बात कह दी कि तुम्हें इतने काम हो जाने पर रुपये मिलेंगे। सेठ ने खाती की बेटी से पूछा कि तब तो रुपये मिलेंगे न? खाती की बेटी ने कहा कि हाँ, तब तुम्हें रुपये

अवश्य मिलेंगे। सेठ चला गया। खाती घर आया तो उसकी बेटी ने अपने बाप से कहा कि मैंने सेठ को कल वाली बात कह दी है, अब वह रोज़-रोज़ नहीं आएगा। इस पर खाती ने अफ़सोस प्रगट करते हुए कहा कि यह तुमने क्या किया ? वह समय बीस वर्ष बाद ही सही कभी आ तो जाएगा, लेकिन 'कल' कभी नहीं आता और मैं ज़िन्दगी भर सेठ को रुपये अदा न करता।

● साधु सोनै को के करै ?

एक सेठ एक साधु के पास जाया करता था। जब कई दिन हो गये तो सेठ ने साधु को सोने का एक कड़ा भेंट किया। साधु गंगास्नान के लिए गया तो उसने कड़ा निकाल कर गंगाजी में डाल दिया। सेठ के पूछने पर साधु ने कहा कि कड़ा गंगाजी में गिर गया है। दूसरे दिन सेठ ने साधु को एक और कड़ा लाकर भेंट किया और साधु से बोला कि चलो वह कड़ा भी ढूंढ़े। साधु सेठ के साथ गंगाजी पर गया और सेठ कड़ा ढूंढ़ने लगा। एक स्थान पर खड़े होकर साधु ने दूसरा कड़ा वहाँ डालते हुए सेठ से कहा कि पहला कड़ा यहीं गिरा था। साधु ने दूसरा कड़ा भी गंगाजी में डाल दिया। सेठ ने आश्चर्य से पूछा कि महात्माजी, यह आपने क्या किया ? साधु ने उत्तर दिया कि सेठजी, हम साधु हैं, हमें इन सोने के कड़ों से क्या प्रयोजन है ? फिर कभी कोई वस्तु लेने का आग्रह मुझसे न करना।

● एक हुनर होयां पेट भर लेवै

एक दिन एक मदारी एक गाँव में आया। मदारी के पास एक बिच्छू था। मदारी ने राजा को बिच्छू के बहुत-से सुन्दर-सुन्दर खेल दिखलाये। राजा उस मदारी पर बहुत प्रसन्न हुआ। इतने में राजकुमार ने बिच्छू को अपनी उँगली से छेड़ दिया तो बिच्छू ने उसे काट खाया। मदारी ने तुरन्त बिच्छू का जहर उतार दिया। राजा उस पर और भी प्रसन्न हुआ। उसने मदारी को अच्छा-खासा पुरस्कार दिया और कहा कि तुम बड़े

काबिल आदमी हो। इस पर मदारी ने कहा कि नहीं पृथ्वीनाथ, मैं तो कुछ भी नहीं जानता। न मैं पढ़ा-लिखा हूँ, न मेरे में किसी प्रकार की योग्यता है और न मेरे पास धन है। मैं तो सर्वथा साधनहीन हूँ। मैंने जंगल से सिर्फ यह एक विच्छू पकड़ रखा है लेकिन हाँ इस कला का मैं उस्ताद हूँ, यही एक हुनर मेरे पास है जिससे मैं अपना काम चला लेता हूँ। यदि आदमी के पास एक हुनर भी हो तो वह कभी भूखा नहीं मर सकता।

● भगवान कोनी मिल्या

एक राजा ने सुन रखा था कि शास्त्रों का श्रवण करने से भगवान् मिलते हैं। राजा ने एक पंडित को बुलवा कर उससे शास्त्रों को सुना, लेकिन उसे भगवान् नहीं मिले। तब उसने पंडित से कहा कि मैंने शास्त्रों को सुना, लेकिन मुझे भगवान क्यों नहीं मिले? अब बेचारा पंडित भी बड़ी दुविधा में पड़ गया, उसने तो सोचा था कि राजाजी शास्त्र सुन रहे हैं तो चढ़ावा अच्छा आएगा। उन्हें क्या पता था कि उल्टी नमाज़ गले आ पड़ेगी।

एक दिन उस नगर में एक महात्मा आये। पंडित ने उसके आगे अपना रोना रोया तो महात्मा ने कहा कि मैं राजा को समझा दूँगा। महात्मा ने राजा को अपने पास बुलवाया। उसने कथावाचक पंडित को एक वृक्ष से तथा राजा को दूसरे वृक्ष से बाँध दिया। फिर महात्मा ने राजा से कहा कि तुम पंडित को खोल दो। राजा ने कहा कि महात्मन्, मैं तो स्वयं बँधा हुआ हूँ। फिर महात्मा ने पंडित से कहा कि अच्छा, तुम राजा को खोल दो। इस पर पंडित ने भी यही उत्तर दिया कि भला मैं कैसे खोल सकता हूँ? तब महात्मा ने दोनों से कहा कि तुम दोनों अपने-अपने स्वार्थों से बँधे हुए थे। राजा इस स्वार्थ से बँधा था कि शास्त्रों के श्रवण कर लेने मात्र से भगवान् मिल जाएँगे और पंडित इस स्वार्थ से बँधा हुआ था कि मुझे काफी पैसे मिल जाएँगे। इसलिए न पंडित राजा को भगवान् से मिला सका, न राजा को भगवान् मिल सके। जब तुम निष्काम भाव से शास्त्रों का कथन श्रवण करोगे तो तुम्हें भगवान अवश्य मिल जाएँगे।

● सेठ और सुनार

एक दिन एक सेठ ने एक सुनार से पूछा कि आज-कल तो बहुत फीके दिखलाई देते हो, क्या बात है ? सुनार ने कहा कि सेठजी, सोना तो आँखों से भी नहीं दिखलाई पड़ता, फिर फीके नहीं तो नीके कहाँ से रहेंगे ? सेठ ने कहा कि सोना तो मैं आँख से दिखला देता हूँ । यों कह कर सेठ ने अपना सोने का थाल मँगवा कर सोनी को दिखलाया और कहा कि यह थाल सौ तोले वज़न का है । सुनार ने कहा कि बस, अब काम बन जाएगा ।

सेठ उसी थाल में नित्य भोजन करता था । इधर सुनार ने भी युक्ति सोची । सेठ के यहाँ जो स्त्री बरतन मलने के लिए जाती थी सुनार ने उसे पटाई और कहा कि तुम कुछ छर्रे वाली बालू से थाल को मला करो और खूब रगड़ कर मला करो । फिर वह रेत एक नियत स्थान पर डाल दिया करो । कुछ लालच देने पर वह स्त्री वैसा ही करने लगी । सुनार उस रेत को घर ले जाकर इकट्ठी करने लगा । महीने भर में ही दस तोला सोना उस बालू में मिल कर सुनार के घर पहुँच गया, जिसे सुनार ने बालू से निकलवा लिया । महीने भर बाद जब सेठ और सोनी मिले तो सेठ ने सोनी से पूछा कि आज-कल क्या हाल-चाल हैं ? सोनी ने कहा कि आपकी कृपा है, जो सोने का थाल आपने मुझे दिखलाया था उसी से मेरा काम चल जाता है । सेठ ने कहा कि थाल तो मेरे घर में मौजूद है और मैं नित्य उसमें खाना खाता हूँ । तब सोनी ने कहा कि थाल मँगवा कर तौल लीजिए । थाल तौला गया तो नव्बे तोले का हुआ । यह देखकर सेठ को बड़ा आश्चर्य हुआ । सुनार ने अपनी युक्ति सेठ को बतलाई तो सेठ मान गया कि वास्तव में ही सुनार बड़े चतुर होते हैं और सोना आँख से देख लेने मात्र से ही उनकी भूख चली जाती है ।

● बखत की सूझ

एक स्त्री व्यभिचारिणी थी, लेकिन साथ ही बहुत चतुर भी थी । एक दिन उसके पति को उसके मित्रों ने कहा कि तुम्हारी स्त्री व्यभिचारिणी है

और तुम्हारे घर पर अन्य पुरुष आते हैं। उसका पति इस बात का पता लगाने के लिए घर पर जा कर अपनी खाट के नीचे छिप गया। उस स्त्री का उप-पति घर आया और उसका आलिंगन करने लगा। तभी उस स्त्री को खटका हुआ कि खाट के नीचे कोई है। तब उसने अपने उप-पति को डाँटते हुए कहा कि खबरदार, इससे आगे मत बढ़ना, अन्यथा तुम्हें अपने पातिव्रत्य के प्रभाव से भस्म कर दूँगी। उस आदमी ने चिढ़ कर पूछा कि तो फिर मुझे बुलाया ही क्यों था ? स्त्री ने कहा कि मैंने अपने पति की जन्म-कुंडली एक बड़े महात्मा को दिखलाई थी सो उन्होंने कहा कि तुम्हारे पति की उम्र बहुत कम रह गई है, यदि तुम किसी अन्य पुरुष को अपने घर पर बुलवाकर उसका आलिंगन करो तो उस आदमी की आयु घट जाएगी और तुम्हारे पति की आयु बढ़ जाएगी। साथ ही उस स्त्री ने संकेत कर दिया कि खटिया के नीचे मेरा पति है। वह व्यक्ति चला गया और उस स्त्री के पति को विश्वास हो गया कि मेरी स्त्री बड़ी पतिव्रता है। उसने निश्चय कर लिया कि आगे कभी मित्रों की बात का विश्वास नहीं करूँगा।

● खीर सबड़कै की

एक दिन खाने-पीने की चीज़ों का प्रसंग चला तो मन्त्री ने राजा से कहा कि महाराज, खीर तो सबड़के से ही खाई जाती है और तभी उसके खाने का स्वाद आता है। राजा ने इस बात की परीक्षा करने के लिए कि नगर में कितने असली खीर खाने वाले आदमी हैं, तमाम नगर-निवासियों को एक बड़ा भोज दिया। खाने के लिए खीर परोसी गई, लेकिन साथ ही यह घोषणा कर दी गई कि खीर सबड़के से न खाई जाए। सारे लोग चुप-चाप खीर खाने लगे। लेकिन राजा ने देखा कि बहुत दूर बैठा हुआ एक आदमी सबड़के लगा-लगा कर खीर खा रहा है। राजा मन्त्री के साथ उसके पास पहुँचा। मन्त्री ने उस आदमी से पूछा कि क्या तुम्हें इस बात का पता नहीं कि सबड़के के साथ खीर खाने वाले का सिर काट लिया जाएगा। उस आदमी ने कहा कि महाराज, मुझे सबड़का लेकर स्वाद के

साथ पेट भर खीर खा लेने दीजिए, फिर चाहे मेरा सिर काट लें, लेकिन खीर सबड़के की ही होती है और मैं सबड़के से ही खीर खाऊँगा। तब मंत्री ने राजा से कहा कि नगर भर में यही एक आदमी असली खीर खाने वाला है।

(रूपांतर-बादशाह ने अपने दरबार में घोषणा कर दी कि गाना सुनते वक्त कोई सिर हिलाएगा तो उसका सिर काट लिया जाएगा। कहाँ तो सारे लोग झूम झूम कर सिर हिला रहे थे और कहाँ घोषणा होते ही सब निश्चल हो कर बैठ गये। लेकिन बादशाह ने लक्ष्य किया कि एक आदमी फिर भी सिर हिला रहा है। पूछने पर उसने कहा कि जहाँपनाह, मैं सिर नहीं हिला रहा था, वह तो स्वयं ही हिल रहा था, अब आपकी इच्छा है, चाहे मुझे फांसी दें चाहे सूली। अच्छा गाना सुनने पर मौतके डर से सिर हिले बिना नहीं रहता।)

● च्यारूं जुग

एक दिन एक राजा ने अपने मन्त्री से कहा कि मुझे चारों युग (सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग दिखलाओ। मंत्री ने कहा कि इसके लिए समय चाहिए और उचित अवसर पर मैं आपको चारों युगोंकी झांकी दिखला दूंगा। अब मंत्री ऐसे अवसर की तलाश में रहने लगा।

एक आदमी ने किसी दूसरे आदमी को अपना खेत बेचा। एक दिन उस खेत में सोने से भरा एक कलश निकला। जिस आदमी ने खेत लिया था वह उस कलश को लेकर खेत बेचने वाले के पास गया और बोला कि भाई, यह सोने से भरा कलश खेत में निकला है। मैंने तुमसे सिर्फ खेत ही खरीदा था, यह कलश नहीं, अतः अपना कलश ले लो। बेचने वाले ने कहा कि भाई, मैंने तुम्हें खेत बेंच दिया, अब उस खेत में जो कुछ निकले वह सब तुम्हारा है, मेरा उससे कोई सरोकार नहीं। इस विवाद को निपटाने के लिए दोनों मंत्री के पास पहुँचे। मंत्री उन दोनों को राजा के पास ले गया। सारी बात सुन कर राजा ने उस कलश को सरकारी खजाने में जमा करने का आदेश दे दिया। तब मंत्री ने राजा से कहा कि महाराज, अब चारों

युग प्रत्यक्ष देख लीजिए। बादशाह मंत्री का आशय नहीं समझा तो मंत्री ने स्पष्टीकरण किया:—यह आदमी जिसने खेत लिया है, सतयुग का है। यह चाहता तो सोने से भरा कलश स्वयं ही रख लेता। यह दूसरा आदमी त्रेता का है। सतयुग वाले आदमी द्वारा कलश पेश करने पर यह आदमी उसे स्वीकार कर सकता था, लेकिन इसने नहीं किया। आप मुझे द्वापर का आदमी कह सकते हैं, क्योंकि यदि मैं चाहता तो कलश आपके पास न लाकर स्वयं रख सकता था और गुनाह माफ हो, आप साक्षात् कलियुग के प्रतीक कहे जा सकते हैं जो आपने स्वर्ण से भरे कलश को अपने खजाने में भेज दिया।

● भगवान् मिलणै की तरकीब

एक राजा ने सुना कि शास्त्रों का अध्ययन करने से भगवान् मिलता है। लेकिन अब राजा इस दुविधा में पड़ गया कि कौनसा शास्त्र पढ़ा जाए। उसने अपने दरबारी पंडितों से कहा कि इसका निर्णय करके मुझे बतलाओ, अन्यथा सबको देशनिकाला दूँगा। पंडित किसी प्रकार राजा की शंका का समाधान न कर सके और बड़ी चिन्ता में पड़ गये। एक दिन उस गाँव में एक महात्मा आया। पंडितों की बातें सुनकर उसने कहा कि मैं राजा की शंका का समाधान कर दूँगा।

महात्मा ने राजा से कहा कि तुम मेरे साथ नदी तट पर चलो। राजा नदी तट पर चला गया तो महात्मा ने कहा कि हमें नदी के उस पार चलना है, अतः नदी पार करने के लिए एक नाव मँगवाओ। राजा ने नाव मँगवाई तो महात्मा ने कहा कि यह नहीं, दूसरी नाव मँगवाओ। राजा ने दूसरी नाव मँगवाई तो महात्मा ने कहा कि यह नहीं और नाव मँगवाओ। यों राजा ने कई नावें मँगवाईं, लेकिन महात्मा हर बार यही कहता रहा कि यह नहीं, दूसरी नाव मंगवाओ। अन्त में राजा ने खीझ कर महात्मा से कहा कि आप यह क्या तमाशा कर रहे हैं? हमें तो उस पार तक जाना है, किसी भी नाव में बैठ कर जा सकते हैं। इतना सुनते ही महात्मा ने कहा कि राजन्, बस यही तुम्हारी शंका का समाधान है। तुम ध्यानपूर्वक मन लगा

कर चाहे जिस शास्त्र का पठन-पाठन करो, तुम्हें भगवान् की प्राप्ति हो जाएगी। राजा की समझ में महात्मा की बात आ गई।

● साधु घोड़ै को के करै ?

एक राजा एक साधु के पास जाया करता था। जब राजा को साधु के पास जाते बहुत दिन हो गये तो राजा ने सोचा कि महात्मा को भेंट-स्वरूप कुछ देना चाहिए। सोच-विचार कर राजा साधु के लिए एक उत्तम किस्म का घोड़ा ले गया। साधु ने राजा से कहा कि राजन्, घोड़ा तो उसी को शोभा देता है, जिसके पास अच्छा मकान हो। राजा ने कहा कि मैं आपके लिए मकान बनवा दूँगा। तब साधु ने कहा कि घोड़े की सेवा करने और मकान की सफाई करने के लिए नौकर भी चाहिएँ। राजा ने कहा कि मैं नौकर भी रख दूँगा। तब साधु ने कहा कि घर की शोभा तो स्त्री होती है, इसलिए घर बसाने के लिए स्त्री भी चाहिए। राजा ने कहा कि मैं आपको स्त्री भी ला दूँगा। इस पर साधु ने कहा कि राजन्, मैं आपका एक घोड़ा लूंगा तो मेरे पीछे इतने झंझट लगेंगे। भला साधु का इन झंझटों से क्या प्रयोजन है ? मुझे आपका घोड़ा नहीं चाहिए। साधु की बात राजा की समझ में आ गई और वह अपना घोड़ा वापिस ले गया।

● माँडचन्द जी आया है

एक सेठ पैसे वाला था लेकिन फिर भी बड़ा कंजूस था। अधिक खर्च लगने के भय से वह माँड पी लेता और सारे घर वालों को भी चावलों का माँड़ ही पीने को देता था। एक दिन सेठ कार्य की अधिकता के कारण दुकान से घर नहीं आ सका तो उसकी स्त्री ने अपने पति को कहला भेजा:—

माँड़चन्द जी आया है, काठमाँडू जावैगा।
मिलणो हो तो मिलल्यो फेर हाथ नहीं आवैगा॥

सेठ समझ गया और घर आकर उसने अपनी पत्नी से कहा कि आज तू ने अपनी चतुराई से मेरी इज्ज्जत बचा ली, नहीं तो आज बड़ी शरमिन्दगी उठानी पड़ती। उसी दिन से सेठ ने कंजूसी भी छोड़ दी।

नारद को घमण्ड

एक बार नारद जी को अभिमान हो गया कि भगवान् का भजन जितना मैं करता हूँ उतना कोई और नहीं करता, अतः भक्तों में मैं ही उन्हें सबसे अधिक प्रिय हूँ। वे इस आशय से भगवान् के पास गये और उन्होंने भगवान् से पूछा कि प्रभो, आजकल आपका सबसे प्रिय भक्त कौन है ? नारद के मन की बात भगवान् जान गये, अतः उन्होंने कहा कि अमुक गाँव में अमुक जाट मेरा प्रिय भक्त है, तुम्हें देखना हो तो जाकर उसकी दिनचर्य्या देख सकते हो। नारद को बड़ा आश्चर्य हुआ कि भगवान् को एक जाट मुझसे भी अधिक प्रिय है। नारद उस जाट के पास गये।

वह जाट सबेरे सोकर उठा तो उसने दो बार 'राम-राम' कहा और फिर अपने काम में लग गया। दिन भर वह अपने खेत पर काम करता रहा। शाम को हारा-थका घर आया और रोटी खा पीकर सोने लगा तो उसने फिर दो बार 'राम-राम' कहा और सो गया। नारद ने जाट की दिनचर्य्या देखी तो उन्हें भगवान् के कथन पर बड़ा अचंभा हुआ। नारद भगवान् के पास गये तो उन्होंने जाते ही एक घी से भरा कटोरा नारद के हाथों में थमा दिया और कहा कि इसे ले जाओ और मंदराचल की परिक्रमा करके आओ, लेकिन ध्यान रहे कि एक बूंद भी नीचे न गिरे। घी से भरा कटोरा लेकर नारद मुनि चले गये और पर्वत की परिक्रमा करके दूसरे दिन भगवान् के पास पहुँचे। उन्होंने सगर्व भगवान् से कहा कि भगवन्, मैं परिक्रमा कर आया हूं और एक बूंद घृत की इस कटोरे से नहीं गिरने पाई है। तब भगवान् ने मुस्कराते हुए नारद से पूछा कि नारद जी, सो तो ठीक है लेकिन इस दरमियान तुमने मेरा नाम कितनी बार लिया ? अब नारद जी झेंपते हुए बोले कि भगवन्, कटोरे से एक बूंद भी न गिर जाए, इस बात की चिन्ता में मुझे आपका नाम लेने की बात याद ही नहीं आई। तब भगवान् ने कहा कि वह जाट अपने कार्य में इतना अधिक व्यस्त रहता है, लेकिन उठते ओर सोते दोनों वक्त मुझे दो बार अवश्य याद कर लेता है,

लेकिन तुम एक दिन में ही मुझे भूल गये। भगवान् की बात सुन कर नारद का घमंड छूमन्तर हो गया।

● चटोरी लुगाई

एक स्त्री बड़ी चटोरी थी। घर की सारी चीज़ें वह स्वयं चुरा-चुरा कर खा जाती लेकिन पूछने पर यही कहती कि अमुक चीज़ को चूहे खा गये। चूहों ने सोचा कि हम तो मुफ्त में बदनाम हो रहे हैं, अतः एक रात जब वह स्त्री अपने कपड़े उतार कर सोई तो चूहों ने मिल कर उस स्त्री का घाघरा उठाया और घाघरे को घसीटते हुए ले जाकर उसके सोते हुए पति पर डाल दिया। उसके पति ने सोचा कि उसकी स्त्री कुलटा है, अतः वह कटार लेकर उसे मारने चला। लेकिन दीपक को जलते हुए देख कर वह ठिठक गया। उसने सोचा कि दीपक बुझ जाए तो उसे मारूँ। इधर दीपक ने सोचा कि आज यदि मैं बुझ गया तो यह आदमी अपनी स्त्री को अँधेरे में अवश्य ही मार डालेगा, अतः वह जलता रहा। सबेरा होने को आ गया और उस स्त्री का पति प्रतीक्षा करते-करते थक गया। उसने अपनी स्त्री को मारने का विचार त्याग दिया।

सबेरा हुआ और दीपक चला गया (बुझ गया)। आज घर पर दीपक की माँ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने आते ही बेटे से पूछा कि बेटे, तू आधी रात को ही घर आ जाया करता है, आज सारी रात घर क्यों नहीं आया ? इस पर दीपक ने कहा कि माँ, आज मैं सारी रात जागता रहा और रात भर जग कर मैंने एक स्त्री की जान बचाई है। फिर दीपक ने सारी बात अपनी माँ को सुनाई। बेटे की बात सुन कर माँ की आँखों में संतोष के आँसू छलक आये और उसने प्यार से दीपक का सिर सूंघ लिया।

● आप होवै जिसी ही दुनिया दीखै

एक दिन राजा ने अपने नाई से पूछा कि खवास, तू सारे नगर में घूमता फिरता है, आजकल जनता के क्या हालचाल हैं, सो बतला। नाई ने कहा कि पृथ्वीनाथ, सारी जनता बहुत आराम से है। ऐसा कोई घर नहीं जिसमें

एक भैंस न हो और ऐसा कोई आदमी नहीं कि जिसके पास कम से कम दस तोले सोना न हो। राजा ने सोचा कि तब तो सारी जनता खुशहाल है। मंत्री आया तो राजा ने उससे नाई की बात कही। मंत्री ने कहा कि महाराज, ऐसी बात तो नहीं है। राजा ने मंत्री से कहा कि ऐसी बात क्यों नहीं है, नाई ने मुझे बड़े भरोसे के साथ यह बात कही है। यदि ऐसी बात नहीं है तो तुम इसे साबित करो।

मंत्री अपने घर चला गया और उसने सारी बात का पता लगाया। नाई के घर में एक भैंस थी और नाई के पास सोने का एक डला था जो करीब १० तोले का था। नाई उस सोने के डले को अपनी टेंट में रखता था। एक दिन मंत्री ने नाई की भैंस चुरवा कर मंगवा ली और जब नाई राजा की हजामत बनाने गया तो मंत्री के कहने से राजा ने उसे बातों में लगा लिया और मंत्री ने नाई की टेंट से सोना निकाल लिया। आज नाई घर गया तो उसे यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ कि भैंस चोरी चली गई। फिर उसने अपनी टेंट सम्हाली तो सोना भी गायब था।

अब नाई बहुत उदास रहने लगा। इधर मंत्री ने राजा को सारी बात बतलाई और कहा कि आदमी जैसा आप होता है सारी दुनिया उसे वैसी ही लगती है। अब आप नाई से पूछें कि लोगों के क्या हालचाल हैं?

कुछ दिन बाद राजा ने नाई से फिर पूछा कि क्यों खवास, आज-कल जनता के क्या हाल हैं तो नाई ने बड़ी उदासी से कहा कि अन्नदाता, आज-कल तो लोगों के हाल बड़े फीके हैं। न किसी के पास दूध पीने के लिए भैंस है और न किसी के पास सोना ही है।

राजा को मंत्री की बात का विश्वास हो गया कि जैसा आप होता है उसकी दृष्टि में दूसरे भी वैसे ही होते हैं।

● पाप को बाप लोभ

एक दिन राजा ने अपने मंत्री से पूछा कि पाप का बाप कौन है? मंत्री इसका कोई उत्तर नहीं दे सका, उसने राजा से इसके लिए मोहलत माँगी। राजा ने मंत्री को एक महीने की मोहलत दे दी। मंत्री उदास मुंह घर आ

गया। उसने राजा की बात का उत्तर बहुत सोचा लेकिन उसे कोई उत्तर नहीं सूझा।

एक दिन मंत्री राजा की बात का उत्तर पाने के लिए घर से निकल गया और घूमते-घामते एक वेश्या के घर पहुँच गया। मंत्री की बात सुन कर वेश्या ने कहा कि मैं तुम्हें तुम्हारी बात का उत्तर दूंगी, तुम यहाँ रहो।

मंत्री जाति से ब्राह्मण था और वह वेश्या के घर खाना नहीं खाना चाहता था, लेकिन वेश्या ने कहा कि तुम यहाँ रहोगे तभी मैं तुम्हें तुम्हारी बात का उत्तर दूंगी तथा राजा तुम्हें जितनी तनख्वाह देता है उससे अधिक मैं दूंगी। तब मंत्री वहीं टिक गया और उस वेश्या के घर खाने-पीने लगा। एक दिन वेश्या ने शराब मँगवाई और मंत्री से शराब पीने के लिए कहा। मंत्री ने पहले इनकार किया, लेकिन वेश्या के लालच देने पर उसने शराब पी ली। फिर इसी प्रकार लालच के वशीभूत होकर उसने माँस भी खा लिया। तब एक दिन वेश्या ने मंत्री को अपने पास बुलाया और लालच देकर उसे अपनी सेज पर सोने के लिए राजी कर लिया। लेकिन जैसे ही वह सेज पर चढ़ने लगा वेश्या ने मंत्री के गाल पर एक तमाचा जड़ दिया और कहा कि यह क्या कर रहे हो? मंत्री हक्का-बक्का रह गया। तब वेश्या ने कहा कि तुम नाराज़ मत हो, मैंने तुम्हें तुम्हारी बात का उत्तर दिया है। मंत्री के पूछने पर वेश्या ने स्पष्ट किया कि तुम ब्राह्मण हो, लेकिन तुमने लोभ के वशीभूत हो कर शराब पी, माँस खाया और अब वेश्यागमन करने के लिए तैयार हो गये, अतः कहा जाएगा कि लोभ ही पाप का बाप है। मंत्री को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया और वह अपने घर लौट गया।

● लँगोटी की माया

एक साधु अपने चेले के साथ वन में रहा करता था। साधु के पास सिर्फ एक ही लँगोटी थी। चेले ने साधु से कहा कि गुरूजी, आपके पास एक ही लँगोटी है इससे आपको बड़ी दिक्कत रहती है, यदि दो लँगोटियाँ हों तो एक स्नान के पश्चात् धुल जाया करे और दूसरी आप पहन लिया करें।

साधु ने कहा कि नहीं इससे संग्रह करने की इच्छा को वल मिलता है, अतः मुझे एक ही लँगोटी काफी है। चेला नहीं माना और वह साधु के लिए एक लँगोटी और बना लाया। कुछ दिनों के बाद चेला तीर्थयात्रा के लिए चला गया। अब साधु जब स्नान के पश्चात् अपनी लँगोटी सुखाता तो उसे चूहे काट जाते। साधु ने चूहों को मारने के लिए एक विल्ली पाली, लेकिन बिल्ली के लिए दूध चाहिए, इसलिए साधु को दूध के लिए एक गाय लानी पड़ी। लेकिन गाय की सेवा कौन करे, अतः साधु अपना विवाह करके गाय की सेवा करने के लिए एक औरत ले आया। औरत के रहने के लिए साधु को एक मकान बनवाना पड़ा। कुछ समय पश्चात् उसके बेटे-बेटी हो गये और साधु पूरा गृहस्थी बन गया।

कई वर्षों बाद जब चेला तीर्थयात्रा से लौट कर वहाँ आया तो न वहाँ उसे अपना गुरू मिला और न गुरू की झोंपड़ी। उसने उस मकान में जाकर मकान मालिक से पूछा कि यहाँ एक साधु रहता था, वह कहाँ गया? मकान मालिक ने उसे पहचान लिया और कहा कि मैं ही वह साधु हूँ। अब चेले ने भी अपने गुरू को पहचान लिया और पूछा कि गुरूजी, यह सब क्या है? तब गुरू ने कहा कि यह सब तुम्हारी उस लँगोटी की माया है। यों कह कर गुरू ने आदि से अन्त तक की सारी कथा चेले को सुना दी।

● स्यान्ति को नुस्खो

एक सेठ के चार लड़के थे। चारों का विवाह हो गया था। सेठ इस बात को जानता था कि उसके बेटे चाहे आपस में न लड़ें, लेकिन बहुएँ आपस में झगड़े बिना न रहेंगी, अतः उसने एक तरकीब निकाली। सारे बेटे दुकान पर काम करते और दोपहर को घर जाकर भोजन करके आते। जिस दिन जिस बेटे की बहू झगड़ा करती, उस दिन सेठ उस बेटे को जीमने के लिए घर पर नहीं भेजता था। उसका खाना दुकान पर ही मँगवा लिया जाता। उस बेटे की बहू अपने पति के सान्निध्य से वंचित रह जाती। अतः कोई बहू झगड़ा न करती और घर में हमेशा शान्ति बनी रहती।

● काला़ कुत्तम सदा उत्तम

एक बार एक ओझाजी को भोजन का निमंत्रण मिला। भोजन के लिए बहुत बढ़िया खीर बनाई गई थी, लेकिन एक कुत्ता उसे जूठ गया। अब क्या हो? लोगों ने ओझाजी से पूछा कि खीर को कुत्ता जूठ गया है, अतः खीर परोसी जाए या नहीं? ओझाजी ने सोचा कि 'खीर-खांड़' के भोजन हमेशा तो मिलते नहीं हैं और फिर मीठे के साथ जूठा खाया ही जाता है, अतः खीर जैसी वस्तु को कुत्ते के जूठ देने मात्र से नहीं छोड़ना चाहिए, फिर चाहे कुत्ता कैसा भी क्यों न हो। अतः उन्होंने सोच विचार कर व्यवस्था दी :—

काला़ कुत्तम सदा उत्तम,
भूरा कुत्ता सरासरी,
जैं हो कुत्ती किरड़काबरी
बीं की के हो बराबरी।

(यदि कुत्ता काले रंग का था तो वह सदा उत्तम है ही और भूरे रंग का था तो भी कोई हानि नहीं। और यदि धब्बेदार कुतिया थी तो फिर उसकी तो कोई समता ही नहीं)

अब चाहे कुत्ता किसी रंग का रहा हो, खीर खाने में कोई दिक्कत न रही।

● अल्ला की सुरमादानी

एक गाँव में सब मूर्ख ही मूर्ख रहते थे। उसी गाँव में एक लालबुझक्कड़ थे। गाँव के लोगों की शंकाओं का वे बड़ी खूबी के साथ समाधान करते थे। एक दिन गाँव के लोगों को एक पुरानी ओखली मिल गई। उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह क्या है। जब वे किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सके तो सब मिलकर लालबुझक्कड़ जी के पास गये। बुझक्कड़जी ने ओखली को बड़े ध्यानपूर्वक देखा और वे सिर खुजाते-खुजाते सोचने लगे। अन्त में उन्होंने सोच विचार कर कहा:—

"लालबुझक्कड़ बूझते और न बूझे कोय ।
हो न हो अल्लाह की यह सुरमादानी होय ।।"

सब लोग वाह-वाह कर उठे ।

● बडो कुण ?

एक चूहे के एक ही बेटी थी । उसने सोचा कि मेरे एक ही बेटी है सो इसका विवाह उससे करना चाहिए जो सबसे बड़ा हो । सोचते-सोचते उसने निश्चय किया कि सूर्य भगवान् ही सबसे बड़े हैं और वह अपनी बेटी के विवाह का प्रस्ताव लेकर सूर्य भगवान् के पास गया । सूर्य ने चूहे का प्रस्ताव सुनकर कहा कि मुझे तो बादल ढांक लेता है, अतः तुम उसके पास जाओ । बादल ने चूहे की बात सुन कर कहा कि मेरे से बड़ा पवन है जो मुझे इधर से उधर फेंक देता है, अतः तुम पवन के पास जाओ । पवन ने कहा कि मेरे से बड़े पहाड़ हैं जो मुझे रोक लेते हैं । चूहा पहाड़ के पास गया तो पहाड़ ने कहा कि भाई, मेरे से बड़े तो तुम ही हो जो मुझे खोद डालते हो । अब चूहे की समझ में बात आ गई कि अपनी ही जाति के किसी चूहे से अपनी बेटी का विवाह करना उचित है ।

● लंका में कूद्यो बीर हणमान

एक गाँव में एक ब्राह्मण कथा बाँचा करता था । वह कुछ पढ़ा-लिखा न था, लेकिन गाँव के लोगों पर उसने अपना प्रभाव जमा रखा था और वे उसकी कथा बड़ी श्रद्धा से सुनते थे । कथा पर चढ़ावा भी अच्छा आ जाता था । एक दिन एक पंडित उस गाँव में आ गया । उसने जान लिया कि कथा-वाचक जी निरे मूर्ख हैं, अतः उसने सोचा कि मैं अपना आसन यहाँ जमाऊँ । उधर ब्राह्मण भी बहुत दिनों से वहाँ जमा हुआ था, अतः उसने भी निश्चय कर लिया कि इसके पैर यहाँ नहीं जमने दूंगा । आखिरकार दोनों में सम-झौता हो गया । चढ़ावे में पहले वाले ब्राह्मण का दस आने और नये पंडित का छः आने तय हो गया । पंडित ने सोचा कि फिलहाल इसी पर सब्र करना चाहिए ।

एक दिन ब्राह्मण कथा बाँच रहा था। लंका दहन का प्रसंग चल रहा था, लेकिन ब्राह्मण हनुमानजी का नाम भूल गया और बार-बार 'वे कूदे, वे कूदे' कह रहा था। कथा आगे नहीं बढ़ पा रही थी, अतः उसने पास बैठे हुए पंडित से पूछा, 'लंका में कूदियो, बीं को नाम के ?' इस पर पंडित ने उत्तर दिया "छः आना दस आना हमाँ जाणां के ?" ब्राह्मण ने सोचा कि अब मामला बिगड़ जाएगा, अतः उसने कहा "आज सें होयो समान, समान।" इस पर पंडित खुश होकर बोला, 'लंका में कूद्यो बीर हणमान ।'

● कम-खाऊ, कम-पीऊ

एक राजा के दो लड़के थे। बड़े का विवाह हो गया था, लेकिन छोटा अभी अविवाहित था। छोटा भाई जीमने बैठता तो भोजन में कुछ न कुछ दोष निकाल दिया करता। एक दिन भाभी ने ताना मार दिया कि इतना दोष निकालते हो तो बहू ले आओ, मैं भी देखूं कैसी चात्रक बहू लाते हो? राजकुमार भाभी का ताना सुनकर उसी वक्त घर से निकल पड़ा।

चलते-चलते वह एक ऐसे नगर में पहुँचा जहाँ कोई मनष्य अथवा जानवर नहीं था, लेकिन सारा बाज़ार अनेक प्रकार के मिष्ठान्नों से भरा पड़ा था। राजकमार को बड़ी भूख लग रही थी, अतः उसने मिठाई की तरफ हाथ बढ़ाया, लेकिन तभी एक अजीब व्यक्ति वहाँ आ पहुँचा। वह आदमी स्वयं सवा बालिश्त का था, लेकिन हाथ में सात हाथ लम्बी लाठी लिये था। उसने राजकमार को लड़ने के लिए ललकारा। दोनों में कुश्ती हुई और अन्त में राजकुमार ने उस व्यक्ति को जिसका नाम 'गुटैया देव' था, परास्त कर दिया। 'गुटैया देव' ने राजकुमार की अधीनता स्वीकार कर ली और फिर वे दोनों आगे बढ़े। चलते-चलते वे दोनों एक बड़े तालाब के पास पहुँचे। राजकुमार को बड़ी प्यास लग रही थी, अतः पानी पीने के लिए उसने तालाब की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन तभी तालाब पर बैठे एक आदमी ने राजकुमार को पुकार कर मना किया कि यह क्या जुल्म कर रहे हो? मैं प्यासा रह जाऊँगा। राजकुमारने उसके पास जाकर कहा कि इतना बड़ा

तालाब तुम्हारे आगे भरा पड़ा है फिर प्यासे मरने का सवाल ही कहाँ पैदा होता है ? उस आदमी ने कहा कि देखो, मैं तुम्हारे देखते-देखते ही सारा पानी पी डालता हूँ । उस आदमी ने पानी पीना शुरू कर दिया और राजकुमार ने साश्चर्य देखा कि वह आदमी जिसका नाम 'कम-पीऊ' था, तालाब भर के सारे पानी को कुछ ही क्षणों में पी गया । अब 'कम-पीऊ' भी राजकुमार के साथ हो लिया और तीनों आगे बढ़े । चलते-चलते वे एक बड़े बाग में पहुँचे जहाँ बाग के सारे वृक्ष मीठे फलों से लदे थे । राजकुमार ने जैसे ही फल तोड़ने के लिए एक वृक्ष की ओर हाथ बढ़ाया उस बगीचे के रक्षक ने राजकुमार से कहा कि ऐसा कदापि मत करना अन्यथा मैं भूखा रह जाऊँगा। राजकुमार ने कहा कि सारे वृक्ष फलों से लदे पड़े हैं, तुम जन्म भर खाते रहो तो भी सारे फल नहीं खा सकोगे । लेकिन उस आदमी ने जिसका नाम 'कम-खाऊ' था, शीघ्र ही बाग के सारे वृक्ष फल-फूल और पत्तों तथा डालियों सहित उदरस्थ कर लिये । अब चारों आगे बढ़े । वे चले जा रहे थे, तभी एक आदमी ने उन्हें पुकार कर कहा कि जहाँ खड़े हो वहीं रुक जाओ । चारों आदमी वहीं खड़े रह गये । वह आदमी ऊपर की ओर देख रहा था और कह रहा था कि वह आ गया, अब गिरा अब गिरा । वे चारों भी ऊपर की ओर देखने लगे, लेकिन उन्हें कुछ भी नहीं दिखलाई पड़ा । लेकिन थोड़ी ही देर में आकाश से एक तीर सनसनाता हुआ आकर गिरा और धरती में गड़ गया । अब राजकुमार ने उससे पूछा कि यह क्या माजरा है ? उस आदमी ने कहा कि मेरा नाम "कम नज़र" है । यह तीर मैंने आज सुबह छोड़ा था और तब से इसके आने की बाट देख रहा था । राजकुमार को उसका अद्भुत कौशल देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई और अब पाँचों आगे बढ़े । वे चलते गये, चलते गये और अन्त में एक ऐसे नगर में पहुँचे जहाँ की राजकुमारी अत्यन्त सुन्दरी थी । राजकुमार अपने साथियों सहित राजकुमारी के महल के नीचे पहुँचा और वहाँ पहुँचकर उसने वहाँ रखे हुए बड़े नगाड़े पर चोट मारी । लोगों ने राजकुमार को समझाया कि जो ऊपर जाता है, वह नीचे नहीं आता, इसलिए तुम क्यों नाहक आफत में फँसते हो ? लेकिन राजकुमार

नहीं माना। राजकुमारी ने उसे ऊपर बुलवा लिया। राजकुमार ने देखा कि राजकुमारी वास्तव में ही बहुत सुन्दर है, उसने राजकुमारी से विवाह का प्रस्ताव किया। राजकुमारी ने कहा कि तुम बेशक मेरे साथ विवाह कर सकते हो लेकिन पहले मेरी शर्तें पूरी करो। यदि तुम मेरी शर्तें पूरी न कर सके तो तुम्हें भी उन लोगों के साथ चक्की चलानी पड़ेगी। यों कहकर राजकुमारी ने उस जेलखाने की ओर इशारा किया जहाँ उसके साथ विवाह करने के इच्छुक बहुत से राजकुमार उसकी शर्तें पूरी न कर सकने के कारण खड़े-खड़े चक्की चला रहे थे।

राजकुमार के पूछने पर राजकुमारी ने अपनी शर्तें सुनाई। राजकुमारी ने कहा कि यहाँ से पाँच हज़ार कोस की दूरी पर फलाँ गाँव में मेरी बहिन रहती है, तुम उसे आज शामतक यहाँ मेरे पास ला दो। फिर राजकुमारी ने अपने महल के नीचे एक बड़ा तालाब दिखलाया और कहा कि कोई आदमी इस तालाब के सारे पानी को देखते-देखते पी जाए। फिर उसने अपना बड़ा बाग राजकुमार को दिखलाकर कहा कि कोई आदमी इस बाग के सारे फल मेरे देखते-देखते खा जाए। राजकुमारी की शर्तें सुनकर राजकुमार ने कहा कि मैं तुम्हारी सारी शर्तें पूरी कर दूंगा। यों कह कर उसने 'कम-पीऊ' को बुलवा कर वह तालाब दिखलाया। 'कम पीऊ' ने पूछा कि तालाब का सिर्फ पानी ही पीना है अथवा कीचड़ भी। राजकुमार ने कहा कि कीचड़ समेत ही पी डालो। 'कम-पीऊ' देखते-देखते कीचड़ सहित सारा पानी पी गया। राजकुमारी की एक शर्त पूरी हो गई। तब राजकुमार ने 'कम-खाऊ' को बुलवाकर वह बगीचा दिखलाया। 'कम-खाऊ' ने भी कुछ ही क्षणों में बगीचे को चौपट कर दिया। वह जड़-मूल सहित सारे वृक्ष चट कर गया। अब राजकुमार ने 'कम-नज़र' को बुलवाया। 'कम-नज़र' ने निगाह दौड़ाई और बोला कि राजकुमारी की बहिन इस वक्त अपने महल पर खड़ी है। 'कम-नज़र' ने 'गुटैया देव' से कहा कि तुम मेरे तीर पर बैठ जाओ, मैं बात की बात में तुम्हें वहां पहुँचा दूंगा। लेकिन 'गुटैया देव' ने इसमें अपना अपमान समझा और बोला कि नहीं, मैं तीर की तरह ही जाऊँगा। यों कह कर 'गुटैया

देव' राजकुमारी का पत्र लेकर वहाँ से उड़ा और पहर भर दिन चढ़ते-चढ़ते राजकुमारी की बहिन के पास जा पहुँचा। 'गुटैया देव' ने राजकुमारी का पत्र उसकी बहिन को दे दिया। पत्र में राजकुमारी ने लिख दिया था कि आने वाले को शाम तक किसी प्रकार वहीं रोक लेना। राजकुमारी की बहिन ने 'गुटैया देव' को खूब छककर भोजन कराया और कहा कि अब सो जाओ। 'गुटैया देव' ने सोचा कि अभी तो संध्या दूर है, कुछ देर विश्राम कर लूं। 'गुटैया देव' गहरी नींद में सो गया। राजकुमारी की बहिन तो यही चाहती थी, उसने 'गुटैया देव' को नहीं जगाया। इधर दिन ढलने लगा तो राजकुमार की चिंता बढ़ने लगी। उसने 'कम-नज़र' से कहा कि देखो तो गुटैया देव क्या कर रहा है ? 'कम नज़र' ने देख कर कहा कि वह तो खूंटी ताने सो रहा है। तब 'कम-नज़र' ने वहीं से एक तीर छोड़ा जो सनसनाता हुआ 'गुटैया देव' के कान के पास से निकल गया। तीर की सनसनाहट ने 'गुटैया देव' की नींद तोड़ दी। वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने देखा कि दिन ढलने लगा है तो उसने राजकुमारी की बहिन को चलने के लिए कहा। वह कुछ इधर-उधर करने लगी तो 'गुटैया देव' ने उसका हाथ पकड़ा और उसे अपनी पीठ पर डाल कर शीघ्रता से उड़ चला और शाम होने से पहले ही राजकुमार के पास आ पहुँचा। उसके समय पर आ जाने से राजकुमार और उसके साथियों को बड़ी प्रसन्नता हुई। अब राजकुमारी की शर्तें पूरी हो चुकी थीं। अतः उसका विवाह राजकुमार के साथ बड़ी धूम-धाम से हो गया। राजकुमार ने सारे कैदियों को मुक्त करवा दिया और फिर राजकुमारी और अपने साथियों को लेकर अपने नगर में आ गया।

● अतिथि को सत्कार

एक ब्राह्मण का यह नियम था कि वह घर आये अतिथि का यथाशक्ति सत्कार करता था। एक दिन एक महात्मा उस ब्राह्मण के घर आया। ब्राह्मण अभ्यागत के लिए भोजन बना रहा था कि किसी ने आ कर खबर दी कि तुम्हारी गाय मर गई है। ब्राह्मण ने उससे कहा कि गाय को चुपचाप पीछे

के दरवाज़े से ले जाओ। थोड़ी देर बाद ही दूसरे आदमी ने आ कर ब्राह्मण से कहा कि गाय का बछड़ा भी मर गया है। ब्राह्मण ने कहा कि उसे भी पीछे के दरवाज़े से ले जाओ। फिर थोड़ी देर बाद एक आदमी ने आकर खबर दी कि तुम्हारे इकलौते बेटे की मृत्यु हो गई है। ब्राह्मण बड़ा दुखी हुआ, लेकिन दुःख के घूंट को चुपचाप पीकर उसने कहा कि उसे भी पीछे के दरवाज़े से ले जाओ। फिर उसने अतिथि महात्मा से कहा कि आप भोजन कीजिए। महात्मा ने कहा कि मैं तेरे घर भोजन नहीं कर सकता, क्योंकि तू बड़ा निर्दयी है। तेरी गाय मर गई, बछड़ा मर गया और तेरा इकलौता बेटा भी मर गया, पर तेरी आँख में एक आँसू नहीं आया। ब्राह्मण ने कहा कि महाराज, मेरे मन में इन सब बातों का महान् दुःख है, लेकिन आपके भोजन में विघ्न न पड़े, इसलिए मैंने बरबस अपने दुःख को रोक रखा है। लेकिन महात्मा बिना भोजन किये ही चला गया तो ब्राह्मण को और भी अधिक दुःख हुआ और वह घर से निकल गया।

चलते-चलते वह एक कुएँ पर पहुँचा। पानी निकालने के लिए उसने लोटे में रस्सी बाँध कर लोटे को कुएँ में डाला तो किसी ने लोटा पकड़ लिया। ब्राह्मण के पूछने पर उसने कहा कि मैं शेर हूँ, मुझे बाहर निकाल दो। मैं तुम्हें नहीं खाऊँगा। शेर के सौगन्ध खाने पर ब्राह्मण ने उसे कुएं से निकाल दिया। शेर ने ब्राह्मण से कहा कि मेरी माँद अमुक जगह है, आवश्यकता पड़ने पर मेरे पास आना। इस कुएँ में एक सर्प, एक बन्दर और एक सुनार हैं। सर्प और बन्दर को तुम बेशक निकाल देना, लेकिन सुनार को मत निकालना। यों कह कर सिंह चला गया। ब्राह्मण ने फिर रस्सी डाली और इस बार साँप ने रस्सी पकड़ ली। उसके सौगन्ध खाने पर ब्राह्मण ने उसे भी निकाल दिया। सर्प ने उसे एक बाल दिया और कहा कि आवश्यकता पड़ने पर इस बाल को अग्नि पर रख देना, मैं उसी वक्त आकर तुम्हारी सहायता करूँगा। हाँ, एक बात याद रखना कि सुनार को कुएँ से मत निकालना। यों कह कर वह भी चला गया। फिर ब्राह्मण ने बन्दर को भी निकाल दिया। बन्दर ने भी अपना पता-ठिकाना बतलाया और वह भी सुनार को न निकालने

की चेतावनी दे कर चला गया। अब ब्राह्मण ने फिर कुएँ में रस्सी डाली तो सुनार ने रस्सी पकड़ ली। ब्राह्मण ने कहा कि मैं तुम्हें नहीं निकालूंगा। लेकिन सुनार ने कहा कि तुमने सिंह व सर्प जैसे हिंसक जीवों को तो निकाल दिया है, फिर मैं तो मनुष्य हूँ। तुम मेरे धर्म के भाई हो और मैं कभी तुम्हारा अपकार नहीं करूँगा। सुनार के बहुत कहने-सुनने पर ब्राह्मण ने उसे भी निकाल दिया। सुनार ने भी उसे अपना पता-ठिकाना बतलाया और वह भी चला गया। अब ब्राह्मण पानी पीकर आगे बढ़ा।

ब्राह्मण एक दूसरे नगर में जाकर ठहरा, लेकिन वहाँ बहुत समय तक रहने पर भी उसे कोई काम-धंधा नहीं मिला तो वह वापिस अपने गाँव को चला। रास्ते में उसने सोचा कि शेर से मिलता चलूं। वह शेर की माँद पर पहुँचा तो शेर के बच्चे उसे देखकर गुर्राने लगे, लेकिन शेर ने उन्हें शान्त किया और उनसे कहा कि यह ब्राह्मण-देवता मेरा मित्र है। शेर ने ब्राह्मण की बहुत आवभगत की और उसे बहुत धन दिया जिसमें एक नौलखा हार भी था। ब्राह्मण खुशी-खुशी वहाँ से चला और सुनार के घर आया। सुनार ने उसे अपने घर में ठहरा लिया। बातचीत के सिलसिले में ब्राह्मण ने कहा कि मैं बहुत धन लाया हूँ और उसने वह नौलखा हार सुनार को दिखलाया। यह हार उस नगर के राजा की लड़की का था जो एक बार सैर के लिए जंगल में गई थी और वहीं उस शेर ने उसे मार डाला था। लेकिन राजा को हत्यारे का पता नहीं चल पाया और उसन घोषणा कर रखी थी कि जो कोई आदमी राजकुमारी के हत्यारे का पता लगा देगा उसे दस हजार रुपये पुरस्कार स्वरूप दिये जाएंगे। हार को देखते ही सुनार ने पहचान लिया कि यह तो राजकुमारी वाला हार है। वह ब्राह्मण को घर में बैठा कर स्वयं राजा के पास पहुँचा और बोला कि अन्नदाता, राजकुमारी का हत्यारा मेर घर पर है। राजा को सूचना देकर सुनार ब्राह्मण के पास आ बैठा और मीठी-मीठी बातें करने लगा। इतने में राजा के सिपाही आये और ब्राह्मण को पकड़ कर ले गये। राजकुमारी के हार को देखकर राजा को विश्वास हो गया कि यही राजकुमारी का हत्यारा है। राजा ने उसे अगले दिन फांसी

पर लटका देने का हुक्म दे दिया। उसे कठघरे में बन्द कर दिया गया। अब ब्राह्मण बहुत पछताया कि मैंने सुनार को कुएँ से निकाल कर बड़ी भूल की। विचार करते-करते उसे साँप की बात याद आ गई। उसने चिलम पीने के बहाने से एक खीरा (अंगारा) मंगवाया और उस पर साँप का दिया हुआ बाल रखा। बाल रखते ही सर्प वहाँ आ गया। सारी बात सुनकर सर्प ने कहा कि मैं जाकर राजा को डसता हूँ। चाहे सारे गाँव के वैद्य आ जाएँ लेकिन वे राजा को ठीक नहीं कर सकेंगे, पर तुम एक नीम की डाली लेकर हिला दोगे तो मैं आ कर राजा का विष चूस लूंगा।

साँप ने जाकर राजा को डस लिया। हर तरह के उपचार किये गये, लेकिन राजा की दशा बिगड़ती ही चली गई। अन्त में ब्राह्मण ने अपने पहरेदारों से कहा कि राजा का विष मैं उतार सकता हूँ। पहरेदारों ने जाकर राजा को सूचना दी तो राजा ने उसे बुलाया। ब्राह्मण ने एक नीम की डाली मँगवाई और कुछ पढ़कर उसे हिलाया। हिलाते ही वह साँप वहाँ आ गया। अब सबको विश्वास हो गया कि यह राजा को ठीक कर देगा। साँप ने विष चूस लिया और राजा स्वस्थ हो गया।

राजा ने प्रसन्न होकर न केवल ब्राह्मण की जान ही बख्श दी वरन् उसे पुरस्कार भी दिया और उसे दरबार में अच्छा स्थान दे दिया। कुछ दिनों बाद एक दिन ब्राह्मण ने सोचा कि मैं अपने मित्र बन्दर से तो मिला ही नहीं, अतः अगले दिन उसने राजा से कहा कि मैं कुछ समय के लिए बाहर जा रहा हूँ और वह बन्दर के पास चल पड़ा। बन्दर ने मित्र को देखा तो उसका बहुत सत्कार किया और उसे एक 'अमरफल' दिया। अमरफल लेकर ब्राह्मण लौट पड़ा। उसने सोचा कि एसा दुर्लभ फल राजा को देना चाहिए। ब्राह्मण ने फल ले जाकर राजा को दिया। राजा अपनी रानी को बहुत प्यार करता था। अतः वह फल उसने स्वयं न खाकर रानी को दिया। रानी ने सोचा कि राजा मुझे मार कर दूसरा विवाह करना चाहता है। अतः रानी ने वह फल नहीं खाया। रानी के महल में जो भंगिन आती थी, वह बहुत बूढ़ी हो चली थी और अक्सर वह कह देती कि अब तो मौत आ जाए तो अच्छा

है। रानी ने वह फल उस भंगिन को दे दिया। भंगिन ने फल ले जाकर खाया तो वह रातोंरात सुन्दर षोड़शी बन गई। अगले दिन वह महल बुहारने के लिए गई तो रानी ने उससे पूछा कि क्या वह बुढ़िया भंगिन मर गई ? तुम उसकी क्या लगती हो ? उसका सौन्दर्य देखकर रानी को ईर्ष्या हुई। भंगिन ने उत्तर दिया कि रानी जी, मैं ही तो आपकी बुढ़िया भंगिन हूँ। आपने जो फल मुझे दिया था यह सब उसी की करामात है। अब तो रानी को बड़ा पछतावा होने लगा कि अमरफल को मैंने न खाकर भंगिन को क्यों दे दिया। रानी ने राजा से कहा कि वैसा ही एक फल मुझे और मँगवा कर दो। राजा ने ब्राह्मण से कहा और ब्राह्मण फिर अपने मित्र बन्दर के पास चला।

ब्राह्मण की सारी बात सुनकर बन्दर ने कहा कि मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें एक अमरफल और दूंगा। यों कह कर वह बन्दर अपने ब्राह्मण मित्र को स्वर्ग के बगीचे में ले गया। उसने ब्राह्मण से कहा कि इस बगीचे में बहुत से अमरफल हैं सो तुम एक फल ले आना, लेकिन अधिक देर तक वहाँ मत ठहरना। ब्राह्मण बाग में गया तो क्या देखता है कि उसकी गाय खड़ी है और बछड़ा थन चूस रहा है तथा उसका लड़का भी गाय के पास खड़ा है। उन तीनों को देख कर ब्राह्मण अमरफल की बात भूलगया और आनन्द के सागर में गोते खाने लगा। तभी वह बन्दर वहाँ आया और बोला कि ब्राह्मण् देवता, तुमने तो बहुत देर लगा दी और यों कहते-कहते वह बन्दर उसी महात्मा के रूप में बदल गया। अब महात्मा ने ब्राह्मण से कहा कि मैंने सिर्फ तुम्हारी परीक्षा ली थी कि तुम कैसा आतिथ्य करते हो। अब तुम अपने बेटे को और गाय-बछड़े को लेकर अपने घर जाओ। अब तुम्हें भविष्य में कोई दुःख नहीं होगा।

● सूरजबंसी ठाकर

एक गाँव में एक सेठ और एक ठाकुर रहते थे। सेठ कुछ पैसे वाला थ। और ठाकुर उससे कुछ ऐंठना चाहता था, लेकिन सेठ उसके दावँ में नहीं आता था। एक दिन सेठ पेशाब कर रहा था कि उधर से ठाकुर आ निकला। सेठ

के उठते ही ठाकुर ने सेठ को पकड़ लिया और बोला कि हम सूरजवंशी ठाकुर हैं। तुमने हमारे कुलदेवता सूरज भगवान् की ओर मुंह कर के पेशाब क्यों किया ? ऐसा करके तुमने हमारा अपमान किया है। सेठ ठाकुर के दावँ में फँस गया और उसने कुछ देकर ठाकुर से अपना पीछा छुड़ाया।

● राजा और सुनार

एक बार एक राजा ने अपने मंत्री से पूछा कि सब से चतुर जाति कौन-सी है ? मन्त्री ने कहा कि महाराज, सब से चतुर जाति 'सुनार' है। राजा ने प्रमाण माँगा तो मन्त्री ने राजा से कहा कि आप नगर के किसी सुनार को बुलवाकर उसे सोना गढ़ने के लिए दे दीजिए। वह सख्त पहरे में भी उस सोने को पीतल बना कर आपको दे देगा। राजा ने एक सुनार को बुलवाया और उसे सोने की एक मूर्ति गढ़ने का हुक्म दिया। बीस तोला खरा सोना उसे राज्य के खजाने से दिला दिया गया। सुनार ने कहा कि मैं एक हफ्ते में मूर्ति बना दूंगा। सुनार राजा के महल में ही मूर्ति बनाता था और उस पर सख्त पहरा रहता था। घर से आते वक्त तथा घर को जाते वक्त उसकी तलाशी ली जाती थी। लेकिन सुनार ने इसका उपाय सोच लिया। वह जैसी स्वर्ण-मूर्ति राजा के महल में बनाता था वैसी ही पीतल की एक मूर्ति अपने घर पर तैयार करने लगा।

सातवें दिन जब सुनार काम पर जाने लगा तो उसने सुनारी को समझाया कि मूर्ति तैयार हो गई है। तुम दिन के दो बजे इस पीतल की मूर्ति को खट्टी छाछ की हँडिया में रखकर राजा के महल की ओर खट्टी छाछ बेचने के बहाने आ जाना, फिर मैं सारा काम अपने आप बना लूंगा। सातवें दिन राजा ने सुनार से पूछा कि मूर्ति तैयार हुई कि नहीं ? सुनार ने कहा कि पृथ्वीनाथ, मूर्ति तैयार है, लेकिन इसे 'उजलाने' के लिए खट्टी छाछ की आवश्यकता है। खट्टी छाछ में उजलाने से मूर्ति की चमक बहुत बढ़ जाएगी। राजा ने खट्टी छाछ लाने के लिए एक दो जगह सेवकों को भेजा लेकिन सब यही उत्तर लाये कि मीठी छाछ तो है, खट्टी छाछ नहीं मिली। इतने में सुनारी उधर से खट्टी छाछ की हँडिया सिर पर रखे हुए निकली। 'खट्टी

छाछ चाहिए तो ले लो' की आवाज़ सुनकर राजा ने उसे महल में बुलवा ली और सुनार से कहा कि सोनी जी, खट्टी छाछ हाज़िर है। सुनार तो यह चाहता ही था। उसने सोने की मूर्ति छाछ की हँडिया में छोड़ दी और पीतल वाली मूर्ति निकाल ली। उसने एक दो बार उस मूर्ति को हँडिया में डुबोया और फिर राजा से कहा कि अपना काम हो गया। राजा ने छाछ बेचने वाली को कुछ देकर विदा किया। इधर सुनार ने मूर्ति 'उजाल' कर राजा जी को दे दी और बोला कि महाराज! मेरी मज़दूरी मिल जाए। राजा ने कहा वह तो मिल जाएगी, लेकिन तुमने तो कहा था कि मैं स्वर्ण को पीतल बनाकर दूंगा। इस पर सुनार बोला कि पृथ्वीनाथ ! गुनाह माफ़ हो, यह पीतल ही तो है, विश्वास न हो तो कसौटी पर कसकर देख लीजिए तथा इसका मुझे अतिरिक्त पुरस्कार दिलवाइए। राजा ने मूर्ति को कसौटी पर लगाया तो वह निरा पीतल था। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। राजा के पूछने पर सुनार ने सारी बात बतलाई तो राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने सुनार को उसकी मज़दूरी के अतिरिक्त अच्छा पुरस्कार देकर विदा किया।

● हाथी की पिछाण

एक बार एक गाँव में एक हाथी बिकने के लिए आया। हाथी एक खुली जगह में खड़ा था और महावत उसके पास बैठा था। हाथी को देखने वालों और मोल-भाव करने वालों की भीड़ लगी थी। तभी वहाँ एक आदमी आया। उसने पहले कभी हाथी देखा नहीं था। वह हाथी के चारों ओर घूम-घूम कर उसे बड़े ध्यान से देखने लगा। हाथी बेचने वाले ने सोचा कि यह अवश्य कोई बड़ा पारखी है। यदि इसने कोई दोष निकाल दिया तो फिर हाथी नहीं बिकेगा, अतः उसने उस आदमी को अलग ले जाकर कहा कि भाई, यह लो पचास रुपये और चले जाओ। उस आदमी को बड़ा अचंभा हुआ। उसने सौदागर से पूछा कि भाई, तुम मुझे किस बात के रुपये दे रहे हो? मैं तो घूम-फिर कर यह देख रहा था कि यह कौन जानवर है

जिसके आगे और पीछे दोनों तरफ पूंछ लटक रही है। अब सौदागर ने जान लिया कि यह तो निपट मूर्ख है, अतः उसने उसे दुत्कारते हुए कहा कि इस प्रकार उल्लू की तरह क्या देखते थे, जाओ अपनी राह लगो।

● उमर घटै बढ़ै कोनी

एक गाँव में एक आदमी अपनी स्त्री के साथ रहता था। एक दिन एक भूत उस घर में आ घुसा। भूत नित्य नये उत्पात करने लगा और एक दिन उसने घर के मालिक को मार डाला। उसकी स्त्री गर्भवती थी। उसने सोचा कि अब यहाँ रहने में कुशल नहीं है। यह भूत मुझे तथा मेरे भावी बच्चे को भी मार डालेगा। यों सोच कर वह अपने पीहर चली गई और वहीं उसके एक लड़का हुआ। लड़का बहुत हृष्ट-पुष्ट था और वह अपन साथी लड़कों को मार-पीट दिया करता था। एक दिन उन लड़कों ने कहा कि तुझे अपने पिता का तो पता ही नहीं कि वह कौन था और हमको मारने चला है। लड़के को यह बात लग गई और उसने अपनी माँ से पूछा। उसकी माँ ने सारी बात बतला दी तो लड़का बोला कि मैं तो अपने घर में जा कर रहूँगा, तू भले ही यहाँ रह। उसकी माँ ने उसे बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन वह नहीं माना और अपने घर चला गया। घर पहुँच कर उसने घर को साफ किया और फिर उसने घर में खूब आग जलाई। भूत आया तो लड़का जलता हुआ लक्कड़ लेकर उस पर झपटा। भूत बड़ा घबड़ाया और बोला कि तुम कौन हो ? लड़के ने कहा कि मैं इस घर का मालिक हूँ। मैं खाना बना दिया करूँगा और तुम सामान ला दिया करना। भूत ने लड़के की बात स्वीकार कर ली। अब दोनों वहीं रहने लगे। एक दिन लड़के ने पूछा कि तुम हमेशा कहाँ जाया करते हो ? भूत ने कहा कि मैं भगवान् के 'दरीखाने' जाया करता हूँ। यह सुन कर लड़के ने कहा कि अच्छा तो कल तुम यह पूछ कर आना कि मेरी उम्र कितनी है ? दूसरे दिन भूत ने आकर कहा कि तुम्हारी उम्र भगवान् ने अस्सी वर्ष की बतलाई है। लड़के ने कहा कि कल यह बात और पूछकर आना कि क्या इसमें एक दो दिन कम या

अधिक भी हो सकते हैं ? दूसरे दिन भूत ने आ कर कहा कि भगवान् का कहना है कि तुम्हारी उम्र में एक दिन का हेर-फेर तो क्या एक क्षण का भी हेर-फेर नहीं हो सकता। इतना सुनते ही लड़का जलते हुए 'ठूंठ' लेकर उस पर लपका। भूत ने कहा कि यह क्या करते हो ? मैं तुम्हें मार डालूंगा। इस पर लड़का बोला कि मेरी उम्र पूरी होने के पहले तुम तो क्या मुझे स्वयं भगवान् भी नहीं मार सकते। यह बात तुम स्वयं भगवान् से पूछ कर आये हो, अतः अपनी कुशल चाहते हो तो यहाँ से चले जाओ और फिर कभी इधर मुंह न करना। भूत अपना सा मुंह ले कर वहाँ से चलता बना। लड़के ने अपनी माँ को भी वहीं बुला लिया और अब दोनों निर्विघ्न वहाँ रहने लगे।

● जाट की चतराई

एक गाँव में एक स्त्री अपने छोटे लड़के के साथ रहती थी। इकलौता होने के कारण लड़का बड़े लाड़-चाव में पला था और इसलिए उसकी आदत बिगड़ गई थी। वह हर समय अपनी माँ को तंग किया करता कि मुझे यह चीज दे, वह चीज दे, अन्यथा मैं छत पर से कूद कर मर जाऊँगा।

एक दिन वह लड़का छत पर चढ़ा हुआ था और अपनी माँ से कह रहा था कि मुझे इतने रुपये दे नहीं तो मैं अभी छत पर से गिरता हूँ। उसकी माँ नीचे खड़ी गिड़गिड़ा रही थी और उसे न गिरने के लिए मना रही थी। इतने में एक जाट उधर से आ निकला। उसने सोचा कि यह क्या तमाशा हो रहा है ? स्त्री से पूछने पर उसने सारी बात बतला दी। तब जाट ने कहा कि तुम अलग हट जाओ, मैं अभी इसे मना देता हूँ। यों कहकर जाट ने अपनी 'जेली' मजबूती से ज़मीन पर खड़ी करके लड़के से पुकार कर कहा कि लड़के, जल्दी गिर। जैसे ही तू नीचे गिरा मैं तुझे अपनी 'जेली' में पिरो लूंगा। जेली के नुकीले सींगे देख कर लड़का घबराया। जाट ने फिर ललकारा कि जल्दी से नीचे गिर। अब लड़के की अक्ल

ठिकाने आ गई। वह चुपचाप नीचे आकर अपनी माँ से लिपट गया और बोला कि मैं अब कभी छत पर नहीं चढ़ूंगा।

● जाट को छोरो

एक बार एक जाट अपने झोंपड़े के आगे बैठा था। उसने अपने नन्हें बच्चे को जो कुछ ही दिन पहले जन्मा था, धूप में सुला रखा था। उधर से गाँव के वैद्य जी आ निकले तो उन्होंने कहा कि चौधरी, बच्चे को धूप में क्यों सुला रखा है ? इसे छाया में सुला दे। इतनी धूप बच्चे को सहन नहीं होगी। चौधरी ने वैद्य की बात सुन कर कहा कि वैद्य जी, हम तो हमेशा कड़ी धूप में ही खेती करते हैं। इस बच्चे को अभी से धूप सहने का अभ्यास कराया जाएगा तभी तो यह बड़ा होकर धूप में काम कर सकेगा। जाट की बात सुन कर वैद्य जी चुपचाप आगे बढ़ गये।

● राजा भोज और च्यार मूरख

राजा भोज हर नई कविता पर पुरस्कार देता था। एक दिन चार मूर्ख मित्रों ने विचार किया कि हमें भी चल कर राजा भोज से इनाम लेना चाहिए। यों सलाह कर के चारों मित्र धारा-नगरी की ओर चल पड़े॥ चलते-चलते वे एक गाँव में पहुँचे। वहाँ लोग अरहट से पानी निकाल रहे थे। एक मूर्ख ने अरहट को देखकर कहा कि मेरी कविता तो बन गई है, "अरड़ अरड़ अरड़ाट चलै।" फिर सब आगे बढ़े। एक मूर्ख ने एक तेली के घर में कोल्हू चलते देखा तो चिल्लाया कि मेरी कविता भी बन गई है, "कोल्हू ऊपर लाट फिरै।" रात को चारों वहीं सो गये। सबेरे चारों उठे तो एक ने एक बुझते हुए दीपक को देख कर कहा, "अब तो जोति भई है मन्द।" इस पर चौथा बोल पड़ा, "राजा भोज है मूसलचन्द।" कविता पूरी बन गई थी और वे सब मिलकर उसे गा रहे थे। तभी एक अपरिचित आदमी वहाँ आया। चारों की कविता सुनकर उसने कहा कि भाइयों, और तो सब ठीक है, लेकिन "राजा भोज है मूसलचन्द।" ऐसा कहना ठीक नहीं है। इस पंक्ति को तुम यों कर दो, "भोज काटे दरिद्र

को फन्द ।" चारों ने उसकी बात मान ली और दरबार को चल पड़े । दरबार में पहुँच कर उन्होंने अपनी कविता सुनाई:—

अरड़ अरड़ अरड़ाट चलै,
कोल्हू ऊपर लाट फिरै ।
अब तो जोत भई है मन्द,
भोज काटे दरिद्र को फन्द ।

कविता सुनकर राजा मुस्कराया । उसने जान लिया कि चारों आदमी मूर्ख हैं । फिर उसने चौथे कवि से कहा कि तीन पंक्तियाँ तो इन तीनों ने बनाई हैं, लेकिन चौथी पंक्ति तुम्हारी बनाई हुई नहीं है । तुम्हें इनाम नहीं मिलेगा । इस पर चौथे ने कहा महाराज, मैंने तो कविता ठीक ही बनाई थी जो यों है, "राजा भोज है मूसलचन्द", लेकिन एक अनाड़ी आदमी रास्ते में मिल गया था, उसने मेरी कविता बिगाड़ दी । अब राजा भोज जान गया कि यह अनाड़ी आदमी कालिदास ही हो सकता है, जो रुष्ट होकर दरबार से चला गया था । राजा ने उसका पता-ठिकाना पूछ लिया और चारों कवियों को इनाम दे कर विदा किया ।

● चोर बेटो

एक सेठ-सेठानी रात को अपने घर में सो रहे थे । आधी रात को एक चोर उनके घर में घुस गया । सेठ ने उसे देख लिया, लेकिन उसने सोचा कि इसे युक्ति से पकड़ना चाहिए । यों सोच कर उसने सेठानी को जगाया और दोनों ने चोर को पकड़ने की तरकीब सोच ली । वे दोनों आपस में बातें करने लगे । सेठ ने सेठानी से कहा कि अपने पास धन बहुत है, लेकिन लड़का नहीं है, इसलिए अपने मरने के बाद इस सारे धन का क्या होगा ? सेठानी बोली कि यही चिन्ता मुझे रात-दिन लगी रहती है । यदि कोई लड़का गोद ले लें तो भी अच्छा है । इस पर सेठ ने कहा कि यदि कोई इस समय मुझे आकर कह दे कि पिता जी ! मैं आपका बेटा हूँ तो तुम्हारी कसम सारा धन मैं उस को ही दे दूं, चाहे वह कोई भी हो ।

सेठानी ने कहा कि हाँ, इसमें मुझे भी बड़ी खुशी होगी, लेकिन कोई ऐसा कहने वाला भी तो हो ।

चोर ने सोचा कि धन-प्राप्ति का इससे आसान तरीका और क्या हो सकता है ? यह स्वर्ण अवसर तो संयोग से ही हाथ लगा है। वह उसी वक्त सेठ के पास चला गया और बोला कि बाप जी ! मैं आपका बेटा हूँ। इतना सुनते ही सेठ की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उसने सेठानी से कहा कि आज भगवान् ने मेरी इच्छा पूरी कर दी। मुझे अपने मुंह से किसी ने 'बाप' कहा तो सही। अब तुम शीघ्र सारा धन ला कर मेरे बेटे को दे दो। सेठानी ने कहा कि ऐसी भी क्या जल्दी है ? जब आप अपने बेटे को धन दे रहे हैं तो फिर रोकने वाला कौन है ? लेकिन अपना बेटा क्या एक वक्त अपने घर में भोजन भी नहीं करेगा। मैं अभी इसके लिए पानी गरम करती हूँ, यह नहा-धो ले तो फिर इसके लिए रसोई बना दूंगी। फिर भोजन करने के बाद आप इसे सारा धन दे देना । यों कह कर सेठानी काम में लग गयी और बेटे को नहलाने-धुलाने तथा रसोई बनाने में तड़का हो गया। बेटे ने भोजन कर लिया तो सेठ ने सेठानी से कहा कि अब तुम सारा धन निकालो। सेठानी ने कहा कि मैं सारा धन निकाल कर रखती हूँ लेकिन इतना धन यह सिर पर थोड़े ही उठा कर ले जाएगा। तब तक आप एक 'बहली' जुड़वा लाइये। सेठानी धन निकालने लगी और सेठ बहली लाने के लिए निकल गया। घर से निकल कर सेठ शीघ्रता से कोतवाली गया और कोतवाल को बुला लाया। कोतवाल ने आ कर चोर को पकड़ लिया और कहा कि चलो बेटे, तुम्हें धन की कोठीरी में ही बैठा देता हूँ ताकि तुम्हें ढोने का श्रम ही न करना पड़े।

● बाकी बंच्यों मैं

एक चोर के चार लड़के थे। एक दिन उसने अपने चारों बेटों को बुलाकर कहा कि अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ, इसलिए तुम सब चोरी करना सीख लो। चारों ने कहा कि हम चोरी नहीं करना चाहते, और कोई दूसरा काम

करना चाहते हैं। लेकिन चोर को यह सह्य नहीं था। उसने चारों से कहा कि तुम आज रात को चोरी कर के देखो तो सही, इसमें कितना मजा है ? उस रात को चारों बेटे चोरी करने के लिए निकले। उन्होंने एक मकान में सेंध लगानी शुरू की, लेकिन उन्हें इस तरह का अभ्यास न था। दीवार गिर पड़ी और उसके नीचे एक भाई दब कर मर गया। अब तीन भाई बड़ी सावधानी से उस मकान में घुसे। वह राजा का अस्तबल था। आहट पाकर एक घोड़ा बिदका और उसने लात फटकारी, जिससे एक भाई और मर गया। अब दो भाई आगे बढ़े। अस्तबल में एक पुराना कुआँ था, जिस पर घास उग आई थी। एक भाई चलते-चलते उसमें जा गिरा। अब शेष बचा हुआ एक भाई सबेरे घर आया। उसके बाप ने सोचा कि यह चोरी में सफलता मिलने का सन्देश ले कर आया है, अतः उसने अपने बेटे से पूछा:—

"कहो रात की जीत ?"

बेटे ने उत्तर दिया—

"एक कै ऊपर गिरी भींत।"

बेटे का उत्तर सुन कर बाप ने कहा—

"या तो भई गजब की बात।"

इस पर बेटे ने फिर उत्तर दिया—

"एक कै मारी घोड़े नैं लात।"

इस पर उसका बाप अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए बोला, 'अरे' लेकिन—बेटे ने शीघ्रता से उत्तर दिया—

"एक कुवै में गिर के मरे।"

अब बाप की आँखें फटी-की-फटी रह गईं और उसके मुंह से निकला, 'ऐं' लेकिन बेटे ने फिर उसी मुस्तैदी से उत्तर दिया, "बाकी बंच्यो हूँ मैं।"

● राजा और बेटे की बहू

एक राजा ने अपने बेटे की बहू को स्नान करते समय देख लिया। वह उस पर मोहित हो गया और उसे किसी प्रकार हथियाने की घात में रहने

लगा। बहू ने भी जान लिया कि श्वसुर की मति बिगड़ गई है। एक दिन राजा ने बहू को कहला भेजा कि आज मैं तुम्हारे महल में आऊँगा। बहू बेचारी अब क्या करे? उसने चारों ओर तुलसी के 'बिड़ले' लगा रखे थे। राजा आया और कुछ देर बैठा तो बहू ने राजा से कहा कि आप पहले पेशाब कर आयें। राजा पेशाब करने के लिए गया तो उसे पेशाब करने के लिए कोई स्थान नहीं मिला। सब जगह तुलसी के बिड़ले लगे हुए थे। राजा यों हीं वापिस आ गया। उसने बहू से आकर कहा कि चारों ओर तुलसी के बिड़ले लगे हैं, कहीं पेशाब करने को जगह नहीं है। इसके उत्तर में बहू ने कहा कि पिता जी, बेटे की बहू भी श्वसुर के लिए तुलसी के बिड़ले के समान ही पवित्र होती है, जब आपने उस पर मन चलाया है तो फिर तुलसी के बिड़ले में पेशाव करने से आपको कौन पाप लगता है? राजा पुत्रवधू की बात सुन कर लज्जित हो गया और अपने महल को लौट आया।

● कर भला, हो भला

एक साधु एक गाँव में भिक्षा माँगने जाया करता था। वह यही आवाज लगाया करता कि, 'कर भला हो भला, कर बुरा हो बुरा।' एक स्त्री ने सोचा कि यह साधु यों ही बकता है। बुरा करने से बुरा नहीं हो सकता। यों सोचकर उसने दो लड्डू बनाये और उनमें विष मिला दिया। साधु आया तो उसने वे लड्डू उसे दे दिये। साधु सारे गाँव में भिक्षा ले कर चला गया और गाँव के बाहर वाले कुएँ पर बैठ कर सुस्ताने लगा। थोड़ी ही देर में वहाँ दो आदमी आ गये। एक आदमी उस स्त्री का पति था और दूसरा बेटा। वे दोनों कमाने के लिए किसी दूसरे नगर में गये थे। वे भी आकर कुएँ पर बैठ गये और विश्राम करने लगे। उन्होंने साधु से कहा कि हमें बहुत भूख लग रही है। तुम्हारे पास कुछ खाने को हो तो हमें दो। साधु ने कहा कि और तो सब सूखी-बासी रोटियाँ हैं, सिर्फ दो लड्डू हैं सो ये दोनों तुम खा लो। साधु ने सूखी रोटियाँ खाकर पानी पी लिया और उन दोनों ने वे लड्डू खा लिये। लड्डू खाते ही उनकी मृत्यु हो गई।

गाँव के लोगों ने सुना कि आज दो आदमी अमुक कुएँ पर मर गये। उस स्त्री ने भी यह बात सुनी। वह शंकित तो थी ही, अतः देखने के लिए कुएँ पर गई। जब उसने देखा कि ये तो उसके ही पति और पुत्र हैं तो वह धाड़ मार कर रोने लगी। लेकिन अब उसकी समझ में यह बात आ गई कि दूसरे का बुरा करने से अपना ही बुरा होता है।

● मुँह देखकर टीका काढ़ै

एक बार दो दामाद साथ-साथ अपनी ससुराल पहुँचे। एक दामाद बहुत मालदार था और वह खूब ठाठ-बाट से ससुराल गया था। दूसरा सर्वथा निर्धन हो गया था और वह साधारण ढंग से गया था। भोजन का समय हुआ तो सास ने मालदार दामाद को रसोईघर के पास जीमने के लिए बिठलाया और उसके लिए माल-मलीदे बनाये गये। निर्धन दामाद को ड्योढ़ी के पास बैठाया गया और उसको साधारण दाल-दलिया परोसा गया। धनवान् दामाद के पास उसकी सास स्वयं बैठी थी और उसे बड़े सत्कार से खिला-पिला रही थी, लेकिन उस गरीब की कोई पूछ न थी। उसने उचक कर देखा कि उसके साढ़ू के लिए विविध प्रकार के भोजन बने हैं और उसे सिर्फ दाल-दलिया ही परोसा गया है तो उसने सास से पुकार कर पूछाः—

के सासुजी म्हारा भाग पातळा,
के थे म्हानै भूली ?
बांनैं घाली माल-मलाई,
म्हानैं घाली थूली।

इस पर उसकी सास ने उत्तर दियाः—

ना कँवर जी थारा भाग पातळा,
ना मैं थांनै भूली,
मुंह देख कर टीका काढ्या,
मार गबागब थूली।

● जाटणी और बटाऊ

एक जाटनी बड़ी कंजूस थी। आये हुए बटाऊ को वह भोजन न करा कर भूखा ही निकाल देती। इसके लिए उसने एक तरकीब निकाल रखी थी। जब भी कोई बटाऊ उसके घर आता वह धान को एक थाली में डाल कर और थाली को पानी से भर कर घर के बाहर रख देती और कहती:–

सूक रै धान तूं संज्या तांई सूक।

जाटनी की बात सुन कर बटाऊ निराश हो कर चला जाता। लेकिन एक दिन एक चालाक बटाऊ उस जाटनी के घर आया। जब जाटनी ने थाली रख कर कहा:—

सूक रै धान तूं संज्या तांई सूक,

तो बटाऊ ने भी उत्तर दिया:—'सो रै मनवा तूं संज्या तांई सो।' और यों कह कर वह खूंटी तान कर सो गया। जाटनी समझ गई कि यह बटाऊ यों नहीं जाएगा, अतः उसने बटाऊ को खिला-पिला कर बिदा किया।

● एक टोपो भी अकारथ क्यूँ जावै ?

एक दिन एक सेठ अपनी दुकान पर बैठा घी तोल रहा था। तौलने में घी की एक बूंद ज़मीन पर गिर गई तो सेठ ने उस बूंद को उँगली से उठा कर अपनी दाढ़ी में लगा ली। एक चेजारा (मकान बनाने वाला) यह सब देख रहा था। उसने सोचा कि सेठ बड़ा कंजूस है।

कुछ दिनों बाद उसी सेठ ने एक मकान बनाना शुरू किया और वही चेजारा काम करने के लिए आया। चेजारे की यह धारणा थी कि सेठ बड़ा कंजूस है, अतः उसने जान-बूझ कर सेठ से कहा कि सेठ जी, हवेली की नींव में डालने के लिए एक मन घी चाहिए। घी डालने से नींव बड़ी मजबूत हो जाएगी। सेठ ने उसी समय एक मन घी मँगवा कर दे दिया। यह देख कर चेजारे को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सेठ से पूछा कि उस दिन जब आप घी तोल रहे थे तो आप ने ज़मीन पर गिरी एक बूंद को भी उठा कर दाढ़ी में लगा लिया था और आज एक मन घी आपने कहते ही मँगवा दिया,

इसका क्या कारण है ? इस पर सेठ ने उत्तर दिया कि जमीन पर गिरी उस बूंद का कोई उपयोग नहीं था। वह तो बेकार ही चली जाती, इसलिए मैंने उसका उपयोग कर लिया, लेकिन इस एक मन घी का तो अच्छा उपयोग हो रहा है, इससे हवेली की नींव मजबूत होगी। एक बूंद भी निरर्थक क्यों जाए ? सेठ की बात सुन कर चजारे का भ्रम मिट गया।

● औरत चतर होवै क' मरद ?

एक दिन एक राजा ने अपने मन्त्री से पूछा कि औरत अधिक चतुर होती है या मर्द ? मन्त्री ने उत्तर दिया कि पृथ्वीनाथ, दोनों ही अपनी-अपनी जगह चतुर हैं। लेकिन राजा ने कहा कि मैं एक उत्तर चाहता हूँ। इस पर मन्त्री को कोई उत्तर नहीं सूझा। वह उदास मुंह घर आ गया। मन्त्री की लड़की बड़ी चतुर थी, उसने अपने बाप से उसकी उदासी का कारण पूछा। कारण जान कर उसने कहा कि मैं राजा को इसका उत्तर दे दूंगी। मन्त्री की लड़की ने राजा से जाकर कहा 'मर्द की अपेक्षा औरत अधिक चतुर होती है।" राजा ने कहा कि इसे साबित कर के दिखलाओ और उसने मन्त्री की लड़की को अपने नगर से बिना कुछ दिये निकाल दिया। मन्त्री की बेटी चलते-चलते एक जंगल में पहुँची और एक वृक्ष की छाया में बैठ गई। पास ही एक जाट जिसका नाम गोदू था, अपनी बकरी चरा रहा था। उसने जाट को अपने पास बुलाकर उसका परिचय पूछा। जाट ने कहा कि मैं यहीं जंगल में रहता हूँ और नगर में से रोटी माँग कर ले आता हूँ। गाँव के लड़के मुझे 'पागल' कह कर चिढ़ाते हैं, अतः मैं उनसे बहुत कतराता हूँ। मन्त्री की लड़की ने उसे धर्म का भाई बना लिया और फिर उससे पूछा कि तुम्हारे पास कुछ है भी ? जाट के पास एक रुपया था जो उसने एक वृक्ष के नीचे गाड़ रखा था। यही उसकी धरोहर थी। बहिन के कहने पर वह रुपया निकाल लाया। तब मन्त्री की लड़की ने कहा कि तुम गाँव में जाओ और खाने-पीने की अमुक-अमुक चीजें ले आओ। साथ ही एक मखमल का टुकड़ा, एक सूई व कुछ धागा भी उसने मँगवाया। मन्त्री की बेटी ने उससे यह भी कहा कि आज यदि लड़के तुम्हें चिढ़ायें तो उन्हें

कड़ी आवाज में दुत्कार देना कि मैं पागल नहीं हूँ। सारा सौदा ठीक से खरीद कर ले आना। जो पैसे बाकी बचें वे भी अच्छी तरह गिन कर ले आना।

गोदू ने वैसा ही किया। मन्त्री की बेटी ने रोटियाँ बनाईं और फिर दोनों ने भोजन किया। गोदू ने आज तक ऐसी रोटी नहीं खाई थी। रोटी खा कर वह बड़ा खुश हुआ और फिर बकरी के पास चला गया। इधर मन्त्री की बेटी ने उस मखमल के टुकड़े की एक बहुत सुन्दर टोपी बनाई। फिर उसने गोदू को बुला कर कहा कि इसे शहर में जा कर बेच आ, लेकिन तू अपनी ओर से टोपी की कोई कीमत न कहना अपितु ग्राहक जो दे दे वही ले आना। नगर में एक बनजारा आया हुआ था। उसने नगर के बाहर अपना डेरा लगा रखा था। गोदू टोपी ले कर उसी के पास पहुँचा। बनजारे को टोपी बड़ी पसन्द आई। उसने पच्चीस रुपये में वह टोपी खरीद ली। गोदू ने रुपये लाकर अपनी बहिन को दे दिये। दूसरे दिन उसने गोदू को फिर एक रुपया दिया और वही सामान मँगवा लिया। उसने फिर टोपी बना कर गोदू को दी और वह उसी बनजारे को पच्चीस रुपये में बेच आया। यों उसने सात टोपियाँ बेच दीं। आठवें दिन जब वह टोपी ले कर पहुँचा तो बनजारे ने उससे पूछा कि तुझे ये टोपियाँ बना कर कौन देता है? गोदू ने कहा कि मेरी बहिन मुझे टोपी बना कर देती है। बनजारे ने कहा कि मैं उससे मिलना चाहता हूँ। गोदू ने कहा कि मैं कल अपनी बहिन से पूछकर तुम्हें इसका उत्तर दूंगा।

गोदू ने अपनी बहिन को बनजारे की बात बतलाई तो उसने कहा कि बनजारे को ले आना। दूसरे दिन बनजारा आया तो वह मन्त्री की लड़की को देखकर मोहित हो गया। बनजारे ने उससे विवाह का प्रस्ताव किया तो मन्त्री की लड़की ने कहा कि पहले मुझे एक लाख रुपये दो ताकि मैं अपनी स्थिति सुधार लूं। फिर मैं तुमसे विवाह कर लूंगी। बनजारे ने उसे एक लाख रुपये ला दिये। मन्त्री की लड़की ने अब एक अच्छा-सा मकान ले लिया और खूब ठाट-बाट से रहने लगी। बनजारा उसके पास गया तो

उसने उत्तर दिया कि वे रुपये तो मकान आदि में खर्च हो गये, अब तुम मुझे विवाह की तैयारी करने के लिए एक लाख रुपये और दो। बनजारे ने सोचा कि यह लड़की मुझे ठग रही है। इसलिए वह कोतवाल के पास गया। कोतवाल आया और मन्त्री की लड़की को देख कर वह खुद आसक्त हो गया। उसने स्वयं मन्त्री की लड़की से विवाह का प्रस्ताव किया। लड़की ने कहा कि आप रात को दस बजे आइये, तब मैं आपसे बात करूँगी। कोत-वाल ने बनजारे को घुड़क कर निकाल दिया। तब बनजारा पुलिस के ऊँचे अफसर के पास गया। वह भी मन्त्री की लड़की के पास आया तो उसकी भी वही गति हुई। मन्त्री की लड़की ने उसे रात को ग्यारह बजे आने के लिए कह दिया। तब बनजारा दीवान के पास गया। दीवानजी को रात के बारह बजे आने का हुक्म हुआ और राजा साहब आये तो उन्हें मन्त्री की लड़की ने आधी रात के बाद आने को कह दिया।

दस बजते ही कोतवाल साहब सज-धज कर आ पहुँचे। मन्त्री की बेटी ने कोतवाल को एक कमरे में बैठा दिया। फिर वह उसके लिए खाने-पीने की चीज़ें जुटाने लगी। देर होती देख कर कोतवाल साहब जल्दी करने लगे तो मन्त्री की लड़की ने कहा कि अब रात आगे क्या देर है? अब यहाँ आप हैं और मैं हूँ। ग्यारह बजते-बजते बड़े अफसर ने दरवाज़े पर दस्तक दी तो कोतवाल साहब ने पूछा कि कौन है? मन्त्री की लड़की ने कहा कि पुलिस के बड़े अफसर हैं। कोतवाल साहब की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उन्होंने मन्त्री की लड़की से कहा कि मुझे शीघ्र कहीं छिपा। मन्त्री की लड़की ने कहा कि मैं कहाँ छिपाऊँ? अन्त में जब कोतवाल साहब बहुत गिड़गिड़ाने लगे तो उसने मन्त्री के ऊपर एक फटा हुआ टाट डाल दिया और उसके दोनों हाथों में दीपक टिका दिये। अब बड़े अफसर की आव-भगत होने लगी। इतने में दीवान आ गये। अब अफ़सर साहब ने कहा कि मुझे जल्द छिपा। मन्त्री की लड़की ने उसे मुर्गा बना कर एक कोने में खड़ा कर दिया और फिर उसे कपड़ा ओढ़ा कर एक घड़ा उसकी पीठ पर रख दिया। अब दीवान की खातिर होने लगी। इतने में राजा आ गये।

मन्त्री की लड़की ने दीवान जी को एक ओढ़नी ओढ़ा कर चक्की पीसने के लिये बैठा दिया। अब राजा की खातिर होने लगी। थोड़ी देर बाद मन्त्री की लड़की किसी दूसरे कमरे में जाकर निश्चिन्त हो कर सो रही।

इधर राजाजी बैठे-बैठे ऊँघने लगे। वे किसी को पुकारते तो कोई उत्तर न मिलता। वे बड़े असमंजस में पड़ गये कि कहाँ आ फँसे? दीपक की बत्ती मन्द होने लगी तो राजा बत्ती ठीक करने के लिए उठे। उधर कोतवाल ने सोचा कि मेरी शामत आ गई। वह गिड़गिड़ाकर राजा के पैरों पर गिर पड़ा। राजा कोतवाल को इस रूप में देख कर हक्का-बक्का रह गया। उसने डाँट कर कोतवाल से पूछा कि तू यहाँ कैसे? कोतवाल ने उत्तर दिया कि हुजूर मैं ही नहीं, बड़े अफसर साहब कोने में खड़े हैं और दीवान बहादुर चक्की पीस रहे हैं।

सबेरा हुआ तो मंत्री की लड़की वहाँ आई। उसने राजा से कहा कि महाराज! गुस्ताखी माफ हो। आपने मुझसे एक सवाल पूछा था कि औरत अधिक चतुर होती है या मर्द? मैंने कहा था कि औरत अधिक चतुर होती है और आपकी आज्ञा से ही मैंने अपने इस कथन को सिद्ध करके दिखलाया है। लड़की की बात सुन कर राजा शर्मिंदा हो कर अपने महल को चला गया।

● पीसो बड़ो क' भाग?

दो मित्रों में विवाद हो गया। एक ने कहा कि भाग्य बड़ा है, दूसरे ने कहा कि धन बड़ा है। दोनों इस बात की परीक्षा करने के लिए चल पड़े। चलते-चलते वे एक गाँव में पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि एक आदमी रस्सी बट रहा है। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह बहुत गरीब है और रस्सी बटकर ही अपने परिवार का निर्वाह करता है। दोनों मित्रों ने सलाह की कि इसी पर परीक्षा की जाए। धनवाले ने उसे सौ रुपये दिये और कहा कि तुम रस्सी बटना छोड़ दो और इन सौ रुपयों से कोई धन्धा शुरू कर दो। दोनों मित्र अपने गाँव को चले आये। वह आदमी रुपये लेकर अपने घर चला

आया। रुपये मिलने की बात उसने अपनी पत्नी को भी नहीं बतलाई। घर में एक पुराने घड़े में घास भरी पड़ी थी। उसने वे रुपये उस घास के घड़े में छिपा दिये।

एक दिन एक घुड़सवार उधर से निकला। आज उसके घोड़े के लिए घास नहीं मिली थी। संयोग से उस घुड़सवार ने उस घर में भी पूछा कि क्या घोड़े के लिए थोड़ी सूखी घास मिल सकती है? घरवाली ने वह घड़ा उस घुड़सवार को दो आने में बेच दिया। इधर जब घर का मालिक आया और उसे सारी बात मालूम हुई तो वह पछताने लगा। कुछ दिनों बाद वे दोनों मित्र उस गाँव में फिर आये। आकर उन्होंने देखा तो वह आदमी उन्हें रस्सी बटता हुआ ही मिला। सारी बात सुनकर धनवाले आदमी ने उसे सौ रुपये और दिये और कहा कि इस बार बहुत सावधानी से काम करना। इस बार उस आदमी ने रुपये अपनी पगड़ी में बाँध लिये। एक दिन वह गंगा-स्नान को गया तो कपड़े उतार कर नहाने के लिए गंगा जी में घुसा। पीछे से उसकी पगड़ी कोई उठा ले गया। साथ ही रुपये भी चले गये।

तीसरी बार वे दोनों मित्र वहाँ आये तो वह आदमी उन्हें फिर रस्सी बटता हुआ मिला। इस बार भाग्य वाले ने उसे एक काँच का टुकड़ा दिया और कहा कि यदि तुम्हारा भाग्य चमकना होगा तो इसी से चमक जायेगा। हम अब एक साल बाद यहाँ आएंगे। उस आदमी ने वह काँच का टुकड़ा ले जा कर घर में डाल दिया।

उस आदमी के घर के पास ही एक मछुआ रहता था। एक दिन मछुवे की स्त्री ने उसके घर आकर कहा कि आज हमारे जाल में लगाने का काँच खो गया है सो तुम्हारे पास कोई पड़ा हो तो दे दो। मछुवे की स्त्री ने पड़ोसिन से वह टुकड़ा लाकर अपने पति को दे दिया। मछुआ तालाब पर गया। पहले-पहल जो मछली आई वह उसने पड़ोसी के लिए रख दी और फिर और मछलियाँ अपनी टोकरी में भर कर घर ले आया। उसने पहले-पहल वाली मछली पड़ोसी की स्त्री को दे दी। मछली को चीरने पर उसमें से एक कीमती मोती निकला। उसने मोती बेच दिया और अब वह मालदार

बन गया। उसने अपने लिए एक मकान बनवा लिया और खूब कारोबार करने लगा।

अगली बार जब वे दोनों मित्र उस गाँव में आये और उन्हें सारी बात का पता चला तो दोनों ने एक साथ ही कहा कि भाग्य ही बड़ा है।

● रंग न्यारा-न्यारा, सुआद एक है

एक बार एक राजा ने अपनी पुत्र-वधू को स्नान करते समय देख लिया। पुत्र-वधू अत्यन्त रूपवती थी सो राजा का मन चलायमान हो गया। राजा अब किसी प्रकार उसे पाने की चेष्टा करने लगा। बहू को भी श्वसुर की इस कुत्सित इच्छा का पता चल गया। उसने सोचा कि श्वसुर को समझाने के लिए युक्ति से ही काम लेना चाहिए। उसने राजा को संकेत कर दिया कि आज रात को मेरे महल में आ जाएँ। राजा बड़ी व्यग्रता से रात्रि की प्रतीक्षा करने लगा। दो घड़ी रात बीतते ही राजा बहू के महल में जा पहुँचा।

इधर बहू ने चार नीबू मँगवाये और उनके दो-दो टुकड़े करके उन्हें भिन्न-भिन्न रंगों से रंग कर एक मेज पर सजा कर रख दिये। राजा आ कर बैठ गया तो बहू ने राजा से कहा कि पहले उस मेज पर जो भी चीजें रखी हैं आप उन्हें चख कर उन सब के स्वाद मुझे बतलाएँ, तब मैं आपके पास आऊँगी। राजा ने उठकर आठों टुकड़े चक्खे और बहू से कहा कि इनके रंग यद्यपि भिन्न-भिन्न हैं लेकिन स्वाद सब का एक ही है। तब बहू ने राजा के गाल पर एक चाँटा मारते हुए कहा कि पापी, जिस प्रकार इन नीबुओं के रंग भिन्न-भिन्न हैं लेकिन स्वाद एक ही है उसी प्रकार स्त्रियों के भी रंग भिन्न-भिन्न हैं लेकिन बात एक ही है। तुम्हारे यहाँ जितनी रानियाँ हैं, उनसे अधिक मेरे में कोई विशेषता नहीं है, फिर तू क्यों अपने लिए कलंक का टीका लेता है और पाप का भागी बनता है।

बात राजा की समझ में आ गई और वह बहू से माफी माँग कर अपने महल को चला गया।

● धुवें का धोतिया

एक सेठ बहुत धनवान् था। वहाँ के राजा से भी उसके पास अधिक धन था। सेठ और राजा आपस में दोस्त थे, लेकिन सेठ की बेटी इससे खुश नहीं थी। वह अपने बाप से कहा करती—पिताजी, राजा से अधिक दोस्ती न रखा करें, क्योंकि, 'राजा, जोगी, अग्नि, जल इनकी उलटी रीत' होती है। लेकिन सेठ ने बेटी की बातपर कोई ध्यान नहीं दिया। उधर राजा के मंत्री ने राजा को सुझाया कि राज्य-कोष तो खाली पड़ा है, यदि किसी प्रकार आपके मित्र का सारा धन हथिया लिया जाए तो खजाना भर जाए। राजा को यह बात बहुत पसन्द आई और उसने कहा कि सेठ का धन छीनने की कोई युक्ति निकालो। मंत्री के कहने से राजा ने सेठको कहलवाया कि हम तुम्हारी कुई को अपने कुएँ की बहू बनाना चाहते हैं सो अपनी कुई को भेज दो अन्यथा तुम्हारी संपत्ति छीन ली जायेगी। राजा का हुक्म सुन कर सेठ की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई, लेकिन सेठ की बेटी ने अपने बाप से कहा—पिताजी, घबराने की कोई बात नहीं है, आप राजा को कहला दें कि कुंवारी बेटी कभी ससुराल नहीं भेजी जाती, अतः अपने कुएँ को दूल्हा बनाकर ले आओ और तब हम अपनी कुई का विवाह उसके साथ करके अपनी कुई को भेजेंगे। राजा की यह चाल विफल हो गई तो मंत्री ने राजा को दूसरी चाल बतलाई। राजा ने सेठ को कहला भेजा कि हमें 'धुएँ के धोतिये' भेजो। इस पर सेठ की बेटी ने अपने बाप से कहा कि राजा को कहला दीजिये कि आप पवन के धागे भेज दीजिए सो हम उनसे 'धुएँ के धोतिये' बना कर भेज देंगे। अब राजा ने सेठ को कहलवाया कि बैल का दूध भेजो। सेठ की बेटी ने राजा से कहलवाया कि यह एक अलभ्य वस्तु है, अतः आप स्वयं आकर ले जाएँ। इधर सेठ की बेटी ने अपने बाप को एक कमरे में सुला दिया और कमरे के दरवाजे पर पर्दा लगा दिया। फिर वह स्वयं 'पोतड़े' धोने के लिए बैठ गयी। राजा आया और उसने लड़की से पूछा कि सेठजी कहाँ हैं? लड़की ने उत्तर दिया कि उनके लड़का हुआ है, अतः वे जच्चा-घर में हैं। आप देखते नहीं कि मैं 'पोतड़े' धो रही हूँ। लड़की की बात सुनकर राजा को

बड़ा विस्मय हुआ। उसने लड़की से कहा कि कहीं मर्द भी बच्चा जनते हैं? इस पर लड़की ने तड़ाक से उत्तर दिया, तो कहीं बैल भी दूध देता है? राजा हार मानकर अपने महल को लौट गया। फिर राजा ने सेठ को कहला भेजा कि अपनी लड़की की शादी राजकुमार के साथ करनी होगी। इस पर सेठ ने राजा को उत्तर भेजा कि आप सारी चालें हार गये हैं अतः वह राजकुमार से शादी करने के लिए तैयार नहीं है। राजा निरुत्तर हो गया। फिर बेटी के कहने से सेठ दूसरे राज्य में जा कर बस गया।

● स्याणी बहू की खोज

एक ब्राह्मण अपने बेटे के लिए बहू की खोज में निकला। वह ऐसी बहू चाहता था जो कम आय में भी हर तरह से किफ़ायत करके घर बसा सके। ढूंढ़ते-खोजते वह एक गाँव में पहुँचा। एक जगह बहुत सारी लड़कियाँ खेल रही थीं। ब्राह्मण ने उन सबसे पूछा कि क्या तुम में से कोई ऐसी लड़की भी है जो मुझे एक 'धोबा' (अंजलि या दो पसर) धान में रसोई बनाकर जिमा सके? और सब लड़कियाँ तो नट गईं लेकिन एक लड़की ने कहा कि मैं ऐसा कर सकती हूँ। ब्राह्मण ने अपने पास का दो पसर धान लड़की को दे दिया। लड़की उस ब्राह्मण को अपने घर ले गयी। घर जाकर लड़की ने धान को कूटकर छिलके अलग किये। फिर उन छिलकों को बारीक कूट कर एक सुनार को बेच आई और उन पैसों से कुछ लकड़ियाँ ले आई। फिर उसने कुछ लकड़ियाँ जलाकर कोयले बनाये और लकड़ियों की आँच में चावल पका लिये। फिर उन कोयलों को बेच कर वह दाल और मसाले लायी और तब उसने रसोई बनाकर ब्राह्मण को भोजन करा दिया। ब्राह्मण के पूछने पर लड़की ने सारी बात बतलाई। लड़की की बात सुन कर ब्राह्मण बड़ा खुश हुआ कि उसे मनचाही पुत्र-वधू मिल गई। लड़की का पिता भी एक गरीब ब्राह्मण था। इसलिए उसने उस ब्राह्मण के बेटे से अपनी बेटी की शादी खुशी-खुशी कर दी।

● बेटो डेढ़ ई है

एक नगर में एक बड़ा मालदार सेठ रहता था। लेकिन साथ ही वह

बड़ा कंजूस भी था। दान-पुण्य करना तो वह जानता ही न था। उसके चार लड़के थे, जिनमें तीन का विवाह हो चुका था लेकिन सेठ के तीनों बेटे और उनकी बहुएँ भी वैसी ही कंजूस थीं। सेठ की स्त्री भी अपने पति के अनुरूप ही थी।

लेकिन चौथे बेटे की बहू आई तो वह उन सब से एकदम भिन्न थी। वह ईश्वर-भजन भी करती और दान-पुण्य भी किया करती। एक दिन वह अपनी हवेली के झरोखे में बैठी थी कि रास्ते से एक साधु गुजरा। साधु ने बहू से अन्न का सवाल किया तो बहू ने कहा कि बाबा, यह सराय है, यहाँ तुझे कुछ नहीं मिलेगा। इस पर साधु ने पूछा कि तुम्हारे श्वसुर के पास कितने रुपये होंगे? बहू ने उत्तर दिया कि यही कोई सौ-पचास रुपये होंगे। साधु के पूछने पर बहू ने कहा कि मेरी सास की आयु कोई दो साल की होगी और मेरे पति की आयु तो साल भर की ही है। साधु ने अन्तिम प्रश्न पूछा कि तुम्हारे श्वसुर के बेटे कितने हैं? इस पर बहू ने उत्तर दिया कि डेढ़ बेटा है।

सेठ छिपकर यह सारा वार्त्तालाप सुन रहा था। बहू की 'निरर्थक' बातें सुन कर श्वसुर को बड़ा गुस्सा आ रहा था। साधु के जाते ही उसने बहू के पास जाकर क्रोध से पूछा कि तुम उस साधु के साथ क्या बकवास कर रही थी? बहू ने श्वसुर को शान्त करते हुए कहा कि बापजी, मैं सत्य ही कह रही थी। यों कह कर उसने अपनी बातों का खुलासा करते हुए कहा कि मैंने साधु से कहा था कि यह सराय है। आप बतलाइये कि यह मकान किसने बनवाया था? सेठ ने सक्रोध कहा कि मेरे दादा ने। बहू ने पूछा कि आपके दादाजी कहाँ गये? सेठ ने कहा कि वे स्वर्ग चले गये। तब बहू ने कहा कि उसके बाद आपके पिताजी इस हवेली में रहे होंगे और अब आप रह रहे हैं, और आपके जाने के बाद आपके बेटे, पोते इसमें रहेंगे सो सराय में जैसे मुसाफिर आते हैं, ठहरते हैं और फिर चले जाते हैं, इसी प्रकार इस हवेली को भी समझिये। सेठ का क्रोध कुछ कम हुआ तो बहू ने दूसरी बात का खुलासा किया कि आप कहते हैं कि मेरे पास लाखों की संपत्ति है, लेकिन

मैंने कहा कि आपके पास सिर्फ सौ-पचास रुपये होंगे। इसका तात्पर्य यह है कि आपके पिताजी के पास भी लाखों रुपये थे लेकिन मरने के बाद वे सब यहीं पड़े रहे और आप उनके मालिक हो गये। आपके मरने पर भी सारे रुपये यहीं पड़े रह जाएँगे। अपनी जिन्दगी में जो सौ-पचास रुपये आप सत्कार्य में लगा देंगे वे ही आपके हैं और वे ही आपको मिलेंगे। सासजी की आयु मैंने जो दो साल की बताई है, उसका मतलब यह है कि भगवान् के भजन के बिना जितने दिन जाते हैं वे बेकार हैं। मेरे कहने-सुनने से सासजी दो साल से ईश्वर के भजन में मन लगा रही हैं और आपके सुपुत्र भी साल भर से इधर लगे हैं, अतः मैंने सास जी की आयु दो साल और अपने पति की आयु एक साल बतलाई थी। इस पर सेठ ने कहा कि और तो जो तुम कहती हो सो सब ठीक है लेकिन मेरे चार पुत्र तो तुम आँखों से देख रही हो, फिर तुमने यह कैसे कहा कि मेरे श्वसुर के सिर्फ डेढ़ बेटा है? श्वसुर की बात सुनकर बहू ने कहा कि आप अपने चारों बेटों को अभी यहाँ बुलवाइये। सेठ ने नौकर को भेजा कि चारों बेटों को इसी क्षण बुला कर लाओ। चारों बेटे अपनी-अपनी दुकानें अलग-अलग करते थे। बड़े बेटे के पास जब नौकर पहुँचा तो वह एक ग्राहक को चीजें तोल कर दे रहा था। सेठ का हुक्म सुनकर उसने कह दिया कि इस समय मैं काम में फँसा हूँ, जा कर कह दो कि मैं नहीं आ सकता। दूसरा बेटा किसी ग्राहक को कपड़ा दिखला रहा था, उसने भी जाने से इनकार कर दिया। तीसरा बेटा अपनी रोकड़ जोड़ रहा था। बाप की आज्ञा सुन कर उसने कहा कि पिताजी से जाकर कह दो कि मैं अभी आ रहा हूँ; रोकड़ में थोड़ा फर्क है, उसे निकाल कर अभी आया। अब सेठ का हरकारा चौथे बेटे के पास पहुँचा। आज दुकान पर काम अधिक होने से वह खाना खाने के लिए घर पर नहीं गया था। उसने अपना भोजन दुकान पर ही मँगवा लिया था और अब वह हाथ-मुंह धोकर खाना खाने के लिए बैठा ही था। पिता की आज्ञा सुनते ही वह खाना छोड़ कर हरकारे के साथ हो लिया।

नौकर तथा छोटे बेटे को आया देख कर सेठ ने अन्य बेटों के विषय

में भी पूछा। नौकर ने सारी बात बतला दी। तब बहू ने कहा कि श्वसुरजी, मैंने कहा था न कि आपके डेढ़ बेटा है। जो बेटा अपने पिता की आज्ञा का तत्काल पालन करता है, वही वास्तव में बेटा है। आपके छोटे बेटे ने ऐसा ही किया है और वह देखो सामने आपका दूसरा बेटा भी आ रहा है। उन्होंने कुछ विलम्ब से आपकी आज्ञा का पालन किया है, अतः उन्हें आधा बेटा ही कहना चाहिए और शेष दोनों को तो आप वास्तव में बेटा कह ही नहीं सकते।

बहू की बात सुनकर सेठ की आँखें खुल गईं और वह बहू के कहे अनुसार चलने लगा।

कथाओं की प्रतीकानुक्रमणिका